॥ श्रीः ॥

मुकलावा-बहार

अर्थात्

ससुराल-रहस्य

दशों भाग (सचित्र.)

लेखक–अर्जुनलाल–अग्रवाल. (नेवरा–सी.पी.)
संशोधक–बाबू दुर्गादत्त केजडीवाल.

प्रकाशक.

खेमराज श्रीकृष्णदास

अध्यक्ष "श्रीवेंकटेश्वर" स्टीम् प्रेस

बम्बई.

संवत् २००४. शके १८६९.

मुद्रक और प्रकाशक—

खेमराज श्रीकृष्णदास,

मालिक—"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस, बम्बई.

अर्जुनलाल अग्रवाल.

भूमिका।

प्यारे भाइयो,

सादर जैगोपाल।

आज मेरी इच्छा हुई कि, आप लोगोंके चित्तविनोदार्थ कुछ लिखूं, इसपर याद आया कि मुकलावा और व्याह-संबंधी विषयका पूर्ण संग्रह कर "मुकलावा-बहार" के नामसे छपाकर आप लोगोंके कर-कमलोंतक पहुँचाऊं जिससे आप थोडेसे खर्चमें इस विषयसे पूर्ण तरह परिचित हो जायँ। इस ही विषयकी पुस्तक लिखनेका मेरा विचार होनेका ठीक कारण यही है, कि मेरा व्याह मेरे माता पिताने प्रेमवश लोकविरुद्ध केवल १५ ही वर्षकी आयुमें कर दिया, बस उसी दिनसे मुझे यह चिन्ता हो गई कि मुकलावा (गौना) के लिये ससुराल जाना पड़ेगा। और स्त्रियें जो बातें पूछेंगी उनका उत्तर ठीक ठीक देते न बनेगा, तो लज्जित होना पड़ेगा। अस्तु इसी विचारसे मैंने कलकत्ता, बम्बई, लखनौ आदि शहरोंसे मुकलावा-बहार, इश्क-छबीली, ससुराल पचीसी, कोकशास्त्र, मारवाड़ी गीत संग्रह, दोहा पहेली आदि अनेक पुस्तकें मंगा कर एक पुस्तक-भण्डारसा बना लिया, तब भी मेरी इच्छा पूर्ण नहीं हुई और यही हाल आप लोगोंका भी हुआ

होगा। क्योंकि "घायलकी गति घायल जाने" किसी पुस्तकमें सिर है तो पैर नही और किसीमें पैर है तो सिर नही। रुपयोंके खराब होनेके सिवाय कुछ भी लाभ नही जान पड़ा, बस मैंने निश्चय कर लिया कि एक पुस्तक ऐसी लिखुं कि उक्त विषयकी सब पुस्तकोंका निचोड़ (सार) हो। लिखने लगा तथा उस जगत्पिताकी कृपासे संग्रह पूरा हो भी गया, आजकलके समयमें ऐसे तो बहुत कम मनुष्य होंगे जो ससुरालकी निर्लज्ज स्त्रियोंके प्रश्नोंका ठीक२उत्तर दे सकें, सब पुस्तकोंसे काम चलाते है जिसपर भी आनन्द जैसा चाहिये नहीं आता। मै आपको आशा दिलाता हूँ कि यदि यह पुस्तक आपके साथ रहेगी तो आपको कदापि लज्जित नहीं होना पड़ेगा, क्योकि इसमें ठीक उन लोगो (स्त्रियो) को लज्जित करनेवाले उत्तर लिखे है। साथ ही आपके लाभार्थ कोकशास्त्रका भी अच्छा संग्रह है।

मेरा परिचय।

मेरा जन्म मध्यप्रान्त (छत्तीसगढ़) मुकाम नेवरा सी० पी० का है और २५–२६ वर्षका भी इसी स्थानमें हुआ हूँ। मारवाड़का मुँहतक नही देखा। और इस नगरमें मारवाड़ी भाइयोंके मकान भी कम होनेके कारण उक्त विषय बहुत कम देखनेमें आये है। अस्तु आप लोगोंसे निवेदन है कि इस पुस्तकमें कहीपर किसी प्रकारकी त्रुटि जान पड़े तो उसे क्षमा कर सुधार लें और मुझे या "प्रेस मैनेजर" को सूचना देनेकी उदारता दिखावे, ताकि वे त्रुटियां पुनरावृत्तिमें सुधारी जा सकें। इस पुस्तकमें कविताके लिये इश्क छबीली, मुकलावा-बहार, दोहा-पहेली, कोक-शास्त्र आदि पुस्तकोंका आश्रय लेना पड़ा है। अत. मै उनके लेखकोंका भी हृदयसे कृतज्ञ हूं।

धन्यवाद ।

श्रीमान् सेठ खेमराज श्रीकृष्णदासजी प्रोप्राइटर "श्रीवेंकटेश्वर" प्रेस बम्बई-नगर-निवासीको अनेकानेक धन्यवाद हैं, जिन्होंने अपना बहुतसा द्रव्यव्यय करके इस पुस्तकको छापकर हमलोगोंके लिये अल्प मूल्यपर वितरण करना आरम्भ कर दिया।

इस पुस्तक की यह छठवी आवृत्ति है। पहली सब आवृत्तियां इतनी जल्दी बिकीं कि आगे छपते तक ग्राहकोंको विवश ठहरना पड़ा ।

इस पुस्तकके कई एक प्रशंसापत्र भी मुझे मिले हैं, यही उत्तम संग्रह होनेका प्रमाण है। आशा है कि, जिस प्रकार पाठकोंने पहली आवृत्तियोंको अपनाया उसी प्रकार इसके खरीदनेमें भी किसी प्रकारका संकोच न करेंगे।

एक आवश्यक बात ।

साथ ही बाबू दुर्गादत्त केजड़ीवाल सम्पादक अग्रवालहितैषी बम्बईका भी मैं बहुत कृतज्ञ हूं जिन्होंने इसे संशोधित करनेके साथ साथ नायिकाभेदादिकी कई सामयिक कविताएँ शेर और दूसरी बातें लिखकर इस ग्रन्थको और भी ललित बना दिया है ।

मार्गशीर्ष
कृष्ण ५,
संवत १९९५

निवेदक-
अर्जुनलाल-अग्रवाल
नेवराबजार सी० पी०

श्रीः।

मुकलावा बहार-विषयानुक्रमणिका.

विषय	पृष्ठ
प्रथम भाग	
वन्दना ...	१
ससुराके लिये शिक्षा ...	२
जँवाईकी ओरसे होनेवाले नेग	५
रसोईकी चालाकियां ...	
जलपान ...	९
अन्य चालाकिया ..	१०
हाथकी चालाकिया ..	११
कुछ विचित्र हिसाब ...	१४
कुछ विचित्र प्रश्न ...	१९
तीन २ प्रश्नोंका एक उत्तर...	२०
नातासंबंधी विचित्र प्रश्न ...	२१
ससुरालानन्द ...	२२
सरवरपर प्रथम मिलन ...	२३
चन्द्रकिरनका पश्चात्ताप ...	२५
काकशकुन	२७
रसोई, जल, रास्ता, पलग, गद्दा, तकिया, जाजम, पान दान, इ० बांधना छुडाना ...	२८
भ्रमर और चंदरकी मस्करियां	२९
गाली डालना ...	३१
मदन और सहेलियो के प्रश्नोत्तर ...	३५
सहेलियो और मदनलालके प्रश्नोत्तर ...	३९
रंगमहल और सालाहेली ...	४२
मदन और चन्द्रकिरण की बातचीत (महलमे) ...	४३
चंद्रकिरण और मदनके प्रश्नोत्तर	४६
दूसरा भाग (पहेलीपुंज)	
वन्दना ...	४८
जनानीपहेली रंगत १ ली ...	४९
जनानीपहेली रगत २ री ...	५४
मरदानी पहेली ...	५५
चंदरकी व्यंग पहेली ...	५९
भ्रमर और स्त्रियोकी बातचीत मस्करियां ...	६२
विरहनीकी बारामासी ...	६३
गीत जीजा ...	६६
गीत नणदोई ...	६७
गीत टप्पा ...	६९
एकागप्रश्नोत्तर (पहेलिया)...	७०
उमराव स्त्रियोंके ...	७२
उमराव भ्रमरके शिव प्रार्थना	७५
लावनी अंबापूजन ...	७७

विषय.	पृष्ठ
भ्रमर और स्त्रियोकी बातचीत	७८
सजा हुआ कमरा ...	७९
महलमें मदन और चन्द्रकिरण	८२
मदन और चन्द्रकिरणकी पहेलियां ...	८४
संस्कृत दृष्टिकूट पहेलियां ...	८७
संस्कृत पहेलियां ...	८९
संस्कृत प्रश्नोत्तर वाक्य ...	९०
मुख्य चपेटिका	"
दृष्टिकूट प्रश्नोत्तरी ...	९१
अन्तर्लापिका पहेलियां ...	९५
दृष्टिकूट पहेलियां ...	९६
हिन्दी पहेलियां ...	९७
अर्थ पहेलियां ...	९८
दो प्रश्न एक उत्तर पहेलियां	९९
खुली हुई पहेलियां ...	"
संस्कृत समस्यायें ...	१००
हिन्दी समस्यायें ...	१०१
प्रश्नोत्तर कवित्त सवैया ...	१०६

तीसरा भाग (शाखा पत्तल)

विषय.	पृष्ठ
वन्दना ...	११५
दौर किस्मतके ...	११६
" समयकी गर्दिशके ...	११७
" दुमाली ...	"
दौर नजाकतके ...	११८
ईश्वर प्रेम ...	११८
शाखोच्चार गौरीशङ्कर ...	१२०
शाखोच्चार रामजानकी ...	१२२
शाखोच्चार श्रीकृष्णरुक्मिणी	१२४
गोत्रोच्चार ...	१२८
भातकी पत्तल ...	१२९
वंदोरीके वखत बोलनेके श्लोक ...	१३३
व्याहमें सुपारी बदलनेके समय बोलनेके श्लोक ...	१३७
जोशीजी तथा गणपतलालजी की पहेलियां ...	१४२
गीत ओलंग ...	१४९
पत्र प्रकरण ...	१५०
नमूना व्याह पत्रिका ...	१५२
मारवाडी उचरा ...	"
हिन्दी पत्रिकाका नमूना ...	१५३
प्रेमीजनोंके लिये गुप्त स्याहियां	१५४
स्त्रियोंके शृङ्गार ...	१५५
बाल धोनेका मसाला ...	"
यू, लीख साफ क. म ...	"
पट्टी मांग पाडनेका म. ...	"
बाल बढानेका म. ...	१५६
कांती चढानेवाला उबटन ...	"
मोहांसे और झांईका उपाय...	"
कज्जल ...	"

विषय.	पृष्ठ.
कंठ सुधार ...	१५६
मुख दुर्गन्धि नाशक ...	१५७
मिस्सी	"
महावर	"
चांदी जेवर सा. क. म. ...	"
सोनेके गहना सा. क. म.	"
भंगकी लहर	१५८
दूसरे कविका वाक्य.	१५९
चौथा भाग (कवित्त सवैया)	
बंदना ...	१६४
प्रियदर्शनलालसा ...	"
प्रेमी मिलन ...	"
समान प्रीति ...	१६५
एकतरफा प्रीति ...	"
जल लाने गई ...	"
समयका फेर ...	१६६
बारह राशि ...	१६७
त्यागने योग्य मनुष्य ...	१६८
एकादशीव्रत ...	१६९
कुच वर्णन ...	"
छूटे ...	१७०
मटे ...	१७१
चढ़े-पौंढ़े ...	"
ईश्वरपर विश्वास ...	१७२
प्रेम ...	१७३
शृङ्गार रस ...	१७४
ऋतु वर्णन ...	१७८
सोलह शृङ्गार ...	"
बत्तीस आभूषण ...	"
सुदामाके प्रति कृष्ण	१८०
मुसलमान भक्त वाणी	१८२
गिरधर कुण्डलियां ...	१८६
तुलसी दोहा ...	१८८
रहीमके दोहे	१८९
कबीरके दोहे ...	१९१
रसखानिके दोहे	१९३
मारवाड़ी दोहे ...	"
हिन्दी दोहे	१९६
बिहारीके दोहे	२०१
चाणक्यनीति ...	२०४
जयदेव-गीत	२०८
चपेटपंजरी ...	२०९
अनोखी संस्कृत उक्तियां	२१०
आदर्श करुणा ...	२१६
आदर्श वीर	
स्थान प्रधान ...	२१७
विद्या प्रशंसा	२१८
संगति ...	२१९
नीति	२२१
पांचवां भाग-(प्रचलित कोक)	
बन्दना ...	२२५
रंभाशुक संवाद ...	२२६

विषय	पृष्ठ
कोकपरिचय ...	२२९
कोकशास्त्रका नामकरण .	२३०
कोकशास्त्र बन्द क्यों हुआ	२३४
कोकशास्त्रके नामपर लूट ...	२३५
कोकारम्भ ..	२३७
वीर्यरक्षा ...	२३८
रजरक्षा ..	२४४
स्त्रीपुरुषोंके वर्णभेद .	२४६
स्त्रीसे पुरुषमें अधिक गुण	२५३
स्त्रीको वश करना	"
पुरुषको वश करना ..	२५४
अन्यान्य वशीकरण .	२५५
स्त्री व्यभिचारिणी क्यों होवे	"
रजस्वला .	२५६
प्रथम रजोदर्शन फल ..	२५८
शुद्धरज ..	"
शुद्ध वीर्य	२५९
स्त्रीपुरुषसे सम्बन्ध	२६०
त्यागनीय स्त्रियें ...	२६१
पराई स्त्रीसे विषयकी बुराइयां	२६२
विषयसे वर्जनीय बातें ...	२६३
सहवास समय ...	"
कामवास और तिथियें ...	२६६
कामवती स्त्री ...	२७०
विषयविधि ...	"
अधिक विषय .	"
विषयके पश्चात् ..	२७१
गर्भके लक्षण .	२७३
मिथ्या गर्भ ...	२७४
गर्भाकार ..	२७५
गर्भपरीक्षा ...	२७६
गर्भवतीके कर्तव्य	"
इच्छानुसार सन्तान हो दृष्टान्त सहित .	२७७
प्रसवकाल ...	२८३
नालच्छेदन ..	२८५

भाग छठवां-(गृह-चिकित्सा)

विषय	पृष्ठ
वन्दना .	२८८
प्रार्थनापत्र .	२८९
चारों प्रकारकी नपुंसकता	२९०
नपुंसककी इन्द्रिय ..	२९५
तिलाओंकी सेवन विधि ...	२९६
शीघ्रपतन ..	२९८
शीर्षासन* .	३०१
दूध और कपूरकटोरा ..	३०६
शीतलहुई इन्द्रियके लिये सेक	३०७
सेकके साथ खानेयोग्य नुस्खा	"
इन्द्रियकी शून्यतानाशक तेल	"
थाकपन नाशक तेल ...	३०८

* जहां यह चिह्न है वह लेख पवित्र है।

विषय	पृष्ठ
मद्यप्रकारकी नपुंसकताके लिये	३०८
तिलाओंका बादशाह ..	३०९
स्तम्भन शक्तिवर्धक योग	
लिंगवर्धक योग ...	
स्त्रियकी [illegible] योग ...	३१०
द्राक्षादि योग ...	३११
आनन्ददाता योग ..	३१२
बुलाव ...	३१३
औषधि सेवनके नियम	३१७
गरीबी सुख ...	
अमीरी सुख ..	३१८
औषधि शोधन ...	३२१
बन्ध्या वर्णन ..	३२२
बन्ध्या औषधि ...	३२६
पतनौषधि ...	३३२
अकालमें गर्भरक्षा ...	३३१
सुखप्रसव ...	३३३
चक्रव्यूह ...	३३४
प्रसूताके रोग ...	३३५
लालन-पालन ...	३३७
बालरोग निदान ...	३४३
बालौषधियां ...	३४४

विषय	पृष्ठांक
निरोग रहनेके उपाय ...	३४५
[illegible] ...	३४७
निरोग रहनेके उपाय .	३४८
[illegible]	३५०
[illegible]	३५४
आरोग्य शिक्षा ...	३५८
अन्य शिक्षायें ...	३६०
सामुद्रिक ...	३६४

भाग सातवां (मनोरंजन)

विषय	पृष्ठांक
वन्दना ...	३७१
मनोरञ्जन किस्से ...	३७२
मारवाड़ी लतीफे ...	३९२
भानमतीके लतीफे ...	३९७
आमका झाड़ लगाना ...	"
गुप्त अग्नि ...	३९८
अक्षर उड़ाना ...	"
निंबु उछालना ...	"
काच चबाना ...	"
कपड़ेपर आगकी गेंद ...	"
अधर अंगूठी ...	"
अग्नी हाथपर ...	३९९
पत्थरपर जाली ...	"

विषय.	पृष्ठ.	विषय.	पृष्ठ.
तुरत दूधका जमना ...	३९९	पांचअंकोंके बीचका अंक बताना	४०५
चांद ...	"	मिटायाहुआ अंक बताना ...	"
बन्दूकप्म्बरसे नाम लिखना	"	क्रमिमजोड सादा ...	४०६
पानीमें बतासा ...	४००	मिश्रक्रमिमजोड ...	४०७
हथेलीमें सरसों ..	"	अंग्रेजीमहीनोंके दिन ...	"
रंग पलटना ...	"	भूतभविष्यकी तारीखका दिन बतानेवाली क्रिया ...	४०९
स्वारकी खीलकरना ...	"	सूक्ष्म कलेंडर ...	"
निंबूमें खून ...	"	विविध ...	४१०
ठण्डी कड़ाई ...	४०१	१०० वर्षोंका कलेण्डर ...	४११
आकाशी गोला ...	"	महीना ...	४१२
जल न छुवै ...	"	दिन ...	४१३
कागजकी कड़ाहीमें गुलगुले	"	श्री बजरंग प्रश्नावली ...	४१४
नारंगीके बीज बताना ...	४०२	संकेतकी बातचीत ...	४१८
तरबूजके बीज बताना ...	"	मुकलावेका मुहूर्त ...	४२२
अनारके बीज बताना ...	"	प्रसूति स्नानमुहूर्त ...	"
गर्भका हाल बताना ..	"	जलका मुहूर्त ...	४२३
संवतका हाल जानना ...	४०३	प्रथमान्नप्राशन	"
कल्पित तिथि बताना ...	"	चूडापहिरनेका मुहूर्त ...	४२४
कल्पित संख्या बताना ...	"	मुंडनकर्म ...	"
कल्पित फल बताना ...	"	विद्यारंभ मु. ...	"
कल्पना की हुई बाड़ीका रुपया बताना ...	४०४	कर्णवेध मु. ...	४२५
हिसाबोंकी कुंजियां ...	"	यात्रामुहूर्त ...	"

विषय.	पृष्ठ.
कालचक्रवास	... ४२६
दिशाशूलवास	.... "
योगिनीवास	... "
चन्द्रवास	... ४२७
आवश्यक यात्रा	... "
छींकविचार	... "
छींकफलाफल विचार	... "
यात्रामें श्रेष्ठ शकुन	... ४२८
"अनिष्ट"	... "
जंगली शकुन	... "
दृष्टान्त	... "
ज्योतिषानुसार क्षौर	... ४३१
" " तैलमर्दन	... ४३२
नूतन वस्त्रधारण मुहूर्त	... "
ज्योतिषद्वारा समय जानना	... "
स्वप्नविचार दृष्टान्त सहित	... ४३३
(भाग आठवां-लावनी संग्रह)	
लावनी गौरक्षा	... ४३८
" चावा बैल	... ४४०
" नरसी मेहता	... ४४२
" हीररांझा	.... ४४४
" लीलहारी लीला	... ४४६
" चौमासा	... ४४८
" अरब बारामासी	...
" नीलकण्ठ महादेव	... ४५२
" नशेबाजोंकी	... ४५४
" अप टू डेट	... ४५६
" हनूमान मूंदड़ी	... ४५७
" लैला मजनू	... ४६२
" दुनियां रङ्ग	... ४६३
" तुर्रा	... ४६५
" कलंगी	... ४६६
लावनी मनिहारी	... ४६७
रहीम कृत मदनाष्टक	... ४७०
लावनी प्रेम	... ४७२
ला. द्रौपदी पुकार	... ४७४
रेल यात्रियोंके जानने योग्य बातें	... ४७५
प्रमाण	... ४८३
पोस्टके नियम	... ४८४
पोस्टका समय	... "
तार आर्डिनरी	... ४८५
तार अर्जेंट	... "
लेट फी	... "
जवाबी तार	... ४८६
देहाती तार	...

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठांक
रेलवे तार	.. ४८६	पश्चरूसर्प . .	४९८
पोस्टकार्ड	,,	नवमां भाग (वाक्यचातुरी)	
कार्ड नमूना	४८७		
चिट्ठी	४८८	वन्दना	५०.
बुक पोस्ट	४८९	दो शब्दोंका बोध	५०२
बुकपैकेट	,,	तीन शब्दोंका बोध ..	
रजिस्ट्री	४९०	चार शब्दोंका बोध .	५०८
बीमा	,,	पांच शब्दोंका बोध .	५०९
वी पी पार्सल या चिट्ठी	४९	छः शब्दोंका बोध	५१०
मनीआर्डर	४९१	सात शब्दोंका बोध ..	,
सेविंग बैंक	४९२	आठसे बीस शब्दोंका बोध ...	५११
पक्षी मनोरंजन	. ४९४	हिन्दी कहावतें .	५१२
झुनझुना	,,	मारवाड़ी कहावतें ..	५२५
सारस	. ,	पञ्जाबी कहावतें ...	५२८
बगुला	,	फारसी कहावतें ..	५३०
मोर	४९५	गुजराती कहावतें ..	५३२
चमगादड़	,,	बाघ कवीकी क ...	५३५
चील	.. ,	लवण भास्कर चूर्ण ...	५३७
उल्लू	,	खूनखराबी ...	,
कौआ	४९६	बवासीर ..	५३८
मञ्जन	,,	आतशक (गर्मी) .	५३९
कबूतर	,	सूजाक .	५४१
तोता	४९७	इन्द्रियजुलाब ...	,,
बुलबुल	,	अण्डवृद्धि ..	५४२
कुररी	,,	सिरदर्द ..	५४३
चकरा	४९८	आंखोंका आना ..	५४४
सांप	. ,,	दांतोंका बिगड़ना ...	५४५

विषय	पृष्ठांक	विषय	पृष्ठांक
जख्म लगाना	. ५२६	गाय दुमे पत्त	... ५५८
नासूर	,,	,, कुछ खेल	... ५५९
काटने योग्य औषधियोंका विज्ञापन	... ,,	तास जमानेका क्रम नंबर १	५६०
अनूपम औषधि	... ५४७	क्रम नं० १ के कुछ खेल	... ५६१
केश रोग	५४८	तास जमा० क्रम नं० २	... ५६२
कृष्णावधाई	... ,,	एक गो पत्त	... ५६३
दशवां भाग		तासोंके दाने गिनना	... ५६४
गञ्जीफा-मनोरञ्जन	... ५४८	,, खेल पहला	... ५६५
फटना	५५३	,, खेल दूसरा	... ५६६
काटना	... ,,	खेल तीसरा	... ५६७
पास करना	५५४	खेल चौथा	... ५६८
अंटियाना	... ,,	खेल पांचवां	... ५६९
दिलौवाफेट	,	खेल छठवां	... ५७१
खासट्रिक	.. ५५५	,, सातवां	... ५७२
ट्रिकके कुछ खेल	... ५५६	,, आठवां	... ,,
नाल बदलना	... ५५७	,, नववां	... ५७४
		,, दसवां	... ,,

॥ इति विषयानुक्रमणिका समाप्त ॥

श्रीगणेशाय नमः ।

मुकलावा बहार

अर्थात्

ससुराल-रहस्य

प्रथम भाग प्रारम्भ ।

वन्दना ।

दोहा-दूंदाला दुख भंजना, सदा जो बालक भेष ।
सबके पहिले सुमिरिये, गिरिजानन्द गणेश ॥१॥
आनंदी आनंद कर, कर सम्पतिसे सीर ।
दुश्मनका टुकड़ा करो, ताक लगावो तीर ॥२॥

चौबोला-ताक लगावो तीर भगवती, नग्रकोटिकी ज्वाला ।
भूरे सिंह सवार सुसज्जित, कर त्रिशूल औ भाला ॥
शुंभ निशुम्भ पछाड़े मारा, महिषासुर मतवाला ।
नंगे पैर आ छत्र चढाया, अकबर दिल्लीवाला ॥

दौड़-विनय सुनकर प्रतिपाला, मार दुश्मनको भाला ।
पदाम्बुज शीश नवाऊं ।
दग्धाक्षर गणदोष निवारो, भाषा सरस बनाऊं ॥

अंक पहला

ससुराल जानेके समय स्मरण रखने योग्य कुछ आवश्यक बातें ।

ससुराल जाते समय अपनी योग्यतानुसार पांच सात मनुष्यों (जोसी, नाई, ग्वाला, भाई, भतीजा इत्यादि) को साथ लेकर जाना चाहिये। हरियाणा, भिवाणी आदि जिलोंकी ओर तो जँवाईके बड़े नातेवाले भी (मुकलावेके समय) जँवाईके साथ जाते हैं और कई जिलोंमें इसे भद्दी प्रथा मानते है, परंतु इसमें "यथा देश तथा भेष" के अनुसार कुछ चार विचार नहीं। ससुरालमें सभ्यताके साथ रहना चाहिये। सबके साथ योग्य वर्ताव करना चाहिये। अधिक अश्लील शब्दोंके व्यवहारसे भी मनुष्यकी प्रतिष्ठा घट जाती है। बच्चोंको मुँह लगाकर अथवा स्त्रियोंमें बैठकर उनके साथ मिथ्या बकवाद या कानाफुसी करना बुरा होता है। हां, सालाहेली, साली एवं अन्य हम-उमरकी स्त्रियोंकी मीठी मस्करियोंका जवाब भी मृदु मुसकानसे देनेमें ही कँवरसाहबकी कीमत है। गांजा, भांग, माजूम, सुलफा इत्यादि मादक वस्तुओंका सेवन भी बुरा होता है, एक बात तो यह है कि यदि नशा अधिक हो जाय तो फजीता है, दूसरे कई जँवाई भाई नशेमें लुट भी गये हैं, अपने आभूषणोंसे हाथ धो बैठे है।

प्रातः उठकर स्नानादिक नित्यकामोंसे निवृत्त हो वस्त्राभूषणद्वारा सज धजकर रहना चाहिये।

भोजनके समय इस बातका ध्यान रहे कि मैदाके बने हुए गरिष्ठ व दाहकारक पक्वान्न कम खावें, नहीं तो पीछे डाबर पोदीना-अर्क ढूँढना पड़ता है। ससुरालमें अपने मुँहसे माँगकर कोई वस्तु नहीं लेनी चाहिये, क्योंकि वहां (ससुरालमें) जितने मनुष्य होंगे सबका यही ध्यान रहेगा कि आपके स्वागत-सत्कारमें कुछ त्रुटि न हो अथवा आपका चित्त किसी कारण मलीन न हो।

ससुराल समीप हो या दूर; परन्तु चार दिनसे अधिक नहीं रहना चाहिये, क्योंकि इतने ही समयमें वे लोग जँवाईका पूर्ण-रूपसे सत्कार कर सकते हैं। ससुरालमें घर जँवाई होकर रहना-अपितु उस गावमें रहना भी बुरा है, क्योंकि-

" दूर जँवाई पुष्प बराबर, गांव जँवाई आधो।
घर जँवाई खरकी नांई, मन आये ज्यों लादो॥ १॥
ससुरार सुखकी सार, पर रहै दिना दुइ चार।
यदि रहै मास पखवारा? हाथमें खुरपी बगलमें भारा॥२॥ *

---

* एक मनुष्य ससुराल गया, वहांका आगत-स्वागत देखकर उसे बडा आनंद आया, उसने समझा कि पृथ्वीपर सुखका स्थान ससुरालके अतिरिक्त दूसरा कोई नहीं हो सकता, और इसीलिये "हिमपर्वतपर हर बसे, रत्नाकर हरि वास" अस्तु, उसने प्रेमोन्मत्त हो जिस कमरेमें ठहरा था उसकी दीवार पर पेंसिलसे निम्न चरण लिख दिया—

ससुरार सुखकी सार।

जब यह चरण उसकी सरहज-सालाहेली के दृष्टि पड़ा वह अपने नण-दोईके हृदयभावको समझ तत्क्षण उसके नीचे निम्न दूसरा अन्तरा लिख दिया—

पर रहै दिना दुइ चार।

जब दामाद बाबू कमरेमें आये और अपने चरणके नीचे दूसरा अन्तरा लिखा हुआ देखा तो चमत्कृतसे हो प्रश्नवाचक तीसरा पद उसीके नीचे पुनः लिखा—

जोधपुर बीकानेर आदि जिलोंकी ओर जंवाईको मर्दाना डेढ़ महीना तक रखते हैं, परन्तु शेखावाटीके भाई ऊपर बताये हुए समयको ही उत्तम मानते हैं। ससुराल जाते समय अपने साथमें कुछ लौंग, डोडा, इलायची, छालियां आदि ले जाना चाहिये, क्योंकि वहां छोटी २ बालिकाओंको देना पड़ता है। एकवारगी यह सब न भी करो तो कोई हर्ज नही परन्तु ससु-राल जानेके प्रेममें उन्मत्त होकर इस पुस्तक "ससुराल-रहस्य" को न भूल जाना, नही तो आपको स्त्रियोंके मध्यमें जहां आपका कोई साथी न जा सकेगा, इसके विना उनके प्रश्नोका उचित उत्तर देते न बन सकनेके कारण लज्जित होना पड़ेगा। इस बातका भी ध्यान रहे कि जहां स्त्रियोंका आना जाना हो निश्चित होकर न सोवें, नही तो आपकी निद्रित अवस्थामें स्त्रियें कज्जल टीकी, मेंहदीसे आपका शृंगार कर देंगी और जागनेपर हंसी करेंगी। स्त्रियोंमें बैठो तब इस बातका ध्यान रखो कि छोटी २ बालिकाएं

—यदि रहूं मास पखवारा ?

फिर अवसर पा उस चतुर-मृगलोचनीने उसकी इस प्रकार पूर्ति कर दी—

हाथमें खुरपी बगलमें झारा।

इस प्रकार उत्तर देख दामाद बाबूके चित्तमें वहां रहनेका जो विचार उत्पन्न हो गया था, वह नष्ट होगया और वे १–२ दिनमें विदाई कर स्वस्था-नको चले गये।

तथा

श्वशुरगृहनिवासः स्वर्गतुल्यो नराणाम्।
यदि भवति विवेकी पञ्चषड्वा दिनानि॥
दधिघृतमधुलोभान्मासमेकं वसेच्चेत्।
स भवति खरतुल्यो, मानवो मानभगात्॥

अपने कपडोंको पलंगके साथ बांध (अथवा सीम) न दें या अपने ऊपर घंघरी-कुरती न डाल दें।

रंग गुलाल बेमौसम नहीं डालना चाहिये, यदि मौसम (माघ फाल्गुन चैत्र) हो तो लाल, पीला, गुलाबी डालना चाहिये हरा, नीला, काला, ये भद्दे हैं। अच्छा हो यदि आप अपनी ट्रंकमें थोडा गुलाव जल और गुलाब पास लेते जायँ।

विदा होनेके समेय वहांके नौकरों (रसोया, नाई, ग्वाला) को ।) चार ॥) आठ आना देना चाहिये। कई स्थानोंमें गीत गानेवाली ब्राह्मणियोंको पैसे दिये जाते हैं वे जँवाईके ही लगते हैं सो पूंछ लेना चाहिये। स्त्री अपनी अर्धांगिनी है इसलिये श्वसुर, सासको, पिता, माता तुल्य मानना चाहिये। ससुरालमें मध्याह्नके समय जाना उचित नहीं है।

अंक दूसरा

जँवाईकी ओरसे ससुरालमें होनेवाले कुछ नेग।

पगधोई—जवाईके पहुँचते ही वहांका नाई (या ग्वाला) थालमें दूध, मूंग और जल डालकर जँवाईके पैर धोता है, उस समय उस थालीमें ।) ॥) अथवा १) डालना चाहिये।

थालोड़ी—थालियोंमें २-४ सेर लड्डू, बतासे, मेवा, फल, कुड़ते टोपी (छोटे बच्चोंके लिये) और ५) १०) नगदी धरकर अपने नाईके साथ ससुरालमें भीतर जातेही वहां जीमनेके पहले ही भेज देना चाहिये।

गोद भरना-ससुरालमें जो मुख्य बालक हो कुछ मेवा और ५)
७) रुपयोंसे उसकी गोद भरना। बाकी टावरोंको १)
२) हाथमें देना चाहिये।

जूंठन-भोजनके पश्चात् जूंठनमें (जूंठी थालीमें केवल प्रथम दिवस)
१) या २) अवश्य डालना चाहिये। यदि ससुरालवालोंके
भाई बन्धु जिमावें सो वहां भी जूंठन डालना आवश्यक है।

स्त्रियोंको लड्डू-जँवाई स्त्रियोंमें बैठे उस समय स्त्रियें लड्डू मांगा
करती है-(वे भूखी नहीं रहती केवल प्रेमका
कारण है) परन्तु आजकल कैसी प्रथा चली है
कि जँवाई लड्डू देवे तो नही परन्तु फेंक २ कर
उन्हें मारने लग जाता है, ये बड़ी भूलकी बात है।
इसमें एक तो व्यर्थका नुकसान और दूसरे उन्हें
चोट आ जानेका भय है, ऐसा न करके उन्हें २,
४ सेर लड्डू दे देना चाहिये।

जूती छिपानी-प्रेमपिपासाकी पागल छोटी साली अपने जीजा-
जीकी जूतियां छिपा देती है, उस समय उसे दस्तूर
समझ कर १) और मिठाई देना चाहिये।

जूती पूजा-स्त्रियें बड़ी चपल होती हैं; समय चूकना तो ये जानती
ही नही। दिवालपर गेरू, मिट्टी अथवा रंगसे कुछ
लिखकर उसके सामने एक कुंडा (मिट्टीका बरतन) में
पुरानी जूतीका जोडी किसी कपड़ेमें खासकर
आंगीमें रख देती हैं और कहती है-कुँवर साहेब!
ये हमारे देवता है इनके धोक देवो। धोक देनेके पश्चात्
जूतियां निकालकर हँसी करती हैं। (यह कार्य व्याहके
समय अधिक किया जाता है) इससे सावधान रहना चाहिये।

मित्रो! जब मैं रात्रिके समय पलंगपर लेट गया तब मेरी

सालीने कहा जीजाजी ! आपके तकियाके नीचे कोई बडी बढिया वस्तु रखी है। मैंने उत्सुकतासे तकिया उलटकर देखा तो क्या निकला बता दूं अच्छा सुनो- "एक पुराना जूता"—लेखक.

उपरोक्त सारी ही कार्रवाइयां मुकलावामें होती हैं दुबारा जानेपर नहीं।

रसोई.

मशकरी एक ऐसी वस्तु है जिसका उपयोग हर स्थानमें हर चीजमें प्रत्येक मनुष्य कर सकता है। जिस मनुष्यके साथ मशकरी की जाती है यदि वह चपल हो तो तुरत उत्तर देकर मशकरी करनेवालेको लज्जित कर देता है, किन्तु उसके उत्तर या समझनेमें त्रुटि होनेसे स्वयं लज्जित होता है। इस अंकमें हम कुछ रसोईकी चालाकियां रसिक जनोंके लिये अंकित करते हैं।

पूड़ियोंमें रूई-आटेके मध्यभागमें थोडीसी रूई दबाकर बेली जाती हैं और कडाहीमें डालकर सेंक लेनेसे फूल आती हैं, इनका पता तोड़े बिना नहीं चलता।

मींगणीका रायता-बकरीकी मींगणीपर शक्करकी चाशनी (जिस प्रकार हलवाई इलायचीदाने-मखाने बनाते हैं) चढ़ाकर अच्छे गाढ़े दहीमें चटपटे मसाले व किसमीस मिलाकर, उसमें डाल दीजाती हैं, रायता तैयार हो जायगा।

गोबरके दही बड़े-मूँगकी पीसी हुई पीठी (दाल) के गीले कपड़ेके सहारेसे बड़े बनाकर बीचमें गोबरकी गोलियां

दवाता जाय और तेलमें सेंक ले, निकालकर पानीमें डुबादे बस कुछ समय पश्चात निकाल कर गाढ़े दहीमें डाल दे-पर मसाला तेज हो।

मेंहदीकी चटनी-मेंहदीकी ताजी पत्तियें (या हरा गोबर) लाकर उसमें हरी धनियां, हरी मिरचें, अदरख, गरम मसाला इत्यादि डालकर पीस ले, खानेवालेको कुछ पता न लगेगा।

मींगणीका साग-बकरीकी मींगणीपर बेसन चढ़ाकर सेंके (जैसे पकौडी बनती है) पश्चात् गर्म जलमें भिगोकर छौंक दे, गाढ़े दहीकी खटाई डाले, इच्छानुसार मसाला डालकर उतार ले और गट्टेका साग बोलकर परोस दे।

कागजके पापड-मोटे पीले कागजको पापडके आकार काटे, पश्चात् मूंगके आटेको कपड़ेसे छानकर एक थालीमें डाले उसमे काली मिर्च, सेन्धानमक, हींग, जीरा इत्यादि पिसे हुए मसाले और जल डालकर खूब फेंटे जब हाथोंसे लपटने लगे उन कागजके टुकडोंपर दोनो ओर पतला २ लगाकर घीकी कडाहीमें छोडता जाय, एक नंबर पापड बनेंगे परन्तु इन्हे ठंडीसे बचाना चाहिये।

मैंने एक व्याहके समय बरात भरको ये पापड़ खिला दिये, किसीको कुछ पता नही लगा। अतः सावधानी रखनेकी बड़ी आवश्यकता है।—लेखक।

चेतावनी-रसोईमें और भी कई मश्करियां होती हैं जैसे-भंगका सीरा, पांडुका रायता, बिनोलेका साग, किकरकी चटनी इत्यादि, परन्तु यह सब लिखनेसे विस्तार अधिक बढ़जावेगा। इशारे दिये गये हैं चतुर मनुष्य समझ लें।

अंक चौथा

जलपान ।

नमकीन जल-छोटी २ बालिकाएँ भी बड़ी चपल होती हैं। पीनेके जलमें नमक या फिटकड़ी मिला देती हैं, जीभपर डालनेसे पता लगता है।

रंगीन पान-पानके बीड़ोंमें हीराकशी, रंग, मिस्सी आदि वस्तु डाल देती हैं जिससे दांत और ओठ सब भद्दे हो जाते हैं।

मित्रो ! जिस समय मेरा ऐसा अवसर आया मेरी सालीने प्रथम दिवस पानमें चांदीकी दुवन्नी और दूसरे दिन कोयलेका टुकड़ा डाला था।—लेखक

इलायची-इलायचीके बीज निकालकर उसमें किरमची रंग भरकर ऊपरसे चांदीका वर्क लगा दिया जाता है।

रंगीन बीड़ियां-ठहरिये, इतना ही सुनकर घबराइये नहीं, आजकल बीड़ियोंमें भी तमाखूके साथ रंग भर दिया जाता है। पीते ही सब रंग फूकके साथ मुँहमें आ जाता है।

नकली हुक्का-एक मश्करे लड़केको किसी महाशयने हुक्केकी चिलममें तमाखू गुड़ाखू जमाकर दी और कहा इसपर अंगारे धर ला। लड़केने तमाखू (गुड़ाखू) झाड़कर घोड़ेकी सूखी लीदें जमा दी, आग धर कर ला दिया, पीनेसे पता लगा।

अंक पांचवाँ

कुकुटाके सूत-जँवाईके जीमनेके समय बैठनेके लिये रसोईगृहमें पाटा डाला जाता है, जिसके नीचे स्त्रियें कच्चा सूत लपेट देती है। ऐसे पाटेपर नहीं बैठना चाहिये।

गद्दमें पापड़-जँवाई जब स्त्रियोंमें बैठता है और उसके बैठनेके लिये पलंग पर गद्दा बिछाया जाता है जिसकी खोलीमें स्त्रियें सिका हुवा पापड़ रख देती हैं, उसपर बैठ जानेसे हँसी होती है।

विना बांड़की खाट-विना रस्सीकी खाटपर स्त्रियें कच्चा सूत लपेट कर गद्दा बिछा देती हैं, इसपर बैठनेसे क्या गति होगी इसका आप स्वयं विचार करें और हँसें।

पलंगका सिरहाना-बैठनेके समय पलंगके सिरहानेकी ओर बैठना चाहिये, निश्चय करनेकी रीतियां ये है—

(१) पलंगका सिरहाना उत्तर या पूर्वकी ओर रखा जाता है।

(२) पलंगपर निंबू डालनेसे वह पगतानेकी ओर चला जायगा।*

(३) यदि दोनो प्रकारसे निश्चय न हो तो मध्यमें बैठना चाहिये।

स्त्रियोंका ध्यान हरसमय जँवाईको झेंपानेका रहता है। इसलिये ससुरालमें बड़ी चतुराईसे काम लेना चाहिये।

अंक छठवां

चिकना कटोरा-पानी भरी कड़ाहीमें एक कांसीका चौडा कटोरा घीसे चिकना करके उलटा रख दिया जाता है, और उसे

* चतुर कारीगरद्वारा बने हुए पलंगके सिरहाने कुछ ऊँचे होते हैं।

निकाल लेनेके लिये जँवाईको कहा जाता है, और उस समय जँवाईको चाहिये कि, अपनी अंगुलियोंमें मेण लगाकर जोरसे दबावे जिससे वह चिपक कर उठ आवेगा।

बिना आगके दीपक–स्त्रियें एक दीपक लाकर जँवाईके सामने बुझाकर कहती हैं, इसे बिना माचीसके जला दो। उस समय उस दीपक पर (गुल रहते २) कपूर, गंधक, मेनसिल इन तीनो चीजोंका पिसा हुआ चूर्ण डाल देनेसे दीपक प्रदीप्त हो जावेगा।

पाली उखाड़ना–एक कड़ाहीमें थोड़ेसे जलते हुए कोयले रखकर लोहेकी पाली (जिसके पेंदेमें कड़ी लगी रहती है) ढांपकर ऊपर गीला आटा लगा दिया जाता है, यह खीचनेसे कदापि नहीं उखड़ सक्ती। इसके उखाड़नेका सरल उपाय यही है, कि पहिले आटा हटाकर पाली उखाड़ लो। ये सब मारवाड़में होते हैं।

उलटे घड़ेमें पानी भरना–(१) पानीसे भरी हुई परातमें (मध्यमें) एक ईंट रखकर उसके ऊपर मट्टी तेलकी लंबी बत्तीवाला दीपक चासकर रख दो और उसपर घड़ा उलटा ढाप दो, परातका सब पानी घड़ामें चला जावेगा।

क्रिया दूसरी–घड़ेमें कुटी हुई मूंज भरकर आग लगा दो और वह घड़ा पानीभरी परातके मध्यमें उलटा रखदो।

सीधे घडेका पानी बाहर निकालना–एक नलिका लोहेकी चंद्राकार पोली बनवावो जिसका एक सिरा घड़ेके पानीमें डूबा रहे और दूसरा सिरा तुम अपने मुँहमें लेकर घड़ेका पानी खीचो (जैसे हुक्का पीते हैं) थोड़ासा पानी तुम्हारे मुँहमें आते ही मुँह अलग कर लो, घड़ेका सब पानी निकल

जावेगा। परंतु इस बातका ध्यान रहे कि नलिकाका भीतर-
वाला मुँह जलमें डूबा ही रहे किञ्चित भी अलग न होने पावे।

चर्खेकी माल निकालना-प्रथम मालको ढीली करो और पिछले
चमरखके छेदमेंसे थोड़ासा हिस्सा बाहर निकाल कर तक-
वामेंसे निकालो इस क्रियासे सब माल बेरेमें आ जावेगी,
फिर पीछेवाले खूंटाके छेदमेंसे तिनकाके सहारे थोड़ा
हिस्सा निकालकर खींचलो सब माल बाहर हो जावेगी।

नोट-इसी प्रकार उल्टी क्रिया द्वारा माल चढ़ाई जाती है।

रूमालमें छल्ले-चौकोन रूमालके मध्यमें एक छल्ला रखकर उसके
चारों कोनोंके ऊपरसे दूसरा छल्ला चढ़ा रूमालको स्त्रियें
तानकर पकड़ लेती हैं और कहती हैं छल्ले निकालो।
उस समय तुम अपनी अंगुलीसे रूमालके मध्यमें (जहां
छल्ले लगे हों) छिद्र कर दो. छल्ले निकल जावें, दूसरा
उपाय नहीं है।

गुप्त पिचकारी-एक रबरकी गेंदमें छोटासा छिद्र करलो और इसमें
जल (या रंग) भर कर अपने हाथमें रखो स्त्रियोंके मध्यमें
गेंद दबाते ही पिचकारी चलेगी, कोई नहीं जानेगा।

पीपलका पत्ता-पीपलका नर्म बड़ा पत्ता लेकर (नमूनानुसार)
बारीक कैंची द्वारा इस क्रियासे काटो-पहिले बीचमेंसे
खड़ा काटो परन्तु दोनों टुकड़े जुड़े रहें, पीछे इसको
बाहर और भीतरसे इस मुताबिक काटो. कि अगला मुँह
लगा रहे केवल पिछला ही कटे। एक चीप बाहरसे
दूसरी भीतरसे इस प्रकार प्रथम अर्ध भाग काटकर पश्चात
द्वितीय अर्ध भाग काटो जितनी बारीक चीपें कटेंगी उतना
ही घेरा बढ़ेगा। इस घेरेमेंसे आदमी और पलंग तो क्या
हाथी भी निकल सक्ता है। इनके अलावा नागर पानमेंसे
दुपट्टा निकालना आदि चतुराइयां भी देखी जाती हैं।
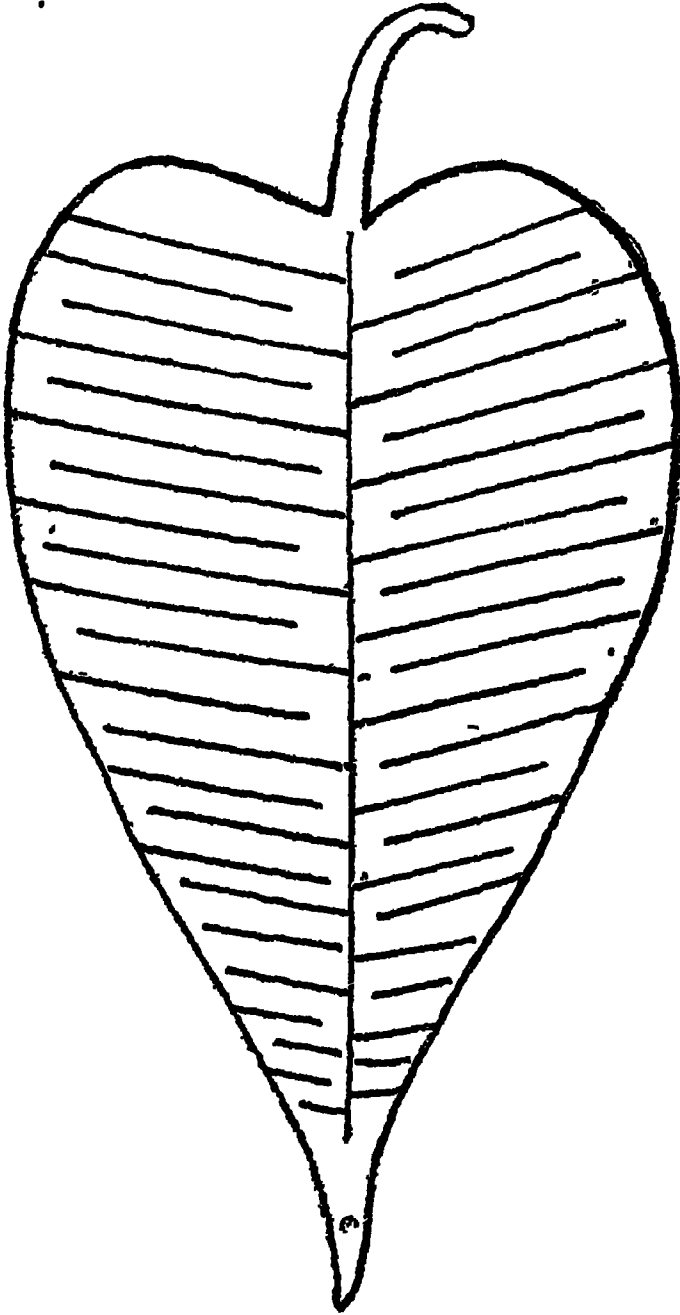
पीपलका पत्र।

अंक सातवां

कई स्थानोंमें देखा गया है कि दो चार समआयुवाले जँवाईके पास जाकर बैठते हैं, उस समय परस्पर बातचीत होते २ हिसावों तकका नम्बर आ जाता है। अस्तु. उस समय पूछने योग्य कुछ हिसाव इस अंकमें लिखते हैं।

प्रश्न-किसी भाईके यहां पाहुने आये उसने ग्वालेसे कहा-शयनागारमें इनके शयनहित पलंग बिछा दे। बतावो ग्वालेने कितने पलंग बिछाये? यदि दो दो पाहुने सोवें तो एक पलंग बच जाय, एक एक सोवें तो १ पाहुना बचे।

उत्तर-चार पाहुने तीन पलंग ॥ १ ॥

प्रश्न-एक तेली तेल बेचने किसी गांव जा रहा था, मार्गमें भैरोंजीका मंदिर मिला, वहां विनय करनेसे इसका तेल दूना होगया और ये कुछ तेल वहां चढ़ाकर आगे चला, आगे चलने पर इसे दो मंदिर और मिले; नियमानुसार वहांभी इसका तेल दूना होता गया और इसने प्रथम मंदिरके बराबर २ तेल इन मंदिरोंमें भी चढाया, पश्चात् इसके वर्तनमें किञ्चित भी तेल नहीं बचा, तब यह विवश हो गृहको लौट आया और अपनी स्त्रीसे सब हाल कह दिया। स्त्री चतुर थी वह भी कुछ तेल लेकर चली। तीनो मंदिरोंमें इसके पासका तेल दूना होता गया और यह भी जितना २ तेल मर्द चढा गया था, चढ़ा गई और गृह आकर बचे हुए तेलको तोलनेसे जान पड़ा कि जितना तेल ये स्त्री पुरुष दोनों ले गये थे बच गया। तब कहिये स्त्री कितनी और पुरुष कितना तेल ले गये और प्रत्येक मंदिरमें कितना २ तेल चढाया।

उत्तर-पुरुष ऽ।≈ स्त्री ऽ।।- प्रत्येक मंदिरमें ऽ।। चढाया ॥ २ ॥

प्रश्न-एक मणके चार बाट ऐसे बतावो कि ४० शेर तक जितना माल तौलाना हो उन्हीं चार बाटोंसे तौला जाय।

उत्तर-१-३-९-२७ जुमला ४० सेर ॥ ३ ॥

प्रश्न-कोसेके १२७ थान ७ बाकसमें इस क्रियासे रखो कि चाहे जितने थान बेचना हो बाकस न खोले जाव।

उत्तर-१-२-४-८-१६-३२-६४ ॥ ४ ॥

प्रश्न-चौदवीं हाट चौसठ मण दाणा, हाट २ से दूना लाना; तो बतावो पहली हाटसे कितना ले ?

उत्तर-ऽ।ˊ पांच छटाक ॥ ५ ॥

प्रश्न-३६१ मोती रेशमी धागोमें इस प्रकार पिरोवो कि लड़ भी ऊरे और मोती भी ऊरे हों ?

उत्तर-१९ लड़ प्रत्येक लड़में १९ मोती ॥ ६ ॥

प्रश्न-एक मनुष्य बागमें निबू लाने गया, वहां ५-७ अथवा ११ जितने चौकीदार थे सबसे करार किया कि जितने निम्बू तोड़कर लाऊंगा उनमेंसे प्रत्येकको आधा भाग देकर परिश्रम स्वरूप एक निबू वापस लेता जाऊंगा, कहो उसने कितने निंबू तोड़े और प्रत्येक चौकीदारको कितने दिये, और कितने गृह ले गया ?

उत्तर-२ तोडा २ ही ले गया चौकीदार सूखे रहे ॥ ७ ॥

प्रश्न-एक मनुष्य ससुराल गया, सासने पूछा क्या व्यापार करते हो ? जँवाई बोला हर छठे मास दूना करते हैं, सासने एक पैसा देकर कहा अबकी बार आवो तब इस पैसेको भी कमा लाना, पश्चात् जँवाई १२ वर्षमें ससुराल गया और सासने

अपने पैसेका हिसाब मांगा, तो उसकी नाड़ी सुस्त होगई।
वताओ कितना हिसाब हुवा ?

उत्तर-२६२१४४) रुपया ॥ ८ ॥

प्रश्न-जब लड़की विदा होनेलगी और पिताने कहा बेटी मांगना हो सो मांग। तब लड़की बोली-

चार सुपारी चौगुणी, सोलह वार फलाय।
मांगे बेटी लाडली, देव पिता हरपाय ॥

वताओ कितनी सुपारी हुई जिनसे जवांईका नव कर्ज चुक गया।

उत्तर-७७२६६२३०६० इतनी सुपारी हुई ॥ ९ ॥

प्रश्न-एक मनुष्यने वजाजकी दुकानपर जाकर एक गज लंबी और एक गज चौडी मलमल १) में ली दूसरा टुकड़ा आधा गज लम्बा आधा गज चौड़ा लिया। कहो उसका कितना दाम दे।

उत्तर- ।) आना ॥ १० ॥

प्रश्न-एक मनुष्य ४० गज लंबा और ४० गज चौड़ा खादीका पट्टा (जो बिछाया जाता है) लेकर दरजीके पास गया और बोला इसे दस गज लम्बा और दस गज चौड़ा, ऐसे चार पट्टे बना दे। दरजीने ऐसा ही किया। कहिये, किसको क्या लाभ हुआ।

उत्तर-दर्जीके गहरे हुये चारमेंके तीन हिस्से बच गये ॥ ११ ॥

प्रश्न-१०० सेर पीतलके १०० वर्तन वनावो जिनका तौल इस प्रकार हो, परात ऽ३॥, थाली ऽ२॥ कटोरी ऽ॥ सेर की हो।

उत्तर-परात १०, थाली १०, कटोरी ८० ॥ १२ ॥

प्रश्न-एक मनुष्यने सुना कि श्रीमाधोपुरमें टकेका भाव २४ का है उसने जैपुरसे १०) के टके ३० के भावमें खरीदकर वहां

जा २४ के भावमें बेच डाले, परन्तु श्रीमाधोपुरमें हल्ला हुआ कि जैपुरमें टकेका भाव २० का हो गया। उसने श्रीमाधोपुरमें २४ के भावसे १०) टके खरीदे और जैपुर आकर विवश हो ३० के भाव बेचे तो बताओ उसको क्या नफा नुकसान हुआ।

उत्तर- ॥) नफा ॥ १३ ॥

प्रश्न-कुछ स्त्रियें जल भरने जा रही थीं, मार्गमें एक स्त्रीने पूछा तुम कितनी हो ? उनमें एक बोली हमसे: ड़ेवढी आगे गईं दूनी पीछे जाती हैं, तूभी मिल जाय तो १०० हो जावें। बताओ कितनी स्त्रियें थीं।

उत्तर- २२ स्त्रियें थीं ॥ १४ ॥

प्रश्न-कबूतरोंके दो झुण्ड थे, पहले झुंडवालोने कहा यदि तुममेंसे २ भाई हमारे पास आ जावो तो तुम्हारे बराबर हो जांय। दूसरे झुण्डवालोने कहा यदि तुममेंसे २ यहां आ जावो तो हम तुमसे नौगुणे हो जावें। कहो कितने कितने पक्षी थे ॥

उत्तर- ३-७ ॥ १५ ॥

प्रश्न-एक स्त्रीके बच्चा उत्पन्न हुआ उसकी सास ऽ५ सूत लेकर पसारीके यहां गई और बोली-

सूत सवाई सोंठ दे, आधी दे अजवान।
घिरत बराबर तौल दे, दूना दे मिष्टान ॥

पांच सेर सूतमें पांच सेर सामान बताओ क्या क्या दे ?

उत्तर-सोंठ ऽ१।, अजवान ऽ॥।, घिरत ऽ२, मिष्टान्न (शक्कर) ऽ१ ॥ १६ ॥

प्रश्न-एक तम्बोलीके पांच लड़के थे, उसने पहिलेको १००, दूसरेको ८०, तीसरेको ६०, चौथेको ४० और पांचवेंको २० पान

देकर बोला बराबर भाव बेचना और बराबर पैसे लाना, बतावो कैसे बेचें ?

उत्तर-मंदीमें पैसेके ग्यारा २ और तेजीमें १—१ पैसे मिले प्रत्येक-को ~)॥. ॥ १७ ॥

प्रश्न-दो भाई किसी जौहरीकी दूकानपर सम मूल्यवाले ५ आभूषण बेचनेको ले गये। तीन जेवर वालेके पास जौहरीका ३०००) रुपया ऋण और दोवालेके पास २००) पाना था। उसने दोनोंसे अपनी रकम काटकर उन्हें बराबर रुपये दे दिये। कहिये प्रत्येक जेवर क्या मूल्यका था ?

उत्तर-प्रत्येक जेवर २८००) का तथा उन्हें ५४००) ५४००) रुपया मिला ॥ १८ ॥

प्रश्न-एक मनुष्यने मोदीकी दूकानपर जाकर पञ्चूनीका भाव पूछा, तब वो बोला—

छेले सेर आटा ले ले, आने सेर ले घी।
छदाम सेर दाल मुसाफर, खाकर पानी पी ॥

उसने एक टके (दो पैसे) में ऽ२॥ सेर सामान लिया।

उत्तर-आटा ऽ१॥। दाल ऽ॥ घी ऽ। ॥ १९ ॥
७ दमडी १ दमडी)।

प्रश्न-एक तालावमें गड़े हुए लक्कड़का विस्तार इस प्रकार है—
आधा कीच तिहाय जल, दसम भाग सिवाल (काई)
बावन गज ऊपर रही, याको जोड निकाल ॥

उत्तर ५८० गज ॥ २० ॥

ससुराल-रहस्य

अंक आठवां

प्रश्न-बारामेंसे दो गये तो क्या बचा ?

उत्तर-कुछ नहीं-सावन भादों सूका निकला तो काल पड गया ॥१॥

प्रश्न-सासू बहू नणद भौजाई-तीन जलेबी कै कै खाई ?

उत्तर-एक एक ॥ २ ॥

प्रश्न-एक सुपारी तीन चोट, चोट २ के दो दो टुकडे। कुल कितने हुए ?

उत्तर-चार टुकडे ॥ ३ ॥

प्रश्न-लाख टका सेर तो दो टकाकी कितनी ?

उत्तर-दो सेर ॥ ४ ॥

प्रश्न-दो चद्दरकी जुडाई दो पैसा तो तीनकी कितनी मजूरी ?

उत्तर-एक आना ॥ ५ ॥

प्रश्न-पूणी चार आना सेर तो आधसेरका कितना ?

उत्तर-दो आना ॥ ६ ॥

प्रश्न-पान टका सौ तो दो सौका कितना ?

उत्तर-दो टका ॥ ७ ॥

प्रश्न-थपड़ मारकर चुटकी वजायी तो क्या वचा ?

उत्तर-तीन ॥ ८ ॥

प्रश्न-१०० कबूतरोंपर वन्दूक चलाई चार मरे, शेष क्या वचा ?

उत्तर-कुछ नहीं, सव उड़ गये ॥ ९ ॥

प्रश्न-चतुर नारी छै वड़े वनाये, कै कै सवके वांटे आये।
पिता, पुत्र, साला, वहनोई, मामा भानजा और न कोई ?

उत्तर-दो दो क्योंकि ३ मनुष्यमें छै नाते ॥ १० ॥

❀ मुकलावा-बहार ❀

अंक नवमां

तीन प्रश्नोंका एक उत्तर।

प्रश्न-पान सड़े घोड़ा अड़े, विद्या वीसर जाय ॥
जगरा पर वाटी जले, चेला कौन उपाय ॥ १ ॥
गाड़ी खड़ी उजाड़में, कांटा लागे पांव ॥
गोरी सूखे सेजमें, कह चेला किण दांव ॥ २ ॥
दांतां काई जम रही, ऊंट उबीणा जाय ॥
हाट्यां ताला जुड़ रह्या, कह चेला किण दांय ॥ ३ ॥
मोती वड़ो और मोल कम, समदर आड़ी पाल ॥
सूरवीर पाछा भग्या, चेला अर्थ निकाल ॥ ४ ॥
दुस्मन आया सहरमें, जाड़ो रुकियो नांय ॥
तास खेल मन ना हस्यां, चेला कहो उपाय ॥ ५ ॥
हाथ छिलौड़ी झुल रही, भेली भाव न खाय ॥
नारी चले उतावली, चेला अर्थ बताय ॥ ६ ॥
लोटे गधा मुसाणमें, भलै उबीणी जाय ॥
दुस्मन माथे चढ़ रह्या, चेला कौन उपाय ॥ ७ ॥
अवतक अग्नी ना जली, महल न आवै पौन ॥
भीवर सुता बिलखत फिरै, याको कारण कौन ॥ ८ ॥
ला रे चेला ऐसा नर, पीर बवर्जी भिस्ती खर ॥ ९ ॥
जंगल जानेका रास्ता क्यों, डाकोत हतासा क्यों ॥ १० ॥

उत्तर-(१) फेरो (२) जोड़ी लावो (३) कूंची बिना (४) पानी नही (५) कोट बिना (६) फोड़ो (७) छतरी बिना (८) जाली नही (९) ब्राह्मण।

अंक दसवां

प्रश्न-एक वृद्ध पुरुष और तरुण स्त्री ऊंटपर बैठे जा रहे थे, उन्हें मार्गमें एक नाई मिला और पूछा-तुममें परस्पर क्या नाता है?

वृद्ध बोला-यांके म्हांके आवो जावो, सीर भवे छे खेती।
ईंकी सासू मेरी सासू, आपसमें मां बेटी॥ १॥

प्रश्न-एक ऊंटपर एक वृद्धा और तरुण दो स्त्री बैठी जा रही थीं, मार्गमें एक मनुष्यने उनका परस्पर नाता पूछा।

वृद्धा बोली-सासूकी तो सासू लागूं, सुसराकी लागूं माता।
सगा खसमकी दादी लागूं, ये ही म्हारा नाता॥ २॥

प्रश्न-एक मनुष्य और स्त्री कपासके खेतमें कपास उतार रहे थे; उनसे किसीने पूछा, दोनों कौन हो?

पुरुष बोला-तुझे बताऊं आ मेरे पास।
इसकी मेरी एकही सास॥ ३॥

प्रश्न-एक मनुष्य ससुराल गया एक कोनेमें बैठी हुई नव यौवनाकी ओर संकेत करके अपनी सालीसे पूंछा कि यह कौन है?

साली बोली-आपके सालेका साला, जिसके कानमें मोती बाला।
ये उसके भाणजकी भूवा, समझो तुम नाता क्या हूवा॥ ४॥

प्रश्न-एक मनुष्य किसी लड़केके साथ अन्य नगरको जा रहा था; मार्गमें एक अपरिचित मनुष्यने पूंछा तू इसका क्या लगता है?

पुरुष बोला-मामाका तो मामा लागूं, नानाका लागूं साला।
मां औ नानी बहन भाणजी, दालमें नहीं कुछ काला॥५॥

प्रश्न—एक मनुष्यको किसी लड़केके साथ मश्करी करते देख एक मार्गगामीने पूछा यह तेरा क्या लगता है ?

वह बोला—मेरे दादसराकी पोतीकी भतीजीके दादाके सालाके भाणजेका छोटा भाई है ॥ ६ ॥

उक्त प्रश्नोका उत्तर।

(१) श्वसुर वहू (४) उसकी स्त्री
(२) दादस वहू (५) भाणजीका बेटा
(३) सालाहेली नन्दोई (६) साला

अंक ग्यारहवां

ससुरालानन्द।

प्रिय मित्रो! यह ग्यारहवां अंक कहानीके रूपमें आरंभ करता हूं, इसके द्वारा आपको हरेक वस्तुके बांधने छुडानेकी रीतियां तथा अन्यान्य वातोका ज्ञान हो जावेगा, साथही मनोरंजनार्थ हास्यभरी मश्करियां भी मिलगी।

नगर फतेहपुरमें निवासी सेठ निर्भयरामजी बालविवाहको लोकविरुद्ध जानते हुए भी प्रेमके वशीभूत हो अपने कुलदीपक सुपुत्र मदनलालका विवाह शहर चूरूवाले द्रव्य-पात्र सेठ सांवलरामजीकी सुकन्या चन्द्रकिरण (यथा नाम तथा गुणवाली) के साथ ७ वर्षकी आयुमें ही अत्यन्त समारोह एवं आनन्दके साथ समाजके ताने सुनते हुए सहस्त्रों रुपये व्यय करके कर दिया।

❀ ससुराल-रहस्य ❀

आज मदनलालकी आयु अठारह वर्षकी हुई जानकर सेठजीने इनके मुकलावे (गौने) का दिन निश्चय कर लिया। बाजे बजने लगे, बन्दूकें चलायी जाने लगीं, प्रातःकालके सुहावने समयमें मदनलाल अपने ५-७ साथियोंके सहित ऊंटोंपर चढ़ शहर चूरूकी ओर रवाना हुए। सायंकालको चार बजे थे लोग निश्चित नगरके कांकडमें पहुँच गये और नित्यकर्मोंसे निवृत्त होकर नगरमें जानेके विचारसे वहीपर ऊंटोंकी पीठ खाली करदी। मदनलालके साथी तो निबटनेको चले गये, पर मदनलाल वहीं तालाबके तटपर गलीचा बिछाकर बैठ गया और स्वतन्त्र पक्षियोंके कल-कल शब्दका आनन्द लेने लगा। उसी समय उस तालाबपर १५-२० स्त्रियोंका एक झुण्ड आया इसी झुण्डमें इस पुस्तककी प्रधान नायिका चन्द्रकिरण भी थी, इसकी आयु इस समय लगभग १४-१५ वर्षकी थी। कामदेव भगवान्ने इसके मुखमण्डलको अपने मुकुटकी झलकसे प्रदीप्त कर रखा था।

अहाहा! कामदेवकी महिमा अवश्य ही विलक्षण है जिसने नारदजी जैसे देवर्षि, कपिल जैसे महामुनि और विश्वामित्र जैसे तपस्वीको भी परास्त कर लिया था, तो फिर इस १४ वर्षकी बालिकाकी इतनी सामर्थ्य कहां जो इसके फन्देसे बच सके। अस्तु, वह झुण्ड तालावके निकट आया, तब चन्द्रकिरण बोली-

बहिनो! ४ बज गए, परंतु अभीतक सूर्यदेवकी तप्त किरणें शान्त नहीं हुईं, मेरा मस्तक मारे गर्मीके भन्ना रहा है, मेरा चित्त चाहता है कि कुछ समय इन वृक्षोंकी शीतल छायामें बैठकर शांत होऊं, तुम लोग जाकर निबट आओ, मैं यहां ही बैठी हूं। इतना सुनते ही सखियें तो झाड़ियोंमें जा घुसीं और चंद्रकिरण मदनलालके निकट जाकर तालाबमें जो सूखा हुवा जाल था

उसकी ओर लक्ष्यकर बोली कि-

सरवर तो सूघड़ भरयो, आदि सुरंगी पाल।
मै सूखी मेरे पीव बिन, तू क्यूं सूक्यो जाल॥

तब मदनलाल बोला कि-

घूम घुमेरो घाघरो, कणी चिलकतो हार।
मै तने पूछूं हे सखी, कौन पुरुषकी नार॥

चंद्रकिरण-बालपणामें व्याह दी, कदे न पूछी बात।
अन खाऊं मेरे बापको, दुखसूं काटूं रात॥

मदनलाल-पाती भेज बुलाय लो, विप्र गुवाले हाथ।
साथ पधारो सासरे, सुखसूं काटो रात॥

चंद्रकिरण-माय बाप आंधा बन्या, पतो न मोकूं याद।
ईश्वरसे नित प्रति करूं, या कारण फरियाद॥

जब मदनलाल उसपर आशिक हो बोला कि-

सोनामें पीली करूं, मोत्यां बिचली लाल।
परणयोडाने छोड़कर, साथ हमारी चाल॥

चंद्रकिरण-पृथ्वी अन्न न नीपजे, तारा नहि मण्डल होय।
पानीमें दीपक जलै, नहिं नार पराई होय॥
अरे मुसाफिर बावला, परातिय देख लुभाय।
ये शिकार है सिहकी, गीदड़ किसविध खाय॥

इन दोनोंमें इस प्रकार बातें हो रहीं थीं उसी समय चंद्रकिरण की सखियें आ गयीं, जिन्हें देख चंद्रकिरण खड़ी हो गयी और बोली, बहनो! थोडी देर यहां बैठो. देखो इस ठंडी २ हवासे चित्त कैसा प्रफुल्लित होता है! इस प्रकार सुनकर एक सखी चंद्रकिरणकी भुजा पकडकर बोली, उठ! अभीसे कच्ची कुँवारी पर ही कहांका बुढापा छा गया? इतना सुनते ही चंद्रकिरण सखियोंके साथ चली गयी, परंतु प्रेमका चिह्न उसके हृदय-पटल-पर अंकित हो चुका था।

❀ ससुराल-रहस्य ❀

अंक बारहवां

हे परमात्मा! मने संसारमें क्यूं जनम दियो? यूंई तडपतां २ प्राण निकल जासी! अक कदे प्राणप्यारेका भी दर्शन होसी? प्रेम! प्रेम! हा प्रेम!! या किसीक चीज है जिकीने छोटासा बच्चासे लेकर हाथी जिसा बडा जीवधारी तक सब जाणे हैं। ई, प्रेमके कारण आदमी चोरी करै, डाका मारे, धर्मने तिलाञ्जली दे पण हाय! मैं हालतक यो प्रेम देख्यो भी नहीं, बालापणमें सखियांके साथ गुड़ियांसे घणोई प्रेम कर्यो, पण अब तो वो प्रेम विष के बराबर लागे है। अब तो प्राणप्याराको प्रेम देखबा ताईं चित्त दिन दिन व्याकुल हुयो जाय है। मेरी संगकी सहेलियां तो कईवार सासरे जा २ कर प्राणप्याराका दर्शन तथा सासू सुसराकी सेवा कर भी आयीं, पण बेरो नहीं अक विधाता! मेरा करममें किसा खोटा आंक घाल्या है, हे प्रभो! ये मेरा कुणसे जनमका पाप उघड्या है, के मैं आगला जन्ममें गौ ब्राह्मणोंने सताया था, अक कन्याने गाल काढी थी, अक निर्दोष विधवाके कलंक लगायो थो, अक सासू सुसराको जी दुखायो, अक प्राणप्याराका बचनांको अपमान कर्यो इसा कुणसा पाप कर्या ज्यांको प्रायश्चित्त इत्ता विरहसूं करनो पड़े है, कि प्राणपियाराका दर्शनांको भी घाटो पड़ गयो, मायड़ी भी किसाक बैर काढ्या जो पालपोस कर यू बिरह दुःख सहबा ताईं इत्ती बडी करदी जनमती नेई जहरकी घूंटी दे देती तो यो दुख क्यों देखनो पड़तो! कोई २ वखत तो मनमें इसी आवे है अक मैं कोई घर बासो कर लूं और जवानीको मजो लूटूं? राम २ हे परमात्मा! आज मेरी बुद्धी कठे चली गयी? मेरो विचार इसो क्यूं हुयो? मेरी अक्कलपर भाटा

क्यूं पड़ गया? हे परमात्मा! तुई बचा इसा पापसूं! इसो अन्याय होवासूं तो धरती रसातलने चली जासी, मेरा दोनूं कुल कलंकित हो जासी, मेरा दोनूं जमारा बिगड़ जासी, पिछला पापा मूं तो यो संताप देखनो पड़े है तथा इसो काम होवासूं तो कठे भी कोई भी जनममें गती होणी नही (उसासो मारकर) साची बात है।

कबीर कमाई आपनी, कदे न निष्फल जाय।
बोय पेड़ बबूलका, आम कहां सूं खाय॥

म्हारी करणी ही इसी है दुसराने दोष क्यूं देणो? पण ई मनने किसतरां समभाऊं यो तो किसी तरियां माने नही के मैं मारारे चली जाऊं? अपना मूडासूं मां बापांने बोलूं? सखियांने कहकर मुकलावा ताई कहवाऊं? नही २ यां बातांमें तो आपणो ही बेशर्मपणो दीखे है के बाने दीखतो कोनी होसी? अक मैं दिनरात उदास मुँह फिरबो करूं हूं, नाज भावे नहीं, वाने सो क्यूं दीखे है, पण दीखे है तो इंको उपाय क्यूं कोनी करें?

हमारे प्रेमी पाठक अवश्य जान गये होंगे कि यह विरहिणी स्त्री चंद्रकिरण ही है। यह जबसे अपने पति मदनलालसे (विना पहिचाने) तालाबपर बात चीत कर गयी है, तबहीसे इसे अपने पतिकी याद आ रही है। यह ऊपर लिखी बातें बुदबुदाती हुई विलाप कर रही है। अश्रुधारसे चोली निचोड़ने योग्य हो गयी है। सत्य है—

चंद्र विहूनी यामिनी, नदी विहूनी वारि।
मेघ विहूनी दामिनी, (यूं) पिया विहूनी नारि॥

चंद्रकिरण स्वविचारांमें इतनी तल्लीन थी, कि वह कहां है, क्या कर रही है इसकी कुछ भी उसे सुधि नही थी। सुधि केवल इतनी

ही थी कि अश्रुधारा द्वारा कुर्सी (जिसपर वह बैठी थी) बही जा रही थी। अकस्मात बाहरसे छतपर बोलनेवाले कौवेके शब्दने इसे चौंका दिया, यह सावधान हो अश्रु पोंछ छतपर आई और पृथिवी परसे एक सुन्दर सा तिनका उठा अपनी अंगुलियोंसे नाप-कर कुछ हिसाबसा किया, जिससे इसका मुरझाया हुआ मुँह प्रफुल्लित हो उठा, इसने उसी समय अपनी प्यारी चंपाको पुकार-कर कहा, बहन! आज तो जान पड़ता है कि प्यासे पपीहाकी विनय मेघदेवने सुन ली, स्वातीकी बूंदें बरसनेवाली हैं।

सुनज्यो आज सहेलडी, कर मेरो सिणगार।
बिधिगत-जानी ना पडै, मिलै आज भरतार॥
म्हलां बोले कागलो, आंख फरूखत आज।
पिवजी बेगा आवसी, सरसी मनका काज॥

इस प्रकार दोनों सखियें प्रफुल्लित मुँह बातें करती हुई नीचे उतरीं। आज चन्द्रकिरणको निश्चय है कि प्राणप्यारेका संयोग होगा, क्योंकि आज यह मदनलालको तालाबपर देख आयी है। यद्यपि इसने उसको (मदनलालको) पहिचाना नहीं था, तथापि आजही मुकलावेके लिये इसके पति पधारनेवाले थे इसलिये इतना अवश्य जान गयी थी कि ये इसी नगरमें किसीके पाहुने (जँवाई) हैं, शायद तेरेही पति हों और अभी काक-शकुनने इसे निश्चय भी हो गया है।

काकशकुन।

काकस्य वचनं श्रुत्वा गृहीत्वा तृणमुत्तमम्।
त्रयोदश समायुक्तं मुनिभं सप्तमाचरेत्॥
लाभं नष्टं महासौख्यं भोजनं प्रियदर्शनम्।
कलहो मरणं चैव तत् काकवचनं फलम्॥

ॐ मुकलावा-बहार ॐ

राजपूतानेमें कौवेके शब्दपर बड़ा शकुन देखा जाता है. इसके शकुनकी रीति यह है कि मनुष्य जिस समय किसी चितामें बैठा हो और अचानक काक बोले तो पृथ्वीपरसे एक तिनका उठावे. उसे अपनी अंगुलियोंसे नापे जितना अंगुल हो उसमें १३ और जोड़कर ७ का भाग करे: शेषको इस प्रकार समझ लें—१ अंगुल तिनका बचे तो लाभ. २ में नुकसान, ३ में चिन्ता. ४ में मीठा भोजन, ५ में प्यारेके दर्शन, ६ में कलह और शून्य ० में मृत्यु जाने।

ॐ अंक तेरहवां ॐ

सायंकालके समय मदनलाल ससुरालमें गया, सामने छज्जेमें खड़ी हुई चन्द्रकिरणपर प्रेमदृष्टि गिरी. चन्द्रकिरणको अपने शब्दों (जो कि तालावपर मदनलालसे कहकर आयी थी। 'ये शिकार है सिंहकी, गीदड़ किसविध खाय' ?) का स्मरण आते ही बड़ा पश्चात्ताप हुआ, मुंह फेरकर सकुचाती हुई कमरेमें चली गयी।

देखति पिय देख न सकति, देखत अति सकुचाय।
देख्यो अनदेख्यो करे, देख्यो मुख पलटाय ॥ १ ॥

सजी हुई बैठकमें मदनलालको डेरा दिलाया, रसोईकी तय्यारी होने लगी। नगरकी छोटी २ बालिकाएं इन्हें चहुं ओरसे घेरकर खड़ी हो गयीं और अपने मनमें अभिलाषा करने लगीं, कि ये (मदनलाल) हमसे कुछ बोलें। रसोई तयार होनेकी सूचना पाते ही मदनलाल अपने साथियोंके साथ जीमनेको पधारे। रसोईगृहमें चौकियोंपर स्वच्छ जलसे धुले हुए चांदीके थाल कटोरियां और जल भरे गिलास सजे हुए हैं। सब जाकर अपने

अपने स्थानपर बैठ गये, परोसगारी आरंभ हुई। परोसगारीके पश्चात् मदनलाल बोला—

सीरो तो बढ़िया बन्यो, मांय मिश्रीका रवा।
सालाजीने अठे बुलावो, रुच २ लेस्यां कवा॥

बाबू बालकिशनको बुलाकर मदनलालके साथ बिठाया। जीमनवार शुरुआत होनेवाली थी, कि उसी समय रत्नकुंवरी (मदनलालकी साली) बोली—

र० कुं०—आयाजी थे पावणां, घणां दिनारो चाव।
पहली थाल छुड़ायकर, पाछे ग्रास उठाय॥

थाल छुडावनो।

मदनलाल—घेवर तो बरबर बन्या, खासा घिरत मिलाय।
खटरस व्यञ्जन बहु बन्या, धरद्या थालमें ल्याय॥
चौकी ऊपर धरदिया, कांसो कियो तयार।
थाल जु छोडो सालियां, जीमें राजकँवार॥

झूमर—(मदनका भाई)—कडकन खाट मड़कना पाया,
तले तले मोती छिटकाया।
तोडूं मोती पोऊं हार, बांधू थारा सब सिणगार॥
बाजू बांधू कंकण बांधू, बांधू कानकी बाली।
थारा पियाकी सेज बांधू, छोडो म्हारी थाली॥
पिगल देसकी पदमणी, कासो कियो तयार।
इस विधि थाल छुड़ाकर, जीमें राजकँवार॥

चन्दर—(मदनका भाई) मैदाको सीरो कन्यो, पुडी करी पचास॥
बांध्यो थारो हरयो पोमचो, छूट्यो म्हारो ग्रास॥

जोशीजी-चांवल परस्या डेडसो, परस्या मूग पचास।
बांध्यो थारो घूम घाघरो, छूट्यो म्हारो आस॥

भोजन आरम्भ हुआ, सामने छतपर स्त्रियें मधुर स्वरसे गीत गारही हैं और मदनलाल आनन्दसे नन्हें २ ग्रास ले २ कर जीम रहे हैं। जीमनेके पश्चात् गुवालेने हाथ धुलाया और रत्नकुंवरि बोली, जीजाजी! थारा सागावालांने तो डेरामें भेज द्यो और आप सामने छतपर पधारो।

इतनी सुनते ही भ्रमर बोल्यो, भाईजी! चाहे चन्दर डेरामें चल्यो जासी पण मैं तो थारे सागे ही रहस्यूं। या सुन चन्दर बोल्यो और भायो भाबी कने सोसो, जद तू कठे जासी? जद तो डेराहीमें आणो पड़सी। सुनते ही सब स्त्रियें मुँहमें रुमाल दबाकर हँसने लगीं और भ्रमर कड़ककर बोला, म्हारा मनमें आसी बठे सो जास्यां तने ई बात सूं के पश्चायती! देख ले भाया तू कालसूं इने समझातो आयो है। मदनलाल बोला जोशीजी! आपलोग डेरामें पधारो और थांने (भ्रमर-चन्दरने) नीद आयां पाछे थांरे कने भेज देस्यां। सुनते ही भ्रमर बोला हांजी सोस्यां क्यूं म्हे तो लुगायांका गीत सुणस्यां। चन्दरने चाहे तो तू अभी भेज दे। चाहे फेरु भेज दिये, जोशीजी हंसते २ नीचे उतर बैठकमें गये और भ्रमर बोल्यो- भाया इब देखेंके है आगीं पग बढाना, म्हारे तो बीजको बाजरो तूं ही है मैं तो फालतू हां जब साली बोली वह कैयां रस्तो बन्ध्यो है, सो छुड़ाकर जाणो पड़सी।

मदनलाल-सखियां मंगल गावती, भेली हुई तमाम।
बन्ध्यो मारग छुडावनो, सूंप्यो म्हाने काम॥
नीलो घोडी खमखमी, मोत्यां जड़ी लगाम।
बांध्यो मारग छोड़द्यो, साल्यां करां सलाम॥

इस प्रकार मार्ग छुडाकर छतपर पहुँचे। देखा तो २०-२५ समवयस्क तरुणी सोलहों शृंगार बत्तीसो आभूषण करके सुसज्जित बैठी हुई इन्हीकी ओर निहार रही हैं। वहां पहुँचते ही एक बोली, ए रतनी! भोत बार लगाई सगली बातां तूई करली अक क्यूं बाकी भी छोडी? रतनी बोली, ए बीरा! मैं के करूं मैं तो क्यूं ई बातां कोनी करी. पण ये बापका मंघावणा काचरां (चन्दर-झूमर) इत्ती बार कर दी, अब ये कँवरजी थारा और सारी रात थारी खूब बातां करो इब थे मनकी काढ ल्यो।

अंक चौदहवां

बिस्तरोंसे सुसज्जित पलंगपर मदनलाल बैठने लगा उस समय सालाहेली बोली, नन्दोईजो पलंग बांध्योडो है छुड़ाकर बैठ ज्यो।

मदन०—मरकन ईस करकना पाया, कीमत रुपया सौ में लाया।
पलँग वन्यो रेशमकी डोर, पागां ऊपर नाचे मोर।
आज छुडाउं बिस्वाबीस, साली बांधू पूरी तीस॥
पांच सात सहेली बांधूं, बांधूं पनघट कूंवा।
मौसी जीजी दादी ताई, बांधूं थारी भूवा॥
मंगल गावें कामन्या, पहल्यां हंदी सैल।
बन्ध्यो ढोलो छुटगयो, बैठां तीनूं छैल॥

झूमर०—काली ईस कमलका पागा, ढाल्यो बणतां दस दिन लाग्या।
ढोल्यो बुनियो बिस्वाबीस, साली बांधू दो कम तीस॥
साली बांध सहेली बांधूं, बांधूं घरको नाई।
बन्ध्यो छोडो ढोलियो, बैठे चतर जँवाई॥

सालाहेली (चन्दरसे) देखो कंवर साब ! थे भी क्यूं बोलो।

चन्दर-स्यो म्हारे कनके यादा है ?

ढोल्यो तो सुघड़ घड्यो, रेशम खिंचिया तंग।
बन्ध्यो ढोल्यो खोलज्यो, छैला माणे रंग॥

सालाहेली-ढोल्यो आप छुडाइयो. कर मनमें उन्माद।
गादी तकिया सब बन्ध्या. थांभी रखज्यो याद॥

मदनलाल-जाजम पिलंगापर बिछी. छापा छापिया तीन।
मांग्यासुं मिलसी नहीं. पण थे करद्यो बक्सीस॥

भ्रमर-मोत्यां केरी झालरी, गादी करी तयार।
गादी छोडो हे सखी, बैठे राजकुमार॥

चन्दर-सुत कत्यो नागोरमें. जैपुर लागी छाप।
खोज्यां फिर मिलसी नहीं. तकियो छोड़ो आप॥

इस प्रकार बातों ही बातोंमें कुछ देर होगयी. तब भ्रमर बोला-भाया तनें तो भई भाबीका चावमें बेरो कोनी पड़े. पण म्हारा तो खड्यां खड्यां पग दुखण लाग गा। सुनते ही रतनकुँवरि बोली, कँवरसाब थो नानीको घर कोनी हाल तो थांरे कने सारी रात हाजरी सधास्यां; हालई किणतरां पग दुख चाल्या। तब चन्दर ठीक समय पाकर बोला-ले अब खिड़ो, मैं तो पहलांई बांन्यां थो. इब खड्यो रह रातभर, देखां किसोक हिम्हत है। चन्दरकी बातें सुन सब स्त्री खिलखिला पड़ीं, परन्तु भ्रमरको यह बात सहन न हो सकी वह स्त्रियोंको लक्ष करके बोला 'म्हजी. थे पराये बल बोलो हो। बेरो पड़सी म्हारे आगे खड्या रयां' इतना कह, तीनों भाई पलंगपर बैठ गये और रतनकुँवरि अपने कोमल एवं मेंहदीकी सुर्खीसे झलकते हुए करोंमें स्वर्णका पानदान, पानकी-

डियोंसे सजा हुआ लेकर झमझमाती हुई आकर सम्मुख खडी हो गयी, तीनों भाइयोंने पान खाये।

स्त्रियोंने सलहज सीठणों मधुर स्वरसे गाने आरंभ किये। कुछ समय पश्चात् रतनकुँवारि तीन चार गिलास और एक स्वच्छ एव निर्मल जलसे भरी हुई झारी लेआयी और तीनोंको एक एक गिलास जल देकर बोली, पानी छुड़ाकर पीज्यो।

झूमर-मेहरवान, अइयां कैयां छुड़ायो जाव?

थे बांधकर वताओ, आपां भी छुड़ादेस्यां?

रतनकुँवारि (सरमाती हुई)

कोरो करवो कुंकूं वरणो, रात रह्यो रोहीमें निरणो।
चावें पान उगालें धाणी, म्हे बांधां मरदांको पाणी॥
झारी निर्मल जल भरी, साली लिया तयार।
बंध्यो जल पीवो मती, थे हो राजकुँवार॥

झूमर-(डरतो सो) ले भाया छुटा, सासरो हेक मश्करी?

मदनलाल-गोरी गागर शिर धरी, चाली भरण तलाव।
मुँह धोवे कुल्ला करे, मोतियन दिपै लिलाड़॥
एक मोती झड़ पड़्यो, बीजे लियो उठाय।
वीं पर पड़्ज्यों बीजली, डस ज्यों नागण जाय॥
एडीकी गेड़ी करूं, तनको तरकस तीर।
नैनांका भाला करू, मारूं चतर अमीर॥
चढ़ती मारूं रामगढ, ऊतरती लाहोर।
बीजे मारूं मेडते, जापहुंचूं नागोर॥
जहां वसे लाखी बिणजारी, हाथ लियां कञ्चनकी झारी।
कह बिणजारी झारीको मोल, सत्तर म्होर लगैंगे बोल॥

तैं बिणजारी थोड़ा कह्या, मेरा मन भोतमें रह्या।
आगलीके एरो बेरो, पाछलीके लग्यो बछेरो॥
बिचली है वा घरकी नार, कर निकली सोला सिणगार।
पानी है छापरके ताल, पानी है सूवाकी चाल।
बोलो सूवा अमृत वाणी, छोड़ो भारी पीवां पाणी॥

झूमर-कोरो करवो कुंकूं वरणों, रात रह्यो रोहीमें निरणों।
चावां पान उगाळां धाणी, कुण बांधे मरदांको पानी॥
पानी है समदरकी पाल, पानी कीमत मोती लाल।
पानी है गोरीके गाल, पानी बिन फीका है ताल॥
पानी बिना सुखता दाग, पानी बिना लागती आग।
पानी सब प्राणीका प्राण, पानी वरुण रूप भगवान्॥
बांगां मैना सूवटा, बोले अमृत वाणी।
बांधूं थारो कुटम कबीलो, छोड़ो म्हारो पाणी॥

चंदर-बैठ डालपर तीतर बोले, बोले समय पिछानी।
बन्ध्यां थारां हुयो पोमचो. छूट्यो म्हारो पानी॥

एक स्त्री (चंदरसे) बाबू साब! आप तो जपासेमेंई पानी छुड़ा दियो, देखां एक बेर फेरूं बोलो—

चंदर-कुवेमें जु कबूतर बोल्यो, बोल्यो अमृत वाणी।
सालीजीको घूम घाघरो, छूट्यो म्हारो पाणी॥

सालाहेली मुस्क्याती हुई पानदान लेकर सन्मुख खड़ी हो बोली, कुँवर साहेब! पानदान छुड़ाकर पान इलायची उठाल्यो।

मदनलाल-पानदान सौगातसूं, सज्यो हुयो तय्यार।
सालहेली ले खड़ी, सन्मुख राजकँवार॥
पान सुपारी एलची, डोडा लौंग तमार (तमाल-जरदा)
बन्ध्यां छोड़ो पानदान, खावें हम सुकुमार॥

अंक पंद्रहवां

गांवकी आई हुई स्त्रियोंसे एक बोली, कोईने जीजाजी मिल्या, कोईने बहनोई मिल्या, कोईने नणदोई मिल्या, कोईने भँवरजी मिल्या और भँवरजीने तो सगली प्यारी ही प्यारी मिलगयीं, परन्तु म्हे तो सूकाई रह्या। म्हाने तो एक आंजला पतासांके सिवाय क्यूं वी मिलतो दीखे नही।

इतनी बात सुनते ही झूमर बोला-साब! म्हें थांसू भी निपत्तर रह्या जो म्हाने पतासा भी मिलता दीखे नहीं।

चंदर बोल्यो-यार! तू क्यू फिकर करे है, आपां यां सबसूं ऊँचा रहस्यां, आपां ई झूमका मांसूं आछी लागसी जिकीने छांट २ कर ले चालस्यां। तू याने (लुगायांने) पूछाले अक ये ई बातपर राजी है कनी, समंदरमें पड़कर भी के सुकाई रहस्यां?

झूमर बोला-अरे भाई! "धन धणियांको, गुवालके हाथ लाकड़ी" मनका लाडू खावा सूं पेट भरे नहीं हां। तने चार दिनकी छुट्टी है जित्ती मश्करी ठठोली करणी हो कर ले, पण यांने सागे ले चालबो हँसी ठट्ठो कोनी?

चन्दर बोला-ऊंह, तन्ने के मालम मेरे कने कच्चा कलवाकी सेवना है जिकांने हुकम दियां पाछे याने इदरकी इदर उठा ले जासी, पण जलदी नही करणी, जलदीसुं काम बिगड़ जाया करे है, जातीभगत देखी जासी।

इस प्रकार इन दोनोंको परस्पर ठठोलीं देख स्त्रियें मुंहमें रूमाल दबाकर इनकी ओर तीक्ष्ण कटाक्ष करती हुई मुस्कराने लगीं। एक

❀ मुकलावा-बहार ❀

स्त्री बोली-भ्रमरलालजी ! मैं तो थारी भाण लागूं हूं. मेरे तांई चूंदड़ी ल्याया हो कना ?

भ्रमर बोल्यो-साव ! अब तो थे म्हारे लागवा लायक भाण नही रह्या, खाटके लागवा लायक वाण हो गया, क्यूं कथे म्हारा जीजाजीने छोड़कर अठे घरवासो कर लियो। चालो थाने म्हारा जीजाजीके घरां पूंचा चूं पाछे चूंदड़ी भी उढा देस्यूं और अठे रह्यांसे तो सालाहेलीई लागस्यो क्यूंक यो तो सासरो है "टोपीवाले सगरे सारे, सारे ,,उ उघारे" अठे तो सगला साला ही साला है।

इस प्रकार भ्रमरका उत्तर पा वह स्त्री लज्जित हो गई. तब दूसरी स्त्री बोली-ले और ओढ़ ले ई बोराजी कनांसूं चूंदड़ी? जाने कोनी छोटा जित्ता खोटा होया करे है, देख ले वापका मंबा-वणां कैयां चपर चपर जीभ चलावे हैं।

स्त्रियोने मदनलालसे कहा-कँवर साव ! थे तो बैठगया पण म्हारा तो ऊभां २ पग दूखवा लाग गया, म्हाने भी बैठणो (गादी) घालो जिको म्हे भी बैठां।

भ्रमर बोल्यो थे तो म्हारे कनासुं रातभर हाजरी सधावे था अब देख ल्यो थेई बैठवा तांई हुकम मांगो हो; अब बैठवाको काम नहीं है "आज तुम्हारी काल हमारी, सबका नम्बर पारी पारी" अब म्हे थारे कनां रातभर हाजरी सधास्यां (चन्दर सुं) ऊठ! तूं भी यांके कानी बोले थो तूं भी खड़ो होजा-

मदनलाल गादी ढाले-

गादी मुरधर देसकी, सीमी छे अजमेर।
खोली जयपुरमें लगी, झालर जैसलमेर॥
लूम्यां लागां मेड़ते, मोतीगढ़ नागोर।
तारा अलवरमें जड्या, जाली गढ़ चित्तौर॥

हीरा पन्ना चमकता, बीच सुरङ्गी लाल ।
बैठो राज सहेलियो, गादी दीन्हीं ढाल ॥
पगांमें पायल बाजणी, घूंघट वाली कामनी ।
कपड़ा जुलाहे हद बुणिया, ताना रेशमका तणिया ॥
गादी रंगो है रङ्गरेज, रंगी ल्हेरियाकी बेज ।
किरमची केसरियारङ्ग ल्याव, जोपर बीराजो धणआव ॥
पहली मेलज्यो ना पांव, बन्ध्या खोलज्यो बुणाव ।
बन्ध्या सोलहू शृंगार, बांध्या आभूषण है नार ! ॥
बांधू स्यालूं ओढनिया ।
इतनी वस्तु छुड़ायकर, बैठो सब जनिया ।

झूमर–गढ दिल्ली गढ आगरो, गढ है बीकानेर ।
भलो बसायो भाटियां, गढ है जैसलमेर ॥
बीकान्यांको ढोलियो, घड़ियो घाट सुं घाट ।
घड़ियो ज्यूं बुनियो नहीं, बुनियो पीले पाट ॥
सातांने सतरञ्ज द्यां, सोलांने सिणगार ।
बत्तीसाने बैठणो, छत्तीसांने हार ॥
गादी पाट पटम्बरकी, गादी रेशम तनियां ।
गादी राजा भोजकी, बैठो सब सखियां ॥

लुगायां–(चंद्र सुं) कंवर साब ! थे किसा रांडका जँवाई हो, थे भी बोलो–

चन्द्र–रांडका जँवाई बनावो, अक सुहागणका यातो थारे जुम्माकी बात है । ल्यो म्हे बी गादी ढाल देवां–

❀ मुकलावा-बहार ❀

आवोजी कन्हैयालाल, आपकूं दिखाऊं ख्याल ।
केशरानां बागमें, एक मृगनैनी आई है ॥
हाथ लाल पांव लाल, पांवकी पाजेव लाल ।
सारीसी लुगाइयोंमें, गादी बांधन आई है ॥
गाद्दी हीरां जड़ी लखचार ।
जोमे लालों कई हजार ॥
बीजलीसी दिपे और चंद्रसी उजाल ।
बैठो प्यारी सहेलियो गादी दीन्ही ढाल ॥

स्त्रियोंके बैठ जानेके पश्चात् झूमर वोला-थारी भोत सधगई अब दो चार चीजा म्हे वी बांधा जिकी थे छुडावो, देखो—

झूमर—चालतीकी चाल बांधूं, एडी चोटी लेयकर ।
छाप छल्ला थारा बांधूं, घाघरो घुमकाय्कर ॥
माई बाप थारा बांधूं, जाया था दुख पायकर ।
सासू सुसरा थारा बांधूं, ल्याया थाने ब्याहकर ॥
सखी सहेली थारी बांधूं, बैठोगी कित जायकर ।
और जिठानी थारी बांधूं, बोलोगी कित जायकर ॥
थारा पियाकी सेज बांधूं, सोवोगी कित जायकर ।
वहती गंगा थारी बांधूं, न्हावोगी कित जायकर ॥
ओत बांधूं गोत बांधूं, बांधूं घरको नाई ।
इतना बन्ध छुडावोजी, थे बड़ा सगांकी जाई ॥

इस प्रकार झूमरकी बातें सुन सब स्त्रियें, हँसने लग गई परन्तु उत्तर देते किसीसे न बना । पश्चात् इस प्रकार प्रश्नोत्तर होने लगे ।

अंक सोलहवां

स्त्रियें पूछें और मदनलाल बतावें.

स्त्रियें-थे आया जिके रस्ते कुण २ आया ? म०-म्हारा भाण भाई।

स्त्री०-थे बैठो जद धरती पर पहली के टेको ? म०-निजर।

स्त्री०-थारा घरमें चतर कुण और मूरख कुण ? म० चतर भारी, मूरख मूसल।

स्त्री०-म्हाने तीन टांगको घोड़ो देवो ? म०- अटेरण लेलो।

स्त्री०-म्हारे रातको मरद तो हैं, म्हाने दिनको मरद बतावो ? म०-चरखो।

स्त्री०-काला पाटकी लट्टी देवो।

मदन०-ताखडीमें ताखडी, ताखडीमें गट्टी,
थारा पियाकी सेजां मिलसी, काला पाटकी लट्टी।

स्त्री०-मचमचीकी बीज चाये ? म०-वो भी बठेई मिलसी।

स्त्री०-थे सासरे जावो जद पैल्यां के मारो ? म०-तोरण।

स्त्री०-सीरखां की सूवटी और जंगलकी हिरणी कुण?म०-लुगायां।

स्त्री०-थारे आगे पाछे कांई ? म०-लुगायां।

स्त्री०-थारी धोतीमें के ? म०-लांग।

स्त्री०-थे हांसी मसखरी कठे २ करो ?
मदन०-सेजामें, सासरामें, भायलामें।
स्त्री०-थे दुख सुखकी वातां कठे करो ?
मदन०-मां वाप कने तथा सेजांम।
स्त्री०-थारा वापको लम्वो और मांको चौडो के ?
मदन०-पगडी तथा घाघरो।
स्त्री०-जीकारो कुण २ ने।
मदन०-(साखमें) माजी, भाणजी, जीजी, (सागमें) भाजी, लूंजी (कपडामें) रेजो, प्याजी, मगजी, सतरंजी,(जातमें) दरजी, मिसरजी (ओहदामें) पाजी, काजी, भूंजी।
स्त्री०-दान कित्ता ?
मदन०- कन्यादान, ऋतुदान, हेमदान, गजदान, जुजदान, पानदान, पीकदान, कलमदान, कदरदान, कुल नौ दान।
स्त्री०-राणी कुण २ ?
म०-रानी, महारानी, मिसरानी, मेहतरानी।
स्त्री०-थारे सागे दिनरात कुणसो भूत रहे ? मदन-छायां भूत।
स्त्री०-थारी सासुकी समधन कुणकी लुगाई ? म०-म्हारा वापकी।
स्त्री०-थारी भौजाईका सासरावाला थारा के लागे ?
मदन०-वाप भाई ।
स्त्री०-थे दिशां जावो जद के पकडो और के खावो ?
मदन०-आड पकडां और सरम खावां।
स्त्री०-(चंदरसूं) कँवर साव, थे जोडीका कित्ता भाई ?
चंदर-म्हे जोडीका तीन भाई, म्हारी जोडूको थारो वींद भाई।

इन लोगोंमें इस प्रकार परस्पर ठंठोली हो रही थी कि झूमर बोला, बस अब कुंजो, पुंजो-मैंही सारी रात बिता देसो, अब म्हेबीकुछ पूछस्यां। सुनते ही स्त्रियोंने सीठणा गाना आरंभ किया। बोल्यो रे बोल्यो समधनको यार बोल्यो। जीजोंको यार बोल्यो, खरबूजा खाना बोल्यो, गाल्यांका भूखा बोल्यो, तन्ने कुण, कह्यो थो बोल्यो—

झूमर (जोरसूं) चुप रहो-सब स्त्रियें चमककर चुप होगई। पीछे बोला वा साब वाह बहुत अच्छो सीठणो गायो जीजोंको यार बनायो जोसूं थेई लारे क्यूं नी हो जावो ?

चंदर०-(झुम्बर सूं) यार, तेरेसे तो यह राजी कोनी !

झूमर-म्हेभई ! ठीक है यां (स्त्रियां) के कानी बोल्यां सूंई बींणणी मिलसी। आख्यांका आंधा तने दीखे कोनी ये किसतरां सीठणा बक रही हैं, ठैर जा संवारेई पंचांमें रपोट लिखाऊं और तेरी गवाही लगाऊं।

(लेखकका कथन) प्यारी बहिनो ! तुम लोग इस प्रकार गन्दी गालियां बकती हो इसमें लाभ तो कुछ है नहीं बल्कि अन्य जातिवाले तुम्हें इस प्रकार बकते देख तालियां पीट २ कर तुम्हारी हंसी करते हैं। खैर, हंसी को तो भाड़में जाने दो, परन्तु इतना तो विचार करो कि जिन (तुम्हारे श्वसुर व जेठ) के सम्मुख तुम बैठी हुई लज्जावश खडी होनेमें भी सकुचाती हो वे तुम्हारी गन्दी भाषा सुनकर क्या कहते होंगे। तुम्हें धिक्कारते होंगे—

चार मनुष्य उनके सम्मुख हँसते होंगे तो उन्हें लज्जाके कारण पृथ्वी देवीको नमस्कार करना पडता होगा. अस्तु, आप लोगोंसे सादर विनय है कि आप गन्दी गालियां बकना बिलकुल बन्द कर दें।

❀ मुकलावा-बहार ❀

मदनलाल पूछता है और स्त्रियां बताती हैं।

मदन०–थारा घाघरामें कांई ? लुगायां–नाडो।

म०–थारा ओढनामें कांई ? लु०—निजर।

म०–थारा घूंघटामें कांई ? लुगायां—मूँडो (मुँह)

म०–थारा मूंडामें कांई ? लु०–दाडम कासा बीज दांत।

म०–थारा ओंठांमें कांई ? लु०–रसिक पियाका चूसवाने अमृत।

म०–थारा हाथांमें कांई ? लु०–मेंहदीकी रेखां।

म०–थे घणां राजी क्यांसूं ? लु०–काजल टीकीसूं तथा प्रेमभरी वातांसूं।

म०–थाने घणां प्यारा कुण ? लु०–भंवरजी नन्दोईजी तथा जीजोजी।

भ्रमर०–थारी आंगीमें कांई ? लु०–गीगलेको कलेवो।

भ्रमर०–और गीगलो ना होय जद ? लु०–भंवरजीके खेलवा तांई दड्यां (गेंदू)

चंदर०–(सीसकरी भरकर) आहा ! ! !

म०–थे आपनो दुख सुख कठे बोल्यो ? लु०–कोई पूछ ले वठेई।

म०–थाने ईमान प्यारो अक जान ? लु०–जान सूं जादा ईमान।

म०–थामें पण गुण कुणसा ?

लु०–सतचढ़ा, मंगल गावां, सपूत जणकर वंस वधावां। *

इस प्रकार बातें हो रही थी कि एक लुगाई बोली, बातांई बातांमें सारी रात विता देम्यो अक क्यूं दुवा फाली भी गास्यो ?

---

* नारीमें गुण तीन हैं, अवगुण भरे हजार।
गृह जणै अरु मन चढ़े, करै मंगलाचार॥

ब दूसरी स्त्री बोली आज तो यांने आराम करबा द्यो क्यूंके दूरका
क्योडा आया है और रात भी भोत बीत गई काल देखी जासी,
ने कित्ताक दुवा पहाली आवे हैं थे तो घणां हुस्यार दीखे हैं, थे
गांसूं हारबावाला कोनी. तब तीसरी बोली-थे बीरा पूतका पग तो
ालणेई दीख आवे हैं, थे काचरा मींगणां तो (झूमर-चन्दर) और
मी मिरचीका टूक पड़्या हैं पण काल यांकी और म्हारी बात—

अंक सत्रहवां

—-<o>—-

नगरकी आई हुई स्त्रियें अपने २ गृह गई। केवल रतनी आदि २-४ घरवाली ही स्त्रियें रह गई झूमर और चंद्र को तो नेवगीके साथ डेरेमें भेज दिया गया और मदनलालसे बोली-कुंवर साहेब ! आप ऊपर चौबारेमें पधारो. ऊपर पहुंचनेसे मदनलाल एक कमरेको अच्छा प्रकाशवान देख उसमें प्रवेश करने लगा. उसी समय सालाहेली बोली कँवर साब 'यो नानेरे कोनी, यो सासरो हे, अठे तो रीत मुरज्याद सूं चालणो पड़सी-'

मदनलाल-फरमावो साब, आपकी के लाग है?

सालाहेली-लाग तो थां चतर लोगांकी हे सो दरवाजो छुड़ाकर जावो।

मदनलाल-ल्यो साब खूब सुणो-"दरवाजो छूड़ानो"

सावन महिनो सुरंगो, सहेलियां रो साथ।
केशरका कुरला करें, कूंकूं धोवें हाथ॥

❋ मुकलावा-बहार ❋

नगर भोजकट सोहनो, भीषमके दरबार।
राजकुँवारे रुकमण हुती, परणया नन्दकुँवार॥
जद प्रभू महल पधारिया, साल्यां रोक्यो द्वार।
सिर सोनाको शीशफूल, गल मोत्यांको हार॥
आभो छायो किरतियां, तारां छाई रात।
दरवाजो छोड़ो प्रिये, दीन्हीं थारी जगात॥

इस प्रकार दरवाजा छुड़ा भीतर जा मदन बाबू पलंगपर बै लगे कि उसी समय सालाहेली बोली-कँवर साब! गद्दी बँधी सो छुडाकर बैठज्यो। मदनलाल (मुस्कराकर) बोले साब भगत तो थांसू गरज है चाहे जो फरमायां जावो, अच्छा सुण (गादी छुडानो)

गादी है गुजरातकी, सीमाई अजमेर।
लूम्यां लागी मेडते, हीरा जैसलमेर॥
रूपाके पिलंगां बिछी, झालर झबका दार।
गादी छोडो हे सखी! बैठे राजकंवार॥

रतनी-एक बार म्हाने भी सुणावो।

मदनलाल-हां साब! थे भी सुणो-

कलकत्ता सुं थांन मंगाकर जयपुर बीच सिमायो
उदयापुर जा फूल कढ़ाकर म्हेलां ल्याय बिछायो।
महला ल्याय बिछायो चंगी सालियां।
ओढ़ें दीखणी चीर चुड़ले वारियां॥
गादी बुटां दार पिलंगां ढालती।
रंग महलमें आय गादी बांधती॥

आमां सामां म्हैल बीचमें बारियां।
गादी खोलो जल्द प्यारी सखियां॥
आंगल्यांके झमके झूमक, सब सोनांकी छाह।
करके अब थे पलंग बिछायत, ल्यावो थारी बाई॥

मदनलाल इस प्रकार गादी छुडा पलंगपर बैठ गया और गलीचे पर बैठी हुई साली तथा सालाहेलीसे प्रेमभरी बातें करने लगा। इसी समय एक स्त्री चन्द्रकिरणाको मदनलालके सम्मुख लाकर खडी कर बोली, कुंवर साब अब खूब मनकी रली करल्यो। इतना कह तीनों जनी बाहर निकल आईं और कमरेका दरवाजा बन्द कर दिया। चन्द्रकिरण लज्जाके मारे एक कोनेमें जाकर बैठ गई तब मदनलाल बोला "सकल पदारथ हैं जगमाही, कर्म-हीन नर पावत नाहीं" इसका भी चन्द्रकिरणाने कुछ उत्तर न दिया तब मदनलाल उसके समीप जा गोदमें उठा पलंग पर ला बिठाया और १५ मोहरें उसके हाथमें देकर घूंघट खोलनेको जिद्द करने लगा, तब चन्द्रकिरणाने घूंघट खोला। आहा! क्याही सुहावनी छटा! मीठी २ मुस्कराहट!! "यथानाम तथागुण"। इन लोगोंको पलंगपर बैठे २ दस मिनिट बीतगये किन्तु प्रेमवश दोनोमेंसे किसीके भी मुंहसे बैन नही निकले। दोनोंके नैन नीचे थे।

इन दुखियां आँखियानको, सुख सिरज्योही नाँय।
देखत बने न देखते, बिन देखे अकुलाँय॥ १॥

लेखक—प्यारे मित्रो! इस प्रथम मिलनके समयका स्वर्गीय प्रेम लेखनीकी शक्तिके बाहर है। इसे वे ही भाई जान सकते हैं जिन-को ऐसा सुअवसर मिल चुका है।

स्त्रियां अपने अपने स्थान गई इधर मदनलाल और चन्द्र किरण दोनोंके लिये स्वर्ग दो एक इंच बाकी था। चंद्रकिरणके सौरभित कुसुमित कलियोंपर मधुर प्रेमरस बरसानेकी चाहने मदनको मदन बना रखा था। एक विरहविधुरा नवोढ़ा रमणीके चांदसे मुखडेकी लाज भरी, रिम भरी, रस भरी, मंदसी, एक हंसीने जो सुरंग चुनरियामेंसे एक वार चमक गई, मदनको अपनी लैलाका मजनू बना गई।

इधर मदन मदमें मस्त चन्द्रकिरण छल्लेकी ओटसे कभी कभी अपने मन चाहे रसिक नायकके सुन्दर मुखकमलको निरखकर अपने भाग्यकी सराहना करती हुई मदन' के गलेका 'लाल' बन बैठी। मदनका रंग खिल उठा। उस समयके अनुपम आनंदका वर्णन करनेमें हम केवल इतना ही कहते हैं कि अगर वह अलौकिक आनन्द मिलता रहे तो सकल सुखोंकी खान अप्सराओंके स्वर्गकी इच्छा करना भी फिजूल है। धीरे धीरे बातचीतका सिलसिला शुरू हुआ, मदनने एक दोहा कहा—

कीर कमल कोयल कुरंग, अहि गज सिंह मराल।
झूलत एकही डारपै, देखे कवि जयपाल॥ १॥

तब चन्द्रकिरणने मदनको उद्देश्य करके कहा कि—

जरूरत क्या है जेवरकी, जिसे खूबी खुदाने दी।
फ़लकपर खुशनुमा लगता है, देखो चांद बे गहने॥

छप्पय।

मदन०-हंसहि गज चढि चल्यो करीपर सिंह विरज्जै।
सिंहहि सागर धर्‍यो सिन्धूपर गिरि द्वै सज्जै॥

❀ ससुराल-रहस्य ❀

गिरिवरपर इक कमल, कमलपर कोयल बोलै ।
कोयलपर इक कीर, कीरपर मृगहू डोलै ॥
ताऊपर शिशु नागके, निशादिन फन्निय धरै रहैं ।

कवि गड्डु कहे गुणीजन सुनौ, लुहंस भार कैतो सहे ॥

चंद्रकिरण-क्या नज़ाकत है कि आरिज़ उनके नीले पड़ गये ।
हमने तो बोसा लिया था ख्वावमें तसवीरका ॥

मदन-वाह क्या खूब !

शाले ज़र वफ्त मुबारिक हो अय दौलतमंदो !
हम तो कम्बलमें दुशालेका मजा लेते हैं ॥

चंद्रकिरण-जी चाहता है आपके, कदमोंका बोसा लूं । क्या खूब!
इस प्रकार दोनों नव दम्पति प्रणय सुखका उपभोग लेते हुए ।

प्रिय प्यारी पर्यंकपै, परे पीत पट तानि ।
अरुणशिखा धुनि सुनि परो, पीरो मुख दुखदानि ॥

श्रीहरिः ।
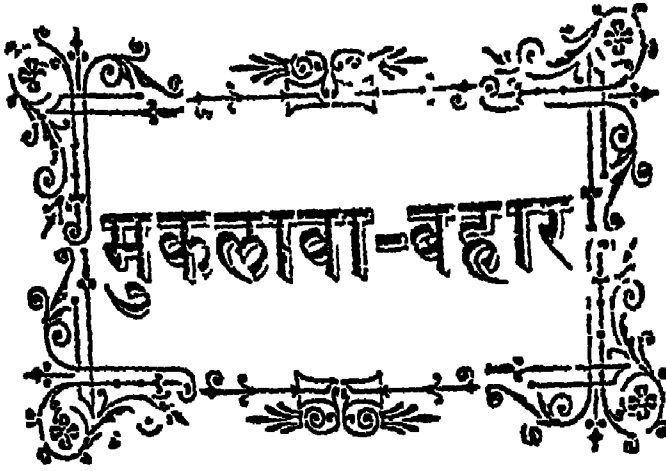
अर्थात्

ससुराल-रहस्य

दूसरा भाग ।

ख्याल-सब करो विघ्न पामाल अर्ज सुन शैलसुतालाला ॥ टेर ॥
एकदन्त गजवदन विनायक, कृपासिन्धु सुन्दर सब लायक ।
देव शिरोमणि हो वरदायक, गजमुख सुंडियाला ॥ सब क०१ ॥
ऋधि सिधि दक्षिण वाम विराजे, मूषककी असवारी साजे ।
रणतभँवर गढ बैठ्या गाजे, कर त्रिशूल भाला ॥ सब क० ॥ २ ॥
ब्रह्मा आदिक देव मनावें, नारदादि मुनि शीश झुकावें ।
मोदक श्रीफल भेंट चढावें, दीनन प्रतिपाला ॥ सब करो०३ ॥

❀ ससुराल-रहस्य ❀

बलदेव सुमन प्रभु तुम्हें मनावें, नित प्रति झांकी सरस बनावें॥
बद्रीलाल यश तुम्हरो गावें, द्विज थेलासुरवाला॥ सब०॥४॥

पिछले भागका शेष रहस्य।

प्रातः उठकर मदनलालने नित्य कर्मोंसे निवृत्त हो भोजन किया और दोपहरके समय आरामके लिये लेट लगाई। जब चार बजे। तब उठकर अपने साथियों सहित बगीचेकी ओर चले गये। वहांसे टहलते हुए एक दो गुलदस्ते हाथमें लेकर वापिस आये। रसोई-गृहसे भोजनका बुलावा आया, रसोईगृहमें पहुँचे, भोजन किया, तदुपरांत जोशी नेवगी इत्यादि मनुष्य तो डेरेमें चले आये और मदनलाल झूमर-चंदरके सहित स्त्रियोंके मध्यमें जा विराजे। उसी समय सालाहेलीने अपने कोमल करों द्वारा पान इलायचीसे उनका स्वागत किया, पश्चात्-

पाड़ोसन बोली-(एक स्त्रीसे) काल पहाली २ चिल्लावे थी, आज खूब दोहा पहाली आडो, देखां थांने कित्ताक आवे हैं (मदन०सूं) हां जी कँवरसाहब! सावधान हो जावो जुबाब देनो पड़सी॥

झूमर-कँवर साव तो सावधान ही बैठ्या हैं पण मने तो गावा वाल्यांमेंई क्यूं राम कथा कोनी दीखी।

पहेली-पुंज।

(स्त्रियें पहाली गावें और मदनलाल उनका उत्तर देवें)

स्त्री०-डाढीवालो छोकरो (जी जँवाईजी) बिके बजार बजार।
देवांके माथे चढे (") ईको अरथ बताव॥
अंतर कपटी छोजी जँवाई म्हारी पाली रो अरथ बताव।

म० ला०-नारियल॥ १॥

❋ मुकलावा-बहार ❋

स्त्री०-एक नार चतर घणी (जी ढोला) लपसी करे सुवाद
विना तवे विन कुड़छले (") विन चूल्हा विन आग।

म० ला०-मधुमक्खी ॥ २ ॥

स्त्री०-चार कूटकी वावडी (जी प्याराजी) पडी वजारां मांय
हाथी घोड़ा डूव गया (") पनिहारी रीती जांय।

म० ला०-कांच-ऐना ॥ ३ ॥

स्त्री०-गहरो फूल गुलावको (जी नणदोईजी) झल झल झोला खाय
ना मालीके नीपजे (") ना राजाके जाय ॥ अंतर कपटी०
छोजी वाईजीसुं स्याणा छोजी, म्हारी पहालीको अरथ वताय

म० ला०-सूरज ॥ ४ ॥

स्त्री०-म्हारे आया पांवणां (जी वहनोई जी) ज्यांको अंत न पार।
प्यालो पाणी आगको (") सगला धाप्या जांय॥

म० ला०-हुक्को ॥ ५ ॥

स्त्री०-धोती वांध्यां वा फिरे (जी जीजा जी) माथे आग धराय।
ठोकरमें पड़ती फिरे (") वा सवके मन भाय॥

म० ला०-चिलम ॥ ६ ॥

स्त्री०-दूध खेतमें नीपजे (जी कंवरजी) दही दिसावर जाय।
वूढा खावे प्रेम सूं (") चांदी मोल विकाय॥

म० ला०-अफीम ॥ ७ ॥

स्त्री०-डूगर वोयो लाल्हरो (जी जेंवाई जी) ऊग्यो घरे घुमेर
विन दांतां की वाकरी (") आई कर गई ढेर

म० ला०-सिरका वाल तथा कतरणी ॥ ८ ॥

❋ ससुराल-रहस्य ❋

स्त्री०—आई थी उन्माद सूं (जी ढोला) बैठी गोडा मोड ।
बैठीके सरका दियो (") ऊभी होय पपोल ॥

म० ला०—चूडो पहरणो ॥ ९ ॥

स्त्री०—नर ऊपर नारी चढ़ी (जी नणदोई जी) नर नारीके हाथ ।
नरने नारी बावती (") गयो पखेरू साथ ॥

म० ला०—गोफियो ॥ १० ॥

स्त्री०—एक के पग एक है (जी बहनोई जी) एकके पग चार ।
दोन्यां मिल जग छालियो (") चातरा करो विचार ॥

म० ला०—वरा और कपास ॥ ११ ॥

स्त्री०—मूंधी सूं सीधी करी (जी जीजा जी) दिया घसेड़ा चार ।
अपनो काम बनायके (") मूंधी दीनी मार ॥

म० ला०—ऊखली ॥ १२ ॥

स्त्री०—चालती चप २ करे (जी प्यारा जी) बैठे मूंडो बाय ।
बिन दांतां मूसल गिटे (") रहे सभी घरमांय ॥

म० ला०—पगरखी जूती ॥ १३ ॥

स्त्री०—बेल पड़ी दरयावमें (जी कँवरजी) फूल रह्यो लहराय ।
एक अचंभो देखल्यो (") फूल बेलने खाय ॥

म० ला०—दीवो, दीपक ॥ १४ ॥

स्त्री०—आई आई सब कहैं (जी जँवाई जी) गई कहैं न कोय ।
आयां तो दुख नीपजे (") गयां घणेरा होय ॥

म० ला०—आंख दुखनो ॥ १५ ॥

❋ मुकलावा-बहार ❋

स्त्री०-श्याम वरण अति सोहनी (जी ढोला) अजब अनोखी नार
दो सूं दस सूं वीस सूं (") मिले एकदी थार ॥

म० ला०-कंघी ॥ १६ ॥

स्त्री०-पानीमें निसदिन रहे (जी नणदोई जी) जींके हाड न मांस
काम करे तलवारको (") फिर पानीमें वास ॥

म० ला०-कुम्हारको डोरो ॥ १७ ॥

स्त्री०-नौ जाया नौ कांखमें (जी वहनोईजी) नौ नान्दरे जांय।
मतो करे तो फेर जणां (") काल पड्यांके खाय ॥

म० ला०-काचरा, काचरिया ॥ १८ ॥

स्त्री०-अंग ढक्यां वागां झुले (जी जीजा जी) मोत्यां जडियो अंग।
काचा मोती दूध सा (") पाक्यां रंग सुरंग ॥

म० ला०-दाड़यूं, अनार ॥ १९ ॥

स्त्री०-तल सूंको ऊपर हरयो (जी प्याराजी) पान पानमें रंग
इंको अरथ वतायज्यो (") वादल वादल चंग ॥

म० ला०-मोरकी छतरी ॥ २० ॥

स्त्री०-लाल वरण कणटालु घर (जी कँवरजी) जी को रिपु संसार।
बेर बेर म्हे कह रह्या (") अरथ करो सरदार ॥

म० ला०-बेर ॥ २१ ॥

स्त्री०-पटक्यां सूं फूटी नही (जी जँवाईजी) बटका हो गया चार
सोला होगई सीपली (") ज्वाब करो सरकार ॥

म० ला०-चौपड़ ॥ २२ ॥

स्त्री०-सावणका सतरा गया (जी ढोला) आई नवेली " "
कुणसी चीज लगायस्यां (") पिया जाव रंग रीझ ॥

म० ला०-मेंहदी ॥ २३ ॥

स्त्री०-घाममें सूखे नहीं (जी नणदोईजी) छायामें कुम्हिलाय।
म्हे थाने पूछां हे चतर (") पवन लग्यां मर जाय॥

म० ला०-पसीनो॥ २४॥

स्त्री०-सिर केसर मुरगो नहीं (जी बहनोईजी) चार पांव नहिं ढोर।
लंबी पूंछ मांकड नहीं (") नीलकंठ नहिं मोर॥

म० ला०-किरकांट, गिरगिट॥ २५॥

स्त्री०-सीस जटा पोथी लियां (जी जीजाजी) स्वेत वस्त्र गलमांय।
जोगी जंगम है नहीं (") ब्राह्मण पंडित नांव॥

म० ला०-लस्सण, लहसुन॥ २६॥

स्त्री०-झूंठ कदे भाखे नहीं (जी प्याराजी) जल बासंता नांव।
कच्छ मच्छ विषधर नहीं (") ईंको अरथ बताव॥

म० ला०-घडी (Watch)॥ २७॥

स्त्री०-श्याम वरण पीतांबरी (जी कँवरजी) मुरलीधर ना होय।
बिन मुरली कीर्तन करे (") अर्थ न जाने कोय॥

म० ला०-भौंरा काला॥ २८॥

स्त्री०-हाथ हाथ बातां करे (जी जँवाईजी) कान सुने नहिं ताहि।
सब तनकी हालत कहे (") ईंको अरथ बताय॥

म० ला०-नाड़ी, नब्ज॥ २९॥

स्त्री०-बांबी उसकी जल भरी (जी ढोला) ऊपर बारी आग
जबे बजाई बांसुरी (") निकल्यो कालो नाग॥

म० ला०-हुक्को॥ ३०॥

स्त्री०-एक नार प्यारी लगै (जी नणदोईजी) रैन अन्धेरी मांय।
ऊपर तो झरना झरैं (") माथे लागी लाय॥

म० ला०-मसाल॥ ३१॥

अंक दूसरा

स्त्री० मोय पै तो उठ्यो न वैठ्यो जाय।
सुसरो हमारो ढाई वरसको, सासू अखन॥
कुँवारीजी राज॥ मोय०॥
जेठजी हमारा सवा वरसका, जिठानी वरस॥
पचीसी राज॥ मोय०॥
भँवरजी हमारा झुले पालणे, लोरी देव गोरी राज॥मोय०॥
कै फालीरो अरथ बतावो, नातो नेवगणाने॥
करल्यो भूवा राज॥ मोय०॥
बाप भलो वेटो भलो, पोतो भयो सपूत।
पोताके वेटो हुयो, चौथी पीढ़ी ऊत॥

म० ला०-(दोन्याको जुवाव) धीणो॥ १॥

स्त्री०-एक दमडीकी गेहूं मंगाया, वोरयां पर वोरी, ओजी ओ भँवरजी वोरयां पर वोरी, एक एक गेहूँका फलका पोया फलकां पर फलका ओजी, ओ भँवरजी फलकांपर फलकां, आयो लसका जीमगयो दलवादल उलटया, ओजी ओ भँवरजी दल बादल उलटया, जीम जूंठकर घरां पधारया, रह्या मनमें पिछताय ओजीओ भँवरजी रह्या मनमें पिछताय, कै म्हारी फालीरो अरथ बतावो नातो पलंग छोड भूयां वैठोजी राज।

म० ला०-टीडी दल॥ २॥

स्त्री०-म्हारी सुणज्योजी ढोला ॥ टेर ॥

बेटी पेट सूं नीकलीजो ढोला यो कारियो उन्मादो ।

एक अचंभो देखियोजी ढोला बेटी जायो दादो ॥म्हारी सु० ॥

बाप बेटो एक नांव, बेटो डोले गांव गांव ।

बेटो जाई बेटी, डाढ़ी मूछां सेती ।

बेटीने आयो उन्मादो, बेटी जायो दादो ।

म० ला०-(दोन्यांको जुवाब) आम ॥ २ ॥

अंक तीसरा

(मदनलाल पूछें और स्त्रियें बतावें)

मदनलाल-नाजुक नार पिया सँग सोवे, अंगसे अंग मिलाय ॥

जब जागे तब जानके, अपना पतिकूं खाय ॥

वा पतिवरता नारि है, संग सती हो जाय ।

स्त्री०-बाती घाली तेलमें, नाजुक खूब बँटाय ।

चास्यां पाछे तेलने, सनै सनै खाजाय ॥

निमड़े तेल दिवामें बाती, संग-संती हो जाय ॥

चंदर०-तेल तिलांमें नीपजे, बनमें होय कपास ।

माटी खांदे नीपजे, तीन्यांको एक बास ॥ १ ॥

मदन०-कौन चाहे बरसना, कौन चाहे धूप ।

कौन चाहे बोलना, कौन चाहे चूप ॥

❋ मुकलावा-बहार ❋

स्त्री०-माली चाहे बरसना, धोबी चाहे धूप ।
साह चाहे बोलना, चोर चाहे चूप ॥

भ्रमर०-ज्यादा भला न बरसना, ज्यादा भली न धूप ।
ज्यादा भला न बोलना, ज्यादा भली न चूप ॥ २ ॥

मदन०-बरसा बरसी रातने, भीजी सब बनराय ।
झाडां पानी चढ गयो, हस्ती घोड़ा न्हाय ॥
घड़ो न डूबे लोटियो, पच्छी तिसाया जांय ।

स्त्री०-ओस पड़ी थी रातने, भीजी सब बनराय ।
झाडां बून्दा जमगई, घोडा पीठ भिगाय ॥
घड़ो न डूबे लोटियो, यूं पंछी तिसाया जांय ।

भ्रमर०-ज्येष्ठ मास मध्याह्नमें, जल चहुं ओर दिखाय ।
मृगतृष्णा जेहि कहत हैं, वह भी येहि सम आय ॥
बनचर बूंद न पी सकें, भटक भटक मरि जांय ॥ ३ ॥

मदन०-कौन तपस्वी तप करै, कौन जो नित उठ न्हाय ।
कौन सबै रस ऊगले, कौन सबै रस खाय ॥

स्त्री०-सूरज तपसी तप करे, ब्रह्मा नित उठ न्हाय ।
इन्दर सब रस ऊगले, पृथ्वी सब रस खाय ॥ ४ ॥

मदन०-कौन सरोवर पाल बिन, कौन पेड़ बिन डाल ।
कौन पँखेरु पंख बिन, कौन मौत बिन काल ॥

स्त्री०-नैन सरोवर पाल बिन, धर्म पेड़ बिन डाल ।
जीव पँखेरु पंख बिन, नींद मौत बिन काल ॥ ५ ॥

मदन०-ऐसो धन प्रिय कौनसो, चोर न सकै चुराय।
जस जस दे तस तस बढ़ै, वन्धु न सकहिं बँटाय॥

स्त्री०-विद्या धन सबसे बड़ो, कोउ न सकहिं चुराय।
वन्धु न बांटा ले सकें, घर घर मान बढ़ाय॥

भ्रमर०-विद्वानोंकी समानता, नहिं कर सकत नरेश।
गुणको आदर ठौर सब, राजाको निज देश॥ ६॥

मदन०-क्या नहिं तिरया कर सकै, क्या नहिं सिन्धु समाय।
क्या नहिं पावकमें जलै, काहि काल ना खाय॥

स्त्री०-पुत्र न तिरया कर सकै, मन नहिं सिन्धु समाय।
धर्म न पावकमें जलै, नाम काल ना खाय॥ ७॥

मदन०-जनमतही गज तीसकी, भर ज्वानी गज चार।
वृद्धापन गज साठकी, मूवा अन्त न पार॥

स्त्री०-प्रात समय गज तीसकी, दो पहरी गज चार।
सांझ भये गज साठकी, छांया लेहु विचार॥ ८॥

मदन०-ब्रह्मा नहीं नगरमें देखो, दंत दोय मुंह चार।
वाहन वैल नहीं शिवशंकर, जलको करै अहार॥

लुगाई-कूँवा पर भिस्तीने देख्या, भरते आप पखाल॥
दोऊ लकडी दंत हैं, चारों मुख हैं खाल॥ ९॥

मदन०-प्यारी या कलिकालमें, ऐसो को जगमांहि।
एक वस्तु जेहि दीजिये, दे दसगुणा कर ताहि॥

स्त्री०-अर्थ सुनहु प्यारे लला, है यह धरण सुहाय॥
एक बीज तुम डालिये, दे दस गुणा निपजाय॥

चन्दर-यों बणियाका व्याज है, तुरत द्विगुण करिदेय।
गज रथ और तुरङ्ग भी, साथ सकहि नहिं देय ॥१०॥

मदन०-ऐसो बहु भख कौन है, खावत नही अघाय।
खात खात भोजन घटै, तव आपहि मरिजाय।

स्त्री०-बहुभख पावक जानिये, तृण लकड़ी अतिखाय।
जरत जरत ईंधन घटै, तव सीरी होजाय ॥ ११ ॥

मदन०-रहे भाकसीमें सदा, चिंता कछु न जनाय।
रुदन करे छूटे जवहि, याको अरथ बताय ॥

स्त्री०-बालक वाको नाम है, गर्भ भाकसी जाण।
जव जन्मे तव रोत है, याको यही वखाण ॥ १२ ॥

मदन०-अधर महल अद्भुत झरोखा, धन चेजाराकारीने।
जिसके महल पवन विच डोलें, धन्न है पौढन वारीने ॥

स्त्री०-बैया चिड़िया ॥ १३ ॥

मदन०-एक नरके दो हैं नारी, दोनो प्राणनसे अति प्यारी।
एक अंगपर सूखी रहै, दूजी हाथ गीली हो गहै ॥

स्त्री०-धोती जोड़ा ॥ १४ ॥

अंक चौथा

इस प्रकार इन लोगोंमें प्रश्नोत्तर हो रहे थे कि चंद्र आंखें मसलता हुआ घडी दिखाकर बोला, देखो साब ११ बज रहा है अब सब रात थारीई थारी हो वो करसी? अक दो चार पहाली म्हारी भी बतास्यो! तब स्त्रियें बोली, हां साब! थे भी खूब पूछो।

चन्दर-हाथ हलावे मूं चींचावे, पगां बजावे नेवर।
ई पहालीको अर्थ बतावो, थे भाभी में देवर॥

स्त्री०-टींटोडी॥ १॥

चन्दर-लोढ़ी सिरसो चीकणो, माथे करड़ा बाल।
जाय पराया पेटमें, लप लप छूटे लाल॥

स्त्री०-आम॥ २॥

चन्दर-एक नरके दो नर लाग्या, नांव कढ़ायो नारी॥
इस पहालीको अरथ बतावो, चतुर पुरुषकी नारी॥

स्त्री०-जेली॥ ३॥

चन्दर-कारीगर एक मतो उपावे, छतरी थंभा ऊपर छावे।
भोर होय जब बाजे बंब, नीचे छतरी ऊपर थंभ॥

स्त्री०-भेरणो॥ ४॥

चन्दर-थारी सौ पहाली, म्हारो एक पहालो।
भीतरसूं लाल, ऊपरसे कालो॥

स्त्री०-जामुं॥ ५॥

चन्दर-मैं लेवा आई तन्ने, तूं पकड़ बैठ्यो मन्ने॥
तूं छोड़ दे मन्ने, मै ले जाऊं तन्ने॥

लुगायां०-(१) पानी लावा गई जद वरसा होन लागी।
(२) बोर तोड़ वा गई जद झाड़ीमें फँस गई॥६॥

चन्दर-काची ही कंवारी ही जद मने तूं मारी ही।
अब मारे तूं मन्ने, मैं मजो बताऊं तन्ने।

स्त्री०-कुम्हार का बरतण॥ ७॥

चन्दर-चक्कर मक्कर जेवडी, गांठ गांठमें रस।
ई पहालीको अरथ बतावो, ना तो चूमा दे दो दस।

स्त्री०-जलेबी॥ ८॥

भ्रमर-(नींदमें) आहा बडी रसदार है!

चन्दर-तीन खडी चार पडी, बत्तीसां की फेरी।
ई पहालीको अरथ बतावो, नातो लारे चालो मेरी॥

स्त्री०-चरखो॥ ९॥

भ्रमर-(मस्तीमें टेर पनजी) चाल चाल म्हारा चक्र सुदर्शन
चाल्यां सरसीरे चरखा चाल रे॥

चन्दर-तले पानी ऊपर आगी, बिचमें ठेलमठेला है।
गलीगलीमें देता हेला, ए भी एक पहेला है॥

स्त्री०-हुका॥ १०॥

चन्द्र-घीमें गरक स्वादमें मीठा, बिन बेलनके बेला है।
चलो पिया जीमनको चालें, यह भी एक पहेला है॥

स्त्री०-मालपुवा ॥ ११ ॥

चन्द्र-अन्तकी तन्त व तन्तकी तोली।
मर्दकी लांग लुगाई खोली॥

स्त्री०-ताला ॥ १२ ॥

चन्द्र-चार आंगलकी लाकड़ी, दोनुं कानी मूंडो।
मोट्यारांमें ना: पाई, तो लुगायांमें ढूंढो॥

स्त्री०-कांखी ॥ १३ ॥

भ्रमर-हालई कैंयां कांखो हो हालतो मैं बाकी हूँ॥

चन्द्र-पहले था वह मरद, मरदसूं नार कहाया।
कर गंगा अस्नान, मैल सब धोय बगाया॥
तास समंदर तैर, घाव बरछीका खाया।
बाहर आया फेर, मर्दका मर्द कहाया॥

स्त्री०-मूंगसुं दाल-दालसूं पीठी-पीठीमूं बड़ा ॥ १४ ॥

चन्द्र-एक सखी उठकर यों बोली दोनो फांक बराबर हैं।
दूजी सखी समझाने लागी-ऊपर करड़ा बाल हैं।
तीजी सखी मुसका यूं कहती-बीचमें काला मणियां है
चौथी सखी हेला दे कहती-ठरका लागे पानी हैं॥

स्त्री०-आंख ॥ १५ ॥

भ्रमर-और दूसरो नांवस थे बतावोगी क्यूं ? ॥

❀ मुकलावा-बहार ❀

शाखा राम जानकीके ब्याहकी ।

गजानन्द औ शारदा, ब्रह्मा विष्णु महेश ।
रामचन्द्रके ब्याहकी, शाखा कहूँ सुहेश ॥
दशरथ गृह प्रगटत भये, रामचन्द्र अवतार ।
जनक देश सीता भई, लीला अगम अपार ॥
विप्रोंको बुलवायके, लग्न लिये लिखवाय ।
गऊ दान बहुतक दिये, कछू कहीं ना जाय ॥
एक समै दशरथ गृहे, विश्वामित्र मुनीश ।
राम लखण सङ्ग लेनकूं, आये विश्वा बीस ॥
मुनिकूं पास बिठाके, चरणोदक नृप लीन्ह ।
कुशल क्षेम मुनिवर कहहु, कैसे आगमन कीन्ह ॥
यही हेतु मम आगमन, सुनिये श्री भूपाल ।
राम लखण मोहि दीजिये, यज्ञ होय तत्काल ॥
बोले नृप दशरथ तबहि, जो मरजी महराज ।
धन्य हमारे भाग्य हैं, तुम आये घर आज ॥
आगे विश्वामित्रजी, दोनो भाई पास ।
दशरथ सुत ऐसे सजे, जैसे चन्द्र उजास ॥
जनक रायके मख गये, देखे धनुष कठोर ।
बड़े बड़े बलवन्तसे, हलै न जाकी कोर ॥
क्रोध उठे तब जनकजी, छत्रि बंस नहिं एक ।
लक्ष्मण बोले भ्रातसे, कहौतो राखौं टेक ॥
छोटे कूं सन्तोष दे, किया क्रोध कूं मन्द ।
कठिन धनुषको तान कर, जब तोड्यो रघुनन्द ॥

❋ ससुराल-रहस्य ❋

धनुष खण्ड टुकड़े किये, पहर लई जयमाल।
देव खड़े जय जय करैं, लाजैं सब भूपाल॥
दूतोंको बुलवाइया, जनकराय सुरज्ञान।
लग्न पत्रिका हाथ दे, कीन्हें अवध पयान॥
कौशलेश नृपकी सभा, पत्र धर दियो आन।
रामचन्द्रके ब्याहकी, सजकर आज्यो जान॥
दसरथके मंगल भयो, कुशल भयो सब देश।
पिता भरत औ शत्रुहन, चढ़े मनाय गनेश॥
रणसिघा औ दुंदुभी, नौबत बजे निशान।
हस्ती घोड़ा पालखी, घूमत चालै जान॥
मिथलापुर पहुँचे जबै, निरखै सब नर नार।
चारो भाई मिलत हैं, करत परस्पर प्यार॥
मुकुट सज्यो श्रीरामके, हीरा रत्न जड़ाव।
मनीजडितसिर सेहरो, प्रभुमन अतिउत्साह॥
तोरण हित जब प्रभु गये, जनकरायके द्वार।
पुष्पनकी वर्षा हुई, जै जै होत उचार॥
सखी सहेली सब करै, निज पूरबली रीत।
करैं आरती पोलपर, मंगल गावैं गीत॥
पाटे ऊपर बैठिया, तीन लोकका नाथ।
विश्वामित्र बशिष्ठजी, हवन करैं इकसाथ॥
फेरा रघुवर लेत हैं, अती सुजसकर खास।
बन्दीजन जै जै कहैं, नौबत बजै अकास॥
हाथलेवा जोड़ा प्रभू, गऊदान नृप देत।
ब्राह्मण जन अति हर्षसे, मांग मांग कर लेत॥
जूवों शिर गूँथी करी, करी सुयश भंडार।
कर पहरानी सोख-दी, चढ़्यो राज कुँवार॥

जनकराय बोलत भये, मनमें कर अति प्रीत।
वड़े लगे महाराज हौ, वर्नी नहीं कछु रीत॥
बचन नृपति दशरथ कहे, सुनो जनक महाराज।
रत्न चतुर्दश हम लिये, पास तुम्हारे आज॥
पुन अयोध्या आइया, घर घर बंटत बधाय।
रामचन्द्रके व्याहकी, शाखा दई सुनाय॥
वेद नेत्र नव एकको, सम्वत वदी असाढ़।
तिथी सप्तमी दिन किया, दसरथ सुतका लाड़॥
शाखोच्चार बनाइयो, विप्र रामगढ़ ग्राम।
कवि किदारकी वीनती, सुनज्यो सीताराम॥

शाखा श्रीकृष्ण रुक्मणी व्याहकी।

प्रथम जु सुमिरौ सरस्वती, ध्याऊं देव गनेश।
पांच देव रक्षा करै, ब्रह्मा विष्णु महेश॥
कृष्ण रुक्मणी व्याहका, गाऊं शाखाचार।
दग्धाक्षर गण दोष कूं, दीज्यो आप निवार॥
रुक्मणि चाहत कृष्ण कूं, निज पितु इच्छा साथ।
चन्देरी शिशुपाल कूं, रुकमैयो अरु मात॥
रुकमजु भेजी पत्रिका, डाहलके दरवाज।
जान सजा कर आइयो, रुकमणि व्याहन काज॥
प्रेम पत्र रुकमणि लिखे, सुनियो दीनानाथ।
मुझ दुखियाकी आज प्रभु, लाज आपके हाथ॥
रुकमैयो मम व्याहको, लिख भेजो सब हाल।
जान सजाकर आयसी, डाह लियो सिसपाल॥

❀ ससुराल-रहस्य ❀

वरूं तो प्रभु वर आपको, नहि मरूं जहर विष खाय।
मैं न निहारूं दुष्ट कूं, चाहे जो होजाय ॥
कागज थोड़ा हित घणां, क्यों कर लिखूं बनाय।
इतना ही में समझकर, वेगि खबर लो आय ॥
सादर पत्री भेज दी, विप्र सिरी सुख साथ।
ब्राह्मण मथुरा पहुंचकर, धरी कृष्ण के हाथ ॥
पत्र पढत श्री कृष्णजी, हिय गद्-गद हो जाय।
तुरतै कुन्दनपुर चले, गौरि गनेश मनाय ॥
इतसे श्री शिशुपाल भी, चतुरंग सैन्य सजाय।
कुन्दनपुर नगरी चल्यो, हियमें अति हरखाय ॥
विधवा तो नारी मिली, सन्मुख रोये स्यार।
सिरमूंड़े जोगी मिले, असगुन भये अपार ॥
जान पहुंची नगर जब, घूमन लगे निशान।
रुकमैया संग नगर नर, जा पहुंचा अगवान ॥
इधर सुनी बलरामजी, खबर वहां तत्काल।
अवसि युद्ध हो ना टलै, गये कृष्ण शिशपाल ॥
कुंकू पत्रियां भेजदी, आये सब न्यौतार।
होने लागे व्याहके, सगरे नेगाचार ॥
यदुवंशी औ ऋषि मुनी, तेंतिस क्रोड सब साथ।
आदि देव श्रीगणपति, सजने लगी बरात ॥
नारद मुनि यों कहत हैं, सुन हलधर महराज।
जो गणपति संग लेचलो, सबकूं आवै लाज ॥
इनको मथुरामें तजो, गृह रखवाली हेत।
हलधर गणपतिसे कहें, रखो हमारी टेक ॥
गणपति जब राजी हुए, जा पहुंचे ऋषिराज।
ढूंढ सूंड धारी बड़ी, तजले याही काज ॥

सुनत क्रोध गणपति भये, गुस्सो बढ्यो अतोल ।
हुक्म दियो वाहन तई, धरती करदो पोल ॥
हाथी घोड़ा धस गये, जान न पावै कोय ।
जवहि मनाये गणपति, नार वराई दोय ॥
जान हर्ख आगे वढ़ी, भये सुसगुन अपार ।
आगे सब हर्षित बढ़े, पहुंचे नगर मंझार ॥
तम्बू आकाशों तने, नक्कारोंकी गुंज ।
राजा भीषम आइयो, साथ नगर नरपुंज ॥
इत रुकमणि त्यारी करै, अम्वा पूजन काज ।
सामग्री अनमोल सब, संग सखियनको साज ॥
चली जवहि भीषमलली, मनमें अति हर्षाय ।
पहरे डाहलके लगे, अती भयंकर आय ॥
विधिकी लीला वसहुये, मूर्च्छित पहरेदार ।
तुरत कृष्णने पहुंचकर, लीन्ही रथ वैठार ॥
जागृत जव पहरा हुआ, सुणकर रथ झनकार ।
खड्ग चलावैं कृष्णपर, मचगई हाहाकार ॥
यादववंशिनने सुनी, कृष्ण फंसि गयो जाय ।
वलदाऊको आदि ले, पहुंचे रणमें आय ॥
सजे चंदेरे सूरमा, मारू ढोल वजाय ।
दन्तवक्र शिशुपाल भी, अम्बामठपर आय ॥
कठिन युद्ध वहँपर भयो, सूर्य छिपे नभजाय ।
यदुवंशिनकी मारसे, कोउ न हिम्मत खाय ॥
जरावक्र निश्चर सबै, रणमें आये काम ।
दिखा पीठि शिशुपाल भी, भग्यो बचाकर जान ॥
जबहि बढायो कृष्णजी, रथकूं जरा अगारि ।
रुकमैयो आ रोकियो, लीन्हें नगन कटारि ॥

❀ ससुराल-रहस्य ❀

करयो विकट रण कृष्णसे, चार पहर गई बीत ।
अन्तिम हारयो दुष्ट तब, भाग्यो हो भयभीत ॥
दौड़ कृष्णने रुकमकी, पकड़ी भुजा दबाय ।
देख दुष्टकी दुष्टता, रथमें बांध्यो लाय ॥
हाथ जोड़ रुकमणी कहै, सुणियो दीनानाथ ।
करो कृपा यहि छोड़ दो, दुख पावै मम भ्रात ॥
सुनी कृष्ण जब बीनती, वाकूं दीन्ही खोल ।
लाज खाय पाछो भग्यो, बोलत अटपट बोल ॥
विश्वकर्माजीने कियो, नगर भोजकट त्यार ।
मांडो हरियल बांसको, नागर बेल छंवार ॥
जबहि कृष्ण तोरण चढै, रुकमैयाकी मात ।
तिलक तयारी कर रही, कुंकू थाली हाथ ॥
तबै कहैं श्रीकृष्णजी, मैं हूं गौ गुवाल ।
तिलक करावे आयकर, दूल्हो नृप शिशपाल ॥
रानी मन लज्जित हुई, तिलक कियो प्रभु माथ ।
द्वारेके सब नेगहो, मांढे घुसी बरात ॥
फेरा लेवे कृष्णजी, कुँवरि रुकमणी साथ ॥
देव ऋषि औ विप्रगण, हवन करैं इक साथ ॥
मुक्ता भर भर आंजले, राजा भीषम देत ।
हर्षित हो सब विप्रजन, मांग मांग कर लेत ॥
भाट और बन्दी सबै, जै जै रहे पुकार ।
बड़े भाग्य भीषमललो, व्याहे नन्दकुमार ॥
नेग हुए सब व्याहके, होवे बिदा बरात ।
भीषम नृप आगे खड़े, जोड़े दोऊ हाथ ॥
बड़े सगे महाराज हौ, बनी नही कछु रीत ।
जैसी अब है आपकी, सदा रखोगे प्रीत ॥

मुकलावा-बहार

सबसे मिलजुल भेटकर, चले गणेश मनाय ।
　　सजनां नौबत बजे, मंगुण पहुंचे आय ॥
बँटे बधाई नन्दघर, मङ्गल गावें नार ।
　　कृष्ण रुकमणी ब्याहको, हर्ष सांगोपांग ॥
माघ शुक्ल षष्टी तिथी, उन्यासी शुभ साल ।
　　भौमवार शाखा लिखी, शुभा "अर्जुनलाल" ॥

गोत्राचार ।

साहन पति श्री साहजी, साहनके सिर छत्र ।
　　सांवल रामजी परपौत्र है, गर्ग जिनाको गोत्र ॥ *
साहन पति श्री साहजी, साहनके सिरछत्र ।
　　श्रीकिसनजी परपौत्र है, गर्ग जिनाको गोत्र ॥
साहन पति श्रीसाहजी, साहनके सिर छत्र ।
　　मथुरादासजी परपौत्र है, गर्ग जिनाको गोत्र ॥
साहन पति श्री साहजी, साहनके सिरछत्र ।
　　ओंकारदासजी परपौत्र है, गर्ग जिनाको गोत्र ॥
साहन पति श्रीसाहजी, साहनके सिरछत्र ।
　　हरकिसनजी परपौत्र है, गर्ग जिनाको गोत्र ॥
गोविंददासजीस्य पौत्र श्रीसुखदासजीस्य पुत्र
　　वर कन्या चिरंजीव जोड़ी अमर ॥
मंगलं भगवान्विष्णुर्मंगलं गरुडध्वजः ।
　　मंगलं पुंडरीकाक्षो मंगलायतनं हरिः ॥

---

* नाम और गोत्र आवश्यकतानुसार बदल लिये जावें ।

भातकी पातल।

प्यारे जनेती और मंढेती-भाइयो!

कितनी ही बरातोमें आप लोगोंको देखनेका अवसर आया होगा कि जिस समय भात-पत्तल छुड़ानेके वास्ते जोसीजी पाटे पर खड़े होते हैं उस समय मढ़ेती भाई उनके (जोसीके) मुहमें लड्डू ठोस देते हैं, इसका करण हमारे कई भाई तो लड्डू 'ठोंस' नेग ही समझते है, परन्तु नही इसका खास कारण यह है कि वर्तमान समयकी प्रचालित पातलोमें गन्दे व बेलिहाज शब्द अधिक हैं, इसलिये हमारे मंढेती भाई ऐसे गन्दे शब्द (बकना) बंद करनेके लिये मुँहमें लड्डू ठोंस देते है अतः सबके सुनने सुनाने योग्य सुन्दर पत्तल लिखी जाती है इसमें अश्लीलता नही है।

दोहा-शैलसुता पतिके सुवन, सुन्दर सुधर सुरूप।
सुमारे सदा सिर धूरि धरि, पातल कहूँ अनूप॥
कन्या समधी घर हुई, पुत्र घरे जजमान।
विप्र सगाई करन हित, तिलक चढ़ायो आन॥

चौ०-कन्या बढ़े चन्द्रकी नाई, प्रात भानु सम चतुर जँवाई॥ १ ॥
लग्न लेयकर आयो नाई, करो व्याहकी तुरत चढ़ाई॥ २ ॥
जबही कीन्ही जान चढ़ाई, नौबत और बजे सहनाई॥ ३ ॥
जबै सगाजी मिलनी कीन्ही, मोहर असरफी बहुतक दीन्ही ४

दोहा-तोरणके कारण चली, सजकर जबहि बरात।
मंगल गावै कामिनी, कलश थाल ले हाथ॥

चौ०-तिलक काढ़ आरती कीन्हो, सासू सुख अपने मन चीन्हो।
जान लौट जनवासे आई, फिर फेरोकी सुरत उठाई।
समय गोधलू अति सुखदाई, विप्रन वेदी सुघड बनाई।
लाडे लाडी फेरा लीन्हा, कन्या दान द्रव्य वहु दीन्हा।

दोहा-वेद पढ़ै सब विप्रगण, भाट रहे गुण गाय।
मोतियनके अक्षत चढे, सुवरण कलश धराय।

चौ०- डेरे आया करी न देरी, गोद भरी बीनणी केरी।
कहै सगाजी जान बुलावो, पातल दे अब सबहि जिमावो।
मांढे नीचे जान पधारी, परसन लागे सबहि तयारी।
जीम्यां जूठ्या चलू कराया, सबहि लोग जनवासे आया।
दूजे दिन फिर जान पधारी, होने लगी भातकी त्यारी।

दोहा-जान बीच अति प्रेमसूं, चौकी दई बिछाय।
आस पास गद्दा बिछ्या, हीरा पन्ना जड़ाय॥

चौ०-बींद रायकूं लाय बैठाये, सङ्गवाल बहु अति हरखाये।
नारी पातल बांधन लागी, वाणी मधुर प्रेमरस पागी।
जबै सेठ जोसीने टेर्‌यो, जोसी आयो उठ कर नेरो।
बांधी पातल आज छुड़ावो, सबे बराती तुम्ही जिमावो।
जोशी कहै नेग मै पाऊं, बांधी पातल अबहि छुड़ाऊं।
सेठ कहै नेग फरमावो, अपने मुंह थे क्यों सरमावो।

दोहा-सवा रुपैया रोकडी, कियो विप्रकूं भेट।
अबै छुड़ावो पातलां, बोले ऐसा सेठ॥

चौ०-जोशी जब चौकी पर आयो, मूछ चढ़ा ऐसे बतलायो।
बांधी पातल समधण प्यारी, आज छुड़ाऊं सबहि तयारी।
संगमें आभूषण शुभचारी, बांधू आप छुड़ाज्यो प्यारी।
पहिले पातल हमहि छुड़ावें, सबै बराती आज जिमावें।

❀ ससुराल-रहस्य ❀

पतल छुड़ावें बिस्वा वीस, वांधै आभूषण वत्तीस।
छूट्या लाडू मोती चूर, वांधू बोरे मांग भरपूर।
छूट्या घेवर बरबरवाला, वांधू शीश फूल भलकाला।
छुटी जलेबी औ खुरमानी, वांधू पटियां बांई दाणी।
छूट्या सुहाल और बेशन चूर, वांधू बाली बाटा फूल।
छूट्या पेड़ा मुठड़ी फीणी, रवड़ीं वाधू बेसर नाक नवीनी।
छुटा कला कंद छूटी रवड़ी, वांधू चौंप दांतो जड़ी।
छुट्या दिल खुशाल पंच धारी, बांधू जरकस चोली सारी।
छुट गई जामुन रसकी भरी, वांधू मोती हार औ तिलारी।
छुठ्या मगद औ छूटी लुस्ती, वांधू पंजलड़ गले झलकती।
सोरा सक्कर पारा छुटिया, वांधू कंठहार गल पटियां।
छूट्या मूंग भात औ बूरा, वांधू बंथ पथेली चूड़ा।
छूट्या पूवा घीरत टपकता, टड्डा वाजू बांह झलकता।
मखन बड़ा औ. पूरन पूड़ी, वांधू नौगर रेशम चूड़ीं।
छूटी लच्छेदार खीर, वांधू कमर स्वर्ण जंजीर।
छूट्या साग औ बड़ी अन्दठी, वांधू छाप छला अंगूठी।
बड़ा कचौरी छूटी पकौरा। बांधू कमर बंद चित चोरी।
छुटा घोल औ छुटा पितोडा, वांधू पांव सांड छुन तोड़ा।
छूट्या अमरस अचार चटनी, बांधू पायजेब छुन छुनी।
छूट्या टीट औ पापड फलियां, बांधी कडी औ तांती पँतियां।
छूटा भुजिया और रायता, बांधू छैलकड़ा मन भांवता।
छुटी अलौनी औरसलौनी, बांधू बिछिया और नखुनी।
छूटा छप्पन भोग हमारा, बांधू सब परिवार तुम्हारा।
छूटी गंगाजलकी झारी, बांधूं सुन्दर देह तुम्हारी।
इतनी वस्तु छुड़ाज्यो प्यारी, करो जनेती जीमन त्यारी।
सुनो सगाजी अरज हमारी, जानी आया पोल तुम्हारी।
इनके मनकी तपन बुझावो, एक एक सबने परनावो।

दोहा-भात जोड़कर लिख दियो, मम बुधिके अनुसार।
भूल चूक जो होय सो, बुधजन लेहु सुधार ॥
विक्रम सन उन्नीस सो, ऊपर अस्सी जान।
ज्येष्ठ शुक्लकी पञ्चमी, भात कियो निर्माण ॥
कवियनकी मति और है, मेरी मति अति दीन।
सेवक "अर्जुनलालको", क्षमहु सदा परवीन ॥

रामानन्दजी-वाह साव जोसीजी वाह! शाखा तथा पातल तो खूब ही सुनाई अब दो चार श्लोक और सुनावो। ये टावर टीकर दिन रात पीछे ही लगे रहते हैं इनको श्लोक सुननेका बड़ा ही प्रेम है।

जोसीजी-पण्डितजी! इन श्लोकोंकी रिवाज तो कोई नेग नहीं है, परन्तु एक प्रथासी पड़ गई है। प्राचीन कालमें छोटे २ बच्चोंके सगाई ब्याह होते थे और उनकी तोतली भाषा प्रिय लगती थी जिनके वशीभूत होकर स्त्रियें मोहर रुपये आदि देकर श्लोक सुना करती थी परन्तु वर्तमानमें तो यह नेगसे भी बढ़ गई है, कारण बालविवाह तो बन्दसे हो गये हैं, परन्तु सत्तर सत्तर वर्षके बूढे भी समाजकी आशाको ठोकर मारते हुए विवाह करते हैं तब उनसे भी स्त्रियें श्लोक कहलवाती हैं।

गणपतलालजी-जोसीजी! इस तरह किस तरह करोहो वातोंई बातोंमे रामानन्दजी थारो खजानो खाली करें हैं।

जोसीजी-पण्डितजी सरस्वती देवीका भण्डार इस तरह खाली नहीं होवे इसको तो जितना खाली करो उतना ही यह बढता जाता है।

रामानन्दजी-हसता हसता (गणपतलालजीसे) थे पण्डितजीने यांही समझो हो के इनका खजानाको कोईने थाग नहीं मिले।

❀ ससुराल-रहस्य ❀

गणपतलालजी–हांजी इसो तरां बोलवासुं काम चालसी थे तो लिखता जावो।

जोसीजी–हँसता हँसता हां जी लिखो–

छन्नीमें छन्नी छन्नीमें जीरो।
जनेत आई सोवनी, जंवाई आयो हीरो॥ १॥
ऊखलीमें ऊखली, ऊखलीमें जौ।
सालाहेली एकली, साला म्हारे सौ॥ २॥
छै छल्ला छै मूंदड़ी, ज्यासूं भरी परात।
दूजो श्लोक जव कहूं, साली सोवे साथ॥ ३॥
पहली क्यारी मोठ बाजरो, दूजी क्यारी धान।
छोटो सालो मोती दीन्हा, झलके म्हारा कान॥
बड़ो सालो घोड़ी दीन्ही, चढ़कर करां सलाम॥
सुसरो म्हारो लाडू दीन्हां, जीमें म्हारी जान॥
सासू अपनी बेटी दीन्ही, करसी घरको काम॥
गांव वालां आदर करके, राख्यो म्हारो मान॥ ४॥

बन्दौरीके वख्त बोलनेकी सिलोंका।

(ये सिलोका अक्सर महेसरी भाइयोंके बोले जाते हैं)

सुरसत मात सारदने ध्याऊं, भरी सभामें सिलोकां सुनाऊं
बिनती करके कन्या पुकारी, पञ्चो सुणज्यो अरज हमारी॥१॥
मैं हूं बालक ऊमरकी छोटी, माता पिता कीनी मोय मोटी।
बरस बारा में बालक जाणो, म्हारे तोभांव बिगडियो जमानो॥२॥
तात जननीकी बिगडी छे बुद्धी, कीनो है सगपण राखी नहीं सुद्धी।
पतलो नसीबो म्हारो छे काठो. जोयो छे जी बंदडो बरसां में साठो ३
रुपया लीना छे पांच हजारो, किणविध काढूंगी अबे जमारो॥

वर देखने विचारजी कीजो. इतनीतो अरजी पंचा म्हारी सुनलीजो४
सुणज्यो कीरपाकर म्हारी पुकार, म्हारा सरीसी उनरे पोतांछ च्यार।
माता कसायण भाई चणडालो, बावल दुस्मनरो मूंडोजी कालो॥५॥
म्हाने डुवोई कालीजी धागे, विगड़ारी रीता पंचां सुधारो।
मुरदोसो वालम म्हाने परणायो, जलमतही विषड़ो क्यूंनी पियायो६
विरथा छे म्हारो सारो संसारे, तिरलोकीको नाथ वेडा पारउतारे।
घर घरमें चाली छे म्हारोजी वातां, सुन सुनने दुनियां कूटेजी माथा ७.
दरसणी हुणडी सूं पुत्री विकावो, रुपया चेगणाई कलदार गिनावो।
खोटो खारोतो परो वदलावो, पाछे करोला म्हामूजी दावो ॥८॥
मांस खावनरी सोगनजी पालो, हाथांसूं रस्तो ऊंधो निकालो।
बाप नकटो नकटोजी जंवाई, नकटा मामाजी म्हाने परणाई ॥९॥
नकटो दीखे छे सारो पिरवारो, म्हाने यो बूढो वर लागेजी खारो।
मूंडारेमांही नहीछे इकदंतो, म्हांरा करमांम लिख्यो इसड़ाई कंतो॥१०
माथां केसां छे नहीजी कालो, इसा कंवरडारो मूंडोजी वालो।
मै तो आई अबे चूपंचारे सरणे दूसरा बूढलडा देखो कन्याने परणे ११
दयाको रेशोथे मनमें कुछ लावो, इसा दुस्टांसूं म्हां गौवाने वचावो।
पंचो सुद अवलांरी लीजो, इसड़ी वातां तो वन्द करो जो ॥१२॥
अन्य जातांमें होवे जी सुधारो, अपना पंचोंमें इतनो क्याने अंधेरो।
धनने लेकर बूढांने परणावे, उनरी पुरसोसां हाथां सूं खावे ॥१३॥
भाई बाप तो पैसासूं राजी, कन्या वर देख्यां होवे वे राजी।
पाछे कन्या नित पाप कमावे, नोकर चाकर सूं सेजा रमावे ॥१४॥
वरण संकराकी गिणती वढावे. दोनूं कुलांने दाग लगावे।
अधूरा वालकजी वारे नखावे, मां वापारे माथे हत्याजी चढावे॥१५॥
इसड़ी कुरीतां पंचां सुधरावो, बूढ़ा वालकरा व्याह वंद करावो।
नहि मानेतो जात पांत छुडावो, आगे डंड जुलम भरवावो ॥१६॥
थारे माथे छे कन्यारो भारो, दूर करा करज्यो वेगा निस्तारो।
इतरी छे म्हां गौवारी पुकार, ईश्वर करसो थाराभी वेडा पार ॥१७॥

❋ ससुराल-रहस्य ❋

सरसत माता मोटी ममाई,
तने समरूं मेरी कमलाने माई।
नगरी अनोखी लंका बखानूं,
गढ़का सोसेतो धौलागढ़ जानूं ॥ १ ॥
जिनमें बरष अठारा साकिया,
लंका नगरीमें कोई लोग न दुखिया।
राज करे छे रावणसो राजा,
जिणरे तो जुगमें सब कोई ताजा ॥ २ ॥
सहस्र अठारा थी जिणरी तो रानी,
उनमें मन्दोदरि थापे पटरानी।
रूप रंगीलो सुन्दर मनमानी,
राजा रावणरी बुद्धि पलटानी ॥ ३ ॥
रूप मिरगाको मामो बनायो,।
,सीता हरणने पंचवटीमें आयो।
राम लक्ष्मणने सीता ऐसे बतलावे,
सोनारा मिरगारी छाला मनभावे ॥ ४ ॥
मिरगारे पाछे भाग्या बाण ले हाथा,
रामर लीछमण दोनूंजो भ्राता।
कपटारो रूप रावण कीनो,
सीतारी कुटियारो मारग लीनो ॥ ५ ॥
भिक्षा घालतने लीनो रथमें बैठाई,
वागां आसोकां उतारी लाई।
सीता यूं बोली सुण रावण राजा,
इतरो तो तुम सेती म्हारोजी काजा ॥ ६ ॥
मास छै मासरी आवरदा दीजे,
पाछे थारा मन भावन्ता कीजे।

दरयारे काटे छे गांव तुम्हारो,
अठे नही चाले कोई रो चारो ॥ ७ ॥
रामजी सुताने निद्रा नहि आवे,
सीता विन निसभर जियड़ो अकुलावे ।
रामजी राजाने लछिमण समझावै,
उतावल कऱ्या सूं सीता नहि आवै ॥ ८ ॥
हांक्यों हणुमन्तों बोल्यो मुख वानी,
माता सीतारी लाऊं सैनाणी ।
बाग आशोका मांहे सीताजी बेठी,
जाय मुदरका हणमत नाखीजी हेटी ॥ ९ ॥
नीचे जायने हणमत माथो झुकायो,
हुकम लेकर बागां मीठा फल खायो ।
जबे रावण हणमन्तो बंधायो,
तेल रुई सूं पूंछ आग लगायो ॥ १० ॥
कूदर चढ़ियो जाय कनक अटारी,
सारी लंकाने हणमत होली ज्यूं जारी ।
सीतारे सीनमुख बोल्यो माता सुणीजे,
पाछो जाऊं आशीषों दीजे ॥ ११ ॥
एक अरजी हणमत म्हारी सुणीजे,
रामर लीछमणने ऐसे कहीजे ।
तीस दिनमें आकर मुखड़ो दिखावे,
नातर सीताने फेरू जीती न पावे ॥ १२ ॥
चूड़ामण अपनी दीनी सेनानी,
चाल्यो पवनसुत हाथमें लीनी ।
समन्दर तो लांघ अपना खेमामें आयो,
राम लीछमनने संदेशो सुनायो ॥ १३ ॥

आगे बांदरने चाले रघुराई,
समंदर रे ऊपर देखो पाज बधाई।
पदम अठारा लारे बांदर लाया,
लंका रे ढावे जाकर डेरा दिराया ॥ १४ ॥
आयो रावन रो बेटो, मेघो मनमें गर्वायो,
लीछमण रे सामें जंग जमायो।
सकती सूं मूर्छा खाई लीछमण बलवन्तो,
बूंटी लावण तवे हांक्यो हणमन्तो ॥ १५ ॥
बूटी लायो ने हणमत जीव बचायो,
सारी तो फोजांमें खूब आनन्द छायो।
दूजे दिन मेघाने रावण मारियोनी पायो,
घायल हुओ वे अपना बागांमें आयो ॥ १६ ॥
उठो कुम्भकरणजी मूर्छा बल घालो,
सायबरे सामें थे तो लड़बाने चालो।
रावण रो सगला जी वंस खपायो,
लंका रो राज विभीषण जी पायो ॥ १७ ॥
सीताजी संगमें सोभा लीछमण री न्यारी,
पाछा घर आवण री कीनी तयारी।
माता कौसल्या आरती संजायो,
दास तुलसी ज्यारो निसदिन गुणगायो ॥ १८ ॥

विवाहमें सुपारी बदल जानेके समय बोलने योग्य श्लोक।

कन्यापक्ष—हे राजन्न कृतं मया यदादितं विन्नं न दत्त समं
पक्वान्नं वचनं न दम्भरहितं प्रोक्तुं न शक्ता वयम्।
नो दत्ता गजदासतुङ्गतुरगाः कन्या न रत्नैर्युता
सम्बन्धे भवता कृते न च समास्तुल्या भवद्भिः कृताः ॥

हे श्रीमान् ! मैंने आपका कुछ भी सम्मान नहीं किया। धन तथा पकवान भी कुछ न दिया, छल रहित वचन भी न बोलसका। हाथी तुरग तथा सेवक कुछ भी न दिया, रत्नयुक्त कन्या भी न दी तबभी आपकी समानता योग्य न होनेपर भी आपके बराबर हो गया। क्यों न हो आप समर्थ हैं। दुग्ध जलको भी अपनी ही समान बना लेता है।

वरपक्ष-प्राचुर्येण तृणादिभिः पशुगणा मिष्टान्नपानादिभि-
बाला वृद्धजना मनोज्ञवचसा काव्यादिभिः सज्जनाः।
स्त्रीणां गीतकटाक्षहास्यविलसद्भावैर्युवानो नरा-
स्तेषां धान्यधनादिभिश्च विविधैः सर्वे कृतार्थीकृताः॥

हे समधी महाराज ! आपने घास और दाणा द्वारा हाथी घोड़ा आदि वाहनोंको सन्तुष्ट किया। शीतल-कोमल और मधुर पक्वान्नों द्वारा बच्चोंको तृप्त किया, आदर सत्कार और मिठासयुक्त वाणी द्वारा वृद्धजनोंको प्रसन्न किया, सज्जनोंको काव्य इतिहास और नाना प्रकारके विनोदसे मनरंजन किया। नवयुवकोंको स्त्रियोंके नाना प्रकारके सुन्दर गीत हास्य कटाक्षद्वारा आनन्दित किया तथा इनके सेवकोंको अन्न धन वस्त्रादिकोंके द्वारा छकाया और कहांतक कहें हम जितने लोग आपके यहां जिस जिस आशासे आये, सबका आपने उचित सम्मान किया. अतः आप कल्पतरुवृक्षकी उपमा देने योग्य हैं।

कन्यापक्ष-काष्ठं कल्पतरुः सुमेरुरचलश्चिन्तामणिः प्रस्तरः
सूर्यस्तीव्रकरः शशी क्षयकरः क्षारो हि वारांनिधिः।
कामो नष्टतनुर्बलिर्दितिसुतो नित्यं पशुः कामगौ-
र्नैतांस्ते तुलयामि भो रघुपते नास्त्यत्र साम्यं यतः॥

हे श्रीमान् ! कल्पवृक्ष काष्ठ है, आप मनुष्य हैं, सुमेरु अचल है आप चलायमान हैं. चिन्तामणि पत्थर है, आप चेतन हैं, सूर्यके

किरणें तप्त हैं, पर आप शीतल हैं, चन्द्रमाकी किरणें क्षय होती रहती हैं, आपकी तेजकिरणें अक्षय हैं, समुद्र खारा है आप मीठे हैं, कामदेवको शरीर नहीं है आप देहधारी है, बलिराजा दैत्य है आप दिव्य पुरुष हैं, कामधेनु पशु - आप देवरूप पुरुष हैं। भावार्थ यह कि सृष्टिकी जितनी वस्तुयें हैं सबमें एक एक कलंक है पर आप निष्कलंक हैं तब आपको किसकी उपमा दें ? आपकी उपमायोग्य संसारमें कोई वस्तु नही अर्थात् आप सबसे बड़े हैं।

वरपक्ष-सुरतरुरपि न स्वकीयशाखां वितरति वत्सतरी न कामधेनुः।
दृशमपि च सहस्रचक्षुरन्यः कथमुपमा भवतां सतां लभेत ॥

हे संबन्धीजी ! कल्पवृक्ष जो है वह अपनी शाखा भी किसी को नहीं देता, कामधेनु अपनी बछियां नहीं देती, इन्द्रके सहस्र नेत्र होनेपर भी अपना एक नेत्र भी किसीको नही दे सकता इसलिये आप इन सबसे बढ कर हैं क्योंकि आपने हमें सब कुछ दिया है।

सत्य है-

बड़े बड़ाई ना करैं, बड़े न बोलै बोल।
हीरा निज मुख ना कहै, लाख हमारा मोल ॥

कन्यापक्ष-कुन्दं क्षणाचयि कलङ्कि शशाङ्कबिम्बं,
क्षीरं विकारि जडसङ्गति हंसबृन्दम्।
हाराः सरन्ध्रवपुषो धवलद्युतीनां
केनोपमा व्रजतु नाथ यशस्त्वदीयम् ॥

हे श्रीमान् ! कुन्द जो पुष्प है वह शीघ्र ही नष्ट हो जाता हैं, चन्द्रबिम्ब कलंकी है दूध विकृत होनेवाले पदार्थ है, हंससमूह जो है वह जडवृक्ष तथा जल कमलादिककी सङ्गति रखता है, मणियोंके हार जो हैं वे छिद्रवाले होते हैं किंतु आपके निर्मल यशके सदृश विश्वकी कोई भी सामग्री नही जिसको उपमा दे सकें। आपने

अवश्यही हमारे लवण रहित साग पात फीके पक्वान तथा रत्न-रहित कन्याको सहर्ष अपनाकर हमारे मानको वढाया है।

वरपक्ष-गर्जित्वा वहु दूरमुन्नतिभृतो मुञ्चन्ति वार्यम्बुदा
भद्रस्यापि गजस्य दानसमये सञ्जायते दुर्मदः।
पुष्पाडम्वरमाप्य सम्प्रददति प्रायः फलानि द्रुमा
नोत्सेको न मदो न कालहरणं दानप्रवृत्तस्य ते॥

हे सम्बन्धीजी महाराज! मेघ है सो जल देते हैं, परन्तु वड़ी भारी गर्जना और घमण्डके साथ, सीधे स्वभाव वाले हाथीको भी दान के समय दुर्मद हो जाता है, वृक्ष और लतायें जो फल देती हैं। सो भी पहिले पत्र और पुष्पोंसे आह्लादित हो जाती है तव. परंतु आप जो दान देते है और सन्मान करते है वह विलकुल अभिमान रहित करते है इसलिये आपको कोटिश: धन्यवाद है।

कन्यापक्ष-पयसा कमलं कमलेन पयः पयसा कमलेन विभाति सरः।
मणिना वलयं वलयेन मणिर्मणिना वलयेन विभाति करः।
शशिना च निशा निशया च शशी
शशिना निशया च विभाति नभः।
भवता च सभा सभया च भवान्
भवता सभया च विभाम वयम्॥

हे श्रीमान्‌जी! जलसे कमलकी शोभा और कमलसे जलकी शोभा तथा जल और कमलसे सरकी शोभा है, मणिसे कड़ेकी शोभा और कड़ेसे मणिकी शोभा तथा कड़ा और मणिसे करकी शोभा है, चन्द्रमाकी रात्रिसे शोभा और रात्रिकी चन्द्रमासे शोभा तथा रात्रि और चन्द्रमासे आकाशकी शोभा है, आंपसे सभा शोभित है तथा सभा करके आप शोभित हैं आप और आपकी सभा करके हम शोभायमान हुए है।

❀ ससुराल-रहस्य ❀

बरपक्ष-कन्या क्वापि कुलं क्वचिद्धनमपि क्वापि प्रियाणि क्वचि-
न्नह्येकत्र चतुष्टयं क्वचिदपि प्राप्येत कैश्चिन्नरैः।
कन्यारत्नमिदं कुलं सुविनयं भ्रातादिभोग्यं धनं
तच्छ्रीमद्भवतः सुखादभिमतं प्राप्तं समस्तं फलम् ॥

हे समधीजी ! कन्या कही, कुल कही, धन कहीं, स्नेह कही अर्थात कोई भी मनुष्य इन चारों वस्तुओंको एक स्थानमें नही पा सकता किन्तु यह कन्यारत्न, निर्मल कुल, भाईबंधुओंका पारस्परिक प्रेम और धन चारोंही आपके यहां हमने पाया, अतः हे श्रीमान् आपका समागम होनेसे अवश्य ही हम और हमारी सभा शोभा-को प्राप्त हुई है।

कन्यापक्ष-फणीन्द्रस्ते गुणान्वक्तुं लिखितुं हैहयाधिपः।
द्रष्टुमाखण्डलोऽशक्तः क्वाहमेते क्व ते गुणाः ॥

हे श्रीमान्जी ! आपके गुणोंको सहस्र मुखवाले शेषजी बखान करनेमें तथा सहस्र भुजा वाले कार्त्तवीर्यजी लिखनेमें तथा सहस्र नेत्रवाले इन्द्र महाराज देख सकनेमें समर्थ नहीं हैं तो हम एक मुख दो भुजा और दो आंखवाले मनुष्य उच्चारण लेखन और दर्शन करनेको कैसे समर्थ हो सकते हैं ? अर्थात् आपके गुणोका कोई पार नही पा सकता।

बरपक्ष-नागो भाति मदेन कं जलरुहैः पूर्णेन्दुना शर्वरी
वाणी व्याकरणेन हंसमिथुनैर्नद्यः सभापण्डितैः।
शीलेन प्रमदा जवेन तुरगो नित्योत्सवैर्मन्दिरं
सत्पुत्रेण कुलं नृपेण वसुधा लोकत्रयं विष्णुना ॥

हे सम्बन्धीजी ! जैसे हाथी मद करके, जल कमल करके, रात्रि चन्द्रमा करके, वाणी व्याकरण करके, नदियां हंसोंके जोड़ो करके, सभा पण्डितों करके, स्त्री स्वच्छ आचरण करके, घोड़ा

वेग करिके, मंदिर नित्य उत्सवो करिके, कुल सपूत करिके, पृथ्वी राजा करके, और तीनों लोक विष्णु भगवान् करके शोभाको प्राप्त होते हैं उसी प्रकार हम भी आपकी संगति समागम और सत्कार करके अनंत शोभा को प्राप्त हुए है।

कन्यापक्ष-यावद्यस्य मातिर्विधावति परं तावद्धि तेनोद्यते,
निःसीमे भवतो गुणार्णव इह प्रान्तं कथं प्राप्नुयाम्।
यावन्तस्तुगुणा मम श्रुतिगतास्तावंत एवोदिताः,
क्षन्तव्यं मतिमन् हि चापलमिदं सोढुः क्षमेवोचिता॥

हे श्रीमान्! जिसके बुद्धिकी जितनी दौड़ है वह उतना ही कह सक्ता है, इससे मै इस लोकमें सीमारहित आपके यशरूपी समुद्र को पार कैसे कर सकू, जितने आपके गुण मेरे कानमें आये उतने ही मैंने कहे हे श्रीमान्! आप मेरी इस चपलताको क्षमा करें क्योंकि आप इस योग्य है।

गणपतलालजी-थारी ये वातां तो दिनभर-नीमड़ती दीखें नही देखां अब दो चार वातां म्हेवी पूछां ज्यांरो जुवाव देवो।

जोसीजी- हां साव! खूब पूछो जुवाव तो आसी तो देस्यां।

गणपतलालजी-इसी कुणसी जीनस है आपाणे आख्यांकी पलक मारतां देर लागे पण वीने जातां देर लागे नही झाड़ पहाड़ वीने कांई वी रोक सके नही।

जोसीजी-यातो आवाज है॥ १॥

गणपतलालजी-ऐसी कुणसी चीज है जिकी आपां मां भाण भूवा सबकी देख सकांहां पण आपनी लुगाई की देख सकां नही।

जोसीजी-योतो विधवापण है॥ २॥

गणपतलालजी-एक विधवा लुगाई अपना बेटा सागे गांव जायथी रस्तामें नदी पार होती वखत बोली, बेटा मने ऐसी

जगा सूं पकड़ कर पारकर जिकीने तेरो वाप कदेई देखी कोनी।

जोसीजी-खाली पूंचो ॥ ३ ॥

गणपतलालजी-ऐसी कुणसी चीज है जिकीने हिन्दु, मुसलमान, जैन, वौध, ईसाई सव कोई दिन भरमें कितरी वारई सव के सामने खावें है वींको सर काटकर खांय तो मर जांय.

जोसीजी-कसम. सर हुवा'क',इसको काट दो तो सम होजावे सम नाम जहर का है ॥ ४ ॥

गणपतलालजी-वो कुण है आंधो है पण दूसरांने रस्तो बतावे, गूंगो है पण गिणती बतावे।

जोसीजी-मीलको पत्थर ॥ ५ ॥

गणपतलालजी-वो कुण है जो विना सरीरके अमर है विना जीभ बोले है जिकानें देख्यो कोई नहीं, सुणें सबहैं।

जोसीजी-प्रतिध्वनि ॥ ६ ॥

गणपतलालजी-(झूमरसूं) कंवर थे कितरा भाई हो।

झूमर-तीन।

गणपतलालजी-और चार होता तो के खोसणा खोसता, ये जबरदस्तीकी मस्करी है॥

गणपतलालजी-ऐसी कुणसो चीज है जिकी गयां पाछे आवे नहीं और ऐसी कुणसी चीज है जिकी आयां पाछे जावे नहीं

झूमर-जवानी, बुढापा।

गणपतलाल-ऐसी कुणसी चीज है जो परमात्मा सबने देवे हैं पण खुशी से कोई नहीं लेवै।

झूमर-मौत।

झूमर-क्यूं जोसीजी अब पेट भरयोकना

गणपतलालजी-(हंसता २) साव पेट तो लुगायांको भरया करे है, आपां तो आप लोगां कने बैठकर घंटा भर मन राजी कर लियो (मदनलालसुं) बाबू साहेब आपके झूमर तथा चन्दर दोनां बाबू पंचम वेद पढ्योड़ा है

इन लोगों में इस प्रकार बातें हो रही थी कि-

रतनी आकर बोली-बाबा गणपत अब यांनें रसोई जीमवा देसी-कना तेरी बातोंको तो संन्या ताईं निमेड़ो नही आवे।

गणपतलालजी-बाई साव ! इसा नाराज क्याने होवो हो मैं तो कांईं बी कोनी बोलूं चुप चाप बैठ्यो हूं याने कठे ले जावो हो।

रतनी-ले जाऊं हूं कठे रसोई, जीमेगा अकना। (झूमर चन्दरसे) ऊठो जी कंवर साव सासरे आया हो तो के वरत करवाने आया हो के ?

झूमर-(तिरछा झांकता हुआ,) सासरे आयां हां तो के कुछ मिजाज भी कोणी करण देस्यो के ?

झूमरकी इस बातको सुन सब आदमी खिल खिला पड़े, सब लोग जीमनेको पधारे, आनन्दके साथ भोजन किया, नाई जोसी डेरेमें आये, मदनलाल झूमर और चंदरके साथ स्त्रियोमें जा बैठे, पान बीड़ी आदि खानेके पश्चात इस प्रकार बातें आरम्भ हुई।

मदनलाल-गीत पहेली आदि तो आज बन्द राखो और म्हारी अरज ध्यान सुं सुणो।

सालाहेली-फरमावो सरकार के हुकम है ?

❀ ससुराल-रहस्य ❀

मदनलाल-हुकुम इत्तोई है आज म्हाने सीख मिल जानी चाहिये देखो च्यार दिन हो गया।

सालाहेली-चारदिन हो गया तो के हुयो, जंगलमें थोड़ाई बैठ्याहो?

झूमर-जंगलमें तो कोनी बठ्या, पण घरां तो जाणोई पड़सी अठे घर वासो थोड़ी करनो है?

सालाहेली-(हँसती हुई)उठे थारे बिना कुणसो काम अटक रह्यो है, अठेईं दो दिन ओर रह जावो।

चंदर-वा साब! वा थारे लेखे तो म्हे फालतूई हां हाल थाने यो बेरोई कोनी घरां जाकर म्हारे लोगोंकी सगाईकी तजवीज करनीहै।

लुगायां-(चंदर सूं)-कुंवर साव! थारी सगाई तो अठेई कर देस्यां।

चंदर-(मदनलालसूं)-भाया थे लोग तो जावो ओर मेरे ऊपर सयांकी (लुगयांकी) म्हेरबानी दीखे है, सो मैं तो अठेईं रहस्यूं (सब-स्त्री मुंहमें रूमाल दाब-हँसने लगी)

सालाहेली-(मदन सूं)-कंवर साब! आख्यां तरसतां तरसतां तो बारह बरसमें थारा सूं दो चार बातां करवांको मौको मिल्यो और थे बेगाई विचार करबा लाग गया पूरी सी बातां भी नही कर पाया।

मदनलाल-थारी मेहरवानी होसी तो फेरूं बेगाई मुलाकात करांगा। बाई रतनी वी तो व्याह जोग हो गई हैं इस मौका पर जरूर मुलाकात होसी।

रतनी-(आख्यां भर मदनलालकी गोदमें बैठकर) जीजाजी मने तो थारे सागेई ले चालो.

मदनलाल-(प्रमसूं)उदास होनेको काम के है चालो थारी बाईके सागे पाछा आजा ज्यो।

सालाहेली-कँवर साव! जावाको नांव सुणताई हियो भर्‌यो आवे है पर जोर चाले नही पावणां सूं घर बसे नही।

मदनलाल-(प्रेमसूं) ये मोहिनी सूरत तथा ये मीठी मीठी बातां फेर कद सुनांगा? बाई रतनीका व्याहकी तजबीज बेगाई करज्यो।

सालाहेली-विचार तो बेगांई है साव, परन्तु देखी जाय इवकाबे होवे अक आगली साल हो?

झूमर-म्हाने भी याद राखज्यो म्हेरवानी सवाई राखज्यो कही सुणी माफ करज्यो।

बड़ीसाली तथा सालाहेली-(उदास होकर) कंवर साव! थां लोगांकी सूरत तो दो चार दिन सुपनामें भी आसी।

मदनलाल-अच्छा तो अब सीख द्यो जाकर कपडा लत्ता वांधां!

सालाहेली-कँवरसाब! या तो दीखेई है परन्तु हाल एक नेग ओर बाकी है।

मदनलाल-सगलाई नेग हो गया तो एका दो क्यूं बाकी राखणो फरमावो वो कुणसो नेग है?

झूमर-(हँसतो हुवो) हां मैं तो समज‌्‌वी गयो।

चन्दर-अच्छा वोल के समज्यो?

झूमर-तेरी अक मेरी सगाईको टीको मिलसी।

सालाहेली-(झूमर चन्दरसे) जावो वापको मंघावणो-"कोई गावै होलीका कोई गावै दिवालीका" थाने आपही आपकी लाग रही है।

झूमर-(धीरेसे) साब! आप आपको मतलब सबने दीखे।

❀ ससुराल-रहस्य ❀

सालाहेली-(मदनसूं) कँवर साब ! सीख लेनी हो तो म्हारां बाईको नांव बतावो ।

पाठक ! राज़पुतानेमें कैसा पोपा बाईका राज्य है । ऐसी ऐसी क्षुद्र बातें भी नेगके रूपमें प्रचलित हो जाती हैं ।

मदनलाल-पहली कोई वी काम करके बताणेसे सामला आदमी सीखे हैं, पहिली आप लोग नांव लेवो ।

छोटी सालाहेली-रूपाकी थालीमें पुरस्या बूरा भात ।
जीमन-बैठ्या "बालकिसनजी" गोरा गोरा हाथ ॥१॥

बड़ी सालाहेली-हाथां मैंदी राचणी, राची लालगुलाल ।
"गुलाबचन्दजी" छैलकी, मैं हूँ प्यारी बाल ॥ २ ॥

झूमर-(पाड़ोसनसूं) ब्याणजी देखां तो थे भी हां ।

पाडोसन-सोलहूँ शृंगार कीन्हा, माथे कुंकुं टीको ।
"जैनारायणजी" छैलबिन, सेजांको रंग फीको ॥ ३ ॥

मदनलाल-(बड़ी सालीसूं) मेहरवान आप भी नम्बर संभालो ।

बड़ी साली-रात दिन हँसता रहै, मनमें रखैं न मैल ।
म्हारो मन राजी करै, "पन्नालालजी" छैल ॥ ४ ॥

मदनलाल-(रतनी सू) बाई साब ! सागे तो चालोगा पण नाम तो ल्यो ।

रतनी-(शरमाती हुई) पांच हाथ डुपट्टो, पचास हाथ चीरो ।
"नागरमलजी" ऐसे सोहैं ज्यों रत्नामें हीरो ॥ ५ ॥

चन्दर-(दुरजनसूं) क्यूं जी थारो के विचार है ।

दुरजन-सावन महनो सुरंगो, सहेलियोंको साथ ।
"झूमरलालजी" सामां मिलगया, छाती धड़का हाथ ॥ ६ ॥

---

१ नाम अपनी इच्छानुसार बदले जा सके हैं ।

भ्रमर-(दुरजन सूं) वा साव ! वा ! म्हारे ऊपर थेई राजी हुया के खैर के आंट है, आप आपको तकदीर है थारो नाव तो बतावो क्यूंक म्हारो भी तो नम्बर आसी।

सालाहेली-(हंसती हुई) कंवर साव ! अब थारो नम्बर है।

मदनलाल-रूपांके पिलगां विछी, मखमल केर विछात।
खसखसकी पंखी सजी, "चन्द्रकिरण" के हाथ ॥

बड़ी सालाहेली-म्हारे वहल भी।
सुरमो आख्यां सोहनो, दांत दाडचुंका बीज।
प्यारी "चन्द्रकिरन" यूं सजी, ज्यूं सावणकी तीज ॥८॥

साली-वस, नम्बर सूं होवा द्यो।

मदनलाल-बागां आम जम्हूरी लाग्या, पीली हो रही खिरणी।
"चन्द्रकला" ऐसे सजी, जैसे वनकी हिरणी ॥ ९ ॥

रतनी-म्हाने भी सुनावो।

मदनलाल-सावन वरसे विजली चमके, इन्दर करे उपाद।
सूनी सेजां म्हाने आवै "चन्द्रकिरण" की याद ॥ १० ॥

पड़ोसन-चुप क्यूं हो गया अदलाको वदलो तो चुकानोई पड़सी।

मदनलाल-मिस्सी दातां चिकमणी, मेंदी राच्यो हाथ।
झूलां चम्पा बागमे, "चन्द्रकिरणके" साथ ॥ ११ ॥

दुरजन-(भ्रमरसूं) कंवरजी, थे भी बतावो ?

भ्रमर-थे पूछो हो च्याव सूं, पण म्हे कांई वतलावां।
सगाईको तो पतो नही है, नांव कठा सूं लावां ॥ १२ ॥

"ससुराल सुखकी सार" यह कहावत वास्तवमें सत्य है, यहां मनुष्य चाहे जैसा काम करे वह क्षम्य ही समझा जाता है।

इस प्रकार स्त्रियोंसे सादर विदा हो तीनों भाई डेरेमें चले, उस समय चंदर ऊर्ध्वश्वांस लेकर बोला-हमारे स्त्री होती तो हम भी

नाम बताते, इस बातको सुन सब स्त्रियें मुसकाती रह गईं—ये लोग डेरमें आये जोसीजीको सांवलरामजीके पास विदाई मांगने भेजा, जोसीजी जाकर बोले आज म्हाने सीख मिलनी चाहिये। सांवलरामजीने पहिले तो कुछ टाल टूल की, पश्चात् इनका चित्त उचटा हुआ जान, आज विदा कर देनेका विचार कर सवारी आदिका प्रबन्ध करने लगे। शामके चार बजे समय जुहारी (विदाईका तिलक) देकर विदा किया, ये लोग भी ऊंटोंपर सवार हुए, चन्द्रकिरण व रतनी दोनो बहनें प्रेमाश्रु बहाती हुई भैल (बैल गाड़ी) में बैठी सबसे यथायोग्य कर विदा हुवे, स्त्रियें भैलके चक्कोंपर जल छिड़क निम्न ओलंग (विदाईका गीत) गाती हुई घरमें आगई। दूसरे दिन ये लोग अपने घर जा पहुंचे बधाई बटने लगी, मंगलाचार गाये जाने लगे।

गीत ओलंग।

ऊंची तो खिवे ढोला बीजली,
नीची खिवै छै निवाणजी ढोलां॥
ओजी वो गोरीका लसकरिया,
आंगुटी लगा थर कोटै चाल्याजी ढोला॥ टेर॥
चढोये तो ओढां ढोला चुनड़ी रहो ये तो,
ओढां दिखणीरो चीर जी ढोला॥
ओजी वो गोरीका लसकरिया यही टोय,
लसकर थामो जी ढोला॥
लटपटिया नैनाकी ओलूं आवे जी ढोला।
म्हारो तो थाम्यो नसकर नायमें॥
म्हारा बाबाजीनो थाम्यो लसकर थममी ये गोरी,

❋ मुकलावा-बहार ❋

ओजी वो गोरीका लसकरिया ॥

घड़ी होय लसकर थामोजी ढोला,

चढोये तो रांधा ढोला खीचड़ी ॥

रहो ये तो रांधा जिनवारा भात जी ढोला,

ओजी वो गोरीका साहिवा ओलूंडी ॥

लगा घर कोठे चाल्या जी ढोला,

चढो ये तो ओढो गोरी चूनड़ी ॥

आय ओढो ये दखणीरो चीर ये गोरी,

ओजी ओ गोरीका लसकरिया ॥

आंगणिया में फिरता प्यारा लागोजी ढोला ॥

पत्र प्रकरण ।

श्री लिखिये षट (६) गुरुनको पांच, (५) स्वामि रिपु चार (४) ।
तीन (३) मित्र दो (२) भृत्यको, एक (१) पुत्र औ नारि ॥

पत्र स्त्रीकी ओरसे पतिको–

स्विड श्री प्रियस्थान शुभनग्र आनन्दमय " " जीवनमूल सूर्यसम कांतिवान प्राणाधार कोकज्ञाता सुजान सर्वगुणागार ऐसी अनेक ओपमा योग्य श्री ५ प्राण प्यारे प्रियतम " " से चरणरज-किंकरीकी अनेकानेक बार सादर सप्रेम यथायोग्य । यहांका समाचार परम पिता परमेश्वरकी कृपा से अच्छा है आपका अच्छा रहनेके लिये ईश्वरसे सदैव प्रार्थना करती हूं सरदी पानीके दिन हैं अहार विहारका प्रबन्ध रखनाजी रक्षा तो करनेवाले गोपीनाथजी हैं परन्तु इस दासीका लिखना ही कर्तव्य है । खाने पीनेका समय चुकाना नहीं तथा आनेके समय

हाजर बंदी ढोलियेकी मनुहार वास्ते प्रेमभोजन-मिश्री-गुलकन्द बादाम पिस्ता आदि लेते आवेंगे जहांतक होसके कार्यको समाप्त कर शीघ्र ही पधारेंगे।

दोहा-प्रियतम तुम्हरे मिलनको, नितप्रति करूं उपाय।
अश्वचरण औ मीनधर, मिलन देत हैं नांय॥
एक रती विन होत हैं, सबरी रतियां ख्वार।
रती रती नित छिजत हूं, बेगहि लीजो सार॥
कागज थोडा हित घना, क्योंकर लिखूं बनाय।
सागर पानी बहुत है, गागरमें न समाय॥
कहन सुननकी है नही, लिखी पढ़ी नहिं जात।
अपने मनमें जानियो, मेरे मनकी बात॥

याद करैं तुमको हम नित्त, कभि याद करो नहिं नाम हमारो।
ऐसी क्या चूक करी हमने, पिय चोरी करी हो तो चाबुक मारो॥
आप सुजान शिरोमणि साजन, दंपति नेह कभी न बिसारो।
नैनों मिलनेमें बीच पड्यो, पर कागजको मिलवो न बिसारो॥

शुभ मगसर शुक्ल १-१९८१ आपकी-
चरणरज-"किंकरी"

! ,तिका पत्नीको।

स्वस्ति श्री शुभनग्र" "मोहनी मूर्ति मृगनैनी पिकवैनी कटिकेहरि-चन्द्रकान्ता-आभाकी बीज श्रावणकी तीज पतिव्रता-ऐसी अनेक ओपमा योग्य प्राणप्यारी " " को शुभनग्र " " से " " का अनेकानेक शुभाशीष। अत्र कुशलं तत्रास्तु। पश्चात समाचार है कि तुम्हारी प्रेमपत्रिका मिली बांच-कर असीम आनन्द प्राप्त हुवा। मैं कुशलपूर्वक हूं व्याकुल होनेका

कोई कारण नहीं है धैर्य रखना। मैं कार्य समाप्त कर शीघ्र ही आता हूँ।

प्रथम चैत्र कृष्ण ५-१९८२ तुम्हारा प्रेमी—
" "

नमूना व्याहपत्रिका।

वर्तमान समयमें कुंकुंपत्रिकाये भी कई ढचरेसे लिखी जाती हैं, अतः एक दो नमूना इसके भी लिख देना उचित ही होगा।

मारवाड़ी ढङ्ग।

सिद्धश्री कलकत्ता महासुस्थान अनेक उपमा योग्य सकल गुणनिधान भाईजी श्रीकपुरचंदजी केशरचंदजी और समस्त बाल गोपाल जोग लिखी श्री सम्बलपुर सेती—"रूड़मल दगड़मल" का श्री जैगोपाल बंचज्यो। घणां घणां मानसे अठे उठे श्री विनायेकजी महाराज सदा सहाय छे अपरञ्च अठे श्रीठाकुरजीकी कृपा सूं बाबू मदनलाल को व्याह मिती मङ्गसर सुदी ३ का फेरा छे. मिती मङ्गसर सुदी २ सनीवारी मेल जीमनवार तथा निकासी छे· जीण ऊपर आप सारा सीरदार दीन ४ पहली पधार कर व्याहकी सोभा बढ़ाय जो, आपके पधारयांसूं सोभा घनी होसी जी। कुंकुं पत्रोमें भूलचूक होय सो माफ करायजो, मिती मङ्गसर वदी ८

सा० १९८१

लि० "रूढमल" की जैगोपाल बंचजो घणे मानसुं व्याह ऊपर जरूर जरूर पधार जो।

बपत नौ बजे प्रातकी गाड़ीसे रवाना होकर झाड़सोकड़ा-सांहजी "चंपालालजी गुलाबचन्दजी" रे उठे जावसी।

❀ ससुराल-रहस्य ❀

हिन्दी पत्रिकाका नमूना !

सिद्धि सदन कुञ्जर बदन, गणनायक प्रभु सोय ।
शुभ लगनपर आय प्रभु, सदा सहायक होय ॥

"कलकत्ता"

"पृष्ठ १. फाल्गुन कृष्णा ६-८१

सेवामें

श्रीमान् बाबू-"श्यामलाल शिवकर्ण" और समस्त बाल गोपालके सादर यथायोग्य.

अत्र कुशलं तत्रास्तु ।

मान्यवर महोदय !

आपको यह सूचित करते बड़ा हर्ष होता है कि हमारे यहां सौभाग्यवती कुँवारि "चम्पा" का खरगपुर निवासी लाला बलदेव-दासजीके सुपुत्र बाबू गुलाबचंदसे पाणिग्रहण होना शुभ मिती फाल्गुन शुक्ल द्वितीया बार सोमवारको निश्चित हुआ है अतः हम आशा करते हैं कि आप अपने इष्ट मित्रों सहित इस सुअवसर पर पधारकर हमारे मानको बढावेंगे और कार्यमें सहायता देंगे । विशेष विनय—

हैं कहां इस योग्य हम स्वागत करैं श्रीमानका ।
पर विदुरने प्रेमवश, न्यौता किया भगवानका ॥
सेवक सदा हम चरणके, हमपर अनुग्रह कीजिये ।
नैन लोभी दर्शके, इनको कृतारथ कीजिये ॥

आपका चरण सेवक—

"श्रीलाल"

मालिक—"फर्म जेनारायण श्रीलाल"

(पृष्ठ २) कार्य क्रम.

(१) फाल्गुन शुक्ल द्वितीया फेरा सायंकाल ७ बजेसे १२ तक.
(२) " " तृतीया, बढ़ार तथा मेलकी जीमणवार.
(३) " " चतुर्थी. पहरावनी बरात विदाई आदि.

॥ इति ॥

प्रेमीजनोंके लिये कुछ गुप्त स्याहियां।

(काली)—एकछटाक गन्धकका तेजाब एक बोतल पानीमें मिलावो इस पानीसे लिखा हुआ गुप्त रहेगा, अग्निकी आंच दिखानेपर अक्षर दीखेंगे पुनः गुप्त हो जावेंगे।

(पीली)—नीलाथोथा और नौसादर घोलकर लिखो और कागजको अग्निका ताव देवो तो पीले अक्षर झलकेंगे.

तथा—प्याज (गोंधली) के रससे लिखकर अग्निका ताव दिखानेसे पीले अक्षर दिखते हैं।

(गुलाब)—सेलिउसन आफ रोसिटेटमें थोड़ा सोरा मिलाकर लिखो और कागजको तपावो तो गुलाबी अक्षर दीखेंगे।

(सफेद) साबुनके पानी द्वारा लिखे हुए कागजको जलमें डुबानेसे सफेद अक्षर दीखेंगे।

तथा—कच्ची स्याहीसे लिखे हुए कागजपर मिट्टी तेलका काजल रगड़कर पानीका छींटा देनेसे सफेद अक्षर दिखाई देंगे।

काली—फिटकड़ीके चूर्णको नीबूके रसमें घोलकर लिखो और सुखा लो इस कागजको पानीमें डुबानेसे काले अक्षर दीखेंगे.

तथा—दूधीके दूधसे लिखे हुये कागज कोयलेका चूर्ण रगड़ देनेसे काले अक्षर दीखेंगे।

लाल—कटहरके दूधसे लिखे हुए कागजपर नींबूका रस लगानेसे लाल अक्षर दीखेंगे।

नीली—एक ड्राम-कोबाल्ड-क्लोराइडको पानीमें मिलालो, इस पानी द्वारा लिखे हुए कागजको तपानेसे नीले अक्षर दीखेंगे।

टीनपर मारका— नीलाथोथाको घोलकर टीनपर लिखो फौरन मारका पड़ जाता है।

स्त्रियोंके श्रृंगारकी कुछ आवश्यक वस्तुयें।

(बाल काले व चमकीले रखनेका तरीका)

आवलां और रीठा समभाग कूटकर नहानेके कुछ समय पहिले महींमें भिगो देना चाहिये। इससे सिर धोते रहनेसे बाल काले चमकीले और लम्बे होते हैं, मगज हलका रहता है और नेत्रशक्ति बढ़ती है।

बाल धोनेका मसाला।

कच्चा सुहागा १ भाग, कपुर आधा भाग दोनों द्वारा सिर धोनेसे मैल बिलकुल नही जमता है।

जूं लीख साफ करनेका मसाला।

बायबिडग १० तोले, गंधक २ तोले बारीक चूर्ण कर कपड़ा-में पोटली बनाओ, पश्चात् गोमूत्र ऽ२ कडुवा तेल (सरसोंका) ऽ। कड़ाहीमें डालदो और ये पोटली डालकर चूल्हेपर चढ़ा दो गोमूत्र जल जानेपर उतार लो, इस तेलके लगानेसे जूँ लीख मर जाती हैं।

—पट्टी (मांग—) पाड़नेका-मसाला।

बादामतेल ऽ। गरम करो और उसमें ऽ= मैन डालदो जब मैन गल जाय उतार लो, ज्यादा तेज मत होने दो इसी वखत इसमें

चन्दन तेल १ तोला, इत्र हीना १ तोला मिलाकर डब्बेमें भरकर रखदो जम जायगा।

वाल उड़ानेका मसाला।

सज्जीखार, हरताल, शंखकी भस्म समभाग मिलाकर लगानेसे वाल झड़ जाते हैं। *

कांति वढानेवाला उवटन।

हल्दी, गोखरू, पीली सरसों, नागरमोथा, कपूर, कुसुमके फूल, लालचन्दन, चिरौंजी, छड़ीला, नारंगीका छिलका, सवका चूर्ण चमेलीके तेलमें लगानेसे उवटन अच्छा होता है।

मुहांसे और झांईका उपाय।

लोध, कूट, रक्तचन्दन, मालकांगनी, मंजीठ, हल्दी, वड़की जटा ये सव वस्तु एक एक तोला, चिरौंजी ४ तोला सव चीज पीस गुलावजलमें मिला लगानेसे फुंसी मिटकर मुह चमकीला होता है।

कज्जल।

भृंगराजका रस और कपूरमें वत्ती लपेट छायामें सुखा तिलीतेल द्वारा कज्जल वनावे और धुपे हुए घीमें मिलाकर डिव्बीमें रख ले, नित्य आंजने योग्य उत्तम कज्जल है।

कण्ठ-सुधार।

तज, मिर्च, कुलंजन, वच, अकरकरा सम भाग कूट छान रख ले, नित्य १॥ मासा चूर्ण खा लेनेसे कण्ठ साफ हो जाता है।

---

* यदि वालपोडर तैयार चाहिये तो यहांसे लो।
ए० एल० गुप्त पो० नेवरा सी० पी० (रायपुर)

तथा—

अद्रक भद्रक पीतरसं, बच बाकुच ब्राह्मी सद्य घृतं।
माघ चतुर्दसी कृष्णादिनं, नर पीयले कोकिल नाद्य स्वरं॥

मुखदुर्गंधिनाशक।

तज, कपूर, बच, कूट, नागकेशर, कमलकी जड़, सम भाग पीसकर मधु (शहत) के साथ चना प्रमाण गोली बनावे, एकदो गोली नित्य चूसनेसे मुखदुर्गंधि नाश हो सुगन्धि आने लगती है।

मिस्सी।

लोह चूर्ण ऽ। माजूफल ऽ॥ छोटी इलायची (छिलका समेत) सेका हुआ नीलाथोथा, लाल कत्था, हीराकसी प्रत्येक १-१ तोला मस्तङ्गी ४ और सनाय ५ मासा इन सबको कपड़ छान कर ले और इच्छानुसार इत्र मिलाकर रखले, एकनम्बर चमकदार मिस्सी होगी।

महावर।

किरमची रङ्गको पतला पतला लगानेसे अच्छा महावर होता है।

चांदी जेवर साफ करनेका मसाला।

साई नांईड पोटासियम (Synide of potassiam) ऽ। सालट टार्टर (Salt of tartar) ऽ। पानी ऽ३॥ इसमें जेवरको १५ मिनिट डुबाकर गरम पानीमें खंघार लो जेवर साफ होगा, परन्तु याद रहे ये तेज दवाइयां हैं चीमटासे काम लेना, हाथसे नही।

सोनेका गहना साफ करनेका मसाला।

फिटकरी २ तो०, कलमी शोरा ४ तो० क्लोराईड आफ सोडियम (Cholride of sodium) २ तो० पानी एक पाव इनको

औटावो और इसमें जेवर ५ मिनट डाल कर पानीमें धोडालो। इसके धुएँसे बचना चाहिये।

भंगकी तरह।

मित्रो! कोई कुछ भी कहै परन्तु मैं यही कहूंगा कि भक्ति-मुक्तीकी दाता, जीवन मरणकी साथी, ज्ञान विज्ञान समझानेवाली, हरि-हरकी प्यारी, भोरे भोरे रूपधारी यदि संसारमें विधिने कोई वस्तु रची है तो भङ्ग ही है कौन कहता है कि भङ्ग पीनेवाला मनुष्य पागल होजाता है? नहीं पागल नही, उसके लिये संसार ही पागल होजाता है ऊंह! हुवा करे हमको संसारसे क्या? हमको तो हमारी देवीसे प्रीति है। जिसके लिये स्वयम् महादेव-जीने अपने मुँहसे पार्वती मातेश्वरीके प्रति कहा-

महादेव कहै सुन पारवती, विजया मत देहु गंवारनको।
बाल पिवैं बक बक हँसैं, बुड्ढे पिवैं झखमारनको॥
छत्री पिवैं रण खेत लड़ैं, हाथी अश्वके दांत उपारनको।
ग्वाल पिवैं अलमस्त रहैं, कामिनी काम सुधारनको॥

ऐसी वस्तुको लोग बुरी कहते हैं-

हरी भांगमें हरि बसै, भोरीमें भगवान।
या विजयाके सकल गुण, को कवि सके बखान॥
काहेको जप तप करै, काहेको व्रत दान।
सिर्फ भांग भोजन करैं, हृदय बसै भगवान॥
गङ्ग भङ्ग दोऊ बहन हैं, रहती शिवके सङ्ग।
मुरदा तारण गङ्ग है, जिन्दा तारण भङ्ग॥

महादेवजीका वाक्य पारवती प्रति।

जैहौ गांव गोकुले गोविन्द पद बंदिबेको,
मोहे खाने पीनेको समान तो कराय दे।

❋ ससुराल-रहस्य ❋

सुकवि शिवराम सौंफ कांसनी पिछोरि ढोरि,
सखियां सफेद रंग डौलसे डरायदे ॥
काली मिर्च कालकूट सिंगिया धतूर तूर,
घोल के अफीम प्रिये वाहीमें मिलायदे ।
लायदे करोरी गोरी रंग हू की भोरी भोरी,
ऐती थोरी भंग मोरी झोरीमें भराय दे ॥ १ ॥

दूसरे कविका वाक्य ।

गणपति अति ज्ञानके निधान भये भंगहीसे,
भंगहीसे शेष भूमिभारसे बचे रहे ।
भंगहीसे सिद्ध औ मुनींद्र महाराज भये,
इन्द्रके सदा मोद मंगल ही मचे रहे ॥
सुकबि सिवराय प्रिये भंगको प्रभाव बड़ो,
भंगसे गोविन्दजी फणींद्र पे नचे रहे ।
भंगसे दिनेश आकाशमें प्रकाश किये,
भंगसे विरंचि भवसागरको रचे रहे ॥ २ ॥

तथा ।

पंडित योगी यती तपसी, जिन वेद पढे औ निघण्टु निदाने ।
वेद गोविन्द अरु विष्णु विरंचिन, इन्द्र मुनिन्द्र भजे भगवाने ॥
रावण राम न बावन बालि, कहैं शिवराम न व्यास बखानै ।
शेष न गौरि गनेश न गंगादि, भंग प्रभाव कोऊ नहीं जाने ॥३॥

इसपर और एक वैद्यका मत सुनो-

मिर्च मसाला सौंफ कांसनी मिलाय भांग,
खायेते अनेक रोग अंगके उबारती ।

जारती जलन्धर भगंदर कठोदर औ,
बवासीर सन्निपात बावन विडारती ॥
कवि रामराय दाद खाजको निकार डारे,
छींक छई छंजन नसूरको निकारती ।
पीनस प्रमेह बीस बावन तरहकी वायु,
कमर पेट दरदको गरद कर डारती ॥ ४ ॥

यदि मेरा कहना मानो तो सब दुर्व्यसन छोड़कर भंगदेवीके चरणोंमें प्रीत करो, क्योंकि-

अफीम खाये क्या मजा, गुदासूखी दिल खफा ॥ १ ॥
कभी न ईश्वर यह करै, हो चण्डूसे भेंट,
हांथ पैर लकड़ी भये, आयो वढ़कर पेट ॥ २ ॥
कोकिनकी लत भी है बुरी, इसको जमाना जानता,
सब फूंक डारे द्वार घर, तब भी न दिल यह मानता ॥ ३ ॥
कौन कहता है भला, गांजेका पीना जहां में,
यह नही कुछ होश रहता, कौन हूँ और कहां मैं ॥ ४ ॥
खावे तो घर द्वार सब, थूंकि थूकि भरजाय,
सूंघै कपड़े नष्ट हो, पीये कफ अधिकाय ॥ ५ ॥
ये तमाखूके गुण हैं ॥

शराबके बारेमें कविराधेश्यामका मत है-

चौथा नंबर उन लोगोका जो शराबी कहलाते हैं ।
जाने नही दवा है दारू और वेहद पीजाते हैं ॥
रोज रोज भट्टी पर जाकर अपनी शान दिखाते हैं ।
आखिरको नलियोंमे पड़ कुत्तोंसे मुंह चटवाते हैं ॥ ६ ॥
जूवाके कारण भाई, पांडुनकी गति ख्वार ।
सुनौ द्रौपदीसी सती, जाकूं डारे हार ॥ ७ ॥

पान भी बेढ़ब नशा, चिन्ता रहै ये रात दिन।
कत्था नही चूना नहीं, ढूंढू कहांसे रात दिन ॥ ८ ॥

इसीसे मैं कहता हूँ कि भंग जिसकी प्रशंसा ही की गई है इसको बुरी किसीने नहीं कहा, परन्तु नहीं २ ठहरना सुनना और गौरसे सुनना, जिस प्रकार तुम भंगसे प्रेम करोगे उसी प्रकार भंग ताजे ताजे-रसगुल्ले-मलाई रोशन चूर और कलाकन्दसे प्रेम करेगी, यदि उसकी इच्छानुसार उसे यह माल न मिला तो याद रखो —

दोनो दीनसे गैले पांड़े, हलवा मिला न मांडे।

यदि भंगसे प्रेम करना चाहते हो तो गृहवालोको त्याग दो, लोक-लज्जाकी परवाह मत करो, प्रत्येकके उलहने सुननेको कमर कसलो हानि लाभकी चिन्ता मत रखो।

भंग मैयाकी भोग सामग्रीके लिये पूर्ण रकम इकट्ठी रखो तब तो इससे प्रेम करो, वर्ना यह कोप करेगी तो तुमको मिट्टीमें मिला देगी, घर घाट दोनोंसे जाते रहोगे।

जै विजया महारानीकी जै।

गंगा तोरी लहर हमारे मन भाई।
भंग खाया रंग जमाया आँखोमें उतर आई ॥

हूं हूं-यह तो काफ़िला बराबर नहीं जमा चलो दूसरा गावै। मित्रो! मेरे पास बैठकर, भंगका ख्याल मत सीखो, मैं तो पागल हूं जैसा आवे बक देता हूं, परन्तु तुम हंसकी भांति पानीको त्याग कर दूध ग्रहण करो। अच्छा एक लहर और सुनो पश्चात् विदा होऊंगा क्या रास्ता नापूँगा।

❀ मुकलावा-बहार ❀

जरा धीरे चलो धीरे चलो धीरे चलो जान।
विन्ती हमारी ये लीजोजी मान ॥ टेर ॥
प्यारी तुम्हारी कुमारी उमर है नादान।
लचकेसे चलती हौ बल खाके मिस्ले कमान ॥
अचक मचक चलत कानोंमें झूमके हलत।
रमक दमक दमक तमक धरण परत आह ॥
आवो मिलजावो दिखलावो सूरतिया प्यारी जान।
तेरे मुखडे पै चमके जवानीको भान।
बांके चश्मोंके तीरोंसे डारा सीना छ्रन ॥ जरा धीरे०
विन्दी निराली व कांकुल है काली कमाल।
मिजगांके खञ्जरसे नन्दकेको करती बेहाल ॥
सारी सतारोंमें दमकत चोलीमें चन्देसे चमकत।
अलख मलख खलख फलख करते हैं सारे विनय ॥
जानी महरानी मनमानी दिलजानी आये श्याम।
राधेजीसे आकर मिले नन्दके दुवार।
छवि दोनोंकी ये जावे हीरालाल बलिहार ॥ जरा धीरे०

" एक चौबे "
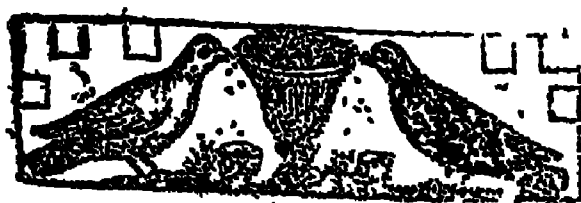
श्रीहरिः
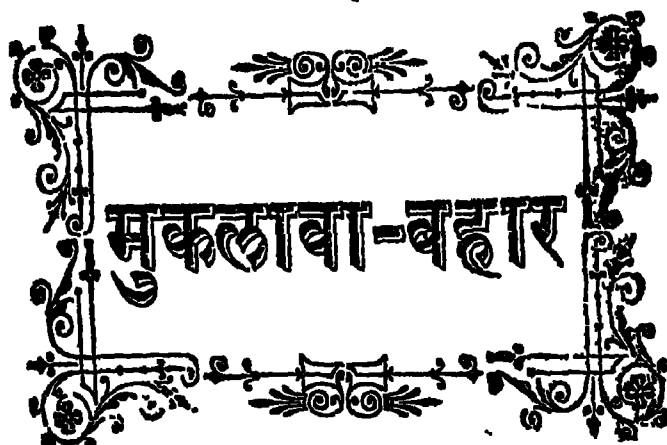
अर्थात्

ससुराल रहस्य

चौथा भाग।

कवित्त सवैया संग्रह.

नग्र फतेहपुरमें सेठ निर्भय रामजीकी आंगनमें सायंकालके सुहावने समयमें पं० रामानंदजी बाबू मदनलालजी अमरलाल चंदर वगैरह कुर्सियों पर बैठे हुये इधर उधरकी बातें कर रहे हैं, पंडित रामानंदजी बोले—

रामानंदजी-बाबू चंदर, तुम सुरू में तो बड़ी शूरवीरी दिखा रहे थे देखें अब कुछ कवित्त सवैया याद हो तो हमें भी सुनाओ।

चंदर—हां! हां! पिरोतजी कुछ क्यों, पेट भर के सुनो और महीनों तक सुनो यहां क्या घाटा है।

❀ मुकलावा-बहार ❀

वन्दना।

* कहा "रसखान" सुख संपति हजार मंह,
कहा महा जोगी है लगाये अंग छार को।
कहा साधै पंचानन कहा सोवे बीच जल,
कहा जीत लीन्हे राज सिन्धु वार पार को।
जप बार बार तप संयम अपार व्रत,
तीरथ हजार अरे बूझत लबार को।
सोई है गंवार जिहि कीन्हो नहिं प्यार,
नहि सेयो दरबार यार नंदके कुमार को।

प्रिय दर्श लालसा।

सांझ सुनी पिय आवन की,
तब चातुरि सारे शृंगार बनायो।
पीलेहि केशर पीलेहि बेसर
पीलोहि हार हिये लै लायो।
पीलोहि पान धरयो मुखमें,
अरु पीलेहि बिन्दीसे नेह लगायो।
रैनहि पीव पुकार रही,
सखि! पीरी भई पर पीव न आयो।

प्रेमी मिलन।

घूंघटको खींच उठयो सिर ऊपर, घूंघट मार चली मिसवासी
कोई कहै यह कौनकी नारी, कोई कहै यह कौनकी दासी॥

---

* ऐसे कवित्त समस्यापूर्ति और प्रश्नोत्तर कवित्त आदि, का आनन्द लेना हो तो पृष्ठ नम्बर १०१ से १५४ दूसरे भागमें देखे।

❀ ससुराल-रहस्य ❀

मारग लाल गोपाल मिलैं, सखी बातहि बात मचा दइ होरी।
घूंघटको पट खोलयो सखी, तब दूजसे होगई पूरणमासी ॥ ४ ॥

समान प्रीति।

छीरमें नीर मिलाय दियो, तब आपुन रूप सभी दरसायो
सहज स्वभावकी आंच लगी, तब नीरने आपुन अंग जलायो
जल्यो जब नीर चल्यो तब छीर, घट बाहर आयके मित्र बुलायो।
मिल्यो जब नीर रुक्यो तहँ छीर, ये सच्चे मित्रने प्रेम निभायो ॥

एक तरफा प्रीति।

चंद्र की चाह चकोर करै,
निशि दीपक ज्योति जरै जु पतंगी।
मोर मरै घनघोर घटा बिन,
मीन मरै बिछुरत जल संगी
स्वाति की बून्द पपीहा चहै,
छिद जाय गुलाब पे भंवर बिहंगी।
ये छय चाहत वे न चहैं,
जरि जाय सखी यह प्रीति एकंगी ॥ ५ ॥

जल लाने गई।

गागर ले सुन्दरि घरसे चली जमुनातट,
जहां तहां ठौर ठौर रौलसी मचाई है।
केते हुए लोट पोट केते हूं के लागी चोट,
केते हूं के सीने बीच सूरत समाई है ॥
केते हूं को नैननसे घायल किये जाय प्यारी,
केते हूं की तपन जन्म २ की बुझाई है।
आगी लावे जाती जाने कहा करती आलीरी,
पानीको गई तो आग जहां में लगाई है ॥ ६

❀ मुकलावा-बहार ❀

समयका फेर।

विधवा हो बाला सुहाग भाग वृद्धाको,
युवक घर त्रिया नाहिं वृद्ध व्याहैं तरुणी।
कुक्कुट विलाव निशदिन रति-प्रेम करैं,
आयु पर्यंत सिंह एक बार बरणी॥
दाता घर पुत्र नही पुत्र होवे रंक द्वार,
रंक घर द्रव्य नही ईश्वर की करनी।
कर्महीं करत कछु करता न करत देखौ,
कर्ता जो करत देख कर्मन की करनी॥७॥

सीय हरी बन जाय निशाचर, लंकजरी दिन ऐसोही आयो।
एक दिना सुत पांडवके वन, एक दिना फिर छत्र धरायो॥
एक दिना दमयन्ती तजी नल, एक दिना फिर भूप कहायो।
सोच प्रवीण कहा करि है, करतार यहि विधि समय दिखायो॥८॥

केशी कहां कंस कहां यादव कुरुवंस कहां,
कहां नन्द बाबा यशुमतिहू सी मैया जू।
सिंह साथ नाथ कहां रावनको साथ कहां,
कहां हनूमान राम लषणसे भैया जू॥
मच्छ कच्छ बौध औ बाराह नृसिंह कहां,
कहां पांडुपुत्र बांके युद्धके जितैया जू।
कहां कृष्ण गोपिका गुवाल बाल साथी कहां,
समय फिर्‌यो काल बली सबकूं खवैया जू॥९॥
राजनकी नीति गई मित्रनकी प्रीति गई,
तिरियाको सनेह गयो जार जिय भायो है।
पंचनको न्याव गयो शास्त्रनको भाव गयो,
पूजत अपूज पाप सबमें समायो है॥

तुलसी चरणामृत को नियम त्याग बैठे सब,
आफू तमाखू भांग सबहीने खायो है।
गादी बैठे शूद्र उपदेश करें विप्रनकूं,
कठिन कराल कालिकाल चढ़ि आयो है॥ १०॥

बारह रासि।

मेखली अन्चल कहा बैठी बृखभानु लली,
मिथुनके काज कान्ह तोहि याद करी है।
करके शृंगार काटि सिंह होके चलो वेगि,
कन्यारी मान ले गुमान क्यों भरी है॥
तुल वितुल भये कान्ह कदम तले खड़े आन,
धन मकर न कीजे सु आजकी घरी है।
कुम्भ ले मिलों जाय बिकल कान्ह कुञ्जनमें,
जैसे जल बिहीन मीन तलफत भू परी है॥ ११॥

सोलह शृंगार।

मिस्सी रेखकारी सोभा दन्तकी सुधारी अङ्ग,
मर्दन किये प्यारी छिप स्नान करत वारी है।
नवल बसन धारी नाल गूंथन मोमबारी,
मांग बिन्दीने संवारी अङ्ग गोरे रंग प्यारी है॥
चुड़ला हाथ भारी नैन सुरमा रेखकारी,
मेंहदी शोभा देत न्यारी पान चाबत पधारी है।
अतर फूल बारी टीको सज्यो नवल नारी,
कीन्हा सोलहूं शृङ्गार जैसे चन्द्रकी उजारी है॥ १२॥

बत्तीस आभूषण।

करके शृङ्गार नार कञ्चनको मञ्चढार,
बैठी सुकुमार मुख निरखत है ऐना में।

❀ मुकलावा-बहार ❀

मदनके उमङ्ग अङ्ग चाहत पिय मिलन संग,
 साजत आभूषण सुख चाहत है नैनामें ॥
कानोंमें कर्णफूल मोतियनकी लगा झल,
 हीरनकी चमक दमक बांके सब गैनामें ।
श्रीधनु सुहाग भाग चोटी फूल सीसफाग,
 चन्द्र मांग मोतियनकी बैठी सज बिछौनामें ॥ १३ ॥

बिन्दी मकबेसर तन केसरकी सुगन्ध फन्द,
 डारत अनूप चोंप देखत पिय प्यारीकी ।
जुगली तरली हमेल. गुलवन्द पुनि चन्द्रहार,
 नाभी गम्भीर तक माला मतवारीकी ॥
बाजू भुजदण्ड कर कञ्चन जटित माणिकके,
 गजरा पहोंली पर नजर ब्रह्मचारीकी ।
पौंची कर चुड़ियें रही बगड़ी संग लूम झूम,
 अंगुरीमें अंगूठी है चुन्नी चमत्कारीकी ॥ १४ ॥

आनन छवि निरखनकूं आरसी अंगुठीमें,
 पन्ना पुखराज लाल फूल हस्त धारे पे ।
किंकिण कटि भूषण ध्वनि मंद मंद श्रवण सुनि,
 मुनिजन अवलोकन पग पायल झनकारे पे ।
कंचनके बिछिया पुनि पैंजनीकी लटक देख,
 लाखों जती रहत नांय अपने व्रत धारे पे ॥
चन्द्रमुखी चपलासी झांकती झरोखेमें,
 कंचनको थार वार वारत पिय प्यारे पे ॥ १५ ॥

त्यागने योग्य मनुष्य ।

पूत कपूत कुलक्षण नारि, लराक पड़ोस लजावन सारो ।
भाई अदेख हितू कच लंपट, कपटी मित्र अतीथ धुतारो ॥

साहब सूम किसान कठोर, मालिक चोर दिवान नकारो।
ब्रह्म भनैं सुन शाह अकब्बर, बारहुँ बांधि समुद्रमें डारो॥ १६॥

एकादशी व्रत।

भोर उठ स्नान कियो सेर पक्को दूध पीयो,
सैकड़ो सिंघाड़े खाये चित्त तो सुवादी है
दोपहरी में भांगछानी पाव चीनी सेर पानी,
सेला सकरकंदी खाइ खोखोड़ी नवादी है॥
पाव सेर बरफी खाई पाव पक्के पेड़े खाये,
अन गिनती अमरूद खाये आई नहीं बादी है।
कहै ब्रह्मदत्त ऐसो व्रत नित्य होय यारो,
करीथी एकादशी पर द्वादशी की दादी है॥ १७॥

कुच-वर्णन।

वे धरे अंग भुजंगके भूषण येहू भुजग रहैं हिय धारे,
वे धरे चन्द्र सम्हालके भालपै येहू नखच्छत चंद्र सँवारे।
शंभुकी औ कुचकी समता कवि कोविद भेद इतोई विचारे,
शंभु सकोप ह्वै जारयो मनोज उरोज मनोज जगावनहारे॥ १८

ऐहो नंदलाल आज देख्यो मैं विशाल ख्याल,
ह्वै गई खुशाल ताको मन यह साखी है।
गोरे गोरे उरज उतंगणपे तंगकसी,
नई नीली कंचुकी मिही सुगंध चाखी है॥
"ग्वालकवि" तापै लसै गोटाकी सफेदधार,
बीज वेल बिदुली सुनहली अभिलाखी है।
गंग शिव शीशपे सुनी हैं सब लोकनमें,
प्यारीने त्रिवेणी कुच सीस रचि राखी है॥ १९॥

पूछत परोसिनसे ले ले उरधहु श्वास,
मेरे उर दीर्घ व्रण हेमरूप पाके री।
कहै द्विज कान्हा येरी अजब अंदेशो मांय,
दवैं न दवाए नेक दर्द युग जाके री॥
येरी हुर्म हुस्नवारी हैफमत जान हिये,
उपजे अमीत फल पोखन सुधाके री,
होत उर जाके होत नही ताके पीर नेक,
पीर होत ताके जो इन्हें तनक ताके री॥ २० ॥

झर झर झांई वढ़े दर दर नांपे ढांपे,
तऊ कांपे थर थर वाजत वतीसी जाय।
फेर पशमीननके चौहरे गलीचनमें,
सेज मखमली सौर सोऊ सरदीली जाय॥
"ग्वाल कवि" कहे मृगमद के धुरावे धूम,
ओढि ओढ़ि छार भार आगहू छुपीसी जाय।
पीये सुरा सीसो हूं न सीसी ये मिटेगी कबूं,
जौलों उकसीसी छाती छातीसों न मीसी जाय॥ २१ ॥

छूटै।

जूरी कर जार छूटै काया दै नार छूटै,
रूईसे तार छूटै ताक सहितहीकै।
जोवन बिन मान छूटै रांड हो गुमान छूटै,
कायासो माया छूटै काल आनि ठाहिकै॥
क्रोधसे संतोष छूटै तामस कर तेज छूटै,
नामर्दसे सेज छूटै करी वात साहिकै।
कहत कवि रामराय एते सब छूट जांय,
पर नैन नही छूटैं एक प्रीतमसे लाहिकै॥ २२ ॥

घटें।

ज्ञान घटै जड़-मूढ़की संगति, ध्यान घटै बिन धीरज लाये।
मान घटै जबही कछु मांगहु, चाह घटै नितके घर जाये॥
प्रीति घटै जु कठोरहु बोलहु, रीति घटै मुंह नीच लगाये।
उद्यमसे दारिद्र घटै और, पाप घटै हरिके गुण गाये॥ २३॥

चढ़े पौढ़े।

गर्भ चढ़े पुनि सूप चढ़े, पलनापै चढ़े चढ़े गोद धनाके।
हाथी चढ़े पुनि अश्व चढ़े, सुखपाल चढ़े चढ़े सेज त्रियाके॥
मित्र औ शत्रुके चित्त चढ़े, कवि ब्रह्म भनैं दिन बीते पनाके।
ईश कृपालुको जान्यो नहीं, अब कांधे चल्यो चढ़ि चार जनाके॥२४
पेटमें पौढ़्यो औ पौढ़्यो मही, जननी सँग पौढ़िके बाल कहायो।
पौढ़न लाग्यो त्रिया संगही जब, सारी उमर हँसि पौढ़ि गमायो॥
क्षीर समुद्रके पौढ़नहार, जिन्हें धरि ध्यान कबहुं नहिं ध्यायो।
पौढ़त पौढ़त पौढ़ि गयो, अब चितापर पौढ़नको दिन आयो॥२५

ईश्वर-विश्वास।

जब दांत न थे तब दूध दियो, जब दांत हुए तो अनाजहुं देहैं।
जीव बसै जल औ थलमें, तिनकी सुधि लेत सो तेरिहु लैहैं॥
क्यों अब सोच करै मन मूरख, सोच करे कछु हाथ न ऐहैं।
जानको देत अजानको देत, जहानको देत सो तोहूंको देहैं॥२६॥
यद्यपि द्रव्यको सोच करे, कहु गर्भमें केतो तूं गांठिते खायो।
जा दिन जन्म लियो जगमें, जब केतिक क्रोड़ लिये सँग आयो॥
वाको भरोसो क्यों छोड़े अरे मन, जासे अहार अचेतमें पायो।
ब्रह्म भनैं जनि सोच करै, वहि सोच है जो बिरला उलहायो॥२७॥

कहैं द्विजराम नर जान क्यों अजान होत,
खावेको सुवाद पहिले अतिथि खवाइये ॥ २३ ॥

सूमनकी नगरीमें कविता कमावे कहा,
मूरखके नगरमें पंडित क्या बांचे हैं।
नागनके नगरमें धोवी क्या खांड खाय,
दाताहीन नगर जाय भिक्षुक क्या जांचे है ॥
अंधे शूर बैठे तहां आरसीको कौन काम,
गावैं गतराड़ा जहां वेश्या क्या नांचे हैं।
कागनकी कमेटीमें कोयलकी कौन सुनै,
गुणी बिन कदर नाय बुध बैन सांचे हैं॥ २४ ॥

शृंगार रस प्रेम भरे कवित्त।

कुंद कलिकासी है कि केतकी-लतासी है कि,
हरिन हरासी है कि हरहू हमासी है।
सूर्यकी प्रकाशी है कि बिज्जुली छटासी है कि,
फैन फकभासी है कि चारु चन्द्रिकासी है ॥
ग्वाल कावे फांसी है कि पिय हिय फांसिवेको,
आसी नेह हूंकीके विचार बानबासी है।
चंदसों उजासी है कि सुधासो निकासी है कि,
खाली रूपरासी है कि प्यारी तेरी हांसी है ॥ १ ॥

बेदम बँकाइका मजा तो भौह बांकनमें,
भीचेका मजा तो मित्रहीकी गलबांहीमें।
कहे पदमाकर मजा है कठोरताईका तो,
कुंपरि काम्मीनकी कठोर-कुचमाहीमें ॥

❀ ससुराल-रहस्य ❀

विपरीतका मजा तो रति केलि विपरीतहीमें,
गौनेका मजा तो गौनेहीके दिनाहीमें।
गारीका मजा तो ससुरालहीकी गारीमें,
नाहीका मजा तो नई नारिहीकी नाहीमें॥ २॥

बैठि विधु-वदनी कृशोदरी दरीन्हि बीच,
खींचि पी निःशंक परयङ्क पै लै गयो।
भनै पजनेश भुज लपटि ललाके लगी,
झपटि सुबीबी कर जंघन समै गयो॥
भोरो भोरो गोरो मुख सोहै रति भीत पति,
रति क्रम रक्त रति अन्त सो रजै गयो।
मानों पुखराजतें पिरोजा भयो नगराज,
माणिकमयोपै नीलमणि नग ह्वै गयो॥ ३॥

साटिनके सुरख बिछौना बिछे सेज पर,
रंगा मेज भेज मन मौजकी निसा करे।
अतर बिनाही तिरयानमें अतर भासे,
सतर उरोजन पै गोटनकी सांकरें॥
ग्वाल कवि प्यारेलाल नीचेको बढ़ाये कर,
सरक चलीसी आगे आवन चहा करे।
अंगुरीते नाहीं करे भौहनतें क्रोध करे,
नैननतें हां करे पै मुखसे न हां करे॥ ४॥

भूमि हेमहार वह हियकी हरनहार,
हारसी लपट लग जाय परयंकसों।
हसके बिनाही उठे ससक ससक प्यारी,
कसक कसक उर लपटत अंकसों॥
ग्वाल कवि रसिकी जू सरै युग जंगै जोर,
लटक परचोमें तरौवा मुख मयंकसों।

जैसे पेय लागिवे लगावे लगी आवे चोरी,
तैसे लगी आवै वह लोनी लंक लंकसों ॥ ५ ॥

खाली मैन मेली मेल होत न खुशाल चित्त,
ऐसी सघनाली हरियालीमें वृथा धरो ।
लगन लगो है काल्हि लगन लगाई तैने,
पगन परौ मैं जानै जग न वही करो ॥
ग्वाल कवि थैली कहि वही लही सही तब,
येती चाहि गही जंघ निठुर धरयो मरो ।
हाहा लाल हौले नेक हौले गजी हौल हौले,
चुप चुप भयो भयो ऊंहू ऊंहू टरो ढरो ॥ ६ ॥

रातभर जागी अनुरागी संग प्रीतमके,
अंग अंग आलस अनंग रंग बौरीसी ।
बिथुरी अलक अलबेली मुख शुचिवर,
भर भर सांस उठे आश जिय थोरीसी ॥
ग्वाल कवि कैसी निरदई ने मरोरी हाय,
आह आह करके बितायो दिन जोरीसी ।
परी है परीसी परयंक पै निशंक आय,
बोलत न डोलत लजीली वयस भोरीसी ॥ ७ ॥

पर्य्यंकमें पायो पचास गुणों,
सुनो संगमें स्वाद जु सौ गुनो सो ।
तहे तीगुनो सो लियो वाहनमें फिर,
नाहनमें लखि नौगुणो सो ॥
कवि ग्वाल भगी जंघ जोरिबेमें,
तन तोरिबेमें सुख भोगणो सो ।
मसकी खसकी ससकी जबही,
तब तो न गिनो गयो को गुनोंसो ॥ ८ ॥

उठी उमंग अंगमें रँगो अनँग रंगमें,
सनेहकी तरंगमें तरी निमग्न ह्वै गई।
बिसारि काम काजको लुकाय लोक लाजको,
सखीनके समाजको चुकाय द्वार पै गई॥
रह्यो न धीर बालको लगाय लाग जालको,
फँसाय नन्दलालको हँसाय संग लै गई।
थकी सुधा निचोरिकै बहोरि भ्रू मरोरिकै,
चटाक चित्त चोरिकै कपाट पट्ट दै गई॥ ९॥

शृंगार रस (कृष्ण-प्रेम)

छूट्यो गेह काज लोकलाज मनमोहिनीको,
भूल्यो मनमोहनको मुरली बजाइबो।
देखो दिन द्वै में "रसखान" बात फैल जैहै,
सजनी कहाँलौं चन्द हाथन दुराइबो॥
काल्हि हूं कालिदींतीर चितयो अचानकही,
दोऊन को दोऊ मुरि मृदु मुसिकाइबो।
दोऊ परैं पैया दोऊ लेत हैं बलैयां उन्हें,
भूल गई गैया इन्हैं गागर उठाइबो॥ १०॥
ब्याही अनब्याही ब्रजमाहीं सब चाही तासो,
दूनी सकुचाती दीठ परैंजु कन्हैयाकी।
नेक मुसक्यान "रसखान" की विलोकत ही,
चोरी होत एक बार कुंजन फिरैयाकी॥
मोर कह्यो मान अन्त याकों गुनमान हैरी,
हौं तो हौं सकात खात जात सौंह भैयाकी।
मायकी हटक तौलौं सासकी खटक जौलौं,
देखि न लटक प्यारे दूलह कन्हैयाकी॥ ११॥

इक समै इक सुन्दरिको ब्रज,
जीवण खेलत दीठि पर्‍यो है।
बाल प्रवीन प्रवीनता कै सर,
कायके कांध ले वीर धर्‍यो है॥
यों रसही रसही "रसखान"
सखी अपनो मनभायो कर्‍यो है।
नन्दके लाड़िले ढांकदे सीस,
हहा मेरो गोरस हाथ भर्‍यो है॥ १२॥

ऋतुवर्णन।

ऐसी तो न गरमी है गलीचोंके फरशोंमें,
है न वेश कीमत वनातके रुमालामें।
मेवनकी लौजमें न हौजमें हिमाम हूं के,
मृगमद मौजमें न जाफरान जालामें॥
ग्वाल कवि अंबर अतरमें अगरमें न,
उमदा स्यसूरमें न है न दीपमालामें।
दो दोऊ दुशालामें न अमलोंके प्यालामें न,
जैसी पाला हरण शक्ति पाई प्यारी बालामें॥ १॥
गुलगुली गिलमें गलीचा हैं गुणीजन हैं,
चांदनी हैं चिक्के हैं चिरागनकी माला हैं।
कहै "पद्माकर" गजके गजहू न सजे,
शय्या हैं सुराही हैं सुराहीके सुप्याला हैं॥
शिशिरके स्यालामें न व्यापत कसाला जिन्हें,
जिनके अधीन एते उदित मसाला हैं।
तान तुक ताला हैं विनोदके रसाला हैं,

सुबाला हैं दुशाला हैं विशाला चित्रशाला हैं ॥ २ ॥
ऊधो यों सूधों सो संदेशो कहि दीजे जाय,
हरिसों सितावी तुम बिन तरसंत है।
कोप पुरहूतके बचाई वारि धारन तें,
तिनपै कलंकी चंद विष बरषंत है॥
ग्वाल कवि शीतल सुगंध जे समीरनतें,
बेधत निशंक तीर पीर सरसंत है।
जेई विष नागिनी ते बरत बचाई तिन्हें,
डारि बिरहागिनमें बारत बसंत है॥ ३ ॥
मनकी तपन बन उपबन बारे लगीं,
तैसी तेज लुवें लोल लागे ज्वाल जालासी।
ताल नदी नालनके नीर तोर धीन लागे,
याते लाख सुनि हौ उपाय एक आलासी॥
ग्वाल कवि प्यारीकी छबीली छाती छाय छयो,
चांदनीसी हांसी देह चन्दन रसालासी।
पालासी विलोकनहि बालासी लपट जाकी,
लीजै जू चमेली कंठ मालतीकी मालासी॥ ४ ॥
कूकै लगीं कोकिल कदंबनपै चहूं दिशि,
मोर पिक शोरहू सुनात चहुँ पास है।
मन्द मन्द गरजत घनेरी घटा घूमि घूमि,
वहुत समीर धीर संयुत सुवास है॥
जित तित नारी वर गावैं सुख पावै अति,
झूलते हिंडोले चित्त बाढ़त हुलास है।
जाके पिया पास नहिं ताको जिया जारिबेको,
देखो सखी ! आयो दुष्ट श्रावण कुमास है॥ ५ ॥

❀ मुकलावा-बहार ❀

दादुरकी ध्वनि सुनि दरारेसे परन लागे,
कोयलकी कूक सुन कटक बनि छायो है!
सूतीथी अटारी बूंदें लागी हैं कटारी जैसी,
पापी पपीहे पीव पीव कर जागायो है॥
बिजुलीके चमके से विरहानल बढ़्यो जात,
प्रीतम परदेश कुछ संदेश ना पठायो है।
मदनके उमंगसे फटी जात कंचुकी री,
सावन नहि आयो सखि! सन्निपात आयो है॥६॥
साजिके श्रृंगार शंकरारि-वस-नार कर,
आरतीको थारले तयार भई जागको।
देखि अंधियारी बरसत बहुवारी नारी,
पकरे किवांरी ठाढ़ी सोचति विधानको॥
मावसकी रात कारी पावसको घात भारी,
बसकी बात हा! री! कैसे मिलूं कान्हको।
बोली बदरानसो बुझै न बिजुरीकी आग,
बिजुरी न मारे बजमारे बदरानको॥७॥

सुदामाके प्रति कृष्ण।

देखि बिहाल बिवाइन तें,
अरु पैर गड़े मग कंटक जोये।
हाय! सखा तू महा दुख पायो,
इतैं नहि आयो कितै दिन खोये॥
पानी परातको छूये नहीं,
प्रभु नैननके जलसे पग धोये।
देखि सुदामाकी दीन दशा,
करुणा करके करुणानिधि रोये॥८॥

श्याम कही मुसकाय सुदामा सों,
चोरी कि बानिमें हौ जु प्रवीने।
आगे चणा गुरु मात दिये,
ते लिये तुम चावि हमें नहीं दीने।
गांठी कांखमें चापि रहे तुम,
खोलत नाही सुधारस भीने।
पाछिली बाणि अजौं न तजी,
तुम वैसेही भाभीके तंदुल छीने॥ ९॥

सुदामाजीका पाश्चात्ताप।

माखन चाखनके चट जो,
ब्रज चोर अनेकनके घर खायो।
नारि पराइन ले संगमें,
अस घूमत है जस सांड दगायो॥
बातके बांधि पहार दिये,
पै बिदाईमें कौड़िहु नाहि लखायो।
जानत बालपने से उसे,
ठगके जेहि भांड पे रांड पठायो॥ १०
लरिकाई तें जानत हौं उसकूं,
नसमें है भरी उसके कुटिलाई।
आए सबै अबला अरपौं,
तिनहूं संग अन्तमें कीन्ह खुटाई॥
मात-पिता जिन्हें पाल्यो लला,
"श्रीलाल" तिन्हें सुनि दीन्ह भुलाई।
चोरिले औरनको धन जो,
ठगके जेहि भांड पै रांड पठाई॥ ११॥

सत्य तें प्रतीति होय जाती सब देशन तें,
सत्य तें लंबाई और सत्य तें भलाई है।
सत्यही तें सुख पाये जस औ धर्म बड़े,
सत्यही ते लेवा देवा सत्य तें बड़ाई है॥
"साधूलाल" कहे होय आदर बहूत यातें,
मुक्ति होति अन्त यह पुन्य फलदाई है।
सत्य बिना मानुष्यको मान कछु रहत नाहिं,
यातें चतुरानन सु सत्य उपजाई है॥ १२॥
बकसि वितुण्ड दये झुण्डनके झुण्ड रिपु,
मुण्डनकी मालिका दई ज्यौ त्रिपुरारीको।
कहै "पदमाकर" करोरनके कोष दये,
षोड्स हूँ दीन्हें महादानि अधिकारीको॥
ग्राम दये धाम दये अमित आराम दये,
अन्न जल दीन्हे जगतीके जीवधारीको।
दाता जयसिंह दोय बातें न दीन्ही कहूँ,
बैरिन को पीठि और दीठ परनारीको॥१३॥

यों तो आप लोग रसखानि रहीम आदि कवियोंकी कविता पीछे पढ़ चुके है परंच कुछ और रामरंगीले मुसलमान भक्तोंकी वाणी का आनन्द लीजिये—

मानुष हौं तौ वही-'रसखानि',
बसौं बृजगोकुल गांवके ग्वारन।
जो पशु हौंतौ कहा बस मेरो,
चरौं नित नंदकी धेनु मँझारन॥
पाहन हौं तौ वही गिरि को,
जो धर्‍यौ कर छत्र पुरन्दर-धारन।

❋ ससुराल-रहस्य ❋

जो खग हौं तौ बसेरो करौं मिलि,
कालिन्दी-कूल-कदम्ब की डारन ॥ १ ॥
या लकुटी और कामरिया पर,
राज्य तिहूँ पुरको तजि डारौं।
आठहुँ सिद्धि नवौं निधिको सुख,
नन्दकी गाइ चराइ बिसारौं ॥
'रसखानि' कबौं इन आंखिन सो,
ब्रज के बन-बाग-तड़ाग निहारौं।
कोटि कहौं कलधौतके धाम,
करील की कुंजन ऊपर वारौं ॥ २ ॥
धूरि-भरे अति शोभित श्यामजू,
तैसी बनी सिर सुन्दर चोटी।
खेलत-खात फिरै अँगना,
पग पैंजनी बाजती पीरी कछोटी ॥
वा छबिको 'रसखानि' विलोकत,
वारत काम-कलानिधि कोटी।
कागको भाग कहा कहिए,
हरि हाथसों लैगयो माखन-रोटी ॥ ३ ॥
ब्रह्ममें ढूंढ्यो पुरानन गानन,
वेद-रिचा सुनि चौगुने चायन।
देख्यो सुन्यो कबहूं न किते,
वह कैसे सरूप औ कैसे सुभायन ॥
टेरत हेरत हारि पर्‌यो,
'रसखानि' बतायो न लोग लुगायन।

मुकलावा-बहार

देख्यो दुरयो वह कुंज-कुटीर में,
 बैठ्यो पलोटत राधिका पायन ॥ ४ ॥
छैल जो छबीला सब रंगमें रंगीला बड़ा,
 चित्तका अड़ीला कहूँ देवतोंसे न्यारा है
माल गले सोहै नाक मोतीसेत जोहै छवि,
 कुंडल मन मोहै लाल मुकुट सिर धारा है।
दुष्ट जन मारे सब सन्त जो उबारे 'ताज',
 चित्तमें निहारे प्रण-प्रीति करनहारा है।
नन्दजूका प्यारा जिन कंसको पछारा वह,
 वृन्दावन वारा कृष्ण साहब हमारा है ॥ ५ ॥
कोऊ जन सेवैं शाह राजा राव ठाकुरको
 कोऊ जन सेवै भैरों भूप काज सार है।
कोऊ जन सेवैं देवी चंडिका प्रचण्ड ही को,
 कोऊ जन सेवैं 'ताज' गणपति सिर भार हैं॥
कोऊ जन सेवैं प्रेत-भूत भवसागर को,
 कोऊ जन सेवै जग कहूँ बार-बार है।
काहूनके ईस विधि शंकरको नेम बड़ो,
 मेरे तो अधार एक नन्दके कुमार है ॥ ६ ॥
सुनो दिल जानी मेरे दिलकी कहानी तुम,
 दस्त ही बिकानी बदनामी भी सहूंगी मैं।
देव पूजा ठानी मैं निवाज हूँ भुलानी तजे,
 कलमा-कुरान सारे गुननि गहूंगी मैं॥
सांवला सलौना सिरताज सिर कुल्हे दिये,
 तेरे नेह दागमें निदाघ ह्वै दहूंगी मैं।
नंदके कुमार कुरबान तेरी सूरत पै,
 हौं तो मुगलानी हिंदुवानी ह्वै रहूंगी मैं ॥ ७ ॥

❋ ससुराल-रहस्य ❋

मुकुटकी चटक लटक बिम्ब कुंडलकी,
भौंहकी मटक नेकु आँखिन देखाऊ रे।
एरे बनवारी बलिहारी जाऊँ तेरी मेरी,
गैल किन आयनेकु गायन चराऊ रे॥
'आदिल' सुजान रूप गुनके निधान कान्ह,
बांसुरी बजाय तन-तपन बुझाऊ रे।
नन्दके किशोर चित्तचोर मोर पखवारे,
वंशीवारे सांवरे पियारे इत आऊ रे॥ ८॥
छलबलकै थाक्यो अनेक गजराज भारी,
भयो बलहीन जब नेक न छुड़ागयो।
कहिवेको भयो करुणाकी कवि "कारे" कहैं,
रही नेक नाक और सबही डुबागयो॥
पंकज-से पायन पयादे ही पलंग छाड़ि,
पांवरी बिसारि प्रभु ऐसो पारे पागयो।
हांथीके हृदय मांहि आधो हरिनाम सोय,
गरे जौन आयो गरुड़ेस तौलों आगयो॥ ९॥
वृन्दावन कीरति बिनोद कुंज-कुंजनमें,
आनंदके कंद लाल मूरति गुपालकी।
कालीदह 'कारे' पताल पैठि नाग नाथ्यो,
केतकीके फूल तोरि लाये माला हारकी॥
परसतहीं पूतना परम गति पाय गई,
पलक ही पार पारयो अजामील नारकी,
गीध गुन—गानहार त्रासके उगानहार।
आयो ना अहीर क्यौं हमारी बार आरकी॥ १०॥
जब छांडि करीलकी कुंजनको,
वहां द्वारिकामें हरि जाय छये।

छल धौलके धाम बनाय घने,
महराजन के महराज भये ॥
तज मोर के पंख और कामरिया,
कुछ और ही नाते हैं जोड़ लये।
धरि रूप नये किये नेह नये,
अब गइयाँ चराइबो भूलि गये ॥ ११ ॥
सुंदर सुजानपर मंद मुसकान पर,
बांसुरी की तान पर, ठौरन ठगी रहै।
मूरति विशाल पर, कंचनकी माल पर,
खंजन-सी चालपर, खौरन खगी रहै ॥
भौंहैं धनु मैन पर, लोने जुग नैन पर,
शुद्ध रस बैठापर 'वाहिद' पगी रहैं।
चञ्चल सु तनपर-सांवरे वदन पर,
नंदके नँदन पर लगन लगी रहै ॥ १२ ॥
आगे धेनु धारि गेरि ग्वालन कतार तामें,
फेरि-फेरि टेरि धौरी धूमरीन गनतें।
पोंछि पुचकारन अँगौछनसौं पोंछि पोंछि,
चूमि चारु चरण चलावें सुवचनतें ॥
कहे 'महबूब' जरा मुरली अधर धरि,
फूंकि दई खरज निखादके सुरनतें।
अमित अनंद भरे-कन्द छवि वृन्दवन,
मंदगति आवत मुकुन्द मधुवनतें ॥ १३ ॥

कुंडलिया।

गिरधर-दो०-नारी अतिबलके भये, कुलका होत विनाश।
कौरव पांडव वंशको, कियो द्रौपदी नाश ॥

❋ ससुराल-रहस्य ❋

कुं०-कियो द्रौपदी नाश, केकई दशरथ मारे।
राम लखनसे पुत्र, दोऊ बनवास सिधारे॥
कह गिरधर कविराय रहैं नर सदा दुखारी।
वो घर सत्यानाश जहां है अति बल नारी॥ १॥
दो०-साईं ये न बिरुद्धिये, कवि पंडित गुरु यार।
बेटा वनिता पौरिया, यज्ञ करावनहार॥
कुं०-यज्ञ करावन-हार, राज-मन्त्री जो होई।
विप्र पड़ोसी वैद्य, और जो करै रसोई॥
कह गिरधर कविराय इन्ह कैसे समझाई।
इन तेरहते तरह दिये बनि आवै साईं॥ २॥
दो०-चिता ज्वाल शरीर वन, दावा लगि लगि जाय।
प्रगट धुवां दीखे नहीं, उर अन्दर धुँधुवाय॥
कुं०-उर अन्दर धुँधुवाय, जरै ज्यों कांचकी भट्टी।
जर गयो लोहू मांस, रह गई हाड़की टट्टी॥
कह गिरधर कविराय सुनो हो मेरे मिता।
वे नर कैसे जियै जिन्हें उर व्यापी चिता॥ ३॥
दो०-बिना बिचारे जो करे, सो पीछे पछिताय।
कार्य बिगाड़े आपनो, जगमें होय हसाय॥
कुं०-जगमें होय हँसाय, चित्तमें चैन न पावै।
खान पान सनमान, राग रँग सब बिसरावै॥
कह गिरधर कविराय दुःख वे टरत न टारे।
खटकत है दिन रैन किये जो बिना बिचारे॥४॥
दो०-सोना लेने पिय गये, सूनो कर गये देश।
सोनो मिल्यो न पिय मिले, रूपा हो गये केश॥
कुं०-रूपा हो गये केश, रोय रँग रूप गमायो।
हुई हरदसे जरद, तबहुं पीया नहीं आयो॥

कह गिरधर कविराय नमक विन सभी अलोना।
जरियो वोही देश जहां उपजत है सोना॥५॥

छुं०-साईं ऐसे पुत्रसे, बांझ रहे बरु नारि।
बिगरा बेटा वाप से, जाय रहै ससुरारि॥
जाय रहै ससुरारि नारि के हाथ बिकाने।
कुल के धर्म नसाय और परिवार न साने॥
कह गिरधर कविराय मातु झंखै वहि ठांईं।
असि पुत्रनि नहि होय बांझ रहितिऊं बरु साईं॥६॥

मरे सूम सरदार, मरे वह कट्टर टट्टू,
मरे हठीली नार मरे वह खसम निखट्टू।
ब्राह्मण वह मर जाय जो हाथ ले मदिरा पावे॥
पुत्र वही मर जाय जो कुलमें दाग लगावे।
बेनियाव राजा मरे नींद धराधर सोइये,
वैताल कहे विक्रम सुनो ऐसे मरे न रोइये॥७॥

दोहा--संग्रह।

तुलसीदासके दोहे।

जहां राम तहँ काम नहिं, काम जहां नहि राम।
कहु तुलसी कैसे रहै, रवि रजनी इक ठाम॥१॥
तुलसी अपने रामको, रीझ भजो या खीज।
खेत पड़े पर जामि हैं, उल्टो सीधो बीज॥२॥
तुलसी पर घर जायके, दुःख न कहिये रोय।
भरम गमावे आपतो, मेट सकै ना कोय॥३॥
गरज परे कछु और है, गरज सरे कछु और।
तुलसी भांवरके परे, नदी सिरावत मौर॥४॥

तुलसी या जग आयके, सबसे मिलिये धाय।
ना जाने किस भेषमें, नारायण मिल जाय ॥५॥
आयेको आदर करैं, चलत नवावै सीस।
तुलसी ऐसे मित्रसे, मिलिये विश्वा बीस ॥ ६ ॥
तुलसी या जगके विषय, चार बात हैं सार।
साधु मिलन औ हरिभजन, दया दीन उपकार ॥ ७ ॥
तुलसी पिछले पुन्य बिन, हरि चरचा न सुहाय।
जैसे ज्वरके जोरसे, भोजनकी रुचि जाय ॥ ८ ॥
तुलसी हाय गरीबकी, प्रभुसे सही न जाय।
मुवे चामकी फूँकसे, लोह भस्म हो जाय ॥ ९ ॥
लसी असुवा बाहिके, बिथा जनावत हेय।
जाको काढ़हु बाहिर, क्यों न भेद कहि देय ॥ १० ॥
राम नाम मणि दीप धरि, जीह देहरी द्वार।
तुलसी बाहर भीतरे, जो चाहत उजियार ॥ ११ ॥
तुलसी जो पै रामसे, नाहिन सहज सनेह।
मूंड मुँडायो है वृथा, भांड भयो तजि गेह ॥ १२ ॥
तुलसी बुरो न मानिये, जो गँवार कहि जाय।
जैसे घरको नरदवा, भलो बुरो बहि जाय ॥ १३ ॥
तुलसी जस भवितव्यता, तैसो मिलै सहाय।
आप न आवै ताहिपै, ताहि तहां लेजाय ॥ १४ ॥
सम्वत सोरह सौ असी, असी गङ्गके तीर।
श्रावण शुक्ला सप्तमी, तुलसी तज्यो शरीर ॥ १५ ॥

रहीम कविके दोहे।

रहिमन कबहुँ बड़ेनके, नहीं गर्वको लेश।
भार धरे संसारको, तऊ कहावत शेष ॥ १ ॥

❀ मुकलावो-बहार ❀

धूरि धरत निज शीसपर, कह रहीम केहि काज।
जा रज मुनिपतनी तरी, सो ढूंढ़त गजराज॥ १॥
बड़े जननमें द्रवनकी, स्वाभाविक ही बान।
हरि हाथीसे कब हुती, कह रहीम पहिचान॥ ३॥
बड़े काम छोटे करैं, तउ न बड़ाई होय।
ज्यों रहीम हनुमानको, गिरधर कहै न कोय॥ ४॥
जो गरीबसे हित करै, धनि रहीम वे लोग।
कहां सुदामा बापुरो, कृष्ण मिताई जोग॥ ५॥
रहिमन याचकता गहे, बड़े छोट हो जात।
नारायण हूँ को भयो, बावन आंगुर गात॥ ६॥
तरुवर फल नहीं खात है, सरवर पिवैं न पान।
कह रहीम परकाज हित, सम्पति संचहि सुजान॥ ७॥
रहिमन नीच-प्रसंगते, लगै कलंक न काहि।
दूध कलारी कर गहे, मदहि कहैं सब ताहि॥ ८॥
बिगरी रहिमन आदिकी, बनै न खरचे दाम।
हरि बाढ़े आकास लौं, मिटो न बावन नाम॥ ९॥
दीन सबनको लखत है, दीनहिं लखै न कोय।
जो रहीम दीनहि लखै, दीनबन्धु-सम होय॥ १०॥
क्षमा-बड़नको-होत है, छोटनको उत्पात।
का रहीम प्रभुको घट्यो, भृगुने मारी लात॥ ११॥
यों रहीम सुख होत है, उपकारीके अंग।
बांटनवारेके लगै, ज्यौं मेंहदीको रंग॥ १२॥
रहिमन वे नर मर चुके, पर घर मांगन जायँ।
उनते पहिले वे मरे, जे होवत नहिं जायँ॥ १३॥
रहिमन सूधी चालसे, प्यादो होत वजीर।

फर्जी मीर न हो सकै, टेढ़की तासीर ॥ १४ ॥
काह करब धन मेरुसम, कलपवृक्षकी छांह ।
रहिमन ढाक सुहावनी, जो गल प्रीतम बांह ॥ १५
जो रहीम भावी कतहुं, होती अपने हाथ ।
राम न जाते कुरँगसँग, सिया न रावण साथ ॥१६॥
जो विषया संतन तजी, मूढ ताहि लपटात ।
ज्यौं नर डारत बमन कर, श्वान स्वादसौं खात ॥१७॥
कौन बडाई जलधि मिलि, गंग नाम भो धीम ।
केहिकी प्रभुता नहिं घटी, पर घर गये रहीम ॥१८॥
जो पुरुषारथतें कतहुँ, सम्पति मिलत रहीम ।
पेट लागि बैराट-घर, तपत रसोई भीम ॥१९॥
धन रहीम जल पंकको, लघु जिय पियत अघाय ।
उदधि बड़ाई कौन है, जगत पियासो जाय ॥२०॥
कह रहीम धन बढि घटै, जात धनिककी बात ।
घटे बढे उनको कहा, घास बेचके खात ॥२१॥

कबीर साहबके दोहे ।

बोवै काटे जो तोहि, ताहि बोय तू फूल ।
तोहि फूलके फूल हैं, हैं वाको तिरशूल ॥ १ ॥
दुखमें सुमिरण सब करैं, सुख में करै न कोय ।
जो सुखमें सुमिरण करै, दुख काहेको होय ॥ २ ॥
एकहि साधे सब सधैं, सब साधे सब जाय ।
जो तू सींचै मूलको, फूलै फलै अघाय ॥ ३ ॥
माटी कहै कुम्हारसे, क्या रूंधै तू मोहिं ।
एक दिन ऐसो होयगो, मैं रूंधूगी तोहिं ॥ ४ ॥

❀ झुकलावा-बहार ❀

पोथी पढ पढ जग मुआ, पंडित भया न कोय।
एक हि अक्षर प्रेमका, पढ़ै सो पंडित होय ॥५॥
बुरा जो देखन म चला, बुरा न पाया कोय।
जो मन ढूंढा आपना, मुझसम बुरा न कोय ॥६॥
काल करै सो आज कर, आज करै सो अब।
पलमें परलय होयगी, बहुरि करैगो कब ॥७॥
काची काया मन अथिर, थिर थिर काम करन्त।
ज्यौं ज्यौं नर निधरक फिरै, त्यों त्यों काल हसन्त ॥८॥
जाको राखै साइयाँ, मार सकै नहिं कोय।
बाल न बांका करि सकै, जो जग वैरी होय ॥९॥
चाह घटी चिन्ता गई, मनवा बे परवाह।
जिनको कछु चहिये नहीं, ते साहनपति साह ॥१०॥
चलन चलन सब कोइ कहै, पहुँचे विरला कोय।
एक कञ्चन एक कामिनी, दुर्लभ घाटी दोय ॥११॥
बकरी पाती खात है, ताकी काढ़ै खाल।
जो नर येहि भक्षण करे, तिनको कौन हवाल ॥१२॥
कबिरा खड़ा बजारमें, लिये लुकाठी हाथ।
जो घर फूँकै आपनो, चले हमारे साथ ॥१३॥
देखहु दुनिया बावरी, पाथर पूजन जाय।
घरकी चक्की ना पुजै, ज्याको पीस्यो खाय ॥१४॥
दुष्ट तजै न दुष्टता, सज्जन तजै न हेत।
काजल तजै न श्यामता, मोती तजै न स्वेत ॥१५॥
यह मन जानै बावरे, पाप न पूछै कोय।
साईं के दरबारमें, एक दिन लेखा होय ॥१६॥
सबै रामको छोड़के, पूजैं देवी भूत।
बाप बिचारे मर गये, उनसे मांगैं पूत ॥१७॥

खाय न खरचे सूम धन, चोर सबहि ले जाय।
पीछे ज्यौं मधु मक्षिका, सीस धुनै पछिताय॥ १८॥
जगसागरमें आयके, तज दे अवगुन चार।
चोरी चुगली जामनी, और पराई नार॥ १९॥

रसखान-दोहे।

अमी हलाहल मद भरे, श्वेत श्याम रतनार।
जियत मरत झुकि झुकि परत, जेहि चितवहि इकबार॥१॥
छुरी धार तरवारकी, काटि सकत कछु नाहीं।
जैसे दृग ज्यौ ज्यौं मुरें, त्यौं त्यौ काटि कराहि॥ २॥
हँसै छबीली क्षणिकमें, क्षणाहीमें रिसियाय।
रोवै मुख बावै कछु, दशा वरनि नहि जाय॥ ३॥
नैन सलोने अधर मधु, कहु रहीम घटि कौन।
मीठो भावे लौनपर, औ मीठे पर लौन॥ ४॥
गोरे गोरे कुचन पै, कारे कारे श्याम।
मानहु शैल बिछायकर, पौढ़े स्रालिगराम॥ ५॥
लटी छुटी लिय शीसतें, अटकी कुचके बीच।
मानहु नागिन फँसगई, महादेवके बीच॥ ६॥

मारवाड़ी दोहे।

चाकर चोर औ पारधी, नाई कुत्ता बाज।
धाया काम करैं नहीं, भूखा सारें काज॥ १॥
कांसी कुत्ता कुमाणसा, बिन बोल्यां कूकन्त।
सोन सूर औ सन्तजन, मधुराई बोलन्त॥ २॥
केहरि-केश भुजङ्ग-मणि, पतिव्रताको गात।
सूरां सस्त्र औ कृपण धन, जियत न आवैं हाथ॥ ३॥

वैद्य पसारी विप्र वो, जो ग्याराको खाय।
ये तीनों ही नग्रके, चिन्तक अशुभ कहाय ॥ ४ ॥
कागा कुत्ता कुमानसा, तीनों एक निकास।
ज्यां ज्यां गेलां नीसरे, त्यां त्यां करै विनास ॥ ५
जाट जवाई भाणजो, रैबारीर सुनार
कदै न होसी आपना, कर देखो व्यवहार ॥ ६
इश्क मुश्क खांसी खुसक, खैर खून मद पान।
इता छिपायो ना छिपै, परगट होय निदान ॥ ७ ॥
चकवा चातक सुघड़नर, नितप्रति रहत उदास
खर घूघू मूरखनरां, सदा सुखी दिन-रात ॥ ८ ॥
जंगल जाट न छेड़िये, हाट्यां बीच किराड़
रांगड़ कदे न छेड़िये, मारै तीखी धार ॥ ९
सिंह विषय सत पुरुषवेन, केल फलै इक बार।
तिरया तेल हमीर हठ, चढ़ै न दूजी बार ॥ १० ॥
राजा जोगी अगन जल, यांकी उलटी रीति।
माया मोह इनके नहीं, थोड़ी पालै प्रीति ॥ ११ ॥
ज़ुर जाचक औ पाहुनो, चौथो मांगनहार।
लांघन तीन करायदे, फिर ना आवे द्वार ॥ १२
काचो पारो ब्रह्म अंस, कन्याको धन खाय।
कहे गुरु सुण चेलका, जड़ा मूलसे जाय ॥ १३ ॥
आलस नींद किसानकूं, वीर विगाड़ै हांसि।
मूल नसावे व्याज बड़ो, खोवै चोरकूं खांसि ॥ १४ ॥
विना कुचांकी इसतरी, विना मूछको ज्वान।
ये तीनूं फीका लगै, विना सुपारी पान ॥ १५ ॥
मन मोती औ दूधरस, यांको यही सुभाव।

फाट्यां पाछे ना मिलै, कोटिन करो उपाव ॥ १६ ॥

शत्रु सस्त्र भुजंग अरु, रोग न समझो छोट।
सावधान थांसूं रहो, करैं बखत पर चोट ॥ १७ ॥

नाई बामन कूकरो, जात देख घुर्रांय।
यां तीन्यांकी नीत या, हम इकलाही खायँ ॥ १८ ॥

छुरी छड़ी छतरी छला, छबड़ा पांच छकार।
इन्हें सदा सँग राखियो, प्यारा राजकँवार ॥ १९ ॥

नर चीती रीती सदा, हर चीती तत्काल।
बलि चाहे था स्वर्ग कूं, भेज दिया पाताल ॥ २० ॥

आम्बा नींबू बाणिया, गल चाप्यां रस देत
कायथ कागा करहटा, मुर्दा हूं से लेत ॥ २१ ॥

कांटा बुरा ककीरका, और बदली की घाम
सौत बुरी है चूनकी, औ [illegible] को काम ॥ २२ ॥

खेती पाती बीनती, और घोड़ाको तंग।
अपने हाथ संवारिये, चाहे लाखों हों संग ॥ २३ ॥

चोर जुआरी गंठ-कटा, जार और नार छिनार
सौ सौ सौगंध खाय जो, [illegible] न कर इतबार ॥ २४ ॥

लीक लीक गाड़ी चले, लीके चले कपूत।
लीक छोड़ तीनूं चलें, [illegible] सूर सपूत ॥ २५ ॥

बागां मीठी कोयली, चौपड़ मीठी स्यार।
सेजां मीठी कामिनी, रण मीठी तलवार ॥ २६ ॥

तीतर पंखी बादली, विधवा सारे रेख।
वा बरसे वा घर करे, [illegible] मीन न मेख ॥ २७ ॥

ब्राह्मण हो चोरी करे, विधवा पान चबाय।
क्षत्री हो रणसे डरै, [illegible] ना खाय ॥ २८ ॥

❀ मुकलावा-बहार ❀

हिन्दी दोहे।

चंद्र चुगत चकोर नित, भस्म करनको अंग।
हो विभूति शिवसिर चढ़ें, तव पावे शशि संग ॥ १ ॥
जो जाके शरणन वसै, ताकी ताको लाज।
उलटे जल मछली चढ़ै, वहे जात गजराज ॥ २ ॥
सोच करे सो शूर है, कर सोचे सो भूर।
सोच करे मुंह नूर है, कर सोचे मुंह धूर ॥ ३ ॥
पाप करे तो पा पकर, पा पकरे गति होय।
जो तूं पा पकरे नही, पड़ै नरकमें रोय ॥ ४ ॥
सबसे दिया अनूप है, दिया करो सब कोय।
घरमें धरा न पाइये, जो कर दिया न होय ॥ ५ ॥
सदा सुहागन नित नई, अपनी रोटी दार।
दाम लगे औ दुख करै, मीठा औ परनार ॥ ६ ॥
बांस चढी नटनी कहै, होत न नटियो कोय।
मैं नठकर नटनी भई, नटै सो नटनी होय ॥ ७ ॥
खल औ कांटेको कह्यो, दो विधि सहज उपाय।
जूतासे मुह तोडियो, या दूर तें जाय ॥ ८ ॥
मूरखको मुंह वंब है, निकसत बचन भुजंग।
ताकी औषधि मौन है, विष नहिं व्यापै अंग ॥ ९ ॥
सम्पत्ति और शरीर सुख, विद्या औ वर नार।
निज पूरवले दत्त विन, मांगे मिलै न चार ॥ १० ॥
भाग्यहीनको ना मिलै, भली वस्तुको भोग।
दाख पकै मुंह पाकको, होय काकको रोग ॥ ११ ॥
मुख श्रवण दृग नासिका, सवहीके इक ठौर।
कहिबो सुनिबो देखिबो, चतुरनको कुछ और ॥ १२ ॥

बुधजन कबहुँ न छांडिये, निज पुरखनकी रीत।
बराबरीसे कीजिये, बैर ब्याह औ प्रीत ॥ १३ ॥
पूत कपूत औ कृपण नर, कपटी मित्र कुनारि।
बारहुँ संगति सूलसम, बुधजन कहत बिचारि ॥ १४ ॥
प्राण पुत्र दोऊ बड़े, युग चारों परमान।
सो नरेश दशरथ तजे, बचनन दीन्हे मान ॥ १५ ॥

कुछ चुने हुए दोहे।

करत करत अभ्यासके, जड़मति होत सुजान।
रसरी आवत जात तें, सिलपर पड़त निशान ॥ १ ॥
कौड़ी कौड़ी जोड़के, निर्धन हो धनवान।
अक्षर अक्षरके पढ़े, मूरख होय सुजान ॥ २ ॥
अमृत भरे तन वचन, निशदिन पर उपकार।
पर गुण मानत मेरु सम, विरले जन संसार ॥ ३ ॥
उत्तम थल सेवैं सुजन, नीच नीचके वंश
सेवत गीध मसानकूं, मानसरोवर हंस ॥ ४ ॥
खल जनको विद्या मिलै, दिन दिन बढ़ै गुमान।
बढ़ै गरल बहु व्यालको, यथा किये पय पान ॥ ५ ॥
खल जनको कहिये नहीं, गूढ़ कबहुँ करि मेल।
यों फैले संसार ज्यों, जलपर बूंदक तेल ॥ ६ ॥
चतुरंगिनी समेट दल, कायर नर भगि जात।
एक शूर सब सैन्यको, रोकि लेत यदुरात ॥ ७ ॥
शूर समर करणी करहिं, कहि न जनावैं आप।
विद्यमान रण पाय रिपु, कायर करहिं प्रलाप ॥ ८ ॥
ढकै दोष जो परनके, बकै न मिथ्या बात।
संतोषी औ दया मन, सोई बड़ो कहात ॥ ९ ॥

जलचर थलचर व्योमचर, सबकहँ देत अहार
मूरख चिन्ता जानि करे, निशदिन बारंबार ॥ १० ॥
थकित होय सब अंग अरु, कंपन लागे गात।
तऊ न विद्या छांड़िहैं, चतुर नरनको साथ ॥ ११ ॥
दलि औरनको दुख सदा, करत रहत उपकार।
धनि २ उन नरतें जगत, दूजो कौन उदार ॥ १२ ॥
बड़े जननके भाग्यको, सहै न अधम गँवार।
शालतरुमें गज बंधे, नहि आकनकी डार ॥ १३ ॥
भलो होय नहि मारबो, काहूको जगमाहि।
भलो मारबो क्रोधको, ता सम रिपु जग नाहि ॥ १४ ॥
रचै शठहि बुध आपसम, वचन सुनाय अनूप।
जैसे भृंगी कीटको, करै शनैः निजरूप ॥ १५ ॥
ऋणी पुरुष नहि जांचिये, वरु निधन दातार।
तजिके कुसुमित आक अलि, कमल कृश प्यार ॥ १६ ॥
प्रिय-वाणी शीतल हृदय, सुन्दर सरल उदार।
जो जन ऐसो जगतमें, ताको सबसें प्यार ॥ १७ ॥
मिथ्या भाषी सांचहू, कहै न मानै कोय।
भांड़ पुकारै पीर बस, मिस समझै सब कोय ॥ १८ ॥
तात स्वर्ग अपवर्ग सुख, धरिय तुला इक अंग।
तुलै न ताही सकल मिलि, जो सुख लव सत्संग ॥ १९ ॥
कागा काको धन हरै, कोयल काकूं देय।
मीठो शब्द सुनायके, जग अपनो करि लेय ॥ २० ॥
मूरख वहां हि मानिये, जहां न पंडित होय।
रविलो जहां प्रकाश नहि, दीप प्रकाशत लोय ॥ २१ ॥
संगविसे गुण होत हैं, कहैं लोग विद्वान।

गांधी और लुहारकी, देखो बैठ दुकान ॥ २२ ॥
पंडित केर बराबरी, नहिं कर सकत नरेश ।
गुणको आदर ठौर सब, राजाको निज देश ॥ २३
संगति कीज साधुकी, हरै औरकी व्याधि ।
ओछी संगति नीचकी, आठो पहर उपाधि ॥ २४ ॥
राम नाम सम और नहिं, जाके मन विश्वास ।
भई भक्त प्रह्लादको, अमर होनकी आस ॥ २५ ॥
अपनी अपनी कहत हैं, यद्यपि सारे ग्रन्थ ।
ज्ञानवानकी दृष्टिमें, सब गुरुपुरके पन्थ ॥ २६ ॥
हरि हेरत हरिही भयो, पायो नहि विश्राम ।
गुरुचरणन श्रद्धा किये, घरही निकसे राम ॥ २७ ॥
गज मारे तो नाहिं डर, सिंह करै तहु भंग ।
सुन्दर ऐसो दुख नहीं, जैसो दुर्जन संग ॥ २८ ॥
अब पछताये होत कहा, शिथिल भई जब देह ।
कूप खोदिवो है वृथा, जरन लग्यो जब गेह ॥ २९ ॥
क्षमा खड्ग जिन कर लियो, कहा करै खल कोय ।
ईंधनमें अग्नि पड़े, आपुहि शीतल होय ॥ ३० ॥
पल पल छीजत देह यह, घटत घटत घट जाय ।
वैरिन तृष्णा न घटै, नित नूतन अधिकाय ॥ ३१ ॥
सबहि सहायक सबलके, कोउ न निबल सहाय ।
पवन प्रजारै अग्निको, दीपहि देत बुझाय ॥ ३२ ॥
मूरख गुण समझै नही, तौ न गुणीमें चूक ।
कहा भयो रविको विभव, देखै जो न उलूक ॥ ३३
कारज धीरे होयगो, जनि मन होहु अधीर ।
समय पाय तरुवर फरै, केतिक सीचहु नीर ॥ ३४ ॥

क्यों ऐसो कीजै जतन, जाते काज न होय।
परवतपे खोदे कुवा, कैसे निकले तोय ॥ ३५ ॥

फुटकर।

सात द्वीप नवखण्डमें, नित्य होत जेवनार।
एक शिवरी एक विदुर घर, तृप्त भयो द्वौ बार ॥
गङ्गाजीको तैरबो, विप्रनको व्योहार।
बूड़ गये तो पार है, पार भये तो पार ॥
कहीं कही गोपालकी, गई चौकड़ी भूल।
काबुलमें मेवा करी, ब्रजमें किये बबूल ॥
जहां न जाको गुण लहै, तहां न ताको वास।
धोबी बसकर क्या करै, दिगम्बरोंके पास ॥
केशव केशन अस करी, जैसी अरि न कराय।
चन्द्रवदन मृगलोचनी, बाबा कहि २ जाय ॥
"सूर" सूर्य "तुलसी" शशी, उडुगण "केशवदास"।
अबके कवि खद्योत सम, जहँ तहँ करहि प्रकाश ॥
चल सुन्दर मंदर चलां, तो बिन चल्यो न जाय।
माता देवी आशिषां, वे दिन पूँछा आय ॥
धरा मेरु सब डोलते, तानसेनकी तान।
विधना अस जिय जानिके, शेष न दीन्हे कान ॥
करि फुलेलको आचमन, मीठो कहत सराहि।
चुप रहरे गांधी सुघर, अतर दिखावत काहि ॥
चले जाय ह्यां को करत, हांथिन को व्यौहार।
या नगरी में बस रहे, धोबी और कुम्हार ॥
हंसा थे सो उड़ गये, काग भये परधान।
जाहु विप्र घर आपने, सिंघ कहा जजमान ॥

❀ ससुराल-रहस्य ❀

बिहारीकी सतसईके दोहे।

७०० दोहोंके संग्रहसे सबके समझने योग्य चुने हुए।

मेरी भव-बाधा हरो, राधा नागरि सोय।
जा तनुकी झांई परे, श्याम हरित द्युति होय॥ १॥
शीश मुकुट कटि कांछनी, कर मुरली उर माल।
यहि बानिक मों मन बसो, सदा बिहारीलाल॥ २॥
मकराकृत गोपालके, कुण्डल सोहत कान।
धँस्यो मनो हिय घर समर, ढ्योढ़ी लसत निशान॥३॥
सतसैयाके दोहरे, ज्यों नावकके तीर।
देखनके छोटे लगें, घाव करैं गम्भीर॥ ४॥
सोहत ओढ़े पीतपट, श्याम सलोने गात।
मनो नीलमणि शैलपर, आतप पर्‌यो प्रभात॥ ५॥
मोंहू करत कत बावरी, किये दुराव दुरै न।
कहे देत रँग रातको, रंग निचुरतसे नैन॥ ६॥
कहत न देवरकी कुवत, कुलतिय कलह डराति।
पंजर गत मंजार ढिग, शुक लौं सूखति जाति॥ ७॥
दीप उजेरेहू पतिहि, हरत वसन रतिकाज।
रही लपटि छबिकी छुटनि, नैको छुटी न लाज॥ ८॥
कोवलजखि मन मानधर, ढिग सोयो प्यौ आय।
रही सुपनकी मिलन मिलि, पिय हियसों लिपटाय॥९॥
मैं बूझे बाब तू, कत बहरावति बाल।

बाहुरी, २ कामदेव, ३ तीर, ४ धूप. ५ रिसाना ६ छल करना.

जगजाती विपरीत रति, लखि विंदुली पियभाल ॥१०॥
दहै निगोड़े नैन यह, गहैं न चेत अचेत।
हौं कसिके रिसको करौं, यह निरखे हँसि देत ॥ ११ ॥
चित तरसत मिलत न बनत, बस परोसके बास।
छाती फाटत जात सुनि, टाटी ओट उसास ॥ १२ ॥
ज्यौं ज्यौं पावक लपटसी, पिय हियसों लिपटाति।
त्यौं त्यौं छुही गुलावकी, छतियां अति सियराति ॥१३॥
नभ लाली चाली निशा, कटकाली धुनि कीन।
रति पाली आली अनत, आये वनमाली न ॥ १४ ॥
कत लपटैयत मोगरे, सोनजुही निशि शैन।
जिहि चंपकवरनी किये, गुल्लालासे नैन ॥ १५ ॥
पर्यो जोर विपरीत रति, रूपो सुरत रणधीर।
करत कुलाहल किंकिणी, गह्यो मौन मंजीर ॥ १६ ॥
दृग मीचत मृगलोचनी, भर्यो उलटि भुज वाथ।
जान गई तिय नाथको, हाथ परसही हाथ ॥ १७ ॥
मैं मिसहा सोयो समुझि, मुंह चूम्यो ढिग जाय।
हँस्यो खिसानी गर गह्यो, रही गरे लिपटाय ॥ १८ ॥
मुंह उघारि प्यौ लखि रहत, रह्यो न गोमिस सैन।
फरके होठ उठे पुलक, गये उघर युग नैन ॥ १९ ॥
राधा हरि हरि राधिका, वनि आये संकेत।
दम्पति रति विपरीत सुख, सहज सुरतहू लेत ॥ २० ॥
सकुचि सरकि पिय निकटतें, पुलकि कछुक तन तोरि।

१ कली, २ चिड़ियां, भौंरे. ३ करधनी । ४ पायल. ५ पिय.

कर आंचरकी ओटकर, जमुहानी मुख मोरि ॥ २१ ॥
अलि इन लोयनमें कछू, उपजी बड़ी बलाय ।
नीर भरे नितप्रति रहैं, तऊ न प्यास बुझाय ॥ २२ ॥
दृग उरझत टूटत कुटुम, जुरति चतुर सँग प्रीति ।
परत गांठ दुर्जन हिये, दई नई यह रीति ॥ २३ ॥
तोपर वारो उरवसी, सुन राधिके सुजान ।
तू मोहनके उर वसी, है उरवसी-समान ॥ २४ ॥
सोहत धोती स्वेतमें, कनक वरण तनु बाल ।
शारद बारद बीजरी, भारद की जतु लाल ॥ २५ ॥
नेक उते उठि बैठिये, कहा रहे गहि गेहु ।
छूटि जात नहँदी छिनक, मेंहदी सूखन देहु ॥ २६ ॥
अनरसहूं रस पाइये, रसिक रसीली पास ।
जैसे सांठेको कठिन, गांठें भरो मिठास ॥ २७ ॥
कोटि यतन कोऊ करै, तनकी तपन न जाय ।
जौंलगि भीजे चीरलों, रहै न यों लपटाय ॥ २८ ॥
हौंही वौरी विरह वस, के वौरी सब गाम ।
कहा जानिये कहत हैं, शशिहि शीतकर नाम ॥ २९ ॥
कहत सबै वेंदी दिये, आंक दसगुणो होत ।
तिय लिलार वेंदी दिये, अगणित बढ़त उदोत ॥ ३० ॥
रस सिंगार मज्जन किये, कंजन भंजन दैन ।
अंजन रंजन हूं बिना, खंजन गंजन नैन ॥ ३१ ॥
जटित नीलमणि जगमगत, सींक सुहाई नाक ।
मनो अली चम्पककली, बसि रस लेत निशंक ॥ ३२ ॥
छिट्यो छबीली मुख लसै, नीले अंचल चीर ।
मनो कलानिधि झलमले, कालिन्दीके नीर ॥ ३३ ॥

गोरे गोरे कुचनमें, कारे कारे श्याम।
मानो चंपा कलीपर, भँवर करत विश्राम॥ ३४॥
जंघ युगल लोयन निरे, करे मनो विधि मैन।
केलि तरुन दुख देन थे, केलि तरुण सुख देन॥ ३५॥
नहि पराग नहि मधुर मधु, नहि विकास यहि काल।
अली कलीहीसों बिध्यो, आगे कौन हवाल॥ ३६॥
भूषण भार सँभारही, क्यों यह तनु सुकुमार।
सूधो पांव न धर परत, महि सोभा के भार॥ ३७॥
मैं बरजो कै वार तूं, उत कत लेत करोट।
पखुरी लगे गुलाबकी, परि है गात खरोंट॥ ३८॥
हेरि हिंडोरे गगनते, परी परीसी टूटि।
धरी धाय पिय बीचही, करी खरी रस लूटि॥ ३९॥
सोहत संग समानसों, यही कहै सब लोग।
पान पीक ओठन बनें, काजर नैनन योग॥ ४०॥
मोर चंद्रिका श्याम सिर, चढ़ि कत करत गुमान।
लखबी पाँयल पर लुटति, सुनियत राधा मान॥ ४१॥
कर[1] देख्यो सोंप्यो ससुर, बहू थुरेहथी जानि।
चढ़े रूप रहि लागि लग्यो, माँगन सब जग आनि॥४२॥

चाणक्यनीति।

दुष्टा भार्या शठं मित्रं, भृत्यश्चोत्तरदायकः।
ससर्पे च गृहेवासो, मृत्युरेव न संशयः॥ १-५
धनिकः श्रोत्रियो राजा, नदी वैद्यस्तु पंचमः।
पञ्च यत्र न विद्यन्ते, न तत्र दिवसं वसेत्॥ १-९॥

१ छोटे हाथवाली.

❀ ससुराल-रहस्य ❀

नदीनां शस्त्रपाणीनां, नखिनां शृंगिणां तथा।
विश्वासो नैव कर्तव्यः, स्त्रीषु राजकुलेषु च॥ १-१५॥
अतिरूपेण वै सीता, अतिगर्वेण रावणः।
अतिदानाद्वलिर्बद्धो, ह्यति सर्वत्र वर्जयेत्॥ ३-१२॥
कुग्रामवासः कुलहीनसेवा, कुभोजनं क्रोधमुखी च भार्या।
पुत्रश्च मूर्खो विधवा च कन्या, विनाऽग्निनैते प्रदहन्ति कायम्॥४-८॥
अपुत्रस्य गृहं शून्यं, दिशः शून्यास्त्ववांधवाः।
मूर्खस्य हृदयं शून्यं, सर्वशून्या दरिद्रता॥ ४-१४॥
मूर्खाणां पंडिता द्वेष्या, अधनानां महाधनाः।
परांगनाः कुलस्त्रीणां, सुभगानां च दुर्भगाः॥ ५-२॥
आलस्योपहता विद्या, परहस्ते गतं धनम्।
अल्पबीजं हतं क्षेत्रं, हतं सैन्यमनायकम्॥ ५-७॥
नास्ति कामसमो व्याधिर्नास्ति मोहसमो रिपुः।
नास्ति कोपसमो वह्निर्नास्ति ज्ञानात्परं सुखम्॥ ५-१२॥
विद्या मित्रं प्रवासेषु, भार्या मित्रं गृहेषु च।
व्याधितस्यौषधं मित्रं, धर्मो मित्रं मृतस्य च॥ ५-१५॥
वृथा वृष्टिः समुद्रेषु, वृथा तृप्तेषु भोजनम्।
वृथा दानं धनाढ्येषु, वृथा दीपो दिवाऽपि च॥ ५-१६॥
सत्येन धार्यते पृथ्वी, सत्येन तपते रविः।
सत्येन वाति वायुश्च, सर्वं सत्ये प्रतिष्ठितम्॥ ५-१९॥
नराणां नापितो धूर्तः, पक्षिणां चैव वायसः।
चतुष्पदां शृगालस्तु, स्त्रीणां धूर्ता च मालिनी॥ ५-२१॥
जनिता चोपनीता च, यस्तु विद्यां प्रयच्छति।
अन्नदाता भयत्राता, पञ्चैते पितरः स्मृताः॥ ५-२२॥
राजपत्नी गुरोः पत्नी, मित्रपत्नी तथैव च।

पत्नीमाता स्वमाता च, पञ्चता मानरः स्मृताः ॥ ५-२३ ॥

प्रभूतं कार्यमपि वा, यन्नरः कर्तुमिच्छति ।
सर्वारम्भेण तत्कार्यं, सिंहादेकं प्रचक्षते ॥ ६-१६ ॥

इन्द्रियाणि च संयम्य, बकवत्पंडितो नरः
देशं कालं बलं ज्ञात्वा, सर्वकार्याणि साधयेत ॥ ६-१७ ॥

प्रत्युत्थानं च युद्धं च, संविभागश्च बन्धुषु ।
स्वयमाक्रम्य भुक्तं च, शिक्षेच्चत्वारि कुक्कुटात् ॥ ६-१८ ॥

गूढमैथुनचारित्वं, काले काले च संग्रहम् ।
अप्रमत्तमविश्वासं, पंच शिक्षेच्च वायसात् ॥ ६-१९ ॥

बह्वाशी स्वल्पसंतुष्टः, सनिद्रो लघुचेतनः ।
स्वामिभक्तश्च शूरश्च, षडेते श्वानतो गुणाः ॥ ६-२० ॥

सुश्रान्तोऽपि वहेद्भारं, शीतोष्णं न च पश्यति ।
संतुष्टश्चरते नित्यं, त्रीणि शिक्षेच्च गर्दभात् ॥ ६-२१ ॥

हस्ती हस्तसहस्रेण, शतहस्तेन वाजिनः ।
शृंगिणो दशहस्तेन, देशत्यागेन दुर्जनः ॥ ७-७ ॥

शान्तितुल्यं तपो नास्ति, न संतोषात्परं सुखम्
न तृष्णायाः परो व्याधिर्न धर्मोऽस्ति दयापरः ॥ ८-१३ ॥

गुणो भूषयते रूपं, शीलं भूषयते कुलम्
सिद्धिर्भूषयते विद्यां, भोगो भूषयते धनम् ॥ ८-१६ ॥

शुद्धं भूमिगतं तोयं, शुद्धा नारी पतिव्रता
शुचिः क्षेमकरो राजा, सन्तोषी ब्राह्मणः शुचिः ॥ ८-१७ ॥

असंतुष्टा द्विजा नष्टाः, सन्तुष्टाश्च महीभृतः ।
सलज्जा गणिका नष्टा, निर्लज्जाश्च कुलांगनाः ॥ ८-१८ ॥

अहिं नृपं च शार्दूलं, वृश्चिकं बालकं तथा ।
परश्वानं च मूर्खं च, सप्त सुप्तान्न बोधयेत् ॥ ९-७ ॥

लुब्धानां याचकः शत्रुर्मूर्खाणां बोधको रिपुः।
जारस्त्रीणां पतिः शत्रुश्चौराणां चन्द्रमा रिपुः ॥ १०–६ ॥

वरं वनं व्याघ्रगजेन्द्रसेवितं, द्रुमालयं पत्रफलाम्बुसेवनम्।
तृणेषु शय्या शतजीर्णवल्कलं न बन्धुमध्ये
धनहीनजीवनम् ॥ १०–१२ ॥

माता च कमला देवी, पिता देवो जनार्दनः।
बान्धवा विष्णुभक्ताश्च, स्वदेशो भुवनत्रयम् ॥ १०–१४ ॥

गते शोको न कर्तव्यो, भविष्यं नैव चिन्तयेत्।
वर्त्तमानेन कालेन, प्रवर्तन्ते विचक्षणाः ॥ १३–२ ॥

जले तैलं खले गुह्यं, पात्रे दानं मनागपि।
प्राज्ञे शास्त्रं स्वयं याति, विस्तारं वस्तुशक्तितः ॥ १४–२ ॥

न निर्मिता केन न दृष्टपूर्वा, न श्रूयते श्रूममयी कुरङ्गी।
तथापि तृष्णा रघुनन्दनस्य विनाशकाले विपरीतबुद्धिः१६–५॥

नान्नोदकसमं दानं, न तिथिर्द्वादशी समा।
न गायत्र्याः परो मन्त्रो, न मातुर्दैवतं परम् ॥ १७–७ ॥

अशक्तस्तु भवेत्साधु-ब्रह्मचारी च निर्धनः।
व्याधितो देवभक्तश्च, वृद्धा नारी पतिव्रता ॥ १७–६ ॥

नापितस्य गृहे चौरं, पाषाणे गन्धलेपनम्।
आत्मरूपं जले पश्यन्, शक्रस्यापि श्रियं हरेत् ॥ १७–१३ ॥

नृपस्य चित्तं कृपणस्य वित्तं, मनोरथं दुर्जनमानसस्य।
स्त्रियश्चरित्रं पुरुषस्य भाग्यं, देवो न जानाति कुतो मनुष्यः।

(इनमें जो नम्बर दिये गये हैं उनमें पहिला नम्बर अध्यायका तथा दूसरा श्लोकका नम्बर है। टीका इस लिये नही दी गयी है कि प्रायः सरल सरल श्लोक ही, जो सबके समझने योग्य हैं छांटकर लिखे गये हैं)

चन्दर-क्यूं जोसीजी ! अब पेट भऱ्योकना।

समानन्दजी-(हंसता २) जी बाव ! पेट तो लुगायांको भरचा करै है यदि कुछ सुभाषित तथा सुन्दर, श्लोक याद हों तो सुनावो।

चन्दर-श्लोक तो मने एक सूं एक बढ़कर आवे हैं।

समानन्दजी-(भक्तलालसे) बाबू साहब ! अमरलाल तो पञ्चम वेद पढ्योड़ो है पर बाबू चन्दर भी गुण्योड़ो है।

चन्दर-अच्छा तो सुनिये कैसे २ श्लोक सुनाता हूं।

जयदेव कवि कृत मङ्गलगीत।

श्रितकमलाकुचमण्डल धृतकुण्डल ए।
कलितललितवनमाल, जय जय देव हरे॥ १॥
दिनमणिमण्डलमंडन भवखंडन ए।
मुनिजन-मानस-हंस, जय जय देव हरे॥ २॥
कालिय-विषधर-गंजन जनरंजन ए।
यदुकुलनलिनदिनेश जय जय देव हरे॥ ३॥
मधु-मुर-नरक-विनाशन गरुड़ासन ए।
सुरकुलकेलिनिदान जय जय देव हरे॥ ४॥
अमलकमलदललोचन, भवमोचन ए।
त्रिभुवन-भवननिधान जय जय देव हरे॥ ५॥
जनकसुताकृतभूषण जितदूषण ए।
समरशमितदशकंठ जय जय देव हरे॥ ६॥
अभिनवजलधरसुन्दर, धृतमंदिर ए।
श्रीमुखचन्द्रचकोर जय जय देव हरे॥ ७॥
तव चरणे प्रणता, वयमिति भावय ए।
कुरु कुशलं प्रणतेषु जय जय देव हरे॥ ८॥

श्रीजयदेवकवेरिदं कुरुते मुदम् ।
मंगलमुज्ज्वलगीतं जय जय देव हरे ॥ ९ ॥ १ ॥

॥ श्रीमच्छंकराचार्यकृत चर्पटपंजरी ॥

(अच्छी मधुर व भावपूर्ण)

भज गोविन्दं भज गोविन्दं भज गोबिन्दं मूढमते ॥टेर॥

दिनमपि रजनी सायं प्रातः, शिशिरवसंतौ पुनरायातः ।
कालःक्रीडति गच्छत्यायुः, तदपि न मुंचत्याशावायुः ॥ १ ॥
अग्रे वन्हिः पृष्ठे भानू, रात्रौ चिबुकसमर्पितजानुः ।
करतलभिक्षा तरुतलवासः, तदपि न मुंचत्याशापाशः ॥ २ ॥
यावद्वित्तोपार्जनसक्तः, तावन्निजपरिवारो रक्तः ।
पश्चाद्धावति जर्जरदेहे, वार्ता पृच्छति कोऽपि न गेहे ॥ ३ ॥
जटिलो मुंडी लुंचितकेशः, काषायांबरबहुकृतवेषः ।
पश्यन्नपि च न पश्यति मूढः, उदरनिमित्तं बहुकृतवेषः ॥ ४ ॥
भगवद्गीता किंचिदधीता, गंगाजललवकणिका पीता ।
येनाकारि मुरारेरर्चा, तस्य यमः किं कुरुते चर्चा ॥ ५ ॥
अंगं गलितं पलितं मुंडम्, दशनविहीनं जातं तुंडम् ।
वृद्धो याति गृहीत्वा दंडम्, तदपि न मुंचत्याशापिंडम् ॥ ६ ॥
बालस्तावत्क्रीडासक्तः, तरुणस्तावत्तरुणीरक्तः ।
वृद्धस्तावच्चिंतामग्नः, परे ब्रह्मणि कोऽपि न लग्नः ॥ ७ ॥
पुनरपि जननं पुनरपि मरणम्, पुनरपि जननीजठरे शयनम् ।
इह संसारे भवदुस्तारे, कृपयाऽपारे पाहि मुरारे ॥ ८ ॥
पुनरपि रजनी पुनरपिदिवसः, पुनरपि पक्षः पुनरपि मासः ।
पुनरप्ययनं पुनरपि वर्षम्, तदपि न मुंचत्याशामर्षम् ॥ ९ ॥

वयसि गते कः कामविकारः, शुष्के नीरे कः कासारः ।
नष्टे द्रव्ये कः परिवारः, ज्ञाते तत्वे कः संसारः ॥ १० ॥

नारीस्तनभरनाभिनिवेशम्, मिथ्यामायामोहावेशम् ।
एतन्मांसवसादिविकारम्, मनसि विचारय वारंवारम् ॥११॥

कस्त्वं कोऽहं कुत आयातः,का मे जननी को मे तातः ।
इति परिभावय सर्वमसारम्, विश्वं त्यक्त्वा स्वप्नविचारम्॥१२॥

गेयं गीतानामसहस्रम्, ध्येयं श्रीपतिरूपमजस्रम् ।
नेयं सज्जनसंगे चित्तम्, देयं दीनजनाय च वित्तम् ॥ १३ ॥

यावज्जीवो निवसति देहे, कुशलं तावत्पृच्छति गेहे ।
गतवति वायौ देहापाये, भार्या बिभ्यति तस्मिन्काये ॥ १४ ॥

सुखतः क्रियते रामाभोगः, पश्चाद्धंत शरीरे रोगः ।
यद्यपि लोके मरणं शरणम्, तदपि न मुंचति पापाचरणम् ॥१५॥

रथ्याचर्पटविरचितकंथः, पुण्यापुण्यविवर्जितपंथः ।
नाहं न त्वं नायं लोकः, तदपि किमर्थं क्रियते शोकः ॥ १६ ॥

कुरुते गंगासागरगमनं, व्रतपरिपालनमथवा दानम् ।
ज्ञानविहीने सर्वमनेन, मुक्तिर्नभवति जन्मशतेन ॥ १७ ॥

भज गोविंदं भज गोविंदं भज गोविंदं मूढ़मते ॥ २ ॥

संस्कृत कवियोंकी अनोखी उक्तियां ।

हृदयं कौस्तुभोद्भासि हरेः पुष्णातु वः श्रियम् ।
राधाप्रवेशरोधाय दत्तमुद्रमिव श्रिया ॥ ३ ॥

भावार्थ-हरिका वह हृदय तुम्हारी श्रीकी वृद्धि करे जिस हृदयपर लक्ष्मीने, हमारी सौत राधा न घुसने पावे, इस विचारसे कौस्तुभरूपी मोहर लगा दी है ॥ ३ ॥

❀ ससुराल-रहस्य ❀

संसारकटुवृक्षस्य, द्वे फले ह्यमृतोपमे।
सुभाषितरसास्वादः, संगतिः सुजने जने ॥ ४ ॥

भाषार्थ-संसाररूप कटु वृक्षके दो अमृत सदृश फल हैं, एक तो सुभाषित रसका आस्वाद, दूसरा सुजन जनकी संगति ॥ ४ ॥

चन्दनं शीतलं लोके, चन्दनादपि चन्द्रमाः ।
चन्द्रचन्दनयोर्मध्ये, शीतला साधुसंगतिः ॥

भाषार्थ-सब वस्तुओंमें शीतल चन्दन है और चन्दनसे भी शीतल चन्द्रमा है तथा चन्दन और चन्द्रमा दोनोंसें शीतल साधुओंकी संगति है।

असारे खलु संसारे, सारमेतद्द्वयं स्मृतम् ।
कसारः शर्करायुक्तः, कंसारिचरणद्वयम् ॥ ५ ॥

भाषार्थ-इस असार संसारमें दोही वस्तु सार हैं,—(१) बूरा-युक्त कसार और (२) कंसके शत्रु (श्रीकृष्ण) के दोनों चरणार-विन्द ॥ ५ ॥

कूर्पासकेनार्धतिरोहितौ कुचौ
रम्यौ रमण्याः कविताक्षराणि च ।
अर्द्धं निगूढानि सुशोभितान्यलं
नात्यंतगूढानि न वा स्फुटान्यपि ॥ ६ ॥

भाषार्थ-तरुण स्त्रीके कुच और कविताके अक्षर दोनों तब ही शोभा पाते हैं जब कुछ छिपे और कुछ खुले रहते हैं, बिलकुल छिपे अथवा बिलकुल खुले दोनों ही निरस जान पड़ते हैं ॥ ६ ॥

किं कवेस्तस्य काव्येन, किं काण्डेन धनुष्मतः ।
परस्य हृदये लग्नं न घूर्णयति यच्छिरः ॥ ७ ॥

भापार्थ-वह कविका काव्य और धनुर्धरका बाण किस कामका जो परके हृदयमें लगते ही सिरको नही घुमा देता है ॥ ७ ॥

क्षीरसारमपहृत्य शंकया, स्वीकृतं यदि पलायनं त्वया ।
मानसे मम नितान्ततामसे, नन्दनन्दन ! कथं न लीयसे ॥ ८ ॥

भापार्थ-हे नन्द-नन्दन ! माखन चुराकर डरके मारे यदि आप किसी अन्धारे स्थानमें छिपनेके लिये भागे जा रहे हैं, तो मेरे उस मनमें आकर क्यों नहीं छिप जाते ? जिसमें मोह और अज्ञानरूपी अन्धकार भरा हुआ है, ऐसा अंधकारमय-स्थान आपको और कहां मिलेगा ॥ ८ ॥

अतिविपुलं कुचयुगलं रहसि करैरामृशन्मुहुर्लक्ष्म्याः ।
तदपहृतं निजहृदयं जयति हरिर्मृगयमाण इव ॥ ९ ॥

भाषार्थ-विष्णु भगवानकी जै हो ! जो एकान्तमें लक्ष्मीके पीन-पयोधरों पर हाथ फेर रहे हैं, मानो वे लक्ष्मीजी द्वारा चुराये गये अपने मनको ढूंढ रहे है, क्योंकि लक्ष्मीजीने उनके मनको चुराकर अपने हृदयमें ही कहीं छिपा रखा होगा ॥ ९ ॥

ईशे पदप्रणयभाजि मुहूर्तमात्रं,
प्राणप्रियेऽपि कुरु मानिनि मा प्रसादम् ।
जानातु मत्प्रभुरसौ पदयोर्नतानाम्-
मस्मादृशामिव मनोरथभंगदुःखम् ॥ १० ॥

भापार्थ-हे भगवति ! आपसे यह प्रार्थना है कि, जब आप अपने प्राणेश्वर महादेवजीसे रूठ जांय तो फिर कभी न मानें चाहे वे आपके चरणोंमें अपना सिर ही क्यों न रख दें, हम उनके चरणोंमें नाक रगड़ते २ थक गये पर वे जरा भी न पसीजे, तनिक उन्हें भी तो हमारी तरह मालूम हो कि अपने मनोरथोंके भंग होनेसे कितना दुःख होता है ? ॥ १० ॥

हालाहलो नैव विषं विषं रमा,
जनाः परं व्यत्ययमत्र मन्वते।
निपीय जागर्ति सुखेन तच्छिवः
स्पृशन्निमां मुह्यति निद्रया हरिः ॥ ११ ॥

भाषार्थ-यह लोगोंकी बड़ी भूल है जो लक्ष्मीको विष न कहकर हलाहलको विष कहते हैं, वास्तवमें लक्ष्मी ही बिष है, क्योंकि महादेवजी विषपान करके भी सुखपूर्वक जागते हैं, परन्तु बिष्णु भगवान् लक्ष्मीके स्पर्शमात्रसे ही निद्रासे मोहित हो जाते हैं ॥११॥

नोट-विहारी कविने अपने निम्न दोहेमें भी कहा है—

कनॅक[1] कनॅकतें[2] सौगुणी, मादॅकता[3] अधिकाय।
वहि खाये बौरात नर, यहि पाये बौराय[4] ॥

धतूरा खानेसे पागल होवे लेकिन लक्ष्मीको पानेसे ही पागल हो जाता है।

शय्या वस्त्रं चन्दनं चारुहास्यं,
वीणा वाणी दृश्यते या च नारी।
न भ्राजन्ते क्षुत्पिपासातुराणां,
सर्वारम्भास्तन्दुलप्रस्थमूलाः ॥ १२ ॥

भाषार्थ-शय्या, वस्त्र, चन्दन, सुन्दर हास्य, वीणावादिनी स्त्री ये सब बातें भी भूँख और प्याससे व्याकुल पुरुषको अच्छी नहीं लगतीं, क्योंकि सर्वारम्भ सेरभर तान्दुलाधीन है ॥ १२ ॥

अंगानि मे दहतु कान्तवियोगवह्निः
संरक्ष्यतां प्रियतमो हृदि वर्तते यः।

१ धतूरा (एक प्रकारका विष) २ स्वर्ण (याने, लक्ष्मी) ३ नशा
४ पागल हो जाना।

इत्याशया शशिमुखी गलदश्रुवारि-
धाराभिरुष्णमभिषिञ्चति हृत्प्रदेशम् ॥ १३ ॥

भाषार्थ-विरहकी आग मेरे शरीरको चाहे भस्म कर डाले किन्तु मेरे हृदयमें सदा निवास करनेवाले मेरे प्रियतमको इस आगकी आंच भी न आने पावे, बस इसी आशयसे वह चन्द्रमुखी लगातार अश्रुधारा वहाकर अपने वियोगतप्त हृदयको सींच रही है ॥ १३ ॥

कुशलं तस्या जीवति, तत्कुशलं पृच्छामि, जीवतीत्युक्तम्।
पुनरपि तदेव कथयसि ? मृतां नु कथयामि या श्वसिति ॥१४॥

भाषार्थ-कुशल तो है हां जीती है, अरे हम उसकी कुशल पूछते हैं। कह तो दिया जीती है, फिर-फिर उसी वातको कहती जाती हो ? तो क्या मैं यूं कह दूं कि वह मर गई ? जब कि उसमें श्वास बाकी है। देखिये छोटीसी वात कैसे अच्छे ढंगसे कही गई है ॥ १४ ॥

क्व प्रस्थितासि करभोरु ! घने निशीथे,।
प्राणाधिको वसति यत्र जनः प्रियो मे।
एकाकिनी वद कथं न बिभेषि बाले ?
नन्वस्ति पुङ्खितशरो मदनः सहायः ॥ १५ ॥

भाषार्थ-सुन्दरि ! ऐसे घने अन्धकारमें कहां जा रही हो ? जहां मेरा प्राणसे भी प्यारा प्रियतम रहता है, बाले ! अकेली जाते हुए तुम्हें डर नहीं लगता ? अकेली कहां हूं धनुषवाण लिये हुए कामदेव जो मेरे साथ-साथ जा रहा है, अर्थात् कामातुरोंको डरसे क्या प्रयोजन ? ॥ १५ ॥

गतप्राया रात्रिः कृशतनुशशी शीर्यत इव,
प्रदीपोऽयं निद्रावशमुपगतो घूर्णत इव।

प्रणामान्तः कोपस्तदपि न जहासि क्रुधमहो,
स्तनप्रत्यासत्या हृदयमपि ते चण्डि कठिनम् ॥ १६ ॥

भाषार्थ-रात्रि बीतसी गई है, चन्द्रमा भी निस्तेज होकर डूबनेको है, दीपक भी जो रातभर जागा है अब औंघाई लेने लगा है, पतिके प्रणाम करनेपर तो क्रोधका अन्त हो जाना चाहिये, परन्तु हमारे प्रणाम करनेपर भी तुम मानको नहीं छोड़ती हो। हे प्रिये इससे जान पड़ता है कठोर स्तनोंके पास रहनेसे, तुम्हारा हृदय भी कठोर हो गया ॥ १६ ॥

शान्ते मन्मथसंगरे रणभृतां सत्कारमातन्वति ।
वासोऽदाज्जघनस्य पीनकुचयोर्हारं श्रुतेः कुण्डलम् ॥
बिम्बोष्ठस्य च वीटिकां सनयना पाण्यो रणत्कंकणे ।
पश्चाल्लग्विनि केशपाशनिचये युक्तो हि बन्धक्रमः ॥ १७ ॥

भाषार्थ-कामयुद्ध समाप्त होनेपर, लड़ाईमें आगे रहनेवालों-को पुरस्कार और पीछे रहनेवालोको दंड देनेके समय उस सुनयनाने जंघाओंको साड़ी, कुचोंको हार, कानोंको कुण्डल, ओठोंको पानकी बीडी, और हाथोंको कंकण दिये, और केश पीछे रहे इसलिये उन्हें कसकर बांध रही है ॥ १७ ॥

सत्यमेव गदितं त्वया विभो जीव एक इति यत् पुरा वचः ।
अन्यदारनिहिता नखव्रणास्तावके वपुषि पीडयन्ति माम् ॥

भाषार्थ-हे स्वामी! जो आप पहिले कहा करते थे कि हम दोनोंके प्राण एक हैं, वह आज सच्चा सावित हुवा, यदि हम दोनोंके एक प्राण न होते तो आपके शरीरमें पड़े हुए अन्य स्त्रीके नखचिह्न मुझे क्यों पीड़ा देते? एक दुष्टाचरण पुरुष परस्त्री रके आया तब उसके अंगमें, रतिचिह्न देखकर, उसकी स्त्रीने कहा ॥ १८ ॥

तृणाल्लघुतरस्तूलस्तूलादपि च याचकः।
वायुना किं न नीतोऽसौ मामयं याचयिष्यति ॥ १९ ॥

भावार्थ-तृणसे हलका होता है कपास और कपाससे भी हलका होता है याचक, फिर वायु उसे उड़ाकर क्यों नही ले जाती! यह सोचकर कि यह मुझसे भी याचना करेगा ॥ १९ ॥

आदर्श करुणा.

आदाय मांसमखिलं स्तनवर्जमंगात्,
मां मुंच वागुरिक याहि कुरु प्रसादम्।
अद्यापि घासकवलग्रसनानभिज्ञो,
मन्मार्गवीक्षणपरस्तनयो मदीय ॥ २० ॥

भावार्थ-हे व्याध! स्तनोंको छोड़कर मेरे समस्त शरीरका मांस लेकर मुझे छोड़ दे, इतनी कृपा कर, क्योंकि मेरा एक छोटासा बच्चा अबतक घास खाना नही जानता, वह मेरा रास्ता देखता होगा कि कब मैं जाऊं और वह मेरा दूध पीये, इसलिये मुझे छोड़ दे मैं जाऊं ॥ २० ॥

आदर्श वीर।

धीरध्वनिभिरलं ते नीरद मे मासिको गर्भः।
उन्मदवारणबुद्ध्या मध्ये जठरं समुच्छलति ॥ २१ ॥

भावार्थ-रे बादल! मत गरज मत गरज इस अपने गंभीर शब्दको बंद रख, मेरा एक महीनेका गर्भ है, वह यह समझकर कि कोई मतवाला हाथी चिंघाड़ रहा है, मेरे पेटमें इसलिये उछल रहा कि बाहर निकलकर इसे पछाड़ूं ॥ २१ ॥

स्थान प्रधान।

जानामि नागेन्द्र तव प्रभावं कंठे स्थितो गर्जसि शंकरस्य ।
स्थानं प्रधानं न बलं प्रधानं स्थानस्थितः कापुरुषोऽपि शूरः२२

भावार्थ-हे नागेन्द्र मैं तेरी वीरताको जानता हूँ कि तू महादेवके आश्रयसे गर्जता है, क्योंकि स्थान ही प्रधान है बलका कुछ नहीं चलता, स्थानपर बैठा हुआ कायर भी वीर होता है॥ २२ ॥

राजा भोज शिकारको वनमें गया हुआ था और प्याससे व्याकुल हो एक वृक्षतले बैठा हुवा प्यास शांत करनेकी चिंतामें मग्न था, उसी समय पूर्वकी ओरसे एक स्त्री अपने सिरपर एक घड़ेमें कुछ लेकर आती हुई दृष्टि पड़ी तब राजा भोजने पूछा ऐ बाले! तेरे इस घड़ेमें क्या है? तब उस लड़कीने कहा—

हिमकुन्दशशिप्रभशंखनिभं, परिपक्ककपित्थसुगंधरसम् ।
युवतीकरपल्लवनिर्मथितं, पिब हे नृपराज रुजापहरम्॥२३॥

भावार्थ-हे राजन्! हिम, कुन्द, चन्द्र तथा शंखसा श्वेत कांतिवाला, पके हुए कैथ फलके सदृश सुगंधित रसयुक्त युवति स्त्रीके करपल्लवोंसे मथा हुआ और सर्व तापोंको नष्ट करनेवाला ऐसा जो यह उत्तम पदार्थ है इसे आप पीजिये॥ २३ ॥

इस प्रकार राजाने उसके वचन सुनकर उस छांछको पीलिया, और प्रसन्न होकर बोला-हे सुन्दरि! तू क्या चाहती है? लज्जाके कारण नम गई है दृष्टि जिसकी ऐसी नव यौवनयुक्ता मोहसे व्याकुल हो वह बोली—

इन्दुं कैरविणीव, कोकपटलीवाम्भोजिनीवल्लभम्,
मेघं चातकमण्डलीव मधुपश्रेणीव पुष्पव्रजम्।

माकन्दं पिकसुंदरीव रमणीवात्मेश्वरं प्रोषितं,
चेतोवृत्तिरियं सदा नृपवर त्वां द्रष्टुमुत्कण्ठते ॥ २४ ॥

भाषार्थ-हे नृपराज ! जिस प्रकार कुमुदिनी चन्द्रको, समूह सूर्यको, चातकगण मेघको, भ्रमरगण पुष्पोंको, कोयल आम्रको, और स्त्री अधिक दिनसे बिछुड़े हुए स्वामीको देखनेकी इच्छा करती है उसी प्रकार मेरे चित्तकी वृत्ति सदा आपको देखनेके लिये उत्कंठित रहती है।

इस प्रकार इस कन्याके मुँहसे प्रेमभरे वाक्य सुनकर राजाने इसे सदाके लिये अपनी रानी बना लिया और इसी प्र जहांगीरने एक भिखारी राहगीरकी लड़की नूरजहांको केवल एकही नजाकतपर खुश होकर अपनी खास बेगम बनाया था ॥ २४ ॥ देखिये—(भाग ७ में)

विद्या प्रशंसा ।

वरमेको गुणी पुत्रो न च मूर्ख शतान्यपि ।
एकश्चन्द्रस्तमो हन्ति न च तारागणोऽपि च ॥ २५ ॥

भाषार्थ-गुणी पुत्र एक ही श्रेष्ठ, परन्तु मूर्ख सौ भी किस कामके ? चन्द्रमा एकही अंधकारको नाश करता है तारोंके समूहसे कुछ नहीं होता ॥ २५ ॥

अजातमृतमूर्खाणां वरमाद्यौ न चांतिमः ।
सकृद्दुःखकरावाद्यावन्तिमस्तु पदेपदे ॥ २६ ॥

भाषार्थ-अजात (बिनाजन्मा) मृत और मूर्ख इन तीनों पुत्रों आगेके दोनों फिर भी अच्छे जो केवल एकही बार दुःख देते परंतु मूर्ख तो पद पद पर दुःख देता है ॥ २६ ॥

विद्याविनयोपेतो हरति न चेतांसि कस्य मनुजस्य।
काञ्चनमणिसंयोगो नो जनयति कस्य लोचनानन्दम् ॥२७॥

भाषार्थ-विद्या और विनय युक्त पुत्र किस मनुष्यके चित्तको आकर्षण नही करता, कांचन और मणिका संयोग किसके नेत्रोंको आह्लादित नहीं करता ॥ २७ ॥

रूप-यौवन-संपन्ना विशालकुलसंभवाः।
विद्याहीना न शोभन्ते निर्गन्धा इव किंशुकाः ॥ २८ ॥

भाषार्थ-मूर्ख लोग चाहे रूपवान जवान और बड़े कुलीन हों परंतु विद्या बिना शोभाको नहीं पाते जैसे गंधरहित पलाशका पुष्प ॥ २८ ॥

माता शत्रुः पिता वैरी येन बालो न पाठितः।
न शोभते सभामध्ये हंसमध्ये बको यथा ॥ २९ ॥

भाषार्थ-वह माता शत्रु और पिता वैरी है जिसने अपने बालकको न पढ़ाया, वह बालक सभामें इस प्रकार नहीं शोभा पाता जैसे हंसोंकी सभामें बकुला ॥ २९ ॥

विद्या ददाति विनयं विनयाद्याति पात्रताम्।
पात्रत्वाद्धनमाप्नोति धनाद्धर्मस्ततः सुखम् ॥ ३० ॥

भाषार्थ-विद्या विनय उत्पन्न करती है, विनयसे योग्यता आती है, योग्यतासे धन आता है, धनसे धर्म और धर्मसे सुख प्राप्त होता है ॥ ३० ॥

संगति.

कीटोऽपि सुमनःसङ्गादारोहति सतां शिरः।
अश्मापि याति देवत्वं महद्भिः सुप्रतिष्ठितः ॥ ३१ ॥

भावार्थ-कीड़ा भी फूलके साथ सत्पुरुषोंके सिरपर जा पहुंचता है, महापुरुषोंके द्वारा सुचारु रूपसे प्रतिष्ठित पत्थर भी देवत्वको प्राप्त हो जाता है ॥ ३१ ॥

दोहा-जो अपनी उन्नति चहै, तजै न ऊंचको साथ।
ज्यो पलास सग पानके, पहुचै राजा हाथ ॥

जाड्यं धियो हरति सिञ्चति वाचि सत्यम्,
मानोन्नतिंदिशति पापमपाकरोति।
चेतः प्रसादयति दिक्षु तनोति कीर्ति,
सत्संगतिः कथय किं न करोति पुंसाम् ॥ ३२ ॥

भावार्थ-सत्संगति बुद्धिकी मलीनता दूर करती है, वचनमें सत्यका संचार करती है, पाप दूर करती है, चित्त प्रसन्न करती है, मान देती है, और सब दिशाओमें कीर्ति फैलाती है, सत्संगति मनुष्योंके लिये क्या नही करती? अर्थात् सब कुछ करती है ॥ ३२ ॥

दोहा-संगति कीजे साधुकी, हरै औरकी व्याधि।
ओछी संगति नीचकी, आठो पहर उपाधि ॥

न स्थातव्यं न गन्तव्यं क्षणमप्यधमैः सह।
पयोऽपि शौण्डिकीहस्ते मदिरां मन्यते नरः ॥ ३३ ॥

भावार्थ-नीच पुरुषोंके साथ क्षणभर भी न तो बैठना और न जाना क्योंकि यदि कलालीके हाथमें दूध भी होगा तो लोग उसे मदिरा ही मानेंगे जैसे रहीमने भी कहा है ॥ ३३ ॥

दो०-रहिमन नीच प्रसंगते, होत कलंक न काहि।
दूध कलाली कर गहे, मद्यहि कहै सब ताहि ॥

बया-बदकी सोहबतमें मत बैठो, इसका है अंजाम बुरा।

बदन बनै तो बद कहलावे, वद अच्छा बदनाम बुरा ॥

हस्ती हस्त सहस्रेण, शतहस्तेत वाजिनः ।
शृंगिणो दशहस्तेन, देशत्यागेन दुर्जनः ॥ ३४ ॥

भाषार्थ-हाथीके हजार हाथ, घोड़ेके सौ हाथ, सींगवाले जानवरोंके दस हाथ दूर रहना चाहिये, और दुर्जनका तो देश-त्याग ही अच्छा है ॥ ३४ ॥

दुर्जनः परिहर्तव्यो विद्ययालङ्कृतोऽपि सन् ।
मणिना भूषितः सर्पः किमसौ न भयङ्करः ॥

भाषार्थ-दुर्जनसे तो दूर ही रहना चाहिये चाहे वह विद्यासे विभूषित ही क्यों न हो, क्योंकि सर्प मणिसे विभूषित होने-पर भी भयंकर होता है ॥

नीति ।

गौरवं प्राप्यते दानान्नतु वित्तस्य सञ्चयात् ।
स्थितिरुच्चैः पयोदानां पयोधीनामधः स्थितिः ॥ ३५ ॥

भाषार्थ-दानसे गौरव प्राप्त होता है, धनके संचयसे नहीं, बादलोंकी स्थिति ऊंचेपर और समुद्रोंकी स्थिति नीचे पर इसी लिये है कि वे जलका दान करते हैं वे संचय ॥ ३५ ॥

धर्मार्थक्षीणवित्तस्य क्षीणत्वमपि शोभते ।
सुरैः पीतावशेषस्य कृष्णपक्षे विधोरिव ॥ ३६ ॥

भाषार्थ-देवताओं द्वारा पीये जानेके उपरान्त शेष बचेहुए, कृष्ण पक्षके चन्द्रमाके समान, धर्मके लिये जिसके धनका व्यय हो चुका है, ऐसे मनुष्यकी निर्धनता भी शोभा देती है ॥ ३६ ॥

पिबन्ति नद्यः स्वयमेव नाम्भः,
स्वयं न खादन्ति फलानि वृक्षाः ।

नादन्ति दुग्धं स्वयमेव गावः,
परोपकाराय सतां विभूतयः ॥ ३७ ॥

भावार्थ-नदियें अपना जल स्वयम् नहीं पीतीं, वृक्ष अपने फल स्वयम् नहीं खाते, और न गायें ही अपना दूध पीती हैं, अर्थात् सज्जनोंका धन परोपकारमें ही लगता है ॥ ३७ ॥

दोहा-तरवर फल नहिं खात हैं, सरवर पियै न पानि।
तुलसी परहित कारणे, संपति संचहि सुजानि ॥

अश्वमेधसहस्रं च सत्यं च तुलया धृतम्।
अश्वमेधसहस्रेभ्यः सत्यमेवातिरिच्यते ॥ ३८ ॥

भावार्थ-हजार अश्वमेध यज्ञ और सत्यको तराजू पर तौलनेसे हजार अश्वमेध यज्ञोंसे एक सत्य ही बढ़कर रहता है ॥ ३८ ॥

धैर्यं यस्य पिता क्षमा च जननी शांतिः सदा गेहिनी।
सत्यं सूनुरयं दया च भगिनी भ्राता मनःसंयमः ॥
शय्या भूमितलं दिशोऽपि वसनं ज्ञानामृतं भोजनं।
यस्यास्तीह कुटुम्बिनो वद सखे कस्माद्भयं योगिनः ॥ ३९ ॥

भावार्थ-धैर्य जिसका पिता, क्षमा माता, शांति पत्नी, सत्य पुत्र, दया बहिन, आत्मनिरोध भाई, भूमि जिसकी शय्या, दिशाऐं जिसके वस्त्र (याने जो नग्न रहता है) तथा ज्ञानरूपी अमृत ही जिसका भोजन है ऐसा जिसका कुटुम्ब है उस योगीको किसका भय हो सकता है ? ॥ ३९ ॥

ऐश्वर्यस्य विभूषणं सुजनता शौर्यस्य वाक्संयमो।
ज्ञानस्योपशमः श्रुतस्य विनयो वित्तस्य पात्रे व्ययः ॥
अक्रोधस्तपसः क्षमा प्रभवती धर्मस्य निर्व्याजता।
सर्वेषामपि सर्वकारणमिदं शीलं परं भूषणम् ॥ ४० ॥

भावार्थ-सुजनता ऐश्वर्यका भूषण है, कम बोलना वीरता का

शान्ति ज्ञानका, विनय विद्याका, सुपात्रमें [illegible] सम्पत्तिका, क्रोध न करना तपका, क्षमा बलवानका और [illegible] त्याग धर्मका भूषण है और इन सबका कारण श्रेष्ठ भूषण शील (सदाचार है) ॥ ४० ॥

शीलं प्रधानं पुरुषे [illegible] प्रणाश्यति ।
न तस्य जीवितेनार्थो न धनेन न बन्धुभिः ॥ ४१ ॥

भाषार्थ-मनुष्यमें शील (सदाचार) ही प्रधान वस्तु है जिसका शील नष्ट हो गया, उसके न तो जीवनका कोई उपयोग है, न धनका और न बन्धुओंका ॥ ४१ ॥

परिवर्तिनि संसारे मृतः को वा न जायते ।
स जातो येन जातेन याति वंशः समुन्नतिम् ॥ ४२ ॥

भाषार्थ-परिवर्तनशील संसारमें कौन ऐसा है जो मरकर फिर जन्म नहीं लेता ? (जन्म तो सभी लेते हैं) किन्तु उसीका जन्म सार्थक है जिसके जन्म लेनेसे वंशकी उन्नति हो ॥ ४२ ॥

वरं तेजस्विनो मृत्युर्न तु मानस्य खंडनम् ।
मृत्युरेकदिनं हन्ति ह्यपमानः पदेपदे ॥ ४३ ॥

भाषार्थ-मानहानियुक्त जीवनकी बजाय तेजस्विनी मृत्यु अच्छी; क्योंकि मृत्यु तो एक ही दिन मार डालती है परन्तु अपमान पगपगपर मारता है ॥ ४३ ॥

न काष्ठे विद्यते देवो न पाषाणे न मृन्मये ।
भावे हि विद्यते देवस्तस्माद्भावो हि कारणम् ॥ ४४ ॥

भाषार्थ-ईश्वर न काठमें रहता है, न पत्थरमें, न मिट्टीमें, भाव (भक्ति) में ईश्वर रहता है अतएव भाव ही मुख्य वस्तु है ॥४४॥

वरं दरिद्रः श्रुतिशास्त्रपाठको न चार्थयुक्तःश्रुतिशीलवर्जितः ।
सुलोचनः क्षीणपटोऽपि शोभते न नेत्रहीनःकनकावलंकृतः४५

भाषार्थ-श्रुतियों (वेदों) और शास्त्रोंको माननेवाला दरिद्र भी अच्छा, किंतु श्रुतियोंके विमुख सदाचारहीन धनवान् अच्छा नहीं। सुन्दर नेत्रोंवाला व्यक्ति फटे वस्त्र पहिरे हुए भी शोभा देता है, किन्तु नेत्रहीन मनुष्य स्वर्णालंकार पहिरे हुए भी शोभा नहीं देता ॥ ४५ ॥

तृप्येन्न राजा धनसञ्चयेन न सागरो भूमिजलागमेन ।
न पंडितः साधु-सुभाषितेन तृप्येन्न चक्षुःप्रियदर्शनेन ॥ ४६ ॥

भाषार्थ-कितना ही धन सञ्चित करे राजाको तृप्ति नहीं होती, भूमिसे (नदियों द्वारा) कितना ही जल मिले समुद्रको तृप्ति नहीं होती, कितने सुन्दर वाक्य कहे (या सुने) जांय विद्वानको तृप्ति नहीं होती, इसी प्रकार कितनी ही देरतक प्रियजनको देखते रहने पर भी नेत्रोंकी तृप्ति नहीं होती ॥ ४६ ॥

शक्यो वारयितुं जलेन हुतभुक् छत्रेण वर्षातपौ ।
नागेन्द्रो निशितांकुशेन समदो दण्डेन गोगर्दभौ ॥
व्याधिर्भेषजसंग्रहैश्च विविधैर्मन्त्रप्रयोगैर्विषं ।
सर्वस्यौषधमस्ति शास्त्रविहितं मूर्खस्य नास्त्यौषधम् ॥ ४७ ॥

भाषार्थ-जलके द्वारा अग्निका शमन किया जा सकता है, छत्रसे वर्षा और धूपका निवारण किया जाता है, मदमत्त गजेन्द्र तीक्ष्ण अंकुशके वशमें आ सकता है, डण्डेसे सांड, गधे वगैरहको दूर भगाया जा सकता है, बीमारी औषधियोंसे दूर की जाती है और (सर्पादिका) विष अनेक प्रकारके मन्त्रोंसे दूर हो सकता है अर्थात् हरएक वस्तुकी औषधि शास्त्रमें दी हुई है, केवल मूर्खकी कोई औषधि नहीं ॥ ४७ ॥
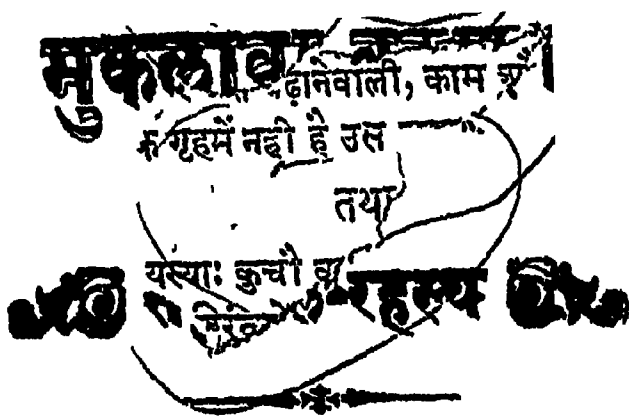
पांचवा भाग।

प्रचलित कोक।

वन्दना।

नमस्कृत्य महादेवं, सुखदं ज्ञानदं विभुम्।
जगद्धिताय लोकस्य, क्रियते सारसंग्रहः॥ १॥

भावार्थ—सुख और ज्ञानके देनेवाले जगत्पिता महादेवजीको नमस्कार कर जगत्‌के हेतु कोकसारका संग्रह किया जाता है, अतः जो कुछ त्रुटियां हों बन्धुजन क्षमा करें।

सरस्वती मया दृष्टा, वीणापुस्तकधारिणी।
हंसवाहनसंयुक्ता, विद्यादानं करोतु मे॥ २॥

भावार्थ—हे सरस्वति! हंसारूढ़ वीणा पुस्तक धारिणी! मुझे विद्यादान कर, तुझे नमस्कार है।

शंभु

येनाक्रियन्ते और शास्त्रोंको म। ।

वाचानगोचर विमुख सदाचारहीः

तस्मै नमो भ फटे वस्त्र पहिरे हु। ३ ॥

पहिरे

भावार्थ-जिसने अपने कर्त्तव्यसे णु महेशको भी मृगनै-नियोंके गृहकर्म करनेके निमित्त निरंतर दास बना रखा है. और जो अनेक चरित्र करनेमें विचित्र है ऐसे कामदेव भगवानको नमस्कार है।

दो०-ललित सुमन धन जान वल, वछवि अविनवं कन्द।
मधु रितु हितु चितु अधिक, रचि जै जै मदन अनंद ॥
भक्ति सरस भगवन्तकी, द्वितिय भामिनी-भोग।
वह संकटमँह सुख करण, वह दुखहरण वियोग ॥

इस (कामदेव) की महिमा अवश्य ही विलक्षण है-

पान फूल जे भखत हैं, तिनहिं सतावत काम।
जे माखन मिश्री भखे, तिनकी जानत राम ॥

देखो रंभाने शुकदेवजीके प्रति कहा है-

पीनस्तनी चन्दनचर्चिताङ्गी, विलोलनेत्रा तरुणी सुशीला।
नालिंगिता प्रेमभरेण येन, वृथा गतं तस्य नरस्य जीवनम् ॥ ४ ॥

भावार्थ-गोल कठोर स्तनोंवाली, चन्दन करके चर्चित जिसका अंग हो तथा विलोल नेत्र तरुणायु और सुशीला स्त्रीका जिसने प्रेमपूर्वक आलिंगन नहीं किया उसका जीवन वृथा ही गया।

तथा-

आनन्दरूपा तरुणी नतांगी, सद्धर्मसंसाधनसृष्टिरूपा।
कामार्थदा यस्य गृहे न नारी, वृथा गतं तस्य नरस्य जीवनम् ॥ ५ ॥

भावार्थ-आनन्दमूर्ति, तरुणी, स्तनोंके भारसे नतअंगवाली, पति-

श्रेता, पुत्र प्रसवकर वंश बढ़ानेवाली, काम और अर्थकी देनेवाली ऐसी स्त्री जिसके गृहमें नहीं है उस नरका जीवन वृथा ही गया।

तथा—

यस्याः कुचौ वारणकुंभ-शोभिनौ
निरंतरौ चूचुकिनौ दृढौ मृदू।
लग्ना न यस्योरसि सा निरन्तरा
मुधा भवेत्तस्य नरस्य जीवितम् ॥ ६ ॥

भावार्थ—जिस स्त्रीके कुच हस्तिकुंभके समान शोभित और दृढ़ निरंतर हैं तथा सुन्दर कुचाग्र करके युक्त कोमल भी हैं, ऐसी स्त्रीको जिस पुरुषने हृदयसे नही लगाया उसका जीवनही वृथा गया।

"अपनी अपनी तानमें चिड़िया भी मस्तान"

प्रायः सभी मनुष्य इस रङ्गमें रंगे हुए हैं परन्तु स्त्रीको केवल बच्चे पैदा करनेकी मशीन समझी जाकर आजकल दाम्पत्य प्रेम इस भारतमें क्वचित् दृष्टि पड़ता है और उचित रूपसे स्त्री-साथ सम्भोग करना भी बहुत थोड़े आदमी जानते हैं।

देखिये कोकाजी क्या कहते हैं—

पिंगल बिन छंदहि रचै, अरु गीता बिनु ज्ञान।
कोक पढ़े बिन रति करै, सो नर पशू समान ॥

इसका खण्डन एक कविने किया है—

रहन कबूतरकी रहै, गहन गहै जस बाज।
अंग अंग मर्दन करै, कहा कोकसे काज ॥

कोकाजीके दोहेसे तो जान पड़ता है कि कोक पढ़े बिना विषय करनेवाला मनुष्य पशु समझा जाता है, परन्तु उक्त कविने कोक-

शास्त्रका भाव न समझकर केवल 'एक ही बातको तत्त्व समझ लिया है। परन्तु नहीं, कोकशास्त्र मनुष्यमात्रको पढ़ना चाहिये इसके पढे बिना दुनिया (गृहस्थ) का आनन्द लेना और कामको वशमें रखना सर्वदा असंभव है।

विषयी मनुष्य विषयको ही अधिक अच्छा समझते हैं परन्तु याद रहे "अति सर्वत्र वर्जयेत्" अधिक-आनंदकाही नाम निरानन्द है, अधिक विषयसे ही देह अनेक प्रकारके रोगों द्वारा ग्रसित होकर घुने हुए काष्ठकी भांति केवल हड्डीका ढांचा मात्र रह जाता है और अकाल मृत्युको प्राप्त होता है, जिन दुष्कर्मोंके श्रवण मात्रसे ही आश्चर्य होता था वेही दुष्कर्म कुचाली-जन अधिकतासे करते हुए इस पवित्र भारतको रोगोंकी खानि बना रहे हैं। जबसे यह स्वास्थ्य-नाशक कोकविरुद्ध रति गुदमैथुन हस्तमैथुन आदि प्रचलित हुए हैं तबहीसे हमारी मातृभूमि रसातलको धसती जा रही है, इसपर भी नहीं चेतते धर्मविरुद्ध, नीतिविरुद्ध, जातिविरुद्ध, शक्ति और सृष्टि-विरुद्ध इन दुष्कर्मोंकी दिनोदिन बढ़ती ही सुनी जाती है।

देखिये—"कातिक कुत्ता क्वाँर बिलाई। चैत चिड़ी-वैसाख गधाई॥" याने अज्ञानी पशु भी नियमविरुद्ध रति नहीं करते। परन्तु मनुष्य इतने अंधे हो रहे हैं कि अपने स्वास्थ्यका कुछ भी ध्यान न रखकर केवल इंजिन-चालू रखनेकी चिंता रखते हैं।

इन्ही सब बातोंको विचार कर यह संक्षिप्त रूपमें कोक लिखा जाता है, इसपर आपलोग किंचित् भी ध्यान देंगे तो सानंद आयु बिताते हुए गृहस्थका सच्चा सुख भोगेंगे।

कोकशास्त्रका परिचय ।
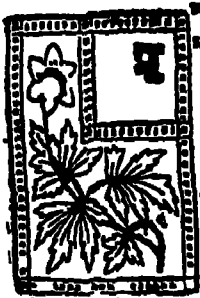
प्रथम यह बतानेकी आवश्यकता है कि-कोक क्या वस्तु है ? कोकविद्या कुछ समय पूर्व सर्वोच्च विद्या मानी जाती थी और इसके बड़े बड़े ग्रन्थ इस भारतमें प्रचलित थे, कालान्तरवश कुछ तो मुसलमान बादशाहोंने नष्ट कर दिये, शेषपर गवर्नमेंटने हाथ साफ कर लिया और अब जो १०-२० ग्रंथ बचे भी होंगे वो लोगोंको देखने तकको नहीं मिलते । इस विद्याके जाने बिना मनुष्य न तो सच्चा सुख भोग सक्ता है, न इच्छानुसार संतान उत्पन्न कर सकता है, न गृहस्थको सुखमयी बना सक्ता है और न अपना स्वास्थ्य ही ठीक रख सक्ता है । विजयी होना, द्रव्यवान्, सौंदर्यवान् होना, इच्छानुसार सन्तान उत्पन्न करना इत्यादि सब कार्य बिना पुरुषार्थके नहीं हो सक्ते और पुरुषार्थ तब ही कमाया जा सक्ता है जब मनुष्य ब्रह्मचर्य व्रत पालै । परन्तु यहांपर यह प्रश्न उठता है कि ब्रह्मचर्य व्रत पालनेपर गृहस्थ कैसे चलसक्ता है ? इसका ठीक समाधान यही है कि, कोकशास्त्र जाननेवाला मनुष्य अनेक स्त्रियोंको भोगते हुए भी अपने पुरुषार्थ (स्वास्थ्य) की रक्षा करसक्ता है, देखनेमें आता है कि लोग (प्रायः मारवाड़ी भाई) किस्सा-कहानियोंमें कहा करते हैं कि वह (स्त्री या पुरुष) कोकशास्त्र (कोकलासासतर) पढ़ा हुवा था इस ही कारण इतना निपुण था । परन्तु

मुकलावा-बहार

खेदका विषय है कि हम भारत निवासी आज इस विद्याके नामसे भी पूर्ण रूपसे परिचित नहीं हैं, यही कारण है कि हमारी सर्व ऋद्धियां और शक्तियां विरानी हो गईं और भगवत्स्वरूप ऋषि मुनियोंकी आज्ञाओंका पालन करनेमें हम असमर्थसे हो रहे हैं।

इसका नाम कोकशास्त्र होनेका कारण।

काश्मीराधीश "यथानाम तथा गुणं" वाले महाराज शांतिदेवके प्रधान मन्त्री पं० दीनानाथजीको शिव-रात्रि (फाल्गुन कृष्णा १४) के दिन अर्धरात्रिको स्वप्नमें एक सुन्दर पुरुषने कहा-मैं आपके गृहमें अवतार लूंगा, पंडितजी निद्राभंग हो शिवारा-धना करने लगे। इनकी पत्नीको नौ मास पूर्ण होते ही शुक्ल-पक्षमें पुत्ररत्न प्राप्त हुवा, जन्मोत्सव जातसंस्कारादि हुए, पश्चात् अनेक पंडितोंने सहमतसे लग्नादि शोधकर बोले पंडितजी! आपका पुत्र विद्यारत्न और बड़ा ही शुभाचरण होगा, इसकी यशरूपी पताका युग युगान्तर देशान्तरोंमें फहरायेगी। इसका शास्त्रोक्त नाम काशीनाथ निकलता है। सुनते ही पंडितजी अत्य-न्त मग्न हुए। पंडितोंको अनेक प्रकारसे सन्तोषित कर सादर विदा किया और बालकके रूपपर मुग्ध हो इसका नाम कामनाथ रखलिया। इनकी (कामनाथकी) रूपकी छटा बचपनसे ही इतनी सुन्दर जान पड़ती थी कि, नगरकी स्त्रियें उसपर वशी-भूत हो घरका कार्य त्याग दिन रात आ आकर इन्हें खिलाया करती थी प्रेमसे इन्हें गोदमें ले चुम्बन किया करती थी, कितनी ही स्त्रियें तो इन्हें अपना दूध पिलाने लगजाया करती थी और

इनकी तोतली एवं मधुर बोली सुन इन्हें कोकाजी कहने लग गयीं और उधर महाराज शांतिदेवको तृतीय रानीके गर्भद्वारा चैत्र कृष्णपक्षमें पुत्ररत्नकी प्राप्ति हुई । प्रजाके आनंदकी सीमा न रही। महाराजने पुत्रोत्सवमें भूखे और द्रव्यहीन मनुष्योंको इच्छानुसार दान दिया । आज महाराजके आनन्दका पार न था, क्योंकि चौथापन चार पांच ब्याह करलेने पश्चात् पुत्रका मुंह देखा, पंडितोंने राजपुत्रका नाम शम्भूसिंह रक्खा और वह द्विती: याके चन्द्रानुसार बढ़ने लगा ।

बालकुमारोंकी आयु ५-५ वर्षकी हुई । दोनोंमें मित्रभाव उत्पन्न हुआ । पंडित दीनानाथजीने इन्हें विद्याध्ययन आरम्भ कराया । एक एक अक्षर करके श्लोक और व्याकरणके सूत्र कुछ ही दिनोंमें इन्हें कण्ठ करा दिये गये और थे अच्छे विद्वानोंमें गिने जाने लगे । विद्याध्ययन, सवारी, आखेट आदिक कार्य दोनोंके साथ ही साथ सिखाया जाने लगा । या यों कहिये कुछ दिनमें पूर्ण रूपसे सिखाही दिया गया ।

इनकी आयु १५ वर्षकी हो गयी, एक दिन कोकाजीने अपने पिता दीनानाथजीसे नम्र भावसे पूछा पिताजी । यदि आज्ञा है तो मैं कुछ देशाटन कर आऊं क्योंकि प्रत्येक देशका रहन सहन जानना मनुष्यमात्रका धर्म है । दीनानाथजीने इन्हें इस योग्य जान सहर्ष आज्ञा दे दी । पिताकी आज्ञा पाय कोकाजी जहां जहां उत्तम विद्या सुनी वहां वहां जा जाकर पांच वर्षके देशाटनमें इन्होंने सब देशोंकी रहन-सहनको भली भांति जान लिया और एक पर्वतनिवासी मुनिराजके पास चार मास ठहर कर यह (कोक) विद्या भी भली प्रकार सीख देशको आगये ।

❀ मुकलावा-बहार ❀

जब महाराज शांतिदेवने कुमारको राज्ययोग्य देखा तो दोनोंको कार्य सौंपा शम्भूसिंहको सिंहासन व कोकाजीको मन्त्री-पदासन पर बिठा वेदध्वनिके साथ तिलक कर क्रोड़ोंका द्रव्य लुटाया और आप सहपत्नी तपस्याके हेतु वनको सिधारे।

राज्य कार्य शांतिपूर्वक चलने लगा, कुछ काल पश्चात एक दिन महाराज शम्भूसिंहकी सभामें एक षोडशवर्षीया युवती नग्न आकर खड़ी हो गई और बोली-श्रीमान् ! आपके राज्यभरमें फिर आई परन्तु मुझे कोई इच्छानुसार युवक नहीं मिला, तेरे राज्यके जितने पुरुष हैं वे सब नपुंसक हैं; अतः मैं स्वच्छंद हो फिरती हूं कि नपुंसकोंसे क्या लज्जा करूं? अब आपकी सभामें आयी हूं, यदि यहां कोई ऐसा पुरुष हो जो मेरी इच्छापूर्ति कर सके तो मेरा हाथ पकड़े। महाराज सहित जितने सभासद थे सबने नीचा शिर कर लिया, किसीने भी उसकी बातका कुछ उत्तर न दिया।

इस प्रकार सभा लज्जित हुई देखी तो कोकाजीसे न रहा गया। उन्होंने कहा हे सुन्दरि ! यदि तू अपना अंग ढांक ले तो कोई बात करें। जब इस सुन्दरीने अंग ढांक लिया तब महाराज शम्भू-सिंह बोले, यदि मेरी सभामें कोई ऐसा युवक हो जो इस सुन्दरीकी कामेच्छा शान्त कर सके तो उसे २५ गांवकी जागीर उपहार दी जावे। कितनी ही देर बीत जानेपर भी महाराजकी बातका उत्तर न मिला तब महाराजने कहा क्या मेरी सभाके जितने मनुष्य हैं सब ही नपुंसक हैं? इतना सुनते ही कोकाजी बोले महाराज इस विषयकी विद्या भी मैं एक पर्वतनिवासी मुनिराजसे बार मास रह कर भली भांति जान चुका हूं, इस समय महाराजकी

आज्ञानुसार इसे मैं अपने साथ ले जाता हूं, और इस विद्याका प्रभाव कुछ काल पश्चात् आप इस सुन्दरीके ही मुंहसे सुन लेंगे।

उस सुन्दरीको लेजाकर कोकाजीने एक एकान्त स्थानमें ठहराया और नित्य रात्रिको उसके समीप जा जिस दिन जिस स्थान में कामवास होता (जो पाठकोंको आगे चलकर मालूम होगा) उस स्थानसे चुम्बन मर्दनादि कर काम स्खलित कर देते, काम स्खलित होने पर ही स्त्रीकी इच्छा पूर्ति होती है। २० दिन बीत गये परंतु एक दिन भी कोकाजीने उस (सुन्दरी) के साथ सहवास (विषय) नहीं किया। तिसपरसे उस सुन्दरीने अनेक स्त्रियोंके सन्मुख कोकाजीकी अत्यन्त प्रशंसा की, और दरबारमें कहला भेजा कि मैं अब महराजके सम्मुख आनेमें लजाती हूँ, मुझे इच्छानुसार पुरुष प्राप्त हो गया है।

यह सुन महाराज अत्यन्त प्रसन्न हुए और कोकाजीसे कहा यह विद्या परोपकरार्थ प्रकाशित करना चाहिये * इतना सुन कुछ दिनमें कोकाजीने एक पुस्तक इस विषयकी "कोकमंजरी" के नामसे लिख महाराजके सामने धरी। महाराजने इस पुस्तकको आद्योपान्त पढ़ बड़ी प्रशंसा प्रकट की, और कहा "कोकमंजरी" नाम उपयुक्त नहीं है, इसलिये इसका नाम "कोकशास्त्र" होना चाहिये।

कोक पढ़े बिन रति समय, जिमि दीपक बिन धाम।
येहि कारण रचना रची, कोकाजी निज नाम॥
धनि जीवन उन नरनको, जो पर-हितमें देत।
तन मन धन औ सम्पदा, सब जग सुखके हेत॥

---

* आजकल कैसा परिवर्तन हो गया है कि गुणी मनुष्य अपना गुण प्रकट करनेके बदलेमें अपने साथ ले जाना ही उचित समझते हैं।

अंक तीसरा

कोकशास्त्र बन्द क्यों हुआ ?

ना जाता है कि इस ग्रन्थमें कोक विद्याके साथ ही साथ कुछ कुछ तान्त्रिक विद्याका भी संग्रह था जिससे हमारे देशभाइयोने—

"औगुणको तुरतै लहै, गुण न गहै खल लोक"

इस कहावतको सार्थक करते हुए मन्त्रशास्त्रपर अधिक ध्यान दिया, सुना जाता है कि बंगाल (कामरूदेश) में स्त्रियें नवयुवक पथिकोको मन्त्र विद्याके जोरसे पशु पची बना बना अपने चंगुलमे फंसा रखती थी। इतना उपद्रव देख गवर्नमेण्टने इस पुस्तकको नष्ट कर देना ही उत्तम समझा और यह हुक्म सुना दिया कि जिसके पास कोकशास्त्र पाया जायगा, कड़ी सजाका भागी होगा। कई मनुष्य कहते है कि कोकर्जीने कोकशास्त्रमे ८४ नग्न आसनोका संग्रह किया था, परन्तु मेरे ख्यालमे तो यह बात निरी गप्पाष्ट जान पड़ती है, ऐसे विद्वानकी लिखी हुई पवित्र पुस्तकमें ऐसे चित्रोका होना असम्भव है, क्योंकि उन्हे उससे कुछ लाभ नहीं था। हां अनंग रंगके रचयिता (एक बंगाली महाशय) ने ऐसे कुछ चित्रोंका संग्रह अवश्य किया था. आसन कई प्रकारके सुने जाते है, कई आसन तो स्त्री पुरुष दोनोंको खड़े होकर करना पड़ता है जिससे कम्पवायु आदि अनेक व्याधि होनेका भय है।

कोकशास्त्रके नामपर लूट।

जबसे गवर्नमेंटने इस पुस्तकका छपना बन्द कर दिया है, तबसे अलीगढ़ लुधियाना आदि शहरवालोंकी इतनी पोल चल रही है, कि लेखमें नहीं आती। ३०-३५ पन्नेकी पुस्तक बना अन्ट सन्ट बातें लिखकर छपा लेते हैं और पेट फुलाते हुए लम्बे चौड़े विज्ञापन छपवाते हैं कि लेओ काश्मीर नि० पं० कोकाजीका रचा हुआ असली प्राचीन कोकशास्त्र। मूल्य १।) १॥) २) कोई कोई अन्यायी तो ३) छापते हैं। अगर असली ८४ आसनवाला न हो तो खर्च सहित मूल्य वापिस। शीघ्रता करो, बिक जानेपर पछताना पड़ेगा। हमारे कोकप्रेमी भाई विज्ञापन देखते ही आर्डर दिया व्ही. पी आई छुड़ाकर देखा ३०-३५ पन्नेकी पुस्तक है, ऐल फैल बातोंके अतिरिक्त सार बात एक भी नही। चित्र देना तो सरकार बहादुरको स्वीकार ही नही है, किसी किसीमें स्त्री पुरुषोंकी केवल तसवीर ही रहती हैं और कोईमें लिखा रहता है कि चौरासी आसनकी चाह करनेवाले और छापनेवाले दोनोंको गवर्नमेंटकी बहुमौल्यक इमारतों (जेल खाना) में मेहमान बनना पड़ता है। अस्तु। पुस्तक ठीक ≤)।) की होनी चाहिये जिसका मूल्य हमारे मित्र डाकव्यय सहित १॥) या २) भर देते हैं और पुस्तक देखनेपर उसके हर्षोपहारमें १००-५० गालियां व्ही० पी० भेजनेवाले महाशयको और देते हुए इस कहावतको सिद्ध करते हैं-

या ठगावै रोगी, या ठगावै भोगी।

प्रिय मित्रो! मेरा भी यही हाल हुआ है "घायलकी गति घायल जाने" अस्तु। आप लोग पुराने कोकशास्त्रकी चाहमें ऐसे नमकीन

और चटपटे विज्ञापन दाताओंके चक्करमें फँसकर अपने रुपयोंको मिट्टीकी तरह मत फेंको, थोड़ा ध्यान देकर विचार करो कि, जिस पुस्तककी बिक्रीके वास्ते गवर्नमेंटकी तीव्र विरोधाज्ञा है उसे बेचने व छपानेका साहस कर ही कौन सक्ता है?

हां कोककी कुछ बातें जो मुझे यहां वहांसे प्राप्त हुई हैं इस पुस्तकमें क्रमवार अंकित करता हूं और विश्वास दिलाता हूं कि यदि आप इसपर किंचित भी ध्यान दे इन नियमोंका पालन करेंगे तो अवश्य गृहस्थका सच्चा सुख, और अपने स्वास्थ्यकी रक्षा कर सकोगे और मेरा भी परिश्रम तब ही सफल होगा जब आप लोगोंको इस पुस्तकसे कुछ लाभ हो।

अंक चौथा

सूर्य देव अभी अस्ताचलकी ओटमें तो नहीं पहुंचे हैं, परन्तु लंगड़ा सारथी अश्वोंकी रस्सी ताने तेजीके साथ चला रहा है। अनुमान ४ बजा होगा, मरुर मैदानमें जमी हुई रेतीली जौ और गेहूंकी खेती लहलहाती हुई मखमली फर्शका मान मार रही है। सूर्य नारायणकी सायंकालीय किरणोंके पड़नेसे इसकी छटा दुगुनी चौगुनी हो रही है। देखते ही देखते दृश्य पलट गया। सूर्य नारायण अस्त तो नहीं हुए परन्तु मेघाच्छन्न हो गये। गर्जनाके साथ जलकी झीनी फुहारें गिरने लगी। मारवाड़के रहनेवाले

आप्योंको यह दृश्य कितना सुहावना जान पड़ता है, बतानेकी कोई आवश्यकता नहीं है, उन्हें स्मरण होगा कि ;जिस समय बादलकी गर्जना होती है मयूर (मोर) नामक पक्षीपर उसका कैसा प्रभाव पड़ता है, देखो देखो गर्जना सुनतेही वह काममें विह्वल हो अपनी पूछको छत्राकार बना नाचने लगा, सामने वह स्त्री जाति (मयूरिन) खड़ी हुई न जाने क्या वस्तु पानेके लिये बड़ी उत्कण्ठित सी हो रही हैं ?

हैं ! हैं ! यह क्या हो रहा है ? हो क्या रहा है नरकी आंखसे जो अश्रु टपक रहे हैं उन्हें मादी उठा उठा कर खा रही है । क्या कहा ? खा रही है ? हां-क्यो ? इसी लिये कि इस पक्षीका विषय करना यही है इनके नरेन्द्रिय नही होती जिस समय यह घटाको देख उन्मत्त हो नाचने लगता है, इसका वीर्य नेत्रद्वारा अश्रु रूपसे पात होता है और मादी उसे खा खा कर गर्भ धारण करती है।

सामने एक चौखंडे मकानकी संगीन खिड़कीमें कुर्सियोंपर बैठे हुए दो नवयुवक इस अनुपम दृश्यके आनन्दका अनुभव कर रहे हैं, जिनमें एक तो हमारे इस पुस्तकके प्रधान नायक, बाबू मदन-लालजी हैं, जिन्हें पाठक भूले न होंगे और दूसरे महाशयसे पाठक परिचित नहीं हैं ये उसी नगरके निवासी पं० विद्याधरजी "यथा नाम तथागुण" वाले हैं । आपने अत्यन्त कठिनाइयां सहन कर बहुतसी विद्याओंका अध्ययन किया है, इन्हें बाबू मदनलालके पास आनेका नित्य नियमसा है, घरके कार्योंसे अवकाश पानेपर ये यहां आकर बैठते है और इनकी (मदनलालकी) हां में हां मिलाया करते हैं । इस प्रकार मयूरको कामांध देख बाबू मदन-लालको कुछ स्मरण सा हो आया और वे विद्याधरजीसे, बोले:—

पंडितजी ! एक दिन आपने कहा था कि तुम्हें [कुछ कोककी

बातें बतावेंगे, परन्तु खेद है उस दिन पश्चात आजपर्यंत आपने कभी उस बातका ध्यान ही नहीं किया।

विद्याधरजी-बाबू साहेब! स्मरण तो अवश्य है किन्तु आप देखते हैं, कि मैं कभी अवकाश नहीं पाता, कहीं वरणी, कहीं पाठके लिये नित्य ही जाना पड़ता है, जबसे श्रावणारम्भ हुवा आपके कार्यमें संलग्न हूं। रुद्र बनाया आरती, पूजन कर विसर्जन किया, २ बज गये देखिये अभी आपके कार्यसे निश्चित हो भोजन कर सीधा यहां ही आया हूं। इतनेसे समयमें कोक कैसे समझाया जा सकता है?

मदनलाल-पण्डितजी! "दरजीके बेटेको जीना जबतक सीना" तुम्हें तो सदा यही काम है, यदि इसी समय घण्टा दो घण्टा कृपा किया करें तो १०-१५ दिनमें मैं सब बातें समझ सक्ता हूँ, कौनसा बड़ा भारी ग्रन्थ है?

विद्याधरजी-अच्छा जब आपका यही विचार है तो मैं आज ही श्रीगणेश करता हूँ। कोकका प्रथम अंग है वीर्यरक्षा, परन्तु उसके समझानेकी अब कोई आवश्यकता नहीं, क्योंकि आप तो विवाहित हो चुके हैं।

मदनलालजी-नहीं, विवाहित होनेसे ही क्या हुआ!? आप प्रथम वीर्यरक्षाका ही प्रभाव समझाइये।

वीर्यरक्षा।

यह बात प्रायः सब ही मनुष्य जानते हैं कि खाद्य पदार्थ दूध, घी, मेवा, अन्नादिक जो हम नित्य सेवन करते हैं इसी लिये,

कि हमारे अङ्गोंमें शिथिलता न आवे, हमारा पुरुषार्थ न घटे पुरुषार्थ क्या है वीर्य, क्योंकि चौथेपन (बुढ़ापे) में वीर्यके कम जानेसे इन्द्रियें शिथिल हो जाती हैं इससे समाधान हुआ कि वीर्य ही मनुष्यका जीवन है।

भोजन किया हुआ अन्न कई प्रकारके रस बनकर रक्त, रक्तसे मांस, मांससे हड्डी और हड्डीसे वीर्य अनुमान १ मासमें तैयार होता है; याने आजका किया हुआ भोजन १ मासमें अपने अंश वीर्यको देहमें छोड़कर आप मल मूत्रद्वारा बाहर हो जाता है, इसीलिये वीर्यकी रक्षा करना प्रत्येक मनुष्यका कर्तव्य है. दीर्घायु, सौंदर्य, पुरुषार्थ आदि सब वस्तु वीर्यरक्षासे ही प्राप्त हो सकती हैं।

जीवो वसति सर्वस्मिन्, देहे तव विशेषतः।
वीर्ये रक्ते मले चास्मिन्, क्षीणे जाते क्षणात् क्षणात् ॥

भावार्थ-रुधिर और मलमें वीर्य विशेष करके रहता है और जीव सब शरीरमें वास करता है, वीर्यके क्षीण होनेसे जीव क्षण-भरमें शरीरसे निकल जाता है।

बूअलीसेना (एक फारसी हकीम) का मत है ४० वर्षतक ब्रह्मचारी रहे और कोकाजीका मत है कि २४ वर्षकी आयु तक वीर्य कच्चा रहता है। देखनेमें आता है कि स्त्रीप्रसंग तो जो है सो है ही परन्तु आज कल हस्तक्रिया द्वारा यह अमूल्य रत्न (वीर्य) इतना व्यय किया जाता है कि खजाना ही खाली हो जाता है। एकबार मैंने एक मनुष्यको यह दुष्कर्म करते देख लिया और उसे इसके त्यागनेको कहा तो उसने मुझे उसी समय एक श्लोक सुना दिया।

उसे न दवाया हो, उसके दुःखोंका कहांतक वर्णन किया जाय महा-कष्ट भोग, साथियोंको शिक्षा दे २४ सालकी आयुमें मर गया।

मनुष्यकी आयु स्वांसोंपर निर्भर है दिनोंपर नहीं। अंग जितना ही शिथिल होगा उतनी ही स्वासें अधिक खर्च होंगी और जितनी स्वासें अधिक खर्च होंगी उतने ही मृत्युके दिन समीप होंगे। आपको ध्यानसे देखनेपर मालूम होगा कि मामूली समयसे चौगुनी स्वांसें विषयके समय व्यतीत होती हैं याने अधिक विषयसे स्वासें भी खर्च हों और वीर्य बहकर शरीर भी शिथिल हो इसके लिये केवल इतना ही कह देना उत्तम होगा

वठे जौन डारपर, काटत सोई डार।
जियन मरनको ना डरै, यह गति है संसार॥

वर्तमानके विषयी मनुष्योंकी ठीक वही दशा है कि-कुत्ता कहींसे एक हड्डीका टुकड़ा लाकर उसे चबाता है और जब वह हड्डीका टुकड़ा उसके (कुत्तेके) तालुमें लगकर रक्त बहता है जिसे वह हड्डीमेंसे निकला हुआ रक्त समझ बड़ी प्रसन्नतासे चाटता है, परंतु वह मूर्ख इतना नहीं समझता कि यह उसीका नुकसान हो रहा है।

इतना सुन मदनलाल बोला-

मदनलाल-पंडितजी! जब वीर्य व्यय करना इतना हानिकारक है तब तो मनुष्यको विषय करना ही नहीं चाहिये।

विद्याधरजी-करना चाहिये परंतु आयु पर्यंत एक बार केवल इस आनन्दका अनुभव करने और वंश चलानेके लिये केहरी सिंहकी भांति-

सिंह विषय सत्पुरुष बैन, केल फलैं एक बार।
तिरिया तेल हमीर हठ, चढ़ै न दूजी बार॥

एकान्ते वा नदीतीरे, अथवा शून्यमंदिरे ॥
[illegible]पामहस्तक्रियां कृत्वा, भार्यायाः किं प्रयोजनम् ।

अज्ञानी लोगोको यह नहीं मालूम कि यह कितना बुरा व्यवहार है कि, बीस बार स्त्रीप्रसंग करनेसे उतनी हानि नहीं होती जितनी एकबार हस्तक्रिया या लौंडाबाजी करनेसे होती है, क्योंकि इन दुष्कर्मोंसे नसोंको बहुत झटका लगता है इस व्यवहारसे मनुष्य निर्वीर्य हो जाता है और आलसी, मृगीका रोगी, अक्षपाती, नपुंसक और अंडवृद्धि आदि अनेक व्याधियोंमें दबकर अपने साथियोंको शिक्षा देते हुए अल्पायुमें ही परलोकवासी होता है। देखिये इसके बारेमें डाक्टर टिस्सट (Tissat) ने एक घड़ीसाजका विवरण क्या लिखा है? लिखते हैं कि एक घड़ीसाज प्रथमावस्थामें वह भला निपुण और स्वस्थ था परन्तु १७ वर्षकी आयुसे वह इस दुर्व्यसनमें पड़ गया, उसकी हस्तक्रिया कोई दिन नहीं छूटती थी, कभी २ तो २-३ बार कर बैठता था, निदान उसका मस्तिष्क इतना निर्बल हो गया कि जब वह हस्तक्रिया कर चुकता तत्क्षण मूर्छित हो जाता था, इसपर भी वह मूर्ख न चेता, उसकी यह इच्छा दिनों-दिन बढ़ती ही गयी। इन्द्रियको छूनेसे अथवा स्त्रियोंको देखते ही उसका वीर्यपात हो जाता था, निदान वह हस्तक्रिया करते ही इतना मूर्च्छित होने लगा कि मस्तक लटक जाता था, ग्रीवा फूल जाती थी और ८-१० घण्टातक इसी दशामें पड़ा रहता था। कुछ दिनो बाद कमरमें असह्य पीड़ा होने लगी, दुर्बलता इतनी बढ़ गयी थी कि खड़े होनेसे गश आने लगा। रंग पीला, काम काजमें अयोग्य, मुँहसे लार और नाकसे रक्त बहना पेशाब [illegible]के साथ वीर्य गिरना आदि ऐसा कोई रोग न था जिसने

मदनलाल-(खिलखिलाते हुए) अच्छा नाराज मत होवो आगे बढ़ो।

(नोट-इसमें जो दृष्टांत दिया गया है कि ४० वर्षकी आयुमें ब्याह किया, वह समय केवल उन्हीं लोगोंके लिये है जो ब्रह्मचर्य व्रत पाल सके। आज कलके व्यभिचारी लोग तो इतनी अवस्थामें खाक हो जाते हैं। अस्तु)

विद्याधरजी-कोकमतानुसार मनुष्य मात्रको २४ वर्षकी आयुतक ब्रह्मचर्य पालना चाहिये और विद्याग्रहण करना चाहिये, ब्रह्मचारीको निम्न बातें वर्जनीय हैं। नमकीन किस्से, अश्लील नाटक, वेश्याओंका नृत्य, तीक्ष्ण और नशेली वस्तुयें (लालमिर्च, तेल, गुड़, खटाई, गांजा भांग, मद्य इ०) एकान्तमें स्त्रीका वार्तालाप लौंडे और रंडीबाजोंकी संगति, बंद मकानमें सोना, दिनको सोना, कामको बढ़ानेवाली औषधियां इ० वस्तुओंको त्यागना चाहिये।

कामं क्रोधं तथा लोभं, स्वादु शृङ्गारकौतुकम्।
अति निद्रातिसेवे च, विद्यार्थी ह्यष्ट वर्जयेत॥

लेखकः-प्रिय मित्रो! मनुष्यको ठोकर खानेपर ही होश होता है, मैंने भी अनुमान ११-१२ वर्षकी आयुमें कुसंगतिके कारण दुर्व्यसन (हस्तक्रिया) द्वारा वीर्य नष्ट करना आरम्भ कर दिया था, अनुमान १ वर्षतक इसमें फँसा रहा, यहांतक कि समय समयपर चक्कर आना, अंडकोषका फूलना आंखोंका फटना इत्यादि हुआ करते थे। तब भी मैं नहीं समझता था कि यह इसी कुकर्मका कारण है, मैं समझता हूं यदि कुछ

दृष्टांत है कि एक मनुष्यने चूअली सेनाके मतानुसार ४० वर्षकी आयुमें व्याह किया, पत्नीको शुद्धस्नान पश्चात् निश्चित दिनमें रति दान दिया, जिससे पंडितजीको पुत्ररत्नकी प्राप्ति हुई। जब कुमार ७-८ वर्षका हुआ तब अपनी माताके मतानुसार पिताजीको प्रसन्नताके समय कहा पिताजी! हमको एक भाई और चाहिये। पिताने सादर उत्तर दिया, जब तुम्हारे उत्पन्न करनेका उपाय किया गया मेरा आधा बल नष्ट हो गया, अब आधा बचा है उसे भी यदि नष्ट कर दूं तो मेरा जीवन भार हो जाय।

मदनलाल-पंडितजी! यह तो बड़ी विकट समस्या है, कुछ कम समय बतावो।

विद्याधरजी-कहीं पर ऐसा भी लिखा है-स्त्रीके शुद्धस्नान पश्चात उत्तम दिन देख गर्भाधान करे उससे जो बच्चा उत्पन्न हो वह जबतक स्वमाताका दूध पीना बन्द न कर दे, रतिकर्म बन्द रखे।

मदनलाल-पंडितजी! यह भी बड़ा ही समय है।

विद्याधरजी-मेरे ध्यानसे वर्षभरका समय उत्तम है।

मदनलाल-पंडितजी! आप तो ज्ञानी हैं और मनको वसमें रख सक्ते हैं परन्तु कोई कामी पुरुष इतना भी न ठहर सके तो?

विद्याधरजी-प्रति मास ऋतुकालमें एक वार।

मदनलाल-कुछ थोड़ा और घट सक्ता है?

विद्याधरजी-पहलवानसे पहलवानके लिये एक सप्ताह है।

मदनलाल-(हँसते हुए) और कोई इतना भी न रुक सके तो?

विद्याधरजी-उसके मनमें आवे सो करे परन्तु कफन भी बगलमें रखे, ऐसे मनुष्यको मृत्यु न जाने किस समय आ घेरे।

दृष्टांत है कि एक मनुष्यने बूअली सेनाके मतानुसार ४० वर्षकी आयुमें व्याह किया, पत्नीको शुद्धस्नान पश्चात् निश्चित दिनमें रति दान दिया, जिससे पंडितजीको पुत्ररत्नकी प्राप्ति हुई। जब कुमार ७-८ वर्षका हुआ तब अपनी माताके मतानुसार पिताजीको प्रसन्नताके समय कहा पिताजी! हमको एक भाई और चाहिये। पिताने सादर उत्तर दिया, जब तुम्हारे उत्पन्न करनेका उपाय किया गया मेरा आधा बल नष्ट हो गया, अब आधा बचा है उसे भी यदि नष्ट कर दूं तो मेरा जीवन भार हो जाय।

मदनलाल-पंडितजी! यह तो बड़ी विकट समस्या है, कुछ कम समय बतादो।

विद्याधरजी-कहीं पर ऐसा भी लिखा है-स्त्रीके शुद्धस्नान पश्चात उत्तम दिन देख गर्भाधान करे उससे जो बच्चा उत्पन्न हो वह जबतक स्वमाताका दूध पीना बन्द न कर दे, रतिकर्म बन्द रखे।

मदनलाल-पंडितजी! यह भी बड़ा ही समय है।

विद्याधरजी-मेरे ध्यानसे वर्षभरका समय उत्तम है।

मदनलाल-पंडितजी! आप तो ज्ञानी है और मनको वसमें रख सके हैं परन्तु कोई कामी पुरुष इतना भी न ठहर सके तो?

विद्याधरजी-प्रति मास ऋतुकालमें एक बार।

मदनलाल-कुछ थोड़ा और घट सक्ता है?

विद्याधरजी-पहलवानसे पहलवानके लिये एक सप्ताह है।

मदनलाल-(हँसते हुए) और कोई इतना भी न रुक सके तो?

विद्याधरजी-उसके मनमें आवे सो करे परन्तु कफन भी बगलमें रखे, ऐसे मनुष्यको मृत्यु न जाने किस समय आ घेरे।

मदनलाल-(खिलखिलाते हुए) अच्छा नाराज मत होवो आगे बढ़ो।

(नोट-इसमें जो दृष्टांत दिया गया है कि ४० वर्षकी आयुमें ब्याह किया, वह समय केवल उन्हीं लोगोंके लिये है जो ब्रह्मचर्य व्रत पाल सके। आज कलके व्यभिचारी लोग तो इतनी अवस्थामें खाक हो जाते हैं। अस्तु)

विद्याधरजी-कोकमतानुसार मनुष्य मात्रको २४ वर्षकी आयुतक ब्रह्मचर्य पालना चाहिये और विद्याग्रहण करना चाहिये, ब्रह्मचारीको निम्न बातें वर्जनीय हैं। नमकीन किस्से, अश्लील नाटक, वेश्याओंका नृत्य, तीक्ष्ण और नशेली वस्तुयें (लालमिर्च, तेल, गुड़, खटाई, गांजा भांग, मद्य इ०) एकान्तमें स्त्रीका वार्तालाप लौंडे और रंडीबाजोंकी संगति, कुंद मकानमें सोना, दिनको सोना, कामको बढ़ानेवाली औषधियां इ० वस्तुओंको त्यागना चाहिये।

कामं क्रोधं तथा लोभं, स्वादु शृङ्गारकौतुकम्।
अति निद्रातिसेवे च, विद्यार्थी ह्यष्ट वर्जयेत॥

लेखकः-प्रिय मित्रो! मनुष्यको ठोकर खानेपर ही होश होता है, मैंने भी अनुमान ११-१२ वर्षकी आयुमें कुसंगतिके कारण दुर्व्यसन (हस्तक्रिया) द्वारा वीर्य नष्ट करना आरम्भ कर दिया था, अनुमान १ वर्षतक इसमें फँसा रहा, यहांतक कि समय समयपर चक्कर आना, अंडकोषका फूलना आंखोंका फटना इत्यादि हुआ करते थे। तब भी मैं नहीं समझता था कि, यह इसी कुकर्मका कारण है, मैं समझता हूँ यदि कुछ

दिन यही दशा और रहती तो मैं खारिज हो जाता, परन्तु उसी समय-"ठाकुरदत्त शर्मा लाहोर मालिक अमृतधारा आफिस" की लिखी हुई 'नपुंसकत्व' नामक पुस्तक मुझे मिल गयी जिसने इस दुर्व्यसनको छुड़ानेमें गुरुकासा काम किया और मै उन दिनो जो शरीर विगड़ चुका था उसे ठीक दशामें लानेके लिये औषधियां खाने लगा, येन केन ठीक हो गया, परन्तु समय समयपर अब भी क्षीणता, सुजाक, मूत्रकृच्छ्र, अंडवृद्धि आदि रोगोंका आक्रमण हो ही जाया करता है, अधिकांशमें इसीपरसे मैंने यह चौथा भाग लिखनेका निश्चय किया था। एक वर्ष ही उस दुर्व्यसनमें रहनेसे मुझे आयुपर्यंत पछ्तान पड़ेगा इसही कारण मुझे देखनेवाले इस पुस्तकका मेरे द्वारा संग्रहीत होना असम्भव मानते है, क्योंकि पुस्तक लिखनेवाला अच्छा सौंदर्य और बढ़े हुए हृदयका व्यक्ति होता है, परन्तु मेरा तो सौंदर्य उस एक वर्षके दुर्व्यसनने ही नष्टकर दिया था।

"अब पछ्ताये होत क्या, चिड़िया चुन गयी खेत."

रजरक्षा.

विद्याधरजी कहने लगे-जिस प्रकार पके हुए धान्यको वोनेके लिये शुद्ध जोते हुये क्षेत्रकी आवश्यकता है, उसी प्रकार शुद्ध शंख-वर्ण वीर्यके लिये वीरबहूटीके रंग सदृश 'रज होनेपर ही उत्तम सन्तान होना संभव है इस लिये स्त्रियोको भी ब्रह्मचर्य व्रत पाल-कर अपने रजकी रक्षा करना परमावश्यक है। कोकाजीका तो मत है १८ वर्षकी आयुमें शुद्ध रज होता है और-

वर्ष अठारहकी सिया, सत्ताइसके राम।

के अनुसार ही आगे यह कार्य होते भी थे, परन्तु यह कलियुग है इसमें २५-२६ वर्षकी स्त्री नानी कही जाती है। भारत गर्भ

देश है, यहां स्त्री १२ वर्षकी आयुमें रजस्वला होने लगती है, इसलिये कन्याका व्याह तो ११ वर्षकी आयुमें ही कर देना उत्तम है, परन्तु २ वर्ष उनको ब्रह्मचर्य रखकर १३ वर्षकी आयुमें गौना करना चाहिये, इतने समयमें रज शुद्ध हो सकता है।

जिस स्त्रीका कच्चा रज खराव होता है उसकी कामाग्नि एकदम भड़क जाती है, परन्तु यह बात स्मरण रहे कि जिस प्रकार फोड़ेमें पकनेके समय मीठी २ खुजली चलती है और उसे फोड़ देनेके लिये रोगीका चित्त वार २ उसी ओर आकर्षित होता है, उसी प्रकार अवोध स्त्रियें जिस समय रज पकाव पर आता है उसके आनन्दको रोक नही सक्तीं और कुसङ्गतिका अवसर न मिले तो पुरुषोकी भांति वह भी हस्तक्रिया करने लगजाती हैं यह अत्यन्त ही खराव व्यसन है। ×

देखिये डाक्तर डैसेल्यण्ड (Deseland) ने एक लड़कीका वर्णन किया है जिसे छोटी आयुमें ही हस्तक्रियाका व्यसन लग गया था. और अन्तमें उसकी रुचि इतनी बढ़ी गयी थी कि वह बिवश होकर बाजारमें बैठकर अत्यन्त करके अपनी तृष्णा शान्त करने लगी। इस दशामें भी वह शांत न हुई और हस्तक्रिया कर डाला करती थी। परिणाम यह हुआ कि मृत्युने ही इस दुर्व्यसनसे उसे छुटकारा दिलाया।

ऐसे २ अनेक डाक्टरोंके मत हैं परन्तु स्थानाभावके कारण उन्हें हम नही लिख सकते।

× स्त्रियोंको सच्चरित्रा या चरित्रहीना बनानेका यही समय है. इस समयका चरित्र आयुपर्यन्त साथ रहता है। (A L Gupta)

मुकलावा-बहार

अंक पांचवां

स्त्री-पुरुषोंके वर्णभेद।

कोकशास्त्रके अनुसार स्त्री और पुरुषोंके चार चार वर्ण पाये जाते है और व्याह यही चारों भेद मिलाकर करनेसे गृहस्थका सच्चा आनन्द और दाम्पत्य प्रेम मिल सक्ता है। पुरुष, शशक, मृग, वृषभ और अश्व। स्त्री-पद्मिनी, चित्रिणी, शंखिनी और हस्तिनी चार वर्णकी होती है। शशक-पद्मिनी, मृग-चित्रिणी, वृषभ- शंखिनी, और अश्वका हस्तिनीके साथ व्याह होना चाहिये अथवा कन्याको इच्छानुसार वर ढूंढ लेनेकी आज्ञा दे दी जावे .जैसा कि सावित्रीको दी गयी थी। इन दोनो बातोंके विपरीत जो व्याह होते हैं उससे देशमें वर्णसंकरोंकी संख्या बढ़ती है और दाम्पत्यप्रेम रसातलको चला जाता है और जब दाम्पत्य-प्रेम ही नहो है तो गृहमें लक्ष्मीका ठहरना कदापि नही हो सकता। जब लक्ष्मी हीं नही तो "सर्वशून्यं दरिद्रता" परन्तु आजकल इस बातको कौन देखता है, वर्णसंकरोंकी कौन कहे? यदि निश्चर ही उत्पन्न हों तो क्या, दाम्पत्य -प्रेम रसातलमें तो ठहरता होगा' यदि निर्मूल ही हो जाय तो क्या चिन्ता? गृहकी कौन कहे यों देशभरकी ऋद्धि चली जाय तो बलासे। इस स्वार्थी समयमें चाह है केवल पैसेकी।

जहां देखो वहां मारा मारी पैसेकी ।

और इसीके अनुसार मैं भी लिखता हूँ इसके विरुद्ध लिखनेसे चाहे सबको अच्छा प्रतीत हो , परन्तु उन लोगोंको अवश्य ही बुरा जान पड़ेगा जो कि अपनी कन्याओंको सरे बाजार दलालोके हाथ विक्रय कराकर मांसविक्रीतुल्य पैसा ले मूछें चढ़ाते और माल उड़ाते हैं। मैं चाहता हूँ मेरे लेखसे किसीको किसी प्रकारका दुःख न हो। प्यारे भाइयो ! यदि व्याह करना चाहते हो तो जिस प्रकार हो कमसे कम १००००) रुपये तयार कर लो फिर तो चाहे आपकी आयु ८० वर्षकी हो गयी हो, चार छः पुत्र पौत्र खेलते हों, दांत आंख इत्यादि दशो इन्द्रियोंने इस्तीफा दे दिया हो तब भी आपका व्याह हो जायगा और यदि आप चाहो कि १०००) २०००) में काम चल जाय तो ऐसा कदापि नहीं होगा क्योंकि इतना तो दलाल बाबाको ही चाहिये जो कि अनेक प्रकार सच्च झूंट बोल अनेको सौगन्ध शपथ खाकर यहांका नाका वहां और वहांका यहां भिड़ाते हैं। फिर बतावो जिसने अपनी सुकुमार कन्याको अपनी आयुभरकी कमाई खिला खिला कर १५ वर्षकी हृष्ट पुष्ट परी बना रक्खा है क्या वह उसका मांस रुपया तोला भी न बेचेगा ? बेचेगा, अवश्य बेचेगा। फिर तुम्ही सोचो हजार दो हजारमें कैसे काम चल सकता है ?

दश हजार चाहिये पूरे दश हजार और यदि इतनी चांदी तुम्हारे पास नहीं है तो चाहे तुम विश्वविद्यालयके सार्टीफिकेट याफ्ता हो।
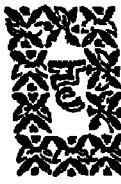
तुम्हारे सौंदर्यसे कामदेव व पराक्रमसे भीमसेन हार मानते हों तब भी सम्भव नहीं कि आपका व्याह हो जाय। मित्रो ! ध्यान दो, धनवान मनुष्य तो अपनी लड़की द्रव्यहीनको देना

नही चाहते, वह तो अपने समान पैसेवालेको ही ढूंढेंगे चाहे लड़का १२ वर्षकी लड़कीके लिये ८ वर्षका क्यो न मिले ।

मदनलाल-पंडितजी ! लड़का ८ वर्षका क्यों ढूंढेगा. क्या उसे बड़ा लड़का न मिलेगा ?

विद्याधरजी-बाबू साहब ! ऐसे स्थानोंके लड़के १० वर्षकी आयुके कुंवारे रहें तो कुटुम्बहीन समझे जाते है फिर बतावो बड़ा लड़का कहांसे मिल सकता है ? सगाइयां तो गर्भमें ही कर दी जाती है (हंसते हुए) आप अपना ही चरित्र देखिये ना ? आपका भी तो बालविवाह ही

मदनलाल-(मुसेकाता हुआ) अच्छा आगे बढ़िये ।

विद्याधरजी-और धनहीन मनुष्य ढूंढ़ेंगे पैसेवालेको चाहे वह ऊपर कहे मुताबिक ८० वर्षका ही क्यों न हो ? भावार्थ यह कि पैसेवाला मनुष्य तो अपनी सन्तानका क्या अपने कुत्तोका भी व्याह कर सकता है, परन्तु ५००) वार्षिक कमानेवाला नवयुवक ऐसे स्वार्थी जमानेमें क्या कर सकता है ? अब कहो यदि मैं उचित जोड़ा मिलाकर व्याह करनेको लिखूं तो कहांतक काम चल सक्ता है?

दृष्टान्त-एक महाशयने अपनी ग्यारह वर्षकी निम्बूके फांके जैसी आंखोंवाली कन्याको एक धनाढ्यके ८ वर्ष के सुकुमारको व्याह दी और उन्होंने यह कहते हुए स्वीकार कर लिया "मोटी लाड़ी मोटा भाग, छोटा बंदड़ा घणां सुहाग" लड़की बारह वर्षकी हुई. रज पका, कामदेवका अंकुश लगना आरम्भ हुआ और उधर सुकुमार बन्दड़ेका चूतड़ भी नौकर ही धोते है, नवी बहूके लिये प्रेमके वशीभूत सास श्वशुरने एक अच्छी अट्टालिका अनेकों प्रकारकी तस्वीर आयने

झाड़ फानूस आदि ऐय्यासी वस्तुओं द्वारा सजा कर रंग महाल बना दिया। नवी बहू तो लचकती हुई वहां पहुंच ही गई और प्राणप्यारेके रंगमहलमें पधारनेकी घड़ियां गिनने लगी। उधर कुंवर साहब भी भौजाइयों अथवा पड़ोसिनियोंके दबावसे वहां पहुंचे और बगल बच्चे बन (नींद आती हो या नहीं) चुप चाप निद्रितसी अवस्था बना, पड़ रहे। एक दिन दो दिन इसी प्रकार महीने बीत गये अन्तको बहूरानीसे न रहा गया, उसने नोकर गुवाला और पड़ोसियोंसे प्रीति बढ़ाई। नित्य अपनी कामाग्नि शान्त करना और सहस्रोंका माल खिलाना। यदि सास श्वशुर कभी इस बातको जान भी जाते हैं तो "आप कमाया कामड़ा, दई न दीजे दोष" अथवा "अपनी जांघ उखाड़ते, अपने आवे लाज" की ओर लक्ष्यकर चुप बैठ जाते हैं।

इसी प्रकार जब कुंवर साहब १९—२० वर्षके हुए, तरुणाई तो ईश्वर देवेगा ही, क्यों? क्योंकि उस ज्वालामुखी (स्वपत्नी) के दर्शन करते आज इन्हें १० वर्ष हो गये, सब रक्त जलकर पानी हो गया है। हां! इतना अवश्य जानने लगे कि विषय एक रसदार वस्तु है, अब अपनी स्त्रीकी ओर तो देखना भी इन्हें नहीं सुहाता क्योंकि एक तो १० वर्षसे ये उससे दबे हुये हैं और दूसरे इतने समयमें वह अपनी जवानीको पानी धारकी भांती वहाकर ऐसी बन बैठी जैसी पेशेदार (वेश्या) स्त्रियें होती हैं।

यौवन था औ रूप था, ग्राहक थे सब कोय।
यौवन रूप गमा दिया, बात न पूछे कोय॥

अस्तु कुँवर साहबको सङ्गतिका असर लगा, चुन्नटदार आस्तीनका फ्यान्सी कुरता, एक लांगी धोती, पैरमें बिलायती चप्पल, हाथमें वेश कीमती बेंत तेल इत्रसे सराबोर हो निकले,

मछुवा बजार और सफेद गलीकी सैरको अपना धन मान और अमूल्य रत्न वीर्य पानी की भांति लगे बहाने और साथही साथ रोग कोष बढ़ाने।

प्रिय मित्रो! ध्यान दो वेश्याओंके लिये ऐसी उच्चजातिका वीर्य और भले गृहकी बहुओंको शुवालोंकी सङ्गति, इसपर देशमें यदि वर्ण-संकर उत्पन्न न हो तो देशभक्त कहांसे हों, धिक्कार! धिक्कार!!

दृष्टान्त-एक धनहीन मनुष्यने अपनी चतुर्दश वर्षीया पुत्रीको धनके वश होकर ६० वर्षके खूंसट बुड्ढेको व्याह दी।

"मुंहमें न रहे दांत, लार बहती है सदा।
रीढ़ झुक गयी, उम्र सत्तरकी वीती है॥
त्वचामें सिकुड़ने पड़ी है, ठौर ठौर कई।
लाठी ही सहारा देह, पौरुषसे रीती है॥
लाखका बजाके ढोल, लाखका बनाया खाख।
लाये व्याह कन्या जो, पोती सी दूध पीती है॥
खूंसट खब्बीस पाजी बूढेकी, फजीती नहिं।
माता आर्य भूमि हाय! तेरीही फजीती है॥"

(शुकलाल प्र० पाण्डेय)

अस्तु, दो चार वर्ष तो अपना धर्म समझ इस लड़कीने बूढ़े खूंसटकी सेवा की, अन्तमें उस पाजीने इस अबोध युवतीको मंझधार छोड़ हाथोंमें स्वर्णकी बेडी डाल नर्कका मार्ग लिया। अब कहो वह स्त्री कुकर्म करेगी या नहीं करेगी? करेगी, अवश्य करेगी कुछ दिन तो वह शांतचित्त बैठी परन्तु जब इससे विरहाग्नि नहीं सही गयी, तो इसने गुप्त रूपसे पाप कमाना आरम्भ किया, इसके फलस्वरुप गर्भ रह गया, अब बतावो वह गर्भपात न करे तो क्या बच्चा उत्पन्न कर अपने दोनों कुलोंको कलंकित करे?

राम २ भली घरकी वहू बेटियोका ऐसा करना बड़ा अन्याय है, ऐसा नही होगा वह अपने कुलोको कलंकित नही होने देगी, किसी चतुर दाईद्वारा अवश्य ही गर्भपात करेगी। ओफ! कितना भारी पाप है, हमारे समाजमें प्रतिवर्ष न जाने इसप्रकार कितनी भ्रूण-हत्यायें होती होगी, जिस जातिमें यह हाल है उस जातिका कदापि कल्याण नही हो सकता।

उन कसाई मनुष्योको-नही २ कसाई उपमा कैसे दी जा सकती है। इनका अनादर होगा, क्यो कि कसाई तो पशुको एक ही बार तड़फाकर मार देता है और मांस बेचता है, परन्तु वे निश्चर-रूपी मनुष्योको-जो कि अपनी जीवित कन्याको बेच आयुभर उसे तड़फाते और उनके दुःश्राप सहते हैं, अपना हृदय कठोर कर लेना चाहिये क्योकि यमराज (धर्मराय) के धर्मदरबारमें इन्ही कन्याओंके श्राप वज्र बनकर उनके हृदयको टुकड़े टुकड़े करेंगे।

आप लोगोंको भी कभी सुननेमें आया होगा कि बूढ़े अथवा छोट कन्थके ख्यालोमें छज्जोपरसे कूदकर प्राण दे देती हैं, कामाग्निमें व्याकुल हो फांसी लगा लेती है, कुवोमें डूब मरती हैं, भ्रूण-हत्यायें करती हैं, ये सब श्राप उन दुष्ट मनुष्योके ही माथे हैं जो लालचवश अमेल व्याह करते है। ऐसे अवसर पर यदि मैं समेल व्याह करनेको लिखूं तो ठीक वैसा ही होगा जैसा नगाड़ेके सम्मुख तूंती।

हमारे कदरदान पंचोंको इस ओर ध्यान देना चाहिये और भरसक इन अन्यायोको रोकनेका पूरा प्रयत्न करना चाहिये।

एक फारसी कविका कथन-

"हिम्मते मरदा, मददे खुदा।"

अंक छठवां

त्रो! कदाचित आपके माता पिताने प्रेम, भाय, लालच या अन्य किसी भी कारणवश आपका व्याह बड़ी आयुवाली, कुरूपा, निर्लज्ज, रोग-ग्रसित स्त्रीके साथ कर दिया है तो भी आपको भोगना चाहिये, क्योंकि माता पिताकी आज्ञाका पालन करना उत्तम सन्तानका लक्षण है, किन्तु स्मरण,रहे कि,कोक-नियमोंके पालनेपर ही तुम अपने स्वास्थ्यकी रक्षा करते हुए स्त्रीके चित्तको प्रसन्न रख सकोगे और दाम्पत्यप्रेमको बढ़ा सकोगे, और इसके विपरीत चलनेपर स्वयं रोगी बन स्वपत्नीको व्यभिचारिणी बनाते हुए अपना हास्य करावोगे।

कई मनुष्योंका मत है कि घर धनवान होना चाहिये वर चाहे जैसा हो, घरमें द्रव्य होनेसे लड़की सुखपूर्वक आयु वितावेगी, परन्तु वे मूर्ख इतना नहीं सोचते कि एक कामबाणसे क्रोड़ों रुपये का निशाना लगाया जा सकता है, अच्छे २ अमीर-घरानोंकी स्त्रियें गुवालों रसोइयों को प्रेम, पुजारी बना लाखो रुपयेका द्रव्यभूषणादि भेंट कर देती हैं।

द्रव्य केवल दो प्रकारसे व्यय किया जा सक्ता है, एक तो रति-कार्य-ऐय्यासीमें और दूसरे-ईश्वर मार्गमें। दान पुण्य तीर्थाटन करना, धर्मशाला, पाठशाला, अनाथालय आदि बनवाना। जिसमें

प्रथम काम ही अधिक देखा जाता है, जब रति-आनन्द देनेवाला पति ही अयोग्य है तो द्रव्य होना न होना समान है, निरा धनही देखना मूर्खता है।

क्योंकि एक तो वह ऊपर कहे अनुसार अयोग्य पति होनेपर निरर्थक है और दूसरे यह स्थिर भी नहीं जैसे कि-

जिनके महलमें हजारों रंगके फानूस थे,
आज उनके बैठनेको बोरियां तक भी नहीं।

स्त्रीका जीवन पुरुषपर ही निर्भर है, जिस स्त्रीका पति अयोग्य उसके लिये संसार शून्य है।

पुरुषसे स्त्रीमें गुणोंकी अधिकता।

सोरठा-द्विगुणक्षुधा परमान, लाज चौगुणी नारिको।
साहस छयगुण जान, काम पुरुषसे अठगुणा॥ ×
छन्द-बारह गुणा है सोच, नारी अर्ध आलस जानिये।
झूंठ तिगुणी शोक नौ, औ धर्म दस गुणा मानिये॥
क्रोध तेरह मोह ग्यारह, धीर है द्वादश गुना।
विमल सब अनुभव किये, जस कोक कोकासे सुना॥

विद्याधरजी-कहिये तो स्त्री-पुरुषोंको परस्पर वश करनेकी क्रिया भी बताऊं।

मदन०-हां हां अवश्य इसकी तो आजकल अत्यन्तावश्यकता है।

स्त्रीको वशमें करनेकी क्रिया।

विद्याधरजी-यदि कोई महाशय चाहें कि हम स्त्रीको मारपीटकर गाली गलोज कर वायुरहित निर्जन गृहमें कैद कर

× स्त्रीणां द्विगुणमाहारो, लज्जा चापि चतुर्गुणा।
साहसं षड्गुणं चैव, कामश्चाष्टगुणः स्मृतः॥

अथवा प्रेमका त्यागकरके वशमें कर लें तो यह उनकी निरी मूर्खता है क्योंकि—

'माना जाय तो आपसे, न तो न माने सगे वापसे।'

इस प्रकार स्त्रियें कदापि वशमें नही रह सकती और रहती भी हैं, वो जैसी दिखाई पड़ती हैं उनका हृदय वैसा नहीं रहता। पतिके ऊपर उसका हार्दिक प्रेम नहीं हो सकता, हां! निम्न नियमोंसे यदि स्त्री रखी जाय तो सम्भव है कि उसका चित्त कुछ शान्त रहे और वह पतिकी आज्ञापालिनी बनी रहे।

उसे उत्तमोत्तम पतिव्रताओंके चरित्र सुनाना, गृहका कार्यभार सौंपना, उसपर पूर्ण प्रेम रखना, उसे इच्छानुसार वस्त्रालंकार लाकर देना उत्तम समागममें रखना इत्यादि।

लोग कहते हैं परदा रखनेसे स्त्रियें नही विगड़ती, परन्तु मेरे ध्यानमें तो यह बात भी नही बैठती क्योंकि—

नैन छिपाये ना छिपै, कर घूंघटकी ओट।
चतुर नारि औ शूर नर, करैं लाखमें चोट॥

परदा करनेसे कुछ लाभ नहीं, स्त्रीमें प्रेम और लज्जाका होना ही सराहनीय गुण हैं।

पुरुषको वशमें करना।

यही क्रिया पुरुषको भी वशमें करनेकी है। यदि कोई स्त्री चाहे मैं गृहमें कलह रखके, पतिसे रुष्ट होकर अथवा भोजनादि त्याग कर पतिको वश कर लूं, यह सर्वथा असम्भव है। पतिको वशमें रखनेकी सरल क्रिया यही है, उसकी इच्छा-विरुद्ध कोई कार्य नही करना, उसकी सेवामें हर समय तत्पर रहना, जो कुछ वस्त्रालंकार वह स्वइच्छासे ला दे उसीमें सन्तुष्ट रहना, नित्य उत्तमो-

तम भोजन तयार कर देना, गृहके आय व्ययका ध्यान रखना, नौकरों चाकरोंपर दबाव रखना, भोजनके समय मातृ, और सहमत होनेमें मित्र और सेवामें स्त्री तुल्य वर्ताव करना, स्वेच्छानुसार अन्य गृह न जाना इत्यादि नियमोंसे ही पतिदेव प्रसन्न रह सकते हैं।

अन्यान्य वशीकरण !

किसी पुस्तकमें उल्लूका कलेजा, किसीमें भौंरेका मांस, किसीमें घोड़ेकी पूंछ और किसीमें गधेके पेशाबसे वशीकरण क्रियाएँ लिखी हैं, परन्तु मेरे ध्यानसे तो जहां श्रीगणेशमें ही हत्या होती है वहां कल्याण नहीं हो सकता? वशीकरणकी सीधी क्रिया वही है जिससे देवता भी वश हो जाय, मनुष्योंकी तो गणना ही कौन

वशीकरण एक मन्त्र है, तज दे वचन कठोर।
तुलसी मीठे बैनमें, सुख उपजे चहुँ ओर॥

स्त्री व्यभिचारिणी होनेका कारण।

दोहा—सङ्ग व्यभिचारिणी नारिके, त्रिया रहे जो कोय।
या बहु पुरुषनमें रहै, सो व्यभिचारिणी होय॥

छन्द—पिता-घर बहु रहे, अबलाः होय सबला कामिनी।
भ्रात माता भय नहीं, निर्भय फिरे जो दामिनी॥
हाट बागन जाय, जाको नियम घर घर जावही।
मात घर शृङ्गार साधे, कीर्ति कुलहि नशावही॥
अतिहठी शिक्षा न मानै, वस्त्र अभूषण चहै।
रूप सुंदर लोभमय हो, काम सागरमें बहै॥

१ "ऋणकर्ता पिता शत्रुः, माता च व्यभिचारिणी।
भार्या रूपवती शत्रुः, पुत्रः शत्रुरपण्डितः॥"

प्रीति दूतिनसों करै, ना पास वृद्धा नारि हो।
नवयुवक सङ्ग एकान्त हो, निश्चय वो तिरया ख्वार हो॥

स्त्रियोंको किसी भी अवस्थामें स्वतंत्र रहनेका अधिकार नहीं है। बालापनमें माता, तरुणाईमें पति और वृद्धावस्थामें पुत्राधीन रहना चाहिये, पवित्र स्त्रियें ऐसे ही रहती भी हैं।

अंक सातवां

रजस्वला।

स्त्रि याधरजी कहने लगे-स्त्री जबतक रजस्वला न हो गर्भाधानयोग्य नहीं होती है, उष्णदेशकी स्त्रियें ११ १२ और शीत देशकी १५-१६ वर्षकी आयुमें ऋतुमती होती हैं × प्रतिमास तीन दिनतक योनिद्वारा रक्त बहकर चौथे दिवस स्वतःबन्द हो

१ निर्लज्ज, विधवा, भाटिन, नाइन, मालिन, भिखारिन, वेश्या, डोमन, ब्राह्मव्यभिचारिणी इत्यादि स्त्रियें दूती होती हैं।

+ यदि स्त्री १४-१५ वर्षकी आयुतक भी रजस्वला न हो तो निम्न औषधि सेवन करावें।

(१)कबूतरकी विष्ठा पीसकर प्रतिदिन ३-३ मासा सहतके साथ खिलावे।
(२) नीलाथोथा, श्वेतजीरा, सौंफ, रेवंदचीनी, देशीखांड समभागका चूर्ण नित्य ४ मासा गर्म पानीसे खिलावे, ये औषधियां खिलानेके प्रथम इस बातका पता लगा लेना चाहिये कि स्त्री हिजड़ी तो नहीं है?

जाता है, इसीका नाम रजस्वला होना है। उन तीन दिनोंमें स्त्रीको चाहिये कि किसीको छूवै नहीं और निम्न बातोंका पथ्य रखे, कई ग्रन्थोंमें तो लिखा है कि ऋतुमती स्त्री ऋतुकालमें किसीको मुँह न दिखावै परन्तु वर्तमानमें इतना बन्धेज रहना असम्भव है।

रज समय ऐ नारियो, रोना दरिद्रहि लायगा।
होतही धननाश सब, धर हाथ मल पछितायगा॥
दन्त मांजे रजसमय, या दिन दहाड़े सोयगी।
गर्भ होगा पात हाथन, सन्ततीसे धोयगी॥
तुर्ष खारी दूध घृत, रजकालमें खाती रहै।
होयगा रज बन्द रोगिनी, बनै दुख पाती रहै॥
दृगन अञ्जन अङ्ग मञ्जन, रजो दिन कोई करै।
दुष्ट संतति होय ताके, नष्ट कुल दोऊ करै॥
भोजन अधिक जो करै बाला, उदररोगी हो सही।
तेल या उबटन मलै, संतान कुष्ठी शक नहीं॥
नख कटे संतान रोगी, बजाना गाना करै।
तालु हो संतान गूंगी, और भी बहरी परै॥
जो हँसै रजके समय, लज्जा न हो संतान को।
अतिश्रम करै जो नारि तौ, संतान पहुंचै हानिको॥
सुगंधी पागल करै, औ भोग अंग झीना करै।
मांग सिंदूरा भरे, सब संततिके सुख हरै॥
हिंसा करेसे निर्दयी, तांबूल रोगी दन्तका।
चिंता करे सुत शून्य ऐसा, बचन कोका सन्तका॥

रजकालमें माता जैसा कार्य करती है उसके तीव्र प्रभाव संतति पर पड़ते हैं। यदि रजोधर्म बराबर मासपर न हो (कम या अधिक समयमें हो) तो योग्य दाई या डाक्टर द्वारा उपाय करना चाहिये।

प्रथम रजदर्शन फल।

सोम बुध औ शुक्र गुरु, चार वार शुभकार।
प्रथम बार रजदर्श हो, सो सौभागिनि नार॥
रवि-मंगल शनिवार हो, प्रथमबार रजवन्त।
अशुभ अमंगल अहित है, पार न गति भगवंत॥

प्रथम बार योनि द्वारा एक ही बून्द रज और वह पीले ही रंगका निकले तो वह स्त्री व्यभिचारिणी-परपुरुषगामिनी-अत्यन्त कामचारिणी होगी, लाल हो तो पुत्रवती, काला हो तो मृतक संतान, पिच्छल हो तो वन्ध्या, पांडुवर्णका हो तो काकवन्ध्या, घुंघची रंगका हो तो भाग्यवती और सेंदुरवर्णका रज आवै तो कन्याप्रसव करनेवाली होती है।

शुद्ध रज।

इस प्रकार पुरुषके अंडकोष हैं इसी प्रकार स्त्रियोंके भी दो अण्डकोष (बादामाकार) गर्भाशयके आसपास बारीक झिल्लीमें लपटे हुए हैं और उनमें पीले रंगका पानी बहुतसे बारीक २ कृमियुक्त भरा रहता है, जिस प्रकार पुरुषके अण्डकोश फूट जाने पर वह नपुंसक हो जाता है, उसी प्रकार स्त्री भी दोनों अण्ड-

क्लेश भड़ जानेपर वन्ध्या हो जाती है। बाल्यावस्थामें स्त्रीके योनि के द्वारपर एक बारीक झिल्ली रहती है, जिसमें एक छिद्र तो मूत्र आनेके निमित्त सदैवसे रहता है और दूसरा छिद्र रजकाल में होता है, प्रथम पतिसंगके समय यह झिल्ली फट जाती है और स्त्रीको कुछ दर्द प्रतीत होता है, इसके पहिलेकी दशाको अक्षत योनि कहते हैं। प्रतिमास निकलनेवाला रज शुद्ध समझा जाता है। जब गर्भाधान होता है तब रज बहना बन्द होकर उसीसे बालकके अंग प्रत्यंग बनते हैं। पश्चात् वही रज दूधके रूप में स्त्रीके कुचोंमें आकर बालकके पोषणका कारण होताहै, रज निश्चित समयसे आरम्भ हो अनुमान ४०-४५ वर्ष पर्यंत आकर स्वतः बन्द हो जाता है।

प्रतिमास ५-६ तोला रज बहना उत्तम समझा जाता है, इससे कम हो तो, रक्त शुष्क और अधिक हो तो रक्तविकार रोग जान औषधि कराना चाहिये। खरगोशके रक्ततुल्य, लाखके रसके सदृश या बीरबहूटी * कीड़ेके समान रंगवाला, जिसका दाग कपड़ेको पानीमें डालते निकल जाय ऐसा रज शुद्ध माना जाता है।

शुद्ध वीर्य।

पुरुषके एक बिन्दु वीर्यमें सैकड़ों बारीक बारीक पूंछवाले कृमि होते हैं जो खुर्दबीन (दूरबीन अथवा आतसी शीशा) द्वारा देखनेसे दृष्टिगत होते हैं। ये पवन लगते ही मर जाते हैं परन्तु ये ही सृष्टिके कारण हैं। विषय समय ये ही स्त्री रज कृमिके साथ

* बीरबहूटी एक प्रकारका कीड़ा रेतीके स्थानोंमें पाया जाता है इसे मारवाड़ी भाई प्रायः "तीज" कहते हैं।

गर्भाशयमें पहुंचकर कई मास पर्यंत जीवित रहते हैं और मकड़ीके जाले अनुसार जाला बनाते हुए संतानोत्पत्तिके कारण होते हैं जिस प्रकार पपीहेको केवल '२-४ बूंदें स्वातीकी ही चाहिये और ५० इंच वर्षासे इसे कोई प्रयोजन नहीं इसी प्रकार गर्भाशयको २-४ बिंदु शुद्ध वीर्य चाहिये, दूषित वीर्य २० तोले भी निरर्थक है। शुद्ध वीर्य श्वेतशंख समान रंगवाला, गाढ़ा चिकना भारी और चमकदार होता है और अशुद्ध वीर्य नील (मैले) रंगका, गन्धयुक्त और पतला होता है।

जिस प्रकार पुष्ट अन्न उत्पन्न करनेके लिये चुने हुए बीजकी आवश्यकता है। इसी प्रकार क्रोधसे मुंह लाल, भयसे पीला और शोकसे श्वेत हो जाता है उसी प्रकार वीर्यके दूषित होनेपर उसका प्रभाव अण्डकोषपर अधिक पड़ता है, जो कि वीर्यका खजाना है, लिंग तो वीर्य व्यय करनेका एक हेतु है परन्तु वीर्यको संचय कर आवश्यकतानुसार लिंगको देनेवाला अण्डकोष ही है, मनुष्यके अंगमें १२ वर्षकी आयुसे २० वर्ष पर्यंत वीर्य उत्पन्न होता है पश्चात् २४ वर्षपर्यंत उसमें पुष्टता आती है इसी समय अज्ञानी लोग इसे व्यय करने लगते हैं इसी कारण अल्पायुमें ही दशो इन्द्रियें निस्तेज हो जाती हैं। वीर्यको जितना पकावो उतनाही अधिक आनंददाता होता है। यदि मनुष्य आहार-विहारका उचित ध्यान रखे तो ९० वर्षकी आयुतक संतान उत्पन्न कर सक्ता है।

स्त्री और पुरुषमें गन्ध।

स्त्री और पुरुषमें गन्ध आनी भी एक ईश्वरीय माया ही है,

इससे भी वर्णोंका पता लगता है। पद्मिनीमें पद्मकीसी, चित्रिणीमें एक प्रकारकी चित्ताकर्षक, शंखिनीमें मद्यकीसी तथा हस्तिनीमें खारकी गन्ध आती है। शशक और मृगमें मधुर और मीठी तथा वृषभ और अश्वमें एक प्रकारकी कड़वी (जैसी कि बाजे २ बकरोंमें आती है) असुहावनी गन्ध आती है। इस गन्धका पता मुँह और पसीनेसे अधिक लगता है, ज्यों ज्यों आयु बढ़ती है त्यों त्यों यह गन्ध भी बढ़ती ही जाती है।

अंक आठवां

विषय.

त्यागनीय स्त्रियें।

बारह वर्षसे कम अथवा ४० वर्षसे अधिकायुवाली, विधवा, कुँवारी, शूद्र-अपनेसे नीचे जातिवाली, रोगग्रसित, क्षुधित, भिखारिन, अधिक समयकी रुकी हुई, निर्लज्ज, सगर्भा, वेश्या, कुटनी (दूती) बदमाश पुरुषकी स्त्री इत्यादि स्त्रियोंसे सङ्ग नहीं करना चाहिये।

कारण।

बारह वर्षसे कम आयुवालीके साथ विषय करनेसे उसकी गर्भझिल्ली नष्ट हो वंध्या हो जाती है, चालीस वर्षके ऊपर निरस

विषय है, क्वांरी विधवा निर्लज्जासे संग करनेमें अपमानका भय, ब्राह्मणीसे ब्रह्महत्या, वेश्या सङ्गतिसे द्रव्यनाश, शूद्रजाति, रोग-ग्रसित, क्षुधित, कुटनी, वहुत दिन रुकी हुई इनके साथ संसर्ग करनेसे सुजाक, प्रमेह, क्षीणता, मृगी, अंडवृद्धि आदि भयंकर व्याधियोंका भय और बदमाशकी स्त्रीसे प्रीति करनेवालेको सदैव प्राणोंका भय रहता है।

पराई स्त्री।

अन्य स्त्रीके साथका विषय ऐसा है जैसा मार्ग चलता हुआ श्वान एक पांव ऊंचाकर मूतता और भाग जाता है, यदि विषयका सच्चा आनन्द है तो स्वस्त्रीके पास ही।

काम जात निज देहसे, दाम गांठसे जात।
उत्तम कुलके धर्म सब, सो तुरन्त नशिजात॥
यासों परनारी दुखद, भूली करो जनि सङ्ग।
नारायण निज नारिसों, समुझि करो सत्सङ्ग॥

तथा।

परनारी पैनी छुरी, कोइ न लावो अङ्ग।
रावण योधा खप गया, परनारीके सङ्ग॥

तथा।

गठड़ीसे दाम जात, हितहूंसे वाम जात,
पुरजनको नाम जात, काम जात अङ्गतें।
कुलके सद्धर्म जात, नेत्रोंसे शर्म जात,
उत्तम सब कर्म जात, नाम जात जङ्गते॥
गुरुजनसे प्रीति जात, सांचे सब मीति जात,
हृदयसे नीति जात, मदनके उमङ्गते।

(१२)
मदन निवास ज्ञानाकृति
कृष्णपक्षेऽधोयाति
शुक्ले ऊर्ध्वगमिष्यति।
नयन
कपोल
ओष्ठ
कांरव
कुच
पेट
जननेन्द्रिय
जंघा
नयन
कपोल
ओष्ठ
कांरव
कुच
पेट
जननेन्द्रिय
जंघा
अंगूठे
अंगूठे

(१४)
प्रत्येकतिथिमें कामदेवका चढाव उतार.
कृष्णपक्ष
शुक्लपक्ष
१ मस्तक
२ नेत्र
३ कपोल
४
५ गला
६ काँख
७ कुच
८ हृदय
९ डोंडी
१० कटि
११ योनि
१२ जघा
१३ पीडी
१४ तलुऐ
अँगुलिया
१५
१४
होठ गाल१३ १२
११
१०
९
८
७
कमर ६
इन्द्रिय ५
४
३
स्त्रीअ
पुरुषाग

चित्रानुसार

तिथी	कामस्थान	उसे सचेत करनेकी क्रिया
प्रतिपदा	कपाल	चार रात्रि वर्जित हैं क्योंकि ये अछूत हैं.
द्वितीया	नेत्र	
तृतीया	कपोल	
चतुर्थी	ओष्ठ	
पंचमी	गला	गुदगुदाहट
षष्ठी	कांख	"
सप्तमी	हृदय	चुम्बन
अष्टमी	कुच	मर्दन
नवमी	नाभि	गुदगुदाहट
दशमी	कमर	मर्दन
एकादशी	योनि	चिमटीसे (नख बचाकर) मंद मंद मसलन
द्वादशी	जंघा	खूब मर्दन थप्पी इत्यादि,
त्रयोदशी	पिंडली	मर्दन,
चतुर्दशी	पैरके तलुए	अपने पैरके अँगूठेसे गुदगुदाहट
अमावस्या	अंगुली पैरकी- "	" अंगुलीसे रगड़न.

पन्द्रह दिन पश्चात् इसी प्रकार चढ़ाव जानना चाहिये. और पुरुषके अंगमें इसके विपरीत जानना चाहिये.

कामदेव कुच कपोल कुक्षी और योनि जंघा इन ५ स्थानोंमें अधिक वास करता है अतः इन स्थानोंमें चुम्बन मर्दनादि करनेसे काम शीघ्र जागृत होता है। एक महाशयने स्त्रीके कुचोंपर जो काले काले श्याम हैं उन्हें अपने ओष्ठोंमें दबाकर मंद मंद चुम्बन पुरुषको करना चाहिये, ऐसा करनेसे कामदेवका जागृत होना लिखा है।

कामवती स्त्री।

छंद-हठ करे बहु भांति, बारहिबार द्वारे आइ है।
पथिक निरखत राहके, मनमांहि अधिक खिहाइ है॥
अधिक समये कन्थ बिछुड़े, तासु पति पछताइये।
या प्रसुनहि बाम आये, काम तनमें छाइये॥
या हौ गर्भिणी मास छैकी, नैन खोलि निहारि है।
क्षीण छबि मनमें मलीना, कामवश ये नारि है॥

विषय-विधि।

कहां तक सत्य है यह तो मेरी तुच्छ बुद्धि नहीं समझ सकती परन्तु सुना जाता है कि-प्राचीन कालमें २०-४० वर्षकी आयु तक तो बच्चे नग्न फिरा करते थे और उन्हें यह बोध नहीं रहता था कि विषय क्या है, परन्तु समयके परिवर्तन शील होनेके कारण जान पड़ता है कि ब्रह्मा वर्तमानके न उदरस्थ बच्चोंको ही विषय विधि सिखा देता है। देखनेमें आता है कि जहां कुछ बालक बालिकाएँ एकत्रित हो खेलते हैं वहां ये ही खेल खेला करते हैं। कोई दूलह कोई दूलही (स्त्री पुरुष) बनते हैं, पत्थरके रेडोंको अपने बच्चे मान, उनको प्यार और चुम्बन करते हैं। ऐसे जमानेमें विषय विधि लिखना निरर्थक समझ कोमल-हृदय पाठकोंसे क्षमा मांगता हूँ।

अधिक विषय।

कई मित्रोंका मत है कि अधिक विषयसे स्त्री सन्तुष्ट होती है परंतु उनका ये ख्याल उल्टा है, स्त्री कोकविधि अनुसार उचित विषय

करनेपर ही सन्तुष्ट होगी, विषयमें जबतक वीर्यपात न हो आनंद नहीं आता। आज कलके विषयी पुरुषोंका वीर्य तो बात करते ही पात होने लगता है परन्तु स्त्रीका वीर्य पात होना हँसी ठट्ठा नहीं है, उसका वीर्य कोकानुसार रति किये जानेपर ही स्खलित होना संभव है और वीर्य स्खलित होनेपर ही वह संतुष्ट हो सकती है और दोनों (स्त्री पुरुष) के स्खलित होनेपर ही रज वीर्य मिलकर गर्भ रहना सम्भव है ।

यदि पुरुष स्खलित हो गया और स्त्री न हुई तो उसे केवल आपत्ति ही होगी, संतुष्टता नहीं। उसका चित्त खिन्न होजायगा।

आप लोगोंको कोकाजीकी जीवनी द्वारा ज्ञात हो चुका है कि कोकाजी उस षोडश वर्षीया नग्न स्त्रीको दरबारसे ले जाकर २० दिन तक, विना सहवास किये ही कोकक्रिया द्वारा सन्तुष्ट करते रहे, जो मनुष्य अधिक विषयमें लीन हो जाता है वह अति शीघ्र नपुंसकताको प्राप्त हो स्वपत्नीको व्यभिचारिणी बना हास्यका कारण होता है।

मित्रो! भिक्षुकको एक रोटीका टुकड़ा नित्य देनेसे वह उतना प्रसन्न नहीं होता जितना प्रति वर्ष एक वार अच्छा पेटभर भोजन करा देनेसे होता है, यही हाल स्त्रीका है।

विषयके पश्चात् ।

विषयके पश्चात् स्त्रीको चाहिये कि आधा घंटातक चित्त लेटी रहे ताकि वीर्य और रजकी कृमि मिलकर गर्भाशय तक पहुँचे और गर्भाधान करें, तुरन्त उठ जानेसे वीर्य और रज बहकर बाहर आ जाता है जिससे गर्भ रहना सर्वथा असम्भव है और पुरुषको चाहिये कि इन्द्रियको कपड़ेसे पोंछले, यदि धोनेकी

आवश्यकता हो तो गर्म जलसे धोवे, शीतल जल हानिप्रद होता है तेज हवामें न जाय, पसीने पोछकर मामूली हवामें १०-५ मिनट टहले, विषयके पश्चात् पेशाब करना परमावश्यक है, क्यों-कि वीर्यवाहिनी नलीमें कोई वीर्यका कतरा रह गया होगा तो वह पेशाबके साथ निकल जायेगा, रह जानेपर पीछे सुजाक, मूत्रकृच्छ्र आदि हो जानेकी सम्भावना रहती है, विषय पश्चात जल पीना अत्यन्त हानिकारक है। क्योंकि-जो नसे खाली होती हैं उनमें जाकर जल भरजानेके कारण वे शिथिल और निस्तेज होती हैं। हां, दूध पीना उत्तम है, वैद्यराज लोलिम्बजी अपनी पत्नीसे बोलते है-प्रिये ! यद्यपि संसारमें काम बढ़ानेवाली अनेक रसायन (औषधि) है तथापि दूधसे श्रेयस्कर एकभी नहीं है.

सद्यो वलहरा नारी, सद्यो वलकरं पयः।
स्त्रियं गच्छेत्पयः पीत्वा, तां च त्यक्त्वा पुनः पिबेत्॥

स्त्री तुरंत वल हरनेवाली और दूध तुरंत वल करनेवाला है अतः विषयके आदि अन्त दोनों कालमे दूध पीना चहिये।

मदनलाल-पंडितजी ! दूध कच्चा उत्तम है या पक्का ?

विद्याधरजी-दूध मिश्री औरघृत युक्त औटा हुआ जिसमें कुछ सोंठका चूर्ण पड़ा हुआ पीना उत्तम है।

तथा च ।

मुलहटी-चूर्ण १० मासे, घृत १० मासे और मधु ५ मासे चाट कर दूध पीना अत्यन्त वलवर्धक है।

तथा ।

मस्तंगी ३ तोला, वैंगन (भंटे) के बीज ९ तोला पीसकर "अगरत्रोया" के साथ खूब खरल करो, पश्चात् मिर्च तुल्य गोली

बना लो, विषयके पश्चात् दो गोली खालेनेसे बलवीर्य कदापि नहीं घटता, इन गोलियोंसे आमाशय भी पुष्ट होता है।

विषयके पश्चात् बादाम, पिस्ता, गिरि, चिरौंजी, मलाई, हलुवा, तांबूल इत्यादि खाना हितकर है। एक न एक योग कामी जनोंको अवश्य ही सेवन करते रहना चाहिये।

विषयश्रमसे थकित बिखरे हुए केशयुक्त-विह्वल चित्तवाली, चन्द्रमुखपर मुक्तानुसार प्रस्वेद बिन्दु झलकती हुई बालाको अपने हृदयस्थलपर लिटा, उसके अधरोंके अमृत पान करनेका आनन्द विरले ही कामी जन जानते हैं।

विषयके समय पेशाब करनेसे स्त्रीकी कामेच्छा प्रचण्ड तथा पुरुषकी कम होती है, अतः पुरुषको विषयके प्रथम पेशाब नहीं करना चाहिये।

अंक नववां

गर्भ-लक्षण।

जब गर्भ रहता है चतुर स्त्रियें तुरन्त जान जाती हैं कि गर्भाधान हो चुका। मनमें ग्लानि या स्फुरती होना, शिथिलता या नाभीमें गुदगुदाहट आना, तृषा लगना इत्यादि लक्षण तत्काल होने लगते हैं।

दांतोंके अग्रभागका श्याम होना, रोमांच होना, पथ्य भोजनसे घृणा और मिट्टीकी डली, कोयले आदि अभक्ष्य पदार्थोंमें प्रेम

होना, वमन व मुँहमें पानीका आना, शरीर जड़ जान पड़ना, उत्तम पदार्थ भयदाता दिखाई पड़ना इत्यादि कुछ काल पश्चात् होते हैं।

कुचोंके अग्रभागका काला होना, उनमें दूध आना, पेटमें फड़कन होना इत्यादि लक्षण ५ वें मास पश्चात होते हैं।

रजका आना दूसरे माससे बन्द हो जाता है गर्भवतीकी नाड़ी तीव्र चलती है, मस्तक भारी रहता है और रतिसे प्रायः घृणा हो जाती है।

मिथ्या गर्भ।

कई वार ऐसा हो जाता है कि स्त्रियोंका पेट निकल आता है, हाथ पैर कृश हो जाते है, प्रायः पेटमें हल चल सी रहा करती है, कितनोंका ही मासिक रज भी आना बन्द सा हो जाता है यह एक रोग है जिससे जलन्धर कहते हैं। ऐसे समयमें गर्भ है या नहीं यह प्रायः समझमें नहीं आता अतः परीक्षार्थ कुछ क्रियायें नीचे अंकित की जाती हैं।

लहसनके रसमें वस्त्र भिगोकर क्षुधा समय स्त्रीकी योनिमें रखे यदि स्त्रीको सुगंध आवे और मुंहसे लहसनका स्वाद आवे तो गर्भ नहीं है और सुगंध व स्वाद न जान पड़े तो गर्भ है ऐसा जानना चाहिये। स्त्रीको एक दिन निराहार रखकर उसे चादर ओढ़ा दे और कोई सुगन्धित पदार्थकी धूनी देवे यदि उसे सुगंध आवे तो जानना गर्भ है और न आवे तो गर्भ नहीं।

जिस प्रकार आतशी शीशामें सूर्यकी किरणें पड़नेसे अग्नि उत्पन्न होती है इसी प्रकार स्त्रीके रजमें पुरुषका वीर्य पड़कर जीव उत्पन्न हो जाया करते हैं।

गर्भाकार ।

प्रथमावस्थामें अराडज होना यह सृष्टिका नियम ही है अस्तु स्त्रीके रज और पुरुषके वीर्यके मिल जानेसे प्रथम मासमें वह अराडेकासा आकार होता है, दूसरे मासमें वह बढ़कर कुछ पुष्टसाहोता है; पक्षियोंका अंडा ऊपरसे दृढ़ और भीतरसे मुला-यम होता है वह उसे बाहरही पोषित करके फोड़ता है और उसमेंसे बच्चा उत्पन्न करता है परन्तु मनुष्योंके गर्भाशयमें, जो प्रथमावस्थामें गर्भ अंडाकासा आकार रहता है वह मांसके पिंड तुल्य रहता है, तीसरे मासमें परमेश्वरकी गति अनुसार उसपर सिर हाथ पैर आदिके चिन्ह स्वतः बन जाते हैं। इन दिनोंमें स्त्रीको हलका भोजन देना चाहिये, भारी तीक्ष्ण एवं अधिक उष्ण वस्तुओंके सेवनसे गर्भ नष्ट हो जानेकी सम्भावना रहती है। चौथे मासमें बच्चेके अंग प्रत्यंग बनते हैं, अतः उसमें हिलने डुलनेकी शक्ति उत्पन्न होती है। माताके हृदयमें जो रक्त-वाहक नाड़ी है उसके द्वारा बालकका पोषण होता है, इस मासमें स्त्रीको चाहिये कि अपनी इच्छानुसार वस्तुएँ खावें, इच्छानुसार वस्तु न मिलनेपर बच्चा आयुपर्यंत उसी वस्तुका इच्छुकसा रह जाता है, पांचवें महीनेमें बच्चेका शरीर पुष्ट होने लगता है और इसी कारण माताकी देह सूखने लगती है। छठवें महीनेमें उसमें जीव पड़ता है, सातवें महीनेमें सब ही अंग पुष्ट हो जाते हैं इस समयका उत्पन्न बच्चा ईश्वरेच्छासे जी सकता है। आठवां मास स्त्रीके लिये कठिन है इसलिये नैऋत्य वलिदान कर गर्भ रक्षा करे और नौवें और दसवें मासमें बच्चा उत्पन्न होता है। किसी किसी स्त्रीको ११-१२ वें महीनेमें भी प्रसव होता है।

गर्भपरीक्षा ।

परीक्षा चौथे मास पश्चात् की जाती है, दाहिना अंग भारी हो, दाहिना नेत्र रक्तवर्ण हो, रति इच्छा न रहे, दाहिने हाथकी नाड़ी तेज चले, स्तनद्वारा निकले हुए दूधका लाल दाग पड़े और मीठी वस्तुएं प्रिय लगें तो पुत्र होना तथा वाम अंग भारी रहे, वाम नेत्र लाल रहे, रति इच्छा हो, वाम नाड़ी वेगसे चले, वस्त्रपर दूधका पीला चिह्न पड़े, और खट्टी वस्तुएँ प्रिय जान पड़ें तो पुत्री होगी यह समझना चाहिये । आगे ईश्वरेच्छा ।

गर्भवतीके कर्त्तव्य ।

सगर्भा स्त्रीको तीसरे मासमें दूधके साथ, चौथेमें दही तथा पांचवेंमें पुनः दूधके साथ भात खाना उत्तम है, छठवें सातवेंमें घी शक्करके साथ भात खाना अच्छा है । भावार्थ यह है कि उसे हलका और पथ्य भोजन करना चाहिये, तीक्ष्ण भोजन हानिप्रद होता है । चावल या गेहूँके समान हलका भोजन दूसरा नहीं है । और निम्न बातोंका ध्यान रखे इनसे बचते रहना चाहिये—मैलेवस्त्र न पहिरे, दुर्गंधयुक्त पदार्थ न खाय और न सूंघे, दिनमें सोवे नहीं, रात्रिमें जागे नहीं, अधिक बोझ न उठावे, ऊंचे स्थानोंमें बारम्बार चढ़े नहीं, चिंता न करे, दौड़े नहीं, नदी नाला आदि भयंकर स्थानोंमें न जाय, भयंकर शब्द न सुने, भयंकर चित्र मूर्ति या मनुष्यको न देखे, जोरसे न चिल्लावे, हत्याका ध्यान भी न करे, अधिक उष्ण या शीतल पवन न सहे, चौरास्तेमें, वर्तन मांजनेके स्थानमें, आटा छाननेके समय, झड़कर बने हुए आटेके घेरेमें न जाय इत्यादि । आपने कई स्थानोंमें विपरीत लक्षणवाले बच्चोंका होना सुना होगा, ये इन्हीं बातोंके कारण होते हैं, सगर्भा स्त्रीको अन्य स्त्रीके प्रसव समयमें उसके पास जाना बड़ा ही भयंकर है ।

अंक दसवां

इच्छानुसार सन्तान।

लोग कहते हैं जैसा रूप मां बापका होता है वैसा ही रूप सन्तानका होता है और यही कहावत हमारे (छत्तिसगढ़) में भी प्रसिद्ध है कि-

जैसन जेकर दाई दादा, तैसन तेकर लरका।
जैसन जेकर घर दुआर, तैसन तेकर फरका।

ठीक है, फोटो तो जैसा फोटोग्राफर रङ्ग भरेगा वैसा ही बनेगा, परन्तु सन्तानका रूप जिस प्रकार प्रथम प्रतिविम्ब (केमरा सन्मुख रखनेसे) कागजपर पड़ता है वैसा ही आवेगा। भावार्थ यह है कि सन्तानकी प्रकृति तो जैसा वीर्य मां बापका होगा वैसी ही होगी, परन्तु उसके रूप रङ्ग व चाल चलनमें हेरफेर हो जाना सम्भव है। स्त्री जिस समय रजस्वलावस्थाके पश्चात् शुद्ध स्नान करती है उसका गर्भाशय, सधे हुए केमराके सदृश है, उस समय वह जिसका मुँह स्नान करते ही देखेगा उसका प्रतिविम्ब इसके गर्भस्थलपर पड़ जायगा; ईश्वरेच्छासे यदि इस मासमें गर्भ रह गया तो सन्तानका रूप ठीक वैसा ही होगा जैसा कि इस शुद्ध स्नानके समय देखा है, अर्थात् जिसका प्रतिबिम्ब इसके गर्भस्थलमें पड़ चुका है, इसलिये स्त्रीको चाहिये कि शुद्ध स्नान करने पर तुरन्त पतिदेवका दर्शन करे, यदि पतिदर्शन किसी कार्य-

वश प्राप्त न हो तो श्वशुरका अथवा सूर्यनारायणका दर्शन करे, यदि सूर्य भी मेघाच्छन्न हो तो ऐनकसे अपना मुँह देख ले।

दृष्टान्त-युरूपमें एक आदमीको काला बच्चा (गोरा काला मिश्रित रङ्ग) उत्पन्न हुआ, साहबको बड़ा खेद हुआ, उसने डाक्तरको बुलाकर पूछा, कि मेरा स्वास्थ्य ठीक रहनेपर भी काले रङ्गका बच्चा क्यों उत्पन्न हुआ ? जान पड़ता है मेरा वीर्य बिगड़ गया है। डाक्तरने परीक्षा करनेके पश्चात् कहा आपका वीर्य-स्वास्थ्य सब ठीक है, इतना कह चिन्तित भावसे उठकर साहबके शयनागार रसोईगृह, हम्माम. इत्यादि देख लेनेके पश्चात आकर कहा आपके हम्माम गृहमें एक हिन्दुस्तानी पहलवानकी फोटू लटक रही है, आपकी मेमसाहबने जिस समय शुद्धस्नान किया प्रथम ही दृष्टि उस पहलवानकी फोटू पर पड़ी, इसका ठीक कारण यही है।

इस दृष्टांतसे ऊपर लिखी बातका ठीक समाधान होता है और यह बात कि जिस समय बच्चा गर्भमें रहता है उस समय मां बाप जैसा कर्म करते है वे ही लक्षण बच्चेपर पड़ते हैं. नीचे लिखे दृष्टांतसे सिद्ध होता है अस्तु। मां बापको चाहिये कि जबतक बच्चा गर्भमें रहे झूठ, चोरी, जूवा, मद्यपान, व्यभिचार आदि दुष्कर्मोसे अवश्य बचे रहें।

दृष्टांत-जिस समय महाभारत युद्धमें कौरवोंने व्यूह चक्र रचा उस समय महाराज युधिष्ठिरने अपनी सभामें बीड़ा रखकर कहा कि यदि कोई ऐसा वीर हो जो व्यूह चक्र वेध सके, बीड़ा उठावे। व्यूह भेदना केवल पार्थ जानता था और वह उस समय एक बलीके साथ मोरचापर था और दूसरा था कौन जो बीड़ा उठाता ? बीड़ेको पड़े २ एक घंटा बीत गया तब पार्थका पुत्र वीर

बालक (अभिमन्यु) उठा और प्रणाम कर बोला महाराज! जिस समय मैं माताजी (सुभद्रा) के गर्भमें था उस समय पिताजीने व्यूह चक्र बेधना छः दिनमें छः चक्रोंका हाल भली भांति माताजीको समझाया था और सातवें दिन सातवें (अंतिम) चक्रका भेद बताना था, परन्तु उसके पहिले ही मेरा जन्म हो गया अतः मैं छठे चक्रतक तो बराबर विजय पा सकता हूँ, परन्तु सातवें चक्रमें मेरे फँस जानेकी सम्भावना है, हां यदि एक दिन पीछे मेरा जन्म होता तो सम्भव था कि मैं अन्तिम चक्रका भी भेद जान जाता। इसपर महाराजने कहा कुछ अन्देशा नहीं तुम्हारे साथ अच्छे २ योद्धा रहेंगे और सातवां चक्र भेदनेमें तुम्हें पूर्ण सहायता देंगे। जान पड़ता है यह विजयपताका तुम्हारी ही फहरावेगी। इस प्रकार महाराजके वाक्य सुन बीड़ा उठा संगमें कई अक्षौहिणी सैन्य ले वह वीर बालक उन्मत्त गजेन्द्रकी भांति झूमता हुआ चला, सैन्य तो तीसरे व्यूहतक सब नष्ट हो गयी परन्तु वह गर्भद्वारा सुने हुए मार्गसे छः व्यूहोंको भेदता हुआ बराबर सातवें व्यूहमें जा पहुंचा, लिखते बड़ा खेद होता है कि सातवें व्यूहका रहस्य इसको किञ्चित भी ज्ञान न था, अन्तमें वहां यह अकेला ही सात अन्यायी महारथियोंके साथ निःशस्त्र रथचक्रों व डण्डोंको हाथोंमें ले कई घंटोंतक लड़कर क्षत्रीवंशकी लहरमें लहराता हुआ अपनी कीर्तिपताका यहां छोड़ सुरपुरको सिधार गया।

गर्भमें बच्चा रहनेपर जैसा कर्तव्य मां बाप करें वैही लक्षण सन्तानपर पड़ना इस लेखसे प्रगट होता है और यह बात भी प्रगट ही है कि चूहेके बच्चेको बिल खोदना नहीं सिखाना पड़ता,

क्योंकि उसको गर्भमें लिये हुए उसकी माता अपना कार्य किया करती है। सगर्भाके साथ विषय करना अत्यन्त ही बुरा है, क्योंकि (१) सन्तान दुराचारी होती है (२) गर्भका बच्चा उलटे मुँह रहता है, वीर्य जाकर उसके मुँहमें पड़ता है इससे अघोर मत होता है (३) विषय केवल गर्भाधानके निमित्त किया जाता है, जब ईश्वरने इच्छा पूर्ण कर ही दी तब विषय करना अवश्य ही मूर्खता है।

"गर्भसे छूटत सिंघको बाल, गयन्दके सीसपै हाथल मारे"

विद्याधरजी-बाबू साहब! कुसमय, या नियम रहित विषय करनेसे कितनी हानि होती है, इसपर मुझे एक अच्छा दृष्टांत स्मरण हो आया है, परन्तु अब तो वह प्रसंग ही निकल गया।

मदनलाल-कह डालिये यदि प्रसंग निकल गया तो क्या आपत्ति है? अपनेको कहीं नियमानुसार ही लिखकर राजद्वारमें रजिष्ट्री थोड़े कराना है?

विद्याधरजी-अच्छा तो सुनिये जिस प्रकार मैं आपको कोकशास्त्र समझा रहा हूं, इसी प्रकार एक पण्डितजी किसी राजा साहबको सुनाया करते थे और राजा पण्डितजीके बताये हुए नियमोंके विरुद्ध कभी विषय भी नहीं किया करते थे। अस्तु, उनके २-३ पुत्र हुए, वे अत्यन्त शांत और शुद्ध प्रकृतिवाले थे। भाग्यवश एक दिन राजाने पंडितजीको स्वपत्नीके साथ मध्यान्हमें रतिकर्म करते देख लिया, तत्क्षण सिपाही भेज उन्हें बुलाकर पूछा, पंडितजी! क्या जो कोककी बातें आप समझाया करते थे मेरे ही लिये थी या आपके लिये भी?

पण्डितजी बोले श्रीमान् वक्ताओंके वचनको मानना और उनके आचरणोंकी ओर लक्ष्य न करना ही श्रेष्ठ पुरुषोंका कार्य है, क्योंकि उनका आचरण तो कलि-काल होनेके कारण भ्रष्ट भी हो जाता है, परन्तु उनका वचन (कथाएं दृष्टांत आदि) जो हैं वे उनके नही, पूर्वजोंके हैं। राजा साहबने कहा यह तो ठीक है परन्तु जब आप ऐसे विद्वान् ही पूर्वजोंके वचनोंका पालन नहीं कर सक्ते तो हमारी तो गणना ही क्या है ? और नियमोंके पालनसे कुछ लाभ व ना पालनेसे कुछ हानि भी मुझे नहीं जान पड़ती। पंडितजीने राजा साहबके मनका भाव जानकर कहा-हां, इसका (हानि लाभका) मैं प्रत्यक्ष प्रमाण दे सक्ता हूं। इतना कह पंडितजीने एक टहलुवेको कहा जाकर मेरे ज्येष्ठ पुत्रको बुला लावे। नौकरने जाकर कहा तुम्हारा बाप बुलाता है। लड़केने कहा बड़ा नालायक है दिन रात बुलाता ही रहता है। जान नही पड़ता क्या काम है, जावो कह दो कि नही आते। सेवकने आकर सब कथा कह सुनाई। पंडितजीने नौकरको पुनः एकबार भेजा और नौकर जाकर फिर बोला चलो आवश्यक कार्य है। लड़का बड़बड़ाता हुआ उसके साथ होलिया और दरबारमें आकर (अपनी बहती हुई नाकको पोंछकर) बोला तू मर क्यों नही जाता जिससे हमें शांतिपूर्वक खेलनेको मिले, दिनभर बुलाना ही बुलाना सूझता रहता है, कभी पढ़ो, कभी नहावो इत्यादि कार्योंसे तुझे मतलब क्या है? हम अपनी

इच्छानुसार चलेंगे, इस समय क्या काम अटक गया है जो मुझे बुलाया है ? पंडितजीने कहा नालायक कुछ लज्जा कर, महाराज बैठे हुए हैं। लड़केने कहा लज्जा तुझे होनी चाहिये जो महाराजके सामने हम सरीखे रूपवान् पुत्रोंको बुलाता है ! इतना कह वह लड़का नौ दो ग्यारह हुआ (भाग गया)। तब पंडित-जीने एक राजपुत्रको बुला लानेके लिये सेवकसे कहा। सेवक शिर झुका चला गया और राजपुत्रसे जाकर कहा पिताजी व पंडितजी तुम्हें दरबारमें बुला रहे हैं। सुनते ही राजपुत्र बड़ी चिन्तामें पड़ा कि आज दरबारमें बुला-नेका कारण क्या है ? पिताजी किसी कारणसे रुष्ट तो नहीं हो गये हैं, चाहे जो हो चलना तो पड़ेहीगा। यह सोच (वस्त्रोंमें कुछ धूल सी लगी थी, उसे झाड़ रूमालसे मुंह पोछता हुआ) सेवकके साथ हो लिया और दरबारमें आ पिताजीके पश्चात् पण्डितजीको प्रणाम कर बोला-कहिये क्या आज्ञा है? पण्डितजीने राजकुमारको सादर एक मखमली गद्दीपर बैठा राजा साहबसे कहा श्रीमान्! देखिये नियमसे और नियम विरुद्ध रातें करनेसे सन्तानोंमें कितना अन्तर हो जाता है! राजा साहब यह देख अत्यन्त प्रसन्न हुए और भविष्यमें कोकके नियमोंको और भी दृढ़ताके साथ पालनेका निश्चय कर लिया।

लेखकः-प्रिय मित्रो ! यह ग्राम (नेवरा बजार) अनाजके लिये एक छोटी मण्डीसा है। यहां कई भाई बाहर ग्रामों (दिसावरों)से

माल खरीदनेके हेतु आते हैं, समयानुसार उन्हें १०-१५ दिन रहनेको अवसर पड़ जाता है: तो मुझसे परिचितसे हो जाते हैं, और पूछ बैठते हैं कि आपने तो कोक नियमोंका संकलन किया है फिर आपको पुत्र पुत्री दोनों क्यों होते हैं, याने पुत्र ही पुत्र क्यों नहीं होते! उनसे मैं यही उत्तर देता हूं; कि केवल नियमोंके जान लेनेसे ही लाभ नहीं होता उनके माननेपर होता है। भोजनके देख लेनेपर ही पेट नही भरता है, खानेपर ही भूँख शांत होती है।

प्रसव-काल।

नौवें मासमें सगर्भाको प्रसूत भवनमें रखना चाहिये जो कि शुद्ध कूडा कर्कट, मक्खी, मकडी, मच्छर आदि रहित हो और जहां वायुका उचित समावेश हो। प्रसवकालके ८-१० दिन प्रथम ही स्त्रीका पेट हलका होता है, स्वांसा सुखपूर्वक लेती है, क्योंकि बालक कटिमें उतर आता है। प्रसवकालमें पेट ढीला होकर ऐंठने लगता है, जंघाओंमें असह्य पीड़ा होती है, मलमूत्र आदि स्थानोंमें बोझ पड़ जानेके कारण बारबार मलमूत्रकी शंका होती है, परन्तु मल तो रुका रहता है और मूत्र हुआ करता है और कुछ जलनसी होती रहती है। इस समयमें पेडूको धीरे धीरे सेंकना व गुदस्थानमें रेडीतेल (कास्टर आंयॅल देशी) की पट्टी चढ़ाना उत्तम होता है। प्रसवकाल समीप आनेपर स्त्रीकी पंसुलियों, पीठकी नसों और कमरमें कठिन पीड़ा आरम्भ होती है, मूत्रस्थानमें बारबार जाला आकर पीड़ा करता और मूत्रको रोकता है, उसका कारण बच्चा बाहर आनेके समय योनि कभी संकोच और कभी विकास पाती है, तब

जानना चाहिये अब शीघ्र ही प्रसव होगा। इस समय स्त्रीको जाड़ा लगे तो गरम गरम दूध या चाह पिलाना चाहिये और उसे लेटने नहीं देना चाहिये। क्योंकि लेटनेसे बच्चा योनिमें एड़ा टेढ़ा होकर फंस जाता है जिससे जिन्दगी भार हो जाती है और टहलते रहनेसे प्रसव सुखपूर्वक होता है।

दाई (बच्चा जनानेवाली) प्रसव कालमें प्रवीण हो, उसे चाहिये कि अपने हाथोंके नख कटाये रखे और प्लेन चूड़ियां पहिरे, प्रसूत भवनमें जाय गर्भिणीको उष्ण जलसे स्नान करावे, दूधकी कांजी पिलावे, पांवकी पोटली जंघाओंसे भिड़ाकर कष्ट-नीको औंधी लिटावे, मुलायम बिछौनेपर, और आप उसके गर्भ स्थानको शांति पूर्वक मसले। जब बच्चेके अंग बाहर दिखाई देने लगें तो जबतक बच्चा बाहर न आजावे शीघ्रतासे मलती रहे, उचित समयपर यदि ठीक क्रिया न की जावें तो बालकका आयुपर्यंत मूक गूंगा अथवा बहिरा रह जाना सम्भव है। बच्चेका माथा दीखते ही गर्भिणीको बाईं करवट दिलाना चाहिये और बच्चेके मस्तकको दाई अपने दाहिने हाथपर रखे प्रसूताके पेटको बायें हाथसे शीघ्रतापूर्वक मलती जावे और बालकको बाहर निकाले। इस समय मलनेमें और बालकको बाहर निकालनेमें देर लगे तो बच्चेका गला बैठ जाता है। उत्पन्न होतेही बच्चेको सामान्य शीतल जलसे स्नान कराकर अंगुलीसे उसके कण्ठका जाला निकाल डालना चाहिये। कई बालकोंके अंगमें बारीक झिल्ली लपटी रहती है। इसे तुरत ही न फाड़ देनेसे बच्चा मृतक हो जाता है। बालक उत्पन्न होते ही स्वांस लेने और रोने लगता है. यदि किसी कारणसे वह न रोवे तो उसे किसी भी क्रियासे रुलाकर निम्न क्रिया द्वारा नालाच्छेदन

करना चाहिये। बच्चा जबतक स्वांस लेना वा रोना आरम्भ न कर दे, नाला कदापि नहीं काटना चाहिये।

नालच्छेदन क्रिया !

नालच्छेदनकी क्रिया यह है कि बालककी नाभीसे चार अंगुलकी दूरीपर छः तह धागा द्वारा नालपर बन्धन लगाना चाहिये। पश्चात् चार अंगुल हट कर एक बन्ध और ऐसा ही लगा दोनों बन्धके बीचसे नाल काटे, इस प्रकार, बन्ध लगा हुआ नाल कटनेपर बच्चा व माताका रक्त नहीं बहता है। नाल काटनेके पश्चात् बच्चेको गर्म वस्त्रोंमें ढांककर सुला देना उत्तम है, नालका एक मुंह स्त्रीके गर्भस्थलमें जो ओशरा है उसमें लगा रहता है। नाल कटते ही वह वापिस भीतर प्रवेश कर जाता है ऐसा नहीं होने देना चाहिये, इसलिये, एक स्त्रीको चाहिये कि नालको बलपूर्वक पकड़े बैठी रहे। नाल काटनेके समय इस बातका ध्यान अवश्य रखें कि गर्भमें दूसरा बच्चा तो नहीं है, क्योंकि जोरिया बच्चोंकी नाल एक ही होती है और नाल कटनेपर उसमें बन्धन न लगाया जाय तो वह गर्भमें ही मृतक हो जाता है, क्योंकि उसका रक्त बह जाता है। बच्चेकी नाभिमें जो नालका भाग लगा रहता है उसमें थोड़ा मीठा तेल लगा बारीक स्वच्छ कपड़ा लपेट बच्चेके पेटमें एक पट्टी हल्कीसी बांध सुला देना चाहिये। एक दो दिनमें नालका टुकड़ा स्वयं ही नाभीको छोड़ देता है। नाल गिर जानेपर यदि नाभिसे रक्त बहे तो उस पर रुई जलाकर उसकी भस्म लगाना चाहिये। बालक उत्पन्न होनेपर उसे तीन दिनतक बकरीका दूध पिलाना अच्छा है क्योंकि माताका दूध

चौथे दिन शुद्ध (बालकके पीने योग्य) होता है, बालक जब माताका दूध पीता है तब उसका पेट साफ होता है, यदि ऐसा न हो तो उसे एक बूंद कास्टर आयेल और १ बून्द मधु मिलाकर चटा देना चाहिये, जिससे उसके पेटसे गर्भका मल निकल जाय। प्रसव होनेके १०-१५ मिनट पश्चात ही ओफरी (नाल) गिर जाती है। जब तक ओफरी न गिरे पेटको धीरे २ मसलते रहना चाहिये। बीच बीचमें नाल गर्भाशयसे छूटी या नहीं यह जाननेके लिये नालके शिरेको झटका देकर देख लेना चाहिये। यदि ओफरी गर्भाशयसे छूट गई होगी तो झटका लगते ही बाहर आ जायगी, परन्तु खींचकर झटका देकर नाल गिरानेमें बड़ा धोखा है। ओफरी गिरजानेपर उसे भूमिमें गड़वा दे और स्त्रीकी योनिको स्वच्छ गर्म जलसे धो, तेल लगा उसके सब अंगोंको पोंछ गर्म वस्त्र पहरा दोनोंके पैरोंके अगूठोंको मिलाकर सुला देवे, और एक पानमें थोड़ा जायफल, जावित्री, आधी रत्ती कस्तूरी डालकर उसे खिला देवे जिससे सर्दीका भय न रहे। प्रसूतभवनमें अग्नि सदैव रखे, ठंडी हवाका बचाव रखे, ठंडा जल कदापि न दे। दूसरे दिन पुष्टिदाता अन्न (हलुवा, हरीरा आदि) खानेको दे और वायविडङ्ग, सोंठि, मजीठ आदि औषधियों द्वारा औटाया हुआ जल पीनेको दे और चार दिन तक उसे बिस्तरसे न उठने दे। ५-७ दिन पश्चात् उत्तम दिन देख उसे शुद्ध गर्म जलसे स्नान करा दे। विना प्रयोजन कोई औषधि न दे, ज्वर, खांसी आदिके वास्ते केवल दशमूलका क्वाथ ही हितकर हो सकता है, प्रसव कालमें विस्तारित हुआ गुप्त अंग नियमित कालमें स्वयम् ही संकुचित हो जाता है। ध्यान रहे, ऐसे ही अवसर (प्रसवकाल) में अनेक नवयौवना सुंदरियें कालका ग्रास बन जाती हैं, अतः अत्यन्त सावधानीके

साथ कार्य करना चाहिये। जिनको ईश्वरने धनवान् बना दिया है ऐसे समयमें बालक व उसकी माताकी रक्षाके लिये गरीब भिक्षुक तथा ब्राह्मणोंको उचित दान पुण्य करना चाहिये, पुरुषके लिये इससे आनन्दका दिन और कौनसा हो सकता है? बच्चा जब-तक माताका दूध पीना न छोड़ दे, स्त्री-सहवाससे अवश्य ही बचे रहना चाहिये, यह स्त्री पुरुष दोनोंके लिये हितकर है।

मदनलाल-पंडितजी! आपने जो प्रसव क्रियायें बताई वह तो द्रव्यपात्रके यहां हो सकती हैं, परन्तु गौंड़ भील आदि जंगली स्त्रियें जो पहाड़ोंकी कन्दराओंमें अपना प्रसव करती हैं उनकी इतनी रक्षा (प्रबन्ध) कौन करता होगा, क्या उनके बच्चे नहीं जीते हैं?

विद्याधरजी-बाबू साहब! आपकी शंका अवश्य ही प्रसंगानुसार है, पर इसके लिये तो गोस्वामी तुलसीदासजी स्पष्ट कह गये हैं—

तुलसी बिरवा बागमें, जल सींचत कुम्हिलाय।
रहै भरोसे रामके, पर्वतपर हरियाय॥

श्रीहरिः।
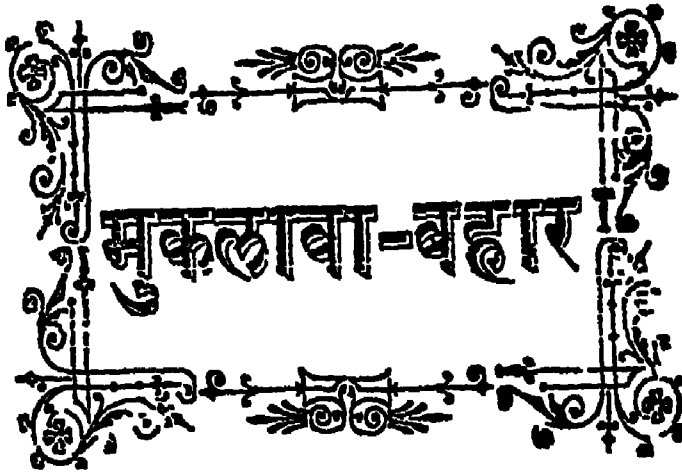
अर्थात्

ससुराल रहस्य

छठवां भाग।

गृह-चिकित्सा।

वन्दना

जगद्धितायौषधीनां, गुणं नाम च निर्मितम्।
कला त्वं विष्णुदेवस्य, धन्वंतरि नमोऽस्तु ते॥

अर्थ-विष्णु देवकी कलारूप धन्वन्तरि महाराज जिन्होंने जगतके हेतु औषधियोंके नाम और गुण निर्मित किये हैं उन्हें नमस्कार है।

कवित्त-नन्दीकी सवारी नाग शृंगी करधारी नित,
सन्त सुखकारी नीलकण्ठ त्रिपुरारी हैं।

❀ ससुराल-रहस्य ❀

मुंडमाल कारी सिरगंगा जटाधारी वाम,
अंगमें विहारी गिरिराजसुता प्यारी है ॥
दानि रेख भारी शेष शारदा पुकारी काशी,
पद मदनारी करशूल चक्रधारी हैं ।
कला उजियारी " रामशरन " सो निहारि यश,
गावें वेद चारी सो हमारी रखवारी है ॥

प्रार्थना पत्र ।
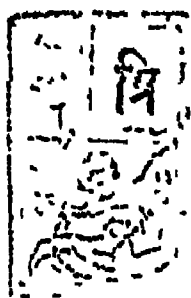
प्रिय पाठको! मेरे मनमें एक प्रार्थना करनेकी इच्छा कई दिनोंसे थी, परन्तु समय न मिलनेके कारण न कर सकता था। अस्तु-यह अवसर अच्छा है यहीं पर अपनी इच्छा प्रकट कर देना उचित होगा । वह यह है, कि जिस समय इस पुस्तककी प्रथमावृत्ति भारतमें प्रचलित हुई इसमें औषधियोंका संग्रह देख कई भाई मुझे वैद्य डाक्तर या हकीम समझ औषधियोंके विषयमें पूछताछ करने लिये मेरे साथ पत्र व्यवहार करने लगे। कई महाशय तो ऐसे मिले जो अपने प्रत्येक पत्रके साथ ~) ।) टिकट भेजने लगे और मुझे भी विवश हो उनका उत्तर भुगताना पड़ता ही था, अतः यह उन्हीं भाइयोंके लिये प्रार्थना है कि वे लोग भविष्यमें इस प्रकारके पत्र-व्यवहार न करें, क्योंकि मैं न कोई डाक्तर वैद्य और न कोई अनुभवी विद्वान् ही हूं। मैंने जो इस पुस्तकका संग्रह किया है, वह आप लोगोंकी उत्तम सङ्गति और अन्यान्य पुस्तकोंके आधारका ही फल है। और इसी अनुसार औषधियां भी

ग्रन्थ पुस्तकोंसे छांटकर ही लिखी गई हैं। अच्छा हो यदि आप अपने रोगका वृत्तांत लिखकर १) फीस सहित "मैनेजर अमृतधारा लाहौर" की सेवामें भेज औषधि निश्चय करावें, क्योंकि आप अच्छे वैद्यक ग्रन्थोंके अनुभवी वैद्य हैं और अपनी कल्पनासे अनेक वैद्यक ग्रन्थ व अनेक उत्तमोत्तम औषधियां निर्मित की हैं। या इसी पुस्तकमें बताई हुई औषधियोंके दर्शित नियमसे सेवन करें। मेरे पास पत्र भेजना व्यर्थ होगा।

आपका—

अर्जुनलाल अग्रवाल.

यों तो स्त्री पुरुषोंके शरीरमें सहस्रों रोग हैं, परन्तु इस पुस्तकमें पुरुषको नपुंसकता व स्त्रीको वन्ध्यापन जो विशेष रोग हैं उन्हीका निदान और चिकित्सा अपनी बुद्धिके अनुसार लिखता हूं। पण्डित विद्याधरजी कहने लगे-बाबू साहब प्रमेह, सुजाक, आतसक, अण्डवृद्धि, बद आदि रोगोंसे तो पुरुष तब भी स्त्रीके योग्य रहता है परन्तु नपुंसकता पुरुषके लिये इतना भयंकर रोग है कि स्त्रीको मुंह दिखाने योग्य नहीं रहता। उसे नपुंसक कहते हैं जो पुरुष स्त्रीके समीप जाय अनेक हाव भाव देखने अथवा चुम्बन मर्दनादि करनेपर भी जिसकी इन्द्रियमें तेजी

न आवै अथवा कुछ आवैं भी तो स्त्रीके साथ प्रेमालाप करते २ ही वीर्य स्खलित हो जावे और वह विषय न कर सके। अवश्य ही उस समय स्त्रीको मुंह दिखानेके बदले मर जाना उसे अच्छा प्रतीत होता है.

दृष्टान्त-एक नपुंसक राजकुमार अश्वारूढ हो आखेटके लिये वनको जा रहा था, मार्गमें एक सर्वव्यापी महात्माकी धूनी थी, उसने राजकुमारकी ओर लक्ष्य कर कहा-इस जीवनसे मरना ही उत्तम है, राजकुमारको ये वचन बाणसदृश लगे और अपने मनमें मर जाना ही निश्चित कर निज भवनको लौट आया और सतखण्डे महलपर चढ़ १ तोला कच्चा संखिया खा लिया। मनुष्य का क्रोध बड़ा प्रबल शत्रु है। राजकुमारने इसके वश हो संखिया खा तो लिया परन्तु जब प्राणपखेरू घबड़ाये तो राजकुमारको प्राण बचानेकी चिन्ता पड़ी। यह भी मनुष्यको बड़ा प्रिय है, यदि आप एक विधवा, या निपुत्रा, निस्सहा कानआंख विहीन और जर्जर देह भिक्षा कर पेट भरनेवालीसे भी मरनेको कहेंगे तो वह अवश्य ही १०।१२ गालियां सुना देगी। अस्तु:, राजकुमारको संखिया विषका असर हुआ, निद्रासी आने लगी और कण्ठ सूखने लगा। अब जल प्राप्त करनेकी चिन्ता हुई। जल ढूंढ़नेपर वहां नहीं था नहीं मिला, वहां छै टीन रखा हुआ था, राजपुत्रने एक टीनका मुंह खोला गिलास भर पी गया, आंखें सावधान हुईं परन्तु प्यास न मिटी, दूसरा गिलाल पिया, जोरसे दस्त हुआ, तीसरा गिलास पिया फिर दस्त हुआ, दशा ये हुई कि इधर घी पीना और उधर वह गुदाके मार्गसे निकल जाना। येन केन राजपुत्रने ६ टीन खाली कर डाले इसकी प्यास शान्त न हुई, जितना संखिया खाया था मलके रास्ते सब निकल गया, हां उसकी गर्मी

इसकी नस २ में भर गई नींद आने लगी वहां ही सो रहा। आंख खुली तो चित्त स्थिर था। मित्रो ! या तो वह राजपुत्र एक रानी को मुंह दिखाने योग्य अपनेको नहीं समझता था और फिर उसके शरीरमें इतना पुरुषार्थ बढ़ा कि उसने सात ब्याह किये।

मेरे कहनेका अभिप्राय यह नही है कि नपुंसकोंको संखिया खाना चाहिये, संखिया इतना प्रबल विष है कि रत्तीभर भी मनुष्य को मार डालने योग्य है। कहनेका अभिप्राय यह है कि मनुष्यको धैर्य नही छोड़ना चाहिये, ईश्वरकी सृष्टिमें ऐसी कोई वस्तु नहीं है जिसे उसने न बनाया हो, अतः उपाय करना चाहिये। उपाय करनेसे मनुष्य सब कुछ प्राप्त कर सकता है "ऐसी वस्तु नहीं दुनियामें जो पुरुषार्थसे न पावै।"

सुश्रुत, चरक, वाग्भट, धन्वन्तरि आदि महात्माओं द्वारा निर्मित जो वैद्यक ग्रंथ हैं उनका अध्ययन तो दूर रहा अभी मैंने दर्शन भी नही किये हैं, उन ग्रन्थोंमें जो इन रोगों (नपुंसकता-वन्ध्यापन) का वर्णन व औषधियें बताई है वे तो यथार्थ ही है, परन्तु मैं जो नपुंसकताके लक्षण लिखता हूँ वे तो यथार्थसे ही होंगे। नपुंसकता ४ प्रकार की होती है—(१) मानसिक (२) नसाच्छेदन (३) अल्प-वीर्य (४) कुपथ्य।

(१) मानसिक नपुंसकता उसे कहते है जब कि पुरुष स्त्रीसे छोटा होनेके कारण लज्जित रहता हो, वह स्त्रीके सन्मुख नपुंसकताको प्राप्त होता है। तथा स्थान ऐसा हो जहां किसीके देखनेकी अथवा आजानेकी शंका हो, वहां भी पुरुष नपुंसक हो जाता है तथा पुरुष ऐसी स्त्रीके साथ बलात्कार करनेका विचार करे जिससे कभी हास्य वार्ता भी करनेका अवसर न मिला हो, सम्भव

है वहां भी नपुंसकता आजाय। तथा पुरुष किसी किशोर वयस्क लड़कीके साथ विषय करना चाहे तो वहां भी (यह जानकर कि इसे चोट न आजावे अथवा मेरी बदनामी न होजावे) नपुंसकतासी आजाती है। अथवा पुरुष किसी ऐसी निर्लज्ज स्त्रीके साथ विषय करे जो कि आनन्द न आनेके कारण पुरुषसे कह दे कि आप नपुंसक हैं, आपका नम्बर पुंसकोंमें नहीं है। तो सम्भव है वह पुरुष चाहे पहलवान बन आवे तब भी उस स्त्रीके सन्मुख आते ही उस पुरुषको नपुंसकता घेर लेती है।

मित्रो! निर्जन स्थान, समआयुवाली स्त्री, एकाग्रचित्त, व चिन्ता-रहित पुरुष, जहां किसी प्रकारका भय न हो वहां ही विषयका आनन्द आसकता है अन्यथा नहीं और आनन्द न आना इसीका नाम नपुंसकता है।

(२) नसाच्छेदन-नपुंसकता उसे कहते हैं, अधिक हस्तक्रिया, गुदमैथुन, (गुदमैथुन-काममें दोनों ही लड़के बर्बाद हो जाते हैं गुदमैथुन करनेवालेकी इन्द्रियमें झटके लगनेसे नसें बिगड़कर वह नपुंसक होजाता है-तथा करानेवालेका मलद्वार-गुदस्थल चौड़ा होजानेकी वजह उसकी इन्द्रिय चेष्टाहीन हो जाती है। गुदस्थान और इन्द्रियका पूरा सम्बन्ध है, गुदस्थानको संकुचित करनेसे इन्द्रियमें उत्तेजना आती तथा उसे विकसित करनेसे इन्द्रिय सुस्त-ढीली होजाती है-अतः गुदमैथुन भी बहुत ही भयंकर-आयु-भर रुलानेवाला कर्म है) पशुमैथुन, अक्षतयोनिमैथुन आदि करनेसे नसें झटके खाकर शिथिल हो जाती हैं। अथवा वीर्यवाहक दो नली जो कि कानके नीचेसे होती हुई अण्डकोषतक आई हैं (इनका काम है मस्तकसे वीर्यको अण्डकोषमें पहुँचाना)

लिंगके कट जानेसे अथवा पथरीकी बीमारी होजानेपर, वर्मा लगवाने या आपरेशन करवानेपर भी लिंगके कट जानेसे नपुंसकता आजाती है। अथवा भगन्दर रोग (एक प्रकारका नासूर जो कि इंद्रिय और गुदस्थानके मध्यकी नलीमें होता है) हो जानेसे जो नपुंसकताएँ उत्पन्न होती हैं इन्हींका नाम नसाच्छेदन हैं। इनमें झटके लगकर जो नसें बिगड़ी हैं वे ही केवल तिला, सेंक आदि उपायोंसे ठीक हो सकती हैं और दूसरे कारणोंसे बिगड़ी हुई नही होती।

(३) अल्पवीर्य नपुंसक—उसे कहते हैं जिसका बाल्यावस्थामें ही कुसंगतिके कारण वीर्य-भण्डार रीता होजाय। अथवा वाजीकरण औषधियोंके सेवन न करते रहनेके कारण वीर्य शुष्क होजाय। अथवा चौथापन आनेके कारण स्वभावानुसार वीर्य सूख जाय (अथवा नपुंसकके अण्डकोष किसी कारणसे निकला दिये जायं। जैसा कि बैलोंके नुकवा दिये जाते है)। अथवा किसी भी कारणसे जिसका वीर्य कम हो जाय उसे अल्पवीर्य नपुंसक कहते हैं। अधिक नशा-मादक द्रव्यों) के सेवनसे भी पुरुष अल्पवीर्य नपुंसक हो जाता है। ऐसे नपुंसकोंके लिये वीर्यवर्धक, वीर्य-पुष्टकर्ता मोदक, पाक, अवलेह, गुटिका आदि हितकर हैं।

(४) कुपथ्य नपुंसकता—बाल्यावस्थामें अधिक तीक्ष्ण पदार्थ लालमिर्च तेल खटाई भांग गांजा भाफ निकलते हुए भात गरिष्ठ पदार्थ खाने एवं अजीर्ण रखने आदिक बातोंसे कुपथ्य नपुंसकता उत्पन्न होती है। तथा अधिक गानेसे, मस्तक और पगतलमें गरम २ घाम सहते रहनेसे, अधिक सायकिल या घोड़ेकी सवारीकी आदत रखनेसे, इच्छा होनेपर भी विषय न करनेसे, लँगोट

दिन रात कसे रहनेसे तथा और भी अनेक ऐसी ही बातोंसे कुपथ्य नपुंसकता प्राप्त हो जाती है। यह जो कुपथ्य नपुंसकता है इसमें वीर्यमें गर्मी आकर उसका पतला हो जाना ही प्रधान कारण है। ऐसे नपुंसककी कामतृष्णा स्त्रीको चुम्बन मर्दनादि करनेसे बढ़ती तो अवश्य है, परन्तु स्पर्श करते ही वीर्य पतला होनेके कारण स्खलित हो जाता है। स्त्री अपना मन मसोस कर रह जाती है और पुरुषको शाप दे देने योग्य लज्जा होती है।

नपुंसकोंकी इन्द्रियके लक्षण।

टेढ़ी हो जाना, जड़से पतली और ऊपरसे मोटी होना, शुष्क हो जाना, ठण्ढी रहना, उसपर नीली २ नसोंका झलकना, छूनेपर शून्य जान पड़ना, कई हरकतें करनेपर भी उसमें तेजीका न आना और आना भी तो शीघ्र ही स्खलित हो जाना, [illegible] वेगरहित गिरना इत्यादि।

अंक दूसरा

भाइयो! यदि आप लोग अभाग्यवश ऊपर दर्शाई हुई किसी भी नपुंसकतासे ग्रस्त हों तो निराश हो जाना देने या संन्यास ले लेनेका अथवा स्त्रीको त्याग देनेका विचार कदापि न करो, प्रयत्न करो अवश्य ही इच्छा पूर्ण होगी। श्रीमत्-जगत्पिता परमेश्वरने मनुष्यके सुखके निमित्त अमृतसंजीवनी ऐसी औषधियां उत्पन्न की हैं जिनसे मृतक भी जीवित हो सकता है। परन्तु

यह बात अवश्य ही स्मरण रक्खो कि बाजारू दवाफरोंशोंकी लच्छेदार बातों व लम्बे चौड़े स्कीचोंमें फंसकर सांडे या चमगादड़ का तेल इन्द्रियपर मालिश मत करो और न मादक पदार्थ (अफीम गांजा आदि) मिली हुई औपधियोंका सेवन ही करो। इन तेलोंसे अथवा मादक द्रव्योंके सेवनसे इन्द्रियमें अथवा मनमें दो चार दिनके लिये स्फुरता अवश्य आती है, परन्तु यह स्फुरता शीघ्र ही नष्ट हो रोगकी दशा आगेसे और भी बढ़ जाती है और हिन्दूमात्रको ऐसी औपधियां छूना भी पाप है।

हां! कुछ तिलाओंका संग्रह मैं करता हूँ, इससे अवश्य ही आप लोगोंको कुछ लाभ होगा, परंतु वीर्यवाहक नालियोंका कट जाना, अंडकोष फूट जाना इत्यादि सुधरना सर्वथा असम्भव है। तिलाओंके सेवनके साथ २ पौष्टिक औपधियोंका सेवन करना भी परमावश्यक है।

तिलाओंकी सेवनविधि।

रात्रि या दिवसमें जब सावकाश हो अंगुलीपर थोड़ासा (आधी रत्ती या एक रत्ती) तिला लेकर इन्द्रियपर धीरे धीरे मालिश करे, (परन्तु यह ध्यान रहे कि तिला बड़ी तीव्र वस्तु है अण्डकोष, इन्द्रियका अग्रभाग तथा निचली सीवनमें न लगे, नहीं तो लाभके बदले हानि होती है। जब तिला इन्द्रियमें समा जाय तब एरण्ड वा बंगला पान गर्म करके लपेट दे। यदि एरंड-पत्र अथवा बंगला पानका अभाव हो तो ऊनी वस्त्र भी बांध सकते हैं। इस बातका परहेज रखे कि तिला-सेवनके दिनोंमें इन्द्रियमें

शीतल जल न लगे तो अच्छा हो, अगर स्नानके समय तेलमें भीगा हुआ लंगोट बांधकर रखें और गर्म जलसे स्नान करें स्नान के पश्चात् लँगोट खोल दें। यदि किंचित् पानी लग भी जाय तो कोई आपत्ति नहीं परन्तु पानी लगते रहनेसे लाभ देरसे होता है। तिला १० घण्टा लगा रहने दे और १४ घण्टे खुला रखे। इस प्रकार नित्य ही एक हप्ता लगाकर फिर एक सप्ताह बन्द रखे। इस प्रकार दो चार सप्ताह जबतक पूर्ण लाभ न हो, करें। तिला सेवन के दिनोंमें खटाई तेल मिर्च मादक द्रव्योंका सेवन (तथा विषय तो भूलकर भी) न करे तो अच्छा हो। साथ ही किसी प्रकार की पुष्टिदाता औषधि खाते रहें और दूधका अधिक सेवन किया करें। तिला सेवनसे इन्द्रियपर छोटी बड़ी जलवाली अनेक फुंसियां होती हैं, इनका खास कारण यही है कि उन फुंसियों द्वारा इन्द्रिय की नसोंमें भरा हुआ हानिकारक जल निकलकर वे शुद्ध हो जायँ। कई तिला तो इतने तीव्र होते हैं कि चमड़ीका परत उतार-कर नवीन चमड़ी उत्पन्न करते हैं। कष्ट तो अवश्य ही होता है, परन्तु वह सब लाभका हेतु है। यदि फुंसियोंमें अधिक पीडा हो तो मक्खन लगावे परंतु आनन्द तब ही है जब विना मक्खनके फुंसियां सूखें।

मित्रो! मैंने बहुत ही आग्रह करनेपर एक रोगीको (जिसे अनुमान २४-२५ वर्षसे नपुंसकता थी) अमृतधारा आफिस लाहौर द्वारा निर्मित एक तिला मँगाकर दिया, उसके सेवन विधि-में लिखा हुआ था कि यह तिला चौथे दिन इन्द्रियका परत उतार-कर नवी चमड़ी लावेगा। अस्तु, मैंने उसे आधी रत्ती प्रमाण मालिश करनेके लिये कहा, वह ऐसा सौखीन निकला कि अपनी

इसकी पहली दशा शीघ्रपतन या स्वप्नदोष है । पश्चात् सदैव पेशाबके आगे पीछे अथवा यों ही बहता रहता है और सुजाक प्रमेह पथरी आदि रोग उत्पन्न कर जिन्दगीको भार कर देता है। इसके रोकनेके लिये (अर्थात् स्तम्भनशक्ति बढ़ानेको) लोग अफीम, गांजा, धतूरा आदि जहरीली वस्तुओंका सेवन करते हैं, परन्तु यह उनकी निरी मूर्खता है, ऐसा करनेवाले मनुष्य अपने पैरोंमें अपने ही हाथोंसे कुल्हाड़ी मारते हैं । उन्हें यह नहीं मालूम कि नशेली वस्तुओंका सेवन कितना हानिप्रद होता है, इन वस्तुओंके सेवनके समय प्रथम तो दो चार दिन अवश्य ही कुछ स्तम्भनशक्ति बढ़ती है पश्चात् अत्यन्त कब्ज हो इनका विष नसोंमें भरता है तो निर्बलता मूर्छा अंडवृद्धि आदि उत्पन्न हो मनुष्य आगेसे अधिक असाध्य हो जाता है।

वीर्य सूख जाता है और वह अल्पवीर्य नपुंसक हो जाता है। जिसका वीर्य सूख गया हो अथवा पतला होजानेके कारण स्तम्भनशक्ति नष्ट हो गई हो, हास्यालाप करते ही वीर्य स्खलित हो जाता हो, स्वप्नदोष होता हो, उन्हें चाहिये कि मादक द्रव्य मिली हुई औषधियोंका दर्शनतक न करें और धातुपुष्टकर्ता धातुवर्धक औषधियोंका सेवन करें धातु पुष्ट होनेपर ये व्याधियां स्वयं ही नष्ट हो जाती हैं।

मदनलाल—पंडितजी ! यदि झोंपड़ीमें रहनेवाले मनुष्योंको ये रोग हो जायँ तो वह विचारा पाक, अवलेह कहसे प्राप्त कर सकता है ?

विद्याधरजी-बाबू साहब! उचित वैद्यके मिल जानेसे उसी रोगकी औषधि लक्ष रुपयेमें होती है और उसीकी १ पैसेमें।

दृष्टान्त-एक राजाको कुछ रोग उत्पन्न हुआ, उन्होंने वैद्यको बुला उपाय करनेके लिये कहा। वैद्यराज बोले श्रीमान्! लक्ष रुपया व्यय होगा, राजाने पूछा महाराज! क्या यह रोग लक्ष रुपये योग्य ही है, यदि किसी द्रव्यहीन मनुष्यको हो जाये तो वह बेचारा यों ही तड़प तड़प कर मर जाय, क्योंकि न उसे लक्ष रुपया मिले और न उसकी औषधि हो? वैद्यने कहा श्रीमान्! वैसोंके लिये वैसा ही, ऐसोंके लिये ऐसा ही। यह सुनते ही राजाने वैद्यराजको बिना औषधि कराये ही विदा किया। कुछ दिन पश्चात् राजा भिक्षुकका भेष बना वैद्यराजके पास जाकर उन्हें नाड़ी दिखाकर औषधि मांगी और कहा वैद्यजी! मेरे पास एक भी पैसा नहीं है ऐसी औषधि बताओ जिससे शीघ्र ही लाभ हो जावे।

वैद्यराजने उसे एक पैसा दिया और कहा इसकी २ मूली ले लेना। एक मूलीकी ४ फांकें कर] उनमें थोड़ा नमक लगा सामको छप्परे पर रख देना। प्रातः बासी मुंह उन ओस भरी हुई चारों फांकोंको उठाकर खा लेना। तीन दिनतक ऐसा ही करना। राजा गृहको लौट आया और उसने ऐसा ही किया, ईश्वरेच्छासे पूर्ण लाभ हो गया।

मदनलाल-परन्तु इस स्वार्थी समयमें वैसे दयालु वैद्य भी तो नहीं मिलते? आजकल जितने वैद्य हैं स्वार्थी हैं-

वैद्यराज नमस्तुभ्यं, यमराजसहोदर।
यमस्तु हरते प्राणान्, वैद्यः प्राणान् धनानि च ॥

विद्याधरजी-यह नहीं तो अन्यान्य वायुओंके साधन हैं जिनसे मनुष्योंके भयंकरसे भयंकर रोग शान्त हो जाते हैं, जिन्हें मैं सब तो समयाभावके कारण नहीं बता सकता; हां, एक क्रिया बताता हूं जिसका नाम शीर्षासन (वृक्षासन कपाली आसन) है। यदि इसका साधन मनुष्य युक्तिपूर्वक ब्रह्मचर्य रखकर छःमास भी करे तो कहां-तक बताऊँ ऐसा कोई रोग ही नहीं है जो कि नाश न हो जाय। रोगोंके उत्पन्न करनेवाले मल और रक्त ही हैं, ये शीर्षासनसे नित्य उलट फेर होते रहते हैं जिससे देहमें कोई रोग नही रह जाता है। शीर्षासन वह क्रिया है जिसे ऋषी मुनीश्वर लोग अपने वीर्य-रक्षाके निमित्त वर्षान्तरोंतक किया करते थे।

शीर्षासन।

इसीका नाम वृक्षासन, कपाली आसन है और इसीके द्वारा वृश्चिकासन तथा ऊर्ध्व पद्मासन हो सकता है। चतुर आदमी स्वयम् अनुभव कर लेंगे। मैं सूक्ष्ममें समझा देता हूँ विस्तारपूर्वक बतानेसे समय बहुत नष्ट होगा, शीर्षासनकी क्रिया यह है-

शीर्षासन ।
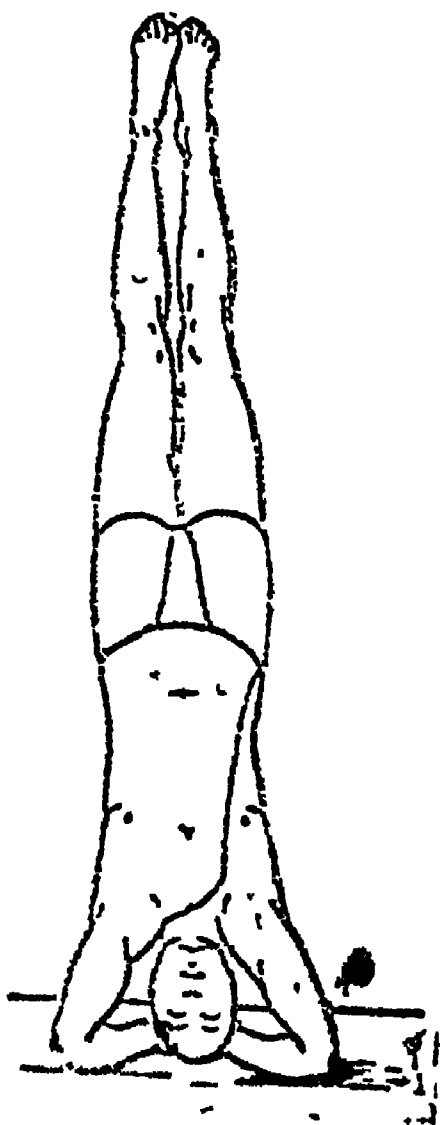
कि प्रातः उठे, स्वच्छ मैदानमें दीर्घ शंकाको जावे, आकर दन्त-धावनी करे (हो सके कुछ आपत्ति न जान पड़े तो स्नान भी करले) पश्चात् हलका लङ्गोट (या धोती ही) कसले और पद्मासन लगाकर बैठे प्राणायाम करे, अन्तकी दोनों अंगुलीसे नाकका बायां छिद्र दबावे और दाहिने नाकसे "ओम्" शब्द कहते हुए वायुको ऊपरकी ओर खींचे, जब ४-८ अथवा १६ शब्द हो जावें तो अंगुष्ठसे दाहिने छिद्रको भी बन्द कर ले और जितने शब्दों द्वारा पवन ऊपर खेंचा है, उससे दूने "ओम्" शब्द मनमें बोले, पश्चात् दाहिने छिद्रको दबाये रहे और बायें छिद्रको ढिला दे, जितने शब्दोंद्वारा पवन खींचा था उतने ही शब्दोंद्वारा निकाल दे। यदि प्राणायाम करते समय मूल द्वारा (गुदा छिद्र) को संकुचित रखनेकी आदत डाले याने मूलद्वारसे पवनको ऊपर की ओर खैंचे द्वार संकुचित होगा तो, इस आदतसे स्वप्नदोष और शीघ्र पतन रोकनेमें बड़ी सहायता मिलती है। अस्तु। इसी क्रियाको एक बार उल्टी करे याने बांयें नाकसे पवन लेकर दाहिनेसे छोड़े, इसका नाम एक प्राणायाम हुआ, इसके पश्चात् दोनों हाथोंकी मुट्ठी बांधकर कोहनी से पंजातक अपने मुँहके सामने (मुँह दीवारके सामने और समीप रहे) पृथ्वीपर टिकाये जिसके मध्यमें एक कपड़ेकी नरम इँडुरी बनाकर रखे, इसपर अपना सिर टिकाकर पैर ऊपरकी ओर चढ़ा दे, प्रथम अव[illegible]वार का आश्रय ले ले। प्रथम दिन केवल पांच सेकंड याने पन्द्रह दिनमें ३ मिनटका अभ्यास हो जाना चाहिये। बढ़ाते २ छः महीनेमें ठीक बीस मिनटका अभ्यास कर ले, कुछ दिन पश्चात् दीवारका आश्रय लेनेका अभ्यास छोड़ दे और दोनों पैर तने हुए बेलाग रखे बीच बीचमें पद्मासन ऊर्ध्व (याने आलखी पालखी मारना) वृश्चिकासन, (याने सिरको भी ऊँचा करके

ा, कि किसी किसी हप्तामें तो ८-९ बार तक हो जाता था, परन्तु शीर्षासनसे बहुत ही लाभ हुआ है।

मदनलाल-पंडितजी! योगक्रिया भी विचित्र है इससे भी बड़े बड़े कार्य सिद्ध होते हैं।

विद्याधरजी-बाबू साहब! वर्तमानमें अनेक औषधियोंका आविष्कार हो रहा है, परन्तु प्राचीनकालमें जब मनुष्य बिल्कुल अज्ञान थे उस समय ऋषि लोग (जिस प्रकार आजकल जलचिकित्सावाले जलद्वारा ही सब रोगोंका उपाय करते हैं उसी प्रकार) वायुसेवनसे सब रोगोंको शांत कर देते थे, औषधियोंको कौन जानता था?

मदनलाल-अच्छा आगे बढ़िये।

विद्याधरजी—यदि संसारमें वीर्य, बल और पुरुषार्थ बढ़ानेवाली औषधि ढूँढी जाय तो सम्भव नहीं कि दूधसे बढ़कर गुणवाली कोई औषधि मिले "दूध बियारी जे करैं, तिन घर वैद्य न जाय" इस बातको प्रायः सब ही जानते हैं और दूधका सेवन करते भी हैं, परन्तु उसका ठीक ठीक गुण प्राप्त नही होता, इसका कारण यही है कि जिस प्रकार कच्चे घड़ेमें सिंहिनीका दूध नही ठहर सकता इसी प्रकार वर्त्तमान समयके शक्तिहीन वीर्यविहीन मनुष्योंको दूध नहीं पचता, याने दूध पेटमें पड़ते ही फट जाता है और जब वह फट ही जाता है तो गुण क्या दिखा सकता है? जिसे दूधका गुण लेना हो दूधको मिश्री घृत डालकर औटावे और मामूली ठंडाकर १० मिनट कपूरके कटोरेमें रखकर

पीवें तो सम्भव है कि दूध भलीभांति पचकर अपना पराक्रम दिखादे।

कर्पूरका कटोरा बनानेकी विधि।

एक पाव देशी कपूरके चूर्णमें एक पाव नारियलका छिला हुआ भेला मिलाकर गुड़ाखूकी तरह खूब कूटकर लुगदी बनाले, इस लुगदीको एक तांबेके चौड़े पात्रमें रख ऊपरसे मिट्टीका बना हुआ कच्चा कटोरा औंधा रखे और कपड़मिट्टी या उड़दके आटेसे इस प्रकार सन्धि बन्द कर दे कि भाफ न निकल सके, पश्चात् इसे छोटे चूल्हेपर रखकर कनिष्ठिका अंगुलीके समान रूईकी बत्तीवाला तिल्लीतेलका दीपक चूल्हेमें रख चार घण्टेतक उसे समान आंच देवे पश्चात् इसे चूल्हेसे नीचे उतारकर रख दे, ठंडा होनेपर मट्टी-वाले कटोरेपर पानी डालकर गला दे, भीतर उसीके अनुसार कपू-रका कटोरा जमा हुआ मिलेगा, इस कटोरेमें दूध डालकर पीनेसे दूध कदापि नहीं फटता और ठीकसे पाचन होकर अच्छा चम-त्कार दिखाता है। कई मनुष्य ऊपरवाले भागमें मिट्टीके बदले जर-मनी कटोरा जमा देते हैं। और जब वह कपूर निकले ताम्रपात्रसे उड़कर ऊपर जरमनी कटोरेमें जमा हो जाता है, तो उसीके समेत रखलेते हैं जिससे वह सुरक्षित रहता है। परन्तु जर्मन सिलवरके कटोरेमें जमाना हो तो ऊपरीभागमें पानीसे तर मोटा वस्त्र रखना चाहिये। प्रथमावृत्तिमें मैंने कपूरकटोरा मेरे पास मिलनेका विज्ञा-पन दिया था पर अब मैंने इसे बनाना बन्द कर दिया है अब इसके लिये मेरे पास पत्र भेजना व्यर्थ होगा।

A. L. Gupta.

अंक तीसरा

शीतल हुई इन्द्रियके लिये सेंक।

एरंडके बीज १ तोला, पुराना गुड़ १ तोला, काले तिल १ तोला, बिनौले की गिरी १ तोला, पुराना खोपरा १ तो०, कूट, जायफल, जावित्री, अकरकरा ६-६ मासे सबको कूटकर उसमें २ तो० सहत मिला पोटली बना लो पश्चात् एक बर्तनको अग्निपर रख उसमें बकरीका दूध डालो। जब गर्म हो जाय तब उसमें पोटली डुबा डुबाकर इन्द्रियपर (सुपारी अगला भाग बचाकर) सेंक करो। अनुमान १५ मिनिट इस प्रकार ४१ दिन करनेसे इन्द्रियकी शीतलता जाती रहती है।

सेंकके खाने योग्य नुस्खा।

बड़े गोखरू १३॥ मासा और काले तिल १३॥ मासाका कपड़छान किया हुआ चूर्ण सेर भर गौके दूधमें रबड़ी बनाकर नित्य ही सेंकके पश्चात् खानेसे शीघ्र लाभ होता है।

इन्द्रियकी शून्यतानाशक तेल।

यदि स्पर्शज्ञान न हो, ढीलापन अधिक हो तो कौड़िया लोभान (सफेद अंगवाला) ४ तोला लेकर करौदेके रसमें खरल करो पश्चात् ४ तोले घृतमें खरलकर "पाताल यन्त्र" द्वारा तेल

निकाल शीशीमें भर लो। इसके सेवनके प्रथम इन्द्रियपर हल्दीका चूर्ण लगाकर इस तेलको "तिला सेवनविधि" के अनुसार उपयोग करो तो ईश्वरेच्छासे २१ दिनमें पूर्ण लाभ होगा।

बांकपननाशक तेल।

यदि इन्द्रियको बांकपन आ गया हो अथवा शुष्क हो गई हो तो तिली तेल १२ तो०, चमेलीके पत्तोंका रस ६ तोला, मैनसील, कूट, सुहागा, प्रत्येकका चूर्ण दो दो तोले उसमें मिला लोहेकी कड़ाहीमें डाल मन्दी आंचपर पकावो (इसके धुआंसे आंखों को बचाना चाहिये) जब रस जलकर तेल मात्र रह जाय उतार लो और छानकर शीशीमें भर लो। तिला सेवन विधि" के अनुसार ५१ दिन लगानेसे इन्द्रियका टेढ़ा व शुष्कपन नाश हो जाता है।

जिस प्रकार टेढ़ी नलीवाली बन्दूकका निशान उचित स्थानपर नहीं लगता इसी प्रकार टेढ़ी इन्द्रियका वीर्य, गर्भाशय में नहीं पहुँचता।

सब प्रकारकी नपुंसकताके लिये।

ऽ। गायका घी लोहेकी कड़ाहीमें डालकर चूल्हेपर चढ़ावो, गरम हो जानेपर उसमे एक बड़ी जोक (पानीवाली) मरी हुई डाल दो जब इस जोकके पेट फूटनेका धड़ाका आप सुनें तो कड़ाही उतारकर उसमें २ तोला मोचरसका चूर्ण डालकर नीमके सोटेसे बराबर १२ घण्टा घुटाई करें, इस घीकी नित्य मालिश करनेसे अत्यन्त तेजी आती है, इन्द्रियके सब दोष नष्ट हो जाते हैं।

तिलाओंका बादशाह ।

एक बैंगन (भट्टा) ऐसा लावो, जो डालपर ही पीला हो गया हो उसमें ७ नग बड़ी पीपल खोसकर हवामें लटका दो, जब यह सूख जाय तब इसे आध सेर मीठे तेलमें पोपल सहित डालकर लोहेकी कड़ाहीमें पकाओ, जब पकने लगे उसी समय ७ नग केचुआ और २॥ तोले लहसुनकी छिली हुई कलियें डाल दो, जब सब चीजें पक जावें उतार लो और खरलकर शीशेमें भर लो इसको "तिला सेवनविधि" अनुसार २१ दिन सेवन करनेसे इन्द्रियके सब रोग समूल नष्ट हो जाते हैं परन्तु विना प्रयोजन भूलकर भी तिलाओंका सेवन नही करना चाहिये।

स्तम्भनशक्तिवर्द्धक योग ।

अकरकरा १ तोला, रिहांके वीज ८ तोला, सफेद कन्द ९ तोले तीनोंका कपडछान चूर्ण १॥ तोला फांककर ठण्डा जल थोडासा पी लो; यदि वीर्य शुद्ध है तो विना निम्बू चूसे कदापि स्खलित न होगा, परन्तु चूर्ण फांकनेके दो घण्टा पश्चात् कार्यमें प्रवृत्त होना चाहिये।

कमलकी केशर, सहदेवी, घी और शहद नाभीपर लेप करे तो स्तम्भनशक्ति बढ़े।

लिंगवर्धक ।

असगन्ध, घुडवच, कडवा कूट, जटामांसी, सफेद सरसो सम भाग पीस बकरीके दूधमें घोलकर नित्य लगावे तो लिं

तथा

बराहकी चर्बी और सहत मिलाकर लेप करनेसे कुछ दिनमें लिंग स्थूल और दृढ़ होता है।

तथा।

इमलीके चीयों (बीजों) को चार दिन जलमें भिगोकर छील डालो और सुखाकर चूर्ण बनालो इसमें दुगुना पुराना गुड़ मिलाकर चनाप्रमाण गोलियां बना लो। स्त्रीके पास आनेके दो घण्टे प्रथम १ गोली खा लेनेसे स्तम्भनशक्ति अत्यन्त बढ़ती है।

तथा।

असगन्ध, अकरकरा, जायफल, जावित्री, चीनिया कपूर, खुरासानी अजवायन, बच, धुली हुई भङ्ग और राय सेन्दुर प्रत्येक वस्तु ७-७ मासे लेकर कूट पीस छान लो, इसमें ५६ मासे मिश्री का चूर्ण मिला गुलाबजलके सहारेसे ४-४ मासेकी गोलियां बना चांदीके वर्क लपेटकर छायामें सुखा लो, शामको १ गोली खाकर १ मूली खा लो, इतनी शक्ति बढेगी कि लिख नहीं सकते। यदि तीक्ष्ण वस्तु या नमक खटाई मिर्च न खाया जाय तो घण्टोंतक वीर्य स्खलित न हो।

इन्द्रियको तत्क्षण बलकारक याग।

ब खस २ मासे, सोंठका काढ़ा २ तोला, पुराना गुड़ १॥ मासा, अत्मिलाकर पीनेसे जबतक खटाई न खाई जावे वीर्य स्खलित न होगा। परीक्षित है।

स्त्री द्रावण ।

कसीस, फिटकडी, माजूफल समभागके कपडछान किये हुए र्णको शहतमें मिला इन्द्रियपर लेपकर एक घंटा पश्चात् पोंछकर षय करे तो स्त्री शीघ्र स्खलित होगी ।

तथा ।

विषयके आध घण्टा प्रथम २ रत्ती सोनारी सुहागा पानके ड़ेमें स्त्रीको खिला दें तो स्त्री २ या ३ ही मिनटमें स्खलित होती । परीक्षित है ।

तथा ।

एक बैंगन (भट्टा) लाकर उसमें गीली मट्टी लपेटकर भूभ-में (गरम राखमें) दबादे, जब पकजाय निकालकर मट्टी हटावे और निचोले उस रसमें ८-१० पीपल डाल दे और ३-४ दिन भीगने दे पश्चात् निकालकर सुखा ले, इसमें आधी पीपल बारीक पीसकर शहतमें मिला इन्द्रियपर (सुपारी छोड़ दे) मालिश कर घण्टाभर पश्चात् विषय करे तो ऐसा आनन्द आवेगा कि लिखा नहीं जा सकता ।

तथा ।

इमलीका गूदा और गुड़ विषयके एक घंटा प्रथम लगावे पश्चात् पोंछकर विषय करे तो स्त्री स्खलित होवे ।

तथा ।

इसी प्रकार सेंधा नमक तथा कबूतरकी बीठ सहतके साथ लगानेसे फिर पोंछकर विषय करनेसे स्त्री द्रवित होती है ।

तथा ।

वृद्धाके शिरके केशकी भस्ममें समभाग सुहागा मिलाकर सहतके साथ (सुपारी बचाकर) मालिश करे और विषय करे तो स्त्री शीघ्र स्खलित होगी ।

आनन्ददाता योग ।

(१) मुश्क हिना इत्र नंबर १ सुपारीपर अनुमान आध घंटा पहिले आधी रत्ती लगाकर विषय करनेसे अत्यन्त आनन्द आता है (२) कबाबचीनी, दालचीनी, अकरकरा, लाल मुनक्का समभाग पीस सहतके साथ मिला इन्द्रियपर (सुपारी बचा) लेप कर दे एक घण्टा बाद पोछकर विषय करे, दोनोको अत्यन्त आनन्द आवेगा ।

तथा ।

इन्द्रजौ, पठानी लोध, खश, मँजीठ, सफेदसरसो समभाग पीस कपड़छानकर सहतमें मिला विषयके एक घंटा प्रथम लगावे तो आयु पर्यंत स्मरण रहनेवाला आनन्द आवे ।

अंक चौथा

ई भी पौष्टिक औषधि सेवन करनेके पहिले तीन दिन जुलाब लेकर पुराना मल साफ कर दिया जाय तो अच्छा हो, ऐसे करनेसे औषधि अपना चमत्कार शीघ्र दिखाती है।

जुलाब।

(१) रेंडीका तेल (costor oil) अढ़ाई तोला आधसेर गर्म दूधमें डालकर पीनेसे २-३ दस्त हो जाते हैं।

(२) अधभूँजी सनाय, मुनक्का, मिश्री, तीनो वस्तु ३-३ मासा पीसकर गोली बना लें और गर्म जल द्वारा खावे पेट शुद्ध होगा।

(३) कालादाना तीन तोला, सनाय तीन तोला, सोंचर नमक १ तोला लेकर पीस छान आधा तोला सोते वखत गरम पानीसे खा ले उदर शोधन होगा, 'विश्वासः फलदायकः' औषधिका सेवन विश्वासके साथ होना चाहिये, विश्वाससे कण्डेकी भस्म भी लाभ कर सकती है और अविश्वासपर हीराभस्म भी नही। और साथ ही पथ्यकी भी आवश्यकता है, जो मनुष्य पथ्यसे रहै उसे औषधिही क्यो खानी पड़े? यदि कुपथ्यके कारण औषधि सेवन करना पड़ रहा है तो कमसे कम औषधिसेवनके दिनोमें पथ्यसे रहना चाहिये, औषधिकी जो कमसे कम मात्रा लिखी हो उससे आरम्भ कर और साधते हुए आगे बढ़े, 'अथवा गोली लिखी हो तो प्रथम दिवस छोटी गोली ढूंढकर सेवन करे, टाईम जो बताया जाय उसी टाईमपर धन्वन्तरि देवका स्मरण कर औषधिपर विश्वास रखते हुए सेवन करे। औषधि-सेवनके दिनोमें लाल मिर्च, तेल, खटाई, मादक द्रव्य, गुड़, स्त्री-प्रसंग, खुले शिर, खुले पैर धूपमें फिरना, मल मूत्र छींकके वेगको रोकना इन बातोंसे अवश्य बचे रहना चाहिये तबही औषधिका

सच्चा गुण प्राप्त होता है। कई मनुष्य कहते हैं कि भस्मोंका सेवन ४० वर्ष आयुके पहले नहीं करना चाहिये। यह बात वृथा है। भस्म उचितमात्रासे ६ महीनेके बच्चेको भी दी जा सकती है जो पराक्रम एक रत्ती भस्ममें है वह कटोरेभर काष्ठादिक दवामें नहीं हो सकता, परन्तु हो उचित मात्रासे। भस्म ही मृतकको कुछ समयतक जीवित रखनेके लिए सामर्थ्यवान हैं, परन्तु भस्म हो चतुर वैद्यक ज्ञाता और अनुभवी वैद्यकी बनाई हुई, क्योंकि अनुचित क्रिया द्वारा बनी हुई भस्म उतना ही नुकसान कर सकती है, क्योंकि सोंठ यद्दि लाभ करै खांसीको वो अनुचित क्रिया द्वारा खाई जानेपर इतनासाही विकार कर सकती है, वही हाल भस्मोंका समझना चाहिये। उचित रीतिसे बनी हुई शुद्ध भस्म मृतकको जीवित कर सकती है तो अनुचित क्रिया द्वारा बनी हुई, जीवितको मृतक तुल्य भी कर सकती है, परन्तु यह भस्मका दोष नही है यह दोष है बनानेवाले अज्ञान वैद्यका, जो लालचवश लोगोंको कच्ची भस्में खिलाकर उनका स्वास्थ्य बिगाड़ देते हैं और औषधिको बदनाम करते हैं, औषधि यदि अवगुण करै तो उसे बुरी मत समझ बैठो, पहिले वैद्यका विचार करो।

कई मित्रोंका कहना है कि ऐसी औषधि हो जो बुझते हुए दीपकको जिस प्रकार तेल बचाता है उस प्रकार ही अपना गुण दिखावे हां। दिखावेगी सही परन्तु कुछ समय पश्चात जब देहरूपी चिरागकी, बत्तीरूपी नसोंमें उसका अंश पहुँचेगा तब, और अत्यन्त ही शीघ्र लाभ हो तो हो कैसे ? डाक्तरी औषधियोंसे

शीघ्र लाभ होता है, परन्तु उसमें जोखम भी है जैसे एक घीका गाद जमा हुआ पुराना मिट्टीका घड़ा है उसे अग्निमें डाल दीजिये या तो वह तत्क्षण गाद जलकर साफ निकल आयेगा या फूट जावेगा। यह हुआ डाक्तरी औषधिका गुण, पर उसही घड़ेको थोड़ी देर तक किसी खार वस्तुसे पानी डाल डाल कर धोवो तो अग्निकी बनिस्बत अधिक स्वच्छ होगा और उसके फूटने व बिगड़नेका किसी प्रकारका भय न रहेगा, यह हुआ स्वदेशी औषधिका गुण। अब तुम्ही उत्तर दो कि दोनोंमें कौनसा मार्ग उत्तम है? तो आपका मन यही कहेगा कि धीरे२ जल द्वारा धोनेवाला।

उन भाइयोंको कुछ लज्जा आना चाहिये जो अनेक कुकर्म द्वारा अपने शरीरको पहिले तो मिट्टी बना लेते हैं, फिर दो ही दिनमें भीमसेन बनना चाहते हैं, और सोचना चाहिये कि जो मकान १ मासमें तोडा जा सके, उसे पूर्ववत् बनानेमें कमसे कम १ वर्ष और १ वर्षमें तोड़ा जा सके, ऐसी इमारतको बनानेके लिये कमसे कम १२ वर्ष होना चाहिये, इसीके अनुसार तुम लोग अपने रोगकी दशा समझो। यदि तुम्हारा शरीर १ मासके कुपथ्यसे बिगडा है तो तुम्हें १ वर्ष और १ वर्षके कुपथ्यसे बिगडा है तो १२ वर्षतक पथ्यसे रहनेपर अपनी प्राचीन दशाको प्राप्त होगा। अच्छा इतनेको जाने दो। इसके विपरीत याने एक वर्षके कुपथ्य द्वारा बिगड़े हुए शरीरको सुधारनेके लिये १ महीना तो पथ्य रखना चाहिये। ऐसा करनेपर भी सम्भवतः आपकी मनोकामना पूर्ण होगी परंतु आजकल तो लोग औषधिमें तीसरे ही दिन गुण न पानेपर उसे

बुरी कहने लगते हैं परंतु इस बातका ध्यान नहीं करते, कि धन्वंतरि, चरक, सुश्रुत और वाग्भट जैसे अनुभवी ऋषियोंकी निर्मित औषधियां मिथ्या कदापि नहीं हो सकती हैं। पथिकको जो आनन्द अपने हाथकी धीमी २ लालटेनकी रोशनीमें आवेगा वह आनंद दामिनीकी क्षणमात्रिक झलकमें नहीं आ सकता, उसमें तो उसे आनंदके बदले दुःख ही होगा।

इसीलिये जैसी औषधि हो कमसे कम २१ या ३१ दिन खाकर उसकी परीक्षा करनी चाहिये, इतने समयमें अच्छी औषधि होगी तो अवश्य ही अपना गुण दिखावेगा, रोग अंगमें प्रवेश करने के समय मच्छर और निकलनेके समय मदमत्त हाथीके सदृश रूप धारण करता है (जैसा कि हनूमानने सीता सुधि लंकादहन के समय किया था) इतना कह विद्याधरजीने देखा तो नौ बज रहे हैं, बाबू मदनलाल भी निद्रितसे हो गये हैं कभी कभी हुंकारा देते हैं। अस्तु, पण्डितजी इन्हे सावधान कर बिदा हो गृहको गये और बाबू मदनलाल उठकर अपने शयनागारमे जा आनंदसे लेट रहे।

अंक पांचवाँ

दूसरे दिवस नियमित समयपर विद्याधरजी आ बाबू मदनलालके पास बैठकर बोले कि बाबू साहब! अब मैं आपको थोड़ी सी औषधियां जो पुष्टिदाता और वीर्यवर्धक हैं समझाता हूं। ये औषधियां अवश्य ही नपुंसकको पुंसक बनानेका दावा रखती हैं।

सेवनाविधि।

कुछ तो मैं पिछले अंकोंमें लिख आया हूं और कुछ यहां लिखता हूं। जो औषधि दूधके साथ लिखी हो उसके लिये दूध कमसे कम ऽ। और अधिकसे अधिक ऽ॥ हो। दूध गायका उत्तम है, भैंसका दूसरा नम्बर तथा बकरीका तीसरा नम्बर है। उष्ण-कालमें दूध धारोष्ण (तत्काल निकाला हुआ) मिश्री मिलाकर तथा शीतकालमें मिश्री घी आदि मिलाकर औटाया हुआ उत्तम होता है। यदि जलके साथ लिखा हो तो जल ताज़ा व छना हुआ हो, पाक और भस्मोंका सेवन शीतकालमें तथा अवलेहा-दिका सेवन उष्णकालमें उत्तम होता है। पुरुषको इस बातका सदैव ध्यान रखना चाहिये कि ठण्डी औषधियां हानिकारक और गर्म औषधियां लाभप्रद होती हैं। परंतु साथमें घी, दूध, सब्जी आदि भी लेना।

गरीबी नुस्खे।

(१) सफेद प्याजका रस ८ मासे, अदरखका रस ६ मासे, मधु (सहत) ४ मासे, घृत २ मासे ये चारो वस्तु मिलाकर २ मास पर्यन्त चाटनेसे नपुंसक भी पुंसक हो जाता है। तथा-

(२) १ तोला विदारीकंदके चूर्णको गूलरके फलके रसमें मिला चाटे तो तीन मासमें वृद्ध भी तरुण हो जाता है।

(३) २ तोला पिस्ता २ तोला मिश्री, ६ मासे सोंठके चूर्णको १ तोला सहतमें मिला २ रत्ती पिसी भंग डालकर चाटनेसे २१ दिनमें इच्छापूर्ति होती है।

(४) सफेद घुँघची ऽ।, खिरनीके बीज ऽ।, लौंग ऽ। इन सबको महीन कूटकर सात कपरौटीवाली आतशी शीशीमें भरकर

पातालयंत्र द्वारा तेल निकाल ले। इसकी एक सींक नित्य प्रातः और सायं पानमें खानेवाला नपुंसक ४१ दिनमें निश्चय ही पुंसक हो जाता है, परन्तु पान खानेके घंटेभर पश्चात् १ छटांक शुद्ध घी पीना चाहिये।

(५) बेलपत्रका रस तथा घृत ५-५ तोला कमलडंडी १ की भस्म तीनोंको मिला ४१ दिन पीनेवाला मनुष्य अपने नष्ट हुए पुरुषार्थको पुनः प्राप्त होता है। यदि बेलपत्रका रस न निकले तो गर्म करके निकाल लो।

(६) उड़दकी धुई हुई दालका चूर्ण १ तोला, घृत ९ मासे, सहत ६ मासे मिलाकर खानेसे ४ मासमें इच्छापूर्ति होती है।

(७) माजूम चोपचीनी-चोपचीनी बिना घुनी १० तोले, कबाबचीनी, दालचीनी, लौंग, मिर्च, मस्तंगी, सालमपंजा, जावित्री, इन्द्रजौ, मीठा कचूर, अकरकरा, पिस्ता, बादामगिरी, केशर, प्रत्येक ४-४ माशा, कस्तूरी २ माशे, इन सब चीजोंको कपड़छानकर कस्तूरी मिलावो पश्चात् कलईदार कड़ाहीमें १ पाव खालिस सहत डालकर चूल्हेपर चढावो जब सहतमें फेन आवे निकाल दो और उसमें चूर्ण मिलाकर उतार लो। ठंडा होनेपर एक एक तोला प्रमाण गोली बना लो, एक गोली नित्य प्रातः खानेसे ५१ दिनमें वृद्ध पुरुष भी इच्छित बल पा सकता है।

अमीरी नुस्खा।

(१) अभ्रक और हरतालभस्म एक एक रत्ती, पिपली २ रत्ती, इलायची ४ रत्ती, सत गिलोय ८ रत्ती, मिश्री ६ मासे इन सब

वस्तुओंको एक तोला मधुमें मिला ४ महीना खानेसे नपुंसक भी सो स्त्री भोगनेको समर्थ होता है।

(२) स्वर्ण भस्म १ रत्ती, पिपली १ रत्ती, इलायचीके दाने २ रत्ती, मधु ४ मासे नियमपूर्वक दो मास सेवन करनेवाला मनुष्य हाथीकी भांति विषय कर सकता है।

(३) ताजा खोया ५ तोला, मिश्री २ तोला, छोटी इलायचीका दाना २ मासा, ताम्रभस्म १ रत्ती नित्य प्रातः खानेसे ४१ दिनमें नपुंसकता समूल नष्ट हो जाती है।

(४) आधी छटाक माखन, *६ मासे मिश्री, १ रत्ती बङ्ग भस्म, सेवन करनेवाला मनुष्य इतना पुरुषार्थी होता है कि लिख नहीं सकते।

नोट—सब नुसखोंके साथ दूध पीना परमावश्यक है।

हरिशशांक चूर्ण—शुद्ध आंवलासार, गन्धक और सेमरका कन्द समभाग लेकर कपड़ छान करलो और इसमें तीन भावनायें सेमरछालके रसकी देकर छायामें सुखालो। इसकी मात्रा १ मासा प्रातः दूधसे खानेवाला मनुष्य घोड़ेकी भांति मैथुन करता है, जितनी प्रशंसा की जाय थोड़ी है

वानरी गुटका—(केवांछ पाक) छिले हुए केवांछके बीजको पीसकर कपड़ छान करलो और दूधमें सानकर १-२ तोलेकी पकौड़ी बनाकर घीमें तलते जावो और कड़ाहीसे निकालते ही मिश्रीकी चासनीमें डुबोते जावो, जब ये खूब चासनी पी चुके निकालकर सहतमें डुबो दो और पात्रका मुंह बांधकर

---

* माखन कच्चा दूधको मथकर निकाला जाता है।

रख दो, एक एक पकोड़ी प्रातः सायम् दूधके साथ सेवन करनेसे ३ मासमें मनुष्यको अत्यंत बल प्राप्त होता है।

नरसिंह चूर्ण-सतावर, गोखरू, काले तिल, शुद्धविदारीकन्द सोलह सोलह तोला, वराहीकन्द २० तो०, गिलोय २५ तो०, शुद्ध भिलावे ३२ तो०, चित्रक १० तो०, त्रिकुटा (सोंठ पीपल, मिर्च) ८ तो० सब चीजोंको कूटकर छान लो; पश्चात मिश्री ७० तोला, सहत २५ तो०, और घृत १७॥ तोला मिलाकर किसी चीनी या कांचके पात्रमें रख दो, इसमेंसे नित्य २ तो० दूधके साथ सेवन करनेवाला १०० वर्षका बुड्ढा भी तीन मास पश्चात् १० स्त्रियोंको भोग सकता है।

नपुंसक रंजनावलेह-असगन्ध, दोनों मूसली, कौंछबीज, सतावर, तालमखाने, बीजबन्द, गोखरू, जायफर, जावित्री, इसबगूल, सोंठ, मिर्चें, पीपल, लौंग, नागकेसर, कमलगट्टा, छुहारे, बदाम, मुनक्का, चिरोंजी प्रत्येक वस्तु ५-५ तोला कूट, पीस, छान, तैयार कर लो-इन सबको ऽ॥ घीमें भूनकर ऽ२॥ मिश्रीकी नरम चासनीमें डाल दो और ५०-५० नग सोना चांदीका वर्क मिलाकर रख दो, इसकी मात्रा १॥ से २ तोला तक दूधके साथ है। इसके सेवनसे नपुंसकता, मूत्ररोग, पथरी रोग, नवा और वायुके समस्त विकार नष्ट होते हैं।

मदनमंजरी वटी-अभ्रकभस्म ? तोला, वंग भस्म १ तोला, पारा भस्म ०॥ तोला, धोई हुई भंग २॥ तोला, दालचीनी, सोंठ, पत्रज, इलायचीदाना, मिर्च, नागकेसर, जायफल, जावित्री, पीपल, लौंग, प्रत्येकवस्तु १-१ तोला पहले सब औषधियोंको कूट कपड़ छान कर तीनों भस्में मिला लो; पश्चात् १२॥ तो०

सहत, २७ तोला घी, ५४ तोला मिश्री मिलाकर आधा आधा तोलाकी गोलियां बनालो और स्वच्छ भांडेमें रख दो, आधी २ गोली, दोनों समय दूधके साथ खानेवाला नपुंसक भी निस्संदेह मदवाली स्त्रियों का मद खण्डन कर सक्ता है।

शोधन।

आंवलासार-गन्धकके शोधनेकी क्रिया-गन्धक आंवलासार ६ तो०, गायका घी ५ तोला आगपर गला लो और एक बटुवेमें आधसेर गायका दूध हो उसके मुंहपर कपड़ा बांधकर गन्धक और घी तपे हुए उसमें छान दो, गंधक दूधमें पड़ते ही नीचे बैठ जायगा और घी मलाईकी भांति ऊपर रह जायेगा, गंधकको निकालकर पुनः इसी प्रकार करो। तीन बार इस तरह करनेसे गंधक शुद्ध हो जाता है। प्रत्येक बार घी दूध बदल लेना चाहिये। इस घीको खुजलीपर लगानेसे लाभ होता है।

भिलाव-शोधनकी क्रिया-× झाडसे पककर गिरे हुए भिलावोंको लाकर चार प्रहरतक पानीमें उबालो, फिर निकालकर टुकडे-टुकड़े कर लो, पश्चात् उन टुकड़ोंको १२ घण्टा दूधमें औटा लो पश्चात् निकाल १ तोला सोंठ और ४ तो० अजवायनके साथ खूब खरलकर इसको उचित मात्रासे सेवन करनेपर अपरस, खुजली, कोढ़ और श्वांस रोग अच्छे होते हैं।

× भिलावा उबालने-शोधने को इस बातका ध्यान रहे कि इसका धूवां अंगमें न लगे, क्योंकि यह बडा जहरा पदार्थ है। तथा सब अंगमें काले तिलका तेल पोतकर इस क्रियाको करे।

शिलाजीत शोधन-औषधिमें डालनेके लिये, स्वतः पककर गिरे हुए शिलाजीतको लाकर ईंटके रोड़ोंसे खूब रगड़े और उसके नक्कू काटकर फेंक दो पश्चात् रगड़-रगड़कर पानीसे धोकर सुखा ले शुद्ध हो जायेगा।

शुद्ध भस्मकी पहचान-एक लोहेकी कलछी (चम्मच) में भस्म १ रत्ती, घी, सुहागा, गूगल १-१ रत्ती तथा लाल घुंघची का चूर्ण १ रत्ती, डालकर अग्निपर रख दो, यदि कच्ची भस्म होगी तो पुनः जीवित हो जायगी और पक्की होगी तो भस्मकी भस्म रहेगी। इन्हीं पांच चीजोंको मित्रपंचक कहते हैं। चाहे जिस भस्मकी परीक्षा करे।

पुष्टिकारक औषधि सेवनके दिनोंमें मनुष्यको दूध, घृत, मक्खन, मलाई, मेवा पके हुए फल आदिक वस्तुओंका सेवन अधिक रखना चाहिये।

अंक छठवां

विद्याधरजी कहने लगे-बाबू साहब! अब कुछ स्त्री-रोगसम्बन्धी बातें भी आपको समझाता हूं, क्योंकि स्त्री पुरुष दोनों ही सृष्टिके रूप हैं। यदि पुरुष भीमसेन और स्त्री बन्ध्या हो तो वंश कदापि चला नहीं सकता। बन्ध्या उसे कहते हैं जिसे संतान न होती हो, वैद्यक ग्रन्थोंमें तो बंध्यायें २१ प्रकारकी पाई जाती हैं, परन्तु मैं अपनी मतिके अनुसार

केवल ६ प्रकारकी वन्ध्याओं (जो कि वर्तमानमें पाई जाती हैं) का निदान और चिकित्सा आपको समझाता हूँ, ६ प्रकारकी वन्ध्या ये हैं—

(१) जिस स्त्रीको मूत्रयोनि तो है परन्तु पूर्व पापके कारण रजयोनि नहीं है ऐसी स्त्रीको न तो रज आता है और न उसके साथ पुरुष संगम हीकर सकता है, इसे ही हिजड़ी कहते हैं। इसके लिये उपाय निरर्थक है।

(२) जिस स्त्रीकी बाल्यावस्थामें, कुसङ्ग हो जानेके कारण गर्भ झिल्ली फट गई हो उसे " गर्भाशयनष्टवन्ध्या " कहते हैं, औषधि व्यर्थ है। हां ईश्वरभजन, दान पुण्यादिमें चित्त रखनेसे सम्भवतः इच्छापूर्ती हो।

(३) जिस स्त्रीके गर्भाशयमें रजकृमिके विपरीत अन्य क्रिमि उत्पन्न हो जावें (जैसे बच्चोंके मलमें हो जाते हैं) और पुरुषके वीर्यको गर्भाशयमें पहुँचते ही खा जावें. उसे "क्रिमिगर्भाशयवन्ध्या" कहते हैं, ऐसी स्त्रीको चाहिये कि, मूली छीलकर बारीक सूजेसे छिद्र करके उसे अपने गुप्तांगमें बारह घण्टे रखे पश्चात् निकाल कर फेंक दे। पुनः १२ घंटा पश्चात् फिर दूसरा टुकड़ा रखे इस क्रियाद्वारा जितने क्रिमि गर्भाशयमें होंगे सब मूलीके टुकड़ेपर चिपट २कर निकलेंगे। जब तक क्रिमि साफ न हो जायं, करना चाहिये। क्रिमि निकल जानेपर ईश्वरेच्छासे अवश्य ही गर्भ ठहरेगा।

(४) जिस स्त्रीके अधिक दिनतक प्रदर, प्रसूत-रोग, या पातशक आदि कोई रोग ठहर जाय, अथवा अन्य कोई कारणसे

अङ्ग सूख जाय जिससे गर्भफूल सूख जाय तो गर्भ रहना असम्भव है इसे "पुष्पनष्टवन्ध्या" कहते हैं, इसी लिये स्त्रियोंको कोई भयंकर रोग बहुत दिन तक नहीं ठहरने देना चाहिये, अथवा कुपथ्य नहीं करने देना चाहिये, यदि ये रोग हो भी जायं-तो किसी योग्य वैद्यद्वारा * सुपारी, सतावरी अथवा अन्य कोई पाक या घृत बनवाकर खिलाना चाहिये, जिससे उसका रज और अंग पुष्ट हो और गर्भफूल खिलकर गर्भाधानके योग्य हो जावे।

(५) जिस स्त्रीके केवल एक ही संतान होकर रह जाती है, उसे "काकवंध्या" कहते हैं। इसके लिये अपराजिता (लता) को जड़ सहित पीसकर भैंसके नेनू घीमें मिला उसीके दूधके साथ ऋतुकालमें ७ दिन पिलावे अथवा पुष्य नक्षत्रमें रविवारके दिन असगन्धकी ४ तोला जड़ उखाड़ लावे, और ऋतुकालमें ७ दिन पिलावे, पथ्य रखे, ईश्वरेच्छासे अवश्य ही इच्छापूर्ति होगी।

(६) जिस स्त्रीको संतान होकर मर जाती हो उसे "मृतवत्सा वन्ध्या" कहते है। इसके उपाय ये है, कृत्तिका नक्षत्रमें सूर्यमुखी और पीतपुष्पकी जड़ लाकर २ तोला पीसकर जलके साथ पीना चाहिये तथा बिजोरेकी जड़को पीसकर दूध घी मिलाकर ऋतुकालमें पीनेसे दीर्घजीवी संतान होती है।

---

* उत्तम वैद्य,

गुरोरधीताखिलवैद्यविद्य, पीयूषपाणिः कुशल. क्रियासु।
गतस्पृहो धैर्यधर. कृपालुः शुद्धोऽधिकारी भिषगीदृश. स्यात्॥

इसके अतिरिक्त वन्ध्या होनेके और भी ७ कारण हैं।

(१) झिल्लीका कच्ची अवस्थामें फटजाना।

(२) झिल्लीमें हवा भर जाना।

(३) गर्भफूल (झिल्ली) में मांस बढ़जाना

(४) गर्भफूलमें सीतला होना।

(५) फूलमें अग्नि बढ़ जाना।

(६) फूलमें जाला लगजाना।

(७) पुरुष नपुंसक न हो, स्त्री भी वन्ध्या न हो तब भी गर्भ न रहे इसमें खास यह कारण है कि नरके इन्द्रियका छिद्र चौड़ा होनेके कारण वीर्य गर्भाशयतक नही पहुँचता, जैसे चौड़े छेदवाली पिचकारीका जल दूर नहीं जाता। मदनलालने कहा यह तो सब ठीक है, परन्तु इन वातोंकी पहिचान कैसे हो ?

विद्याधरजी बोले-जब स्त्रीसे पति ऋतुकालमें संग करे और स्त्रीको स्खलित होनेके पश्चात पूछे कि उसके कौनसे अंगमें पीड़ा है ? जब वह बतावे तो नीचे लिखे अनुसार जाने।

(१) मस्तक पीड़ासे झिल्ली फटना।

(२) देह कांपे तो हवा भरी है।

(३) कटि दुखै तो मांस चढ़ा है।

(४) पिंडुली दुखै तो सीतला जानना।

(५) सर्वांग दुखै तो अग्निप्रवेश।

(६) पेट दुखै तो जाला पड़ना समझे।

(७) और पेडु दुखै तो कीड़ा लगना समझो (जिसका उपाय हम पीछे बता चुके हैं,) अन्य अन्य यहां कहे हैं।

नीचे लिखी औषधियोंकी सेवनविधि यही है कि ऋतुकालमें चार दिन तक रात्रि समय फोहा बना २ कर योनिमें रखे और नित्य बदल दिया करे। पांचवें दिन बन्द करदे, जिस नम्बरकी औषधि हो उसी नम्बरकी बीमारीके लिये जाने।

(१) सैंधानमक, लहसुन और समुद्रफेन समभाग जलके साथ।
(२) तीन मासे हींगको तिली तेलके साथ फाहा बनाकर रखे।
(३) हाथीका नाखून और कालाजीरा अंडी तेलके साथ फोहा बनावे।
(४) राई, कायफल, हड, बहेड़ा, साबुके पानीके साथ फोहा बनावे।
(५) सेवतीके फूलका रस और तिली तेलका फोहा बनावे।
(६) जीरा, सोहागा, बच समभाग जलके साथ फोहा बनावे।
(७) केशर कस्तूरी २-२ रत्तीकी गोली बना रखे।

यदि पुरुषकी इन्द्रियका छिद्र चौड़ा हो तो कुत्तेकी लार (थूक) में रुईकी बारीक बत्ती भिगोकर कुछ दिन छिद्रपर रखो संकुचित होगा।

मदनलाल-पंडितजी! यह तो सब ठीक है, परन्तु कुछ ऐसे योग बताइये कि वन्ध्याकी पहिचान न होने पर भी औषधि लाभदायक हों।

विद्याधरजी-हां! ऐसे योग भी बहुत हैं कुछ बताता हूं जिनसे लाभ होना सम्भव है आगे ईश्वरेच्छा गरीयसी।

१-सोंठ, छुहारा, वंशलोचन, मसकन्द समभाग कूट कर कपड़ छान कर ले और ऋतुकालमें १२ दिनतक ३-३ मांसा खावे।

२-चमेलीकी जड़के छिलकेका ४ मासा चूर्ण काली गायके दूधके साथ ऋतुकालमें ७ दिन पुत्रकी इच्छा रखती हुई पूर्व मुँह खड़ी रहकर पीवै।

३-कसौंदीकी जड़ बकरीके दूधमें मिलाकर पीवै।

४-ढाक (पलाश) के बीज घीमें पीसकर लेप करनेसे गर्भ रहता है, लेप योनिमें करना चाहिये।

५-छुहारे नग १५, धनियाकी जड़ ॥ तो० दूधमें औटा-कर ७ दिन पीनेसे गर्भ रहता है।

६-सफेद कांगनी, बछड़ेवाली गायके दूधके साथ ऋतु-कालमें खानेसे गर्भ रहता है।

७-नागकेशरका चूर्ण प्रतिदिन ३ मासा ऋतुकालमें ७ दिन खानेसे गर्भ रहता है, दूधसे पिया करे।

८-फलघृत-बछड़ेवाली गायका दूध ४ सेर और घी १ सेर, सतावरीका रस ४ सेर, मैदा, लकड़ी, मजीठ, मुलहटी, कूट, त्रिफला, खरैटी, बिदारीकन्द, कांकोली, क्षीरकां-कोली, असगंध, अजवायन, हलदी, हीराहींग, कुटकी, नीलकमल, दाख, दोनों चन्दनका चूर्ण, प्रत्येक आधा आधा तोला पीस, कपड़ छानकर पानीसे लुगदी बनालो। एक कड़ाहीमें लुगदी और सेर भर घी डाल-कर मन्दी आंचपर चढ़ा दो और १ सेर रस डाल दो, जैसे २ रस जलते जाय और और रस डालते जावो, जब सब रस खप जाय तो दूध डालना आरम्भ करो, जब दूध भी पक जाय और अन्दाज आधा सेर बचे तब

घी समेत उतार लो, शीतल हो जानेपर बोतलोंमें भर लो इसकी मात्रा ४ मासासे दो तोला तक है, बलानुसार, देनेसे हिस्ट्रिया, उन्माद, प्रसूत, प्रदर, योनिरोग और वन्ध्यारोग सबको लाभदायक है।

९-सुपारी पाक-चिकनी सुपारी (सफेद तोड़वाली असली) २० तोला, सतावरी १० तोला, गोखरू दक्षिणी १० तो० चूर्णकर सबको गायके आधसेर घीमें भूंज लो, पश्चात बदाम, चिरौंजी, पिस्ता, नारियलका भेला, चिलगोजा, खारक, मनूका, ख खस, प्रत्येक वस्तु १-१छटांक लेकर कतरकर एक पाव गायके घीमें भूंजकर उसमें मिला दो, पश्चात् इलायचीदाना, वंशलोचन, मंजीठ, तेजपत्ता, मुलहठी, बालहरें, सोंठ, पीपली, कायफल, प्रवाल भस्म (मूंगाभस्म) असली प्रत्येक वस्तु १-१ तोला मिला दो, पश्चात कालपी मिश्री १। सेरकी चासनी कर सब दवाएं उसमें मिला २-२ तोला प्रमाण गोली बना ले। ऊपरसे चांदीके वर्क लपेटकर स्वच्छ पात्रमें रख दे। इनमेंसे एक गोली प्रातः औटे हुए दूधके साथ सेवन करे और सपथ्य रहे तो सर्व स्त्रीरोग नष्ट हो जाते हैं।

नोट-यदि किसी वस्तुका नाम समझमें न आवै तो निघण्टु या भावप्रकाशमें देख लो, उनमें औषधियोंका रूप रङ्ग जाति प्रत्येक देशकी भाषाओंमें समझाया गया है।

अंक सातवां

विद्याधरजी—बाबू साहब ! अब मैं आपको थोड़ासा विवरण, सगर्भा और प्रसूता स्त्रियोंका समझाता हूं, जिस का जानना भी परमावश्यक है।

यदि सगर्भा स्त्रीका उदरस्थ बालक पांचवें छठवें मासतक हलचल न करे तो इस बातका पता लगाना चाहिये कि किसी कुपथ्यके कारण वह मृतक तो नहीं हो गया है ? यदि निश्चय हो जाय कि वह मर गया तो गर्भपात कर देना चाहिये, क्योंकि मृतक बच्चा पेटमें रहनेसे स्त्रीके प्राणोंपर आ बनती है।

पतनौषधि ।

(१) लाहौरी नमक और सरका औटाकर पिलानेसे गर्भ पतन होता है।

(२) ठण्ड थूहरका दूध मस्तकपर लेप करे तो पतन होता है।

(३) कड़वी तूंबीको बीज सहित जलमें पीसकर गुप्तांगमें लेप करे तो पतन होता है।

(४) २ तोला बथुवाका और २ तोला गाजरका बीज, आधा सेर जलमें औटावे पावभर बचनेपर छान कर पिलावे तो पतन हो।

५) घोड़ेके लीदकी धूनि दे तो पतन हो।

(६) १ तो० कलमी शोरा गरम दूधके साथ खानेसे पतन होता है।

यदि अकालमें गर्भमें बच्चा फड़कता हो, तथा स्त्रीकी पीठमें पीड़ा, चित्तमें व्याकुलता होती हो, बार बार वमनकी शंका हो तब, समझना ये लक्षण गर्भपातके हैं, उसके निवारणार्थ निम्न उपाय करना चाहिये। सगर्भाको कोमल बिछौने पर करवटके बल लिटाकर पानीसे तर कपड़ा उसके पेडूतक रखे और थोड़ी फिटकड़ी मिले हुए जलमें वस्त्र भिगोकर योनिपर ढांप रखै व उसी कपड़ेको ऊपर (नाभी) तक तर करके रखे, स्त्रीको बार २ उठने बैठने न देवे; हलका भोजन देवे, तीक्ष्ण पदार्थ न देवे, ईश्वरेच्छासे अवश्य ही गिरता हुआ गर्भ थम जायगा, यदि किसी प्रकारकी चोट लगनेके कारण गर्भपात होने लगे तो नागरमोथा, मोचरस, इन्द्रजौ और सुगन्धवाला सब वस्तु १-१ तोला जौ कूटकर एक पाव जलमें चतुर्थांश क्वाथ बनावे और शीतलकर पिला दे तो अवश्य लाभ होगा।

यदि प्रसवकालमें बच्चा योनिद्वारमें आड़ा टेढ़ा होकर अटक जाय अथवा मर जाय तो नागदौन और चीतेकी जड़ पिलानेसे विकृत (बिगड़ा हुआ) गर्भ पतित हो जाता है, मेरे देखनेमें आया है कि एक स्त्रीके प्रसव कालमें असावधानीके कारण बच्चा गर्भद्वारमें आकर अटक गया, उसका केवल एक हाथ ही बाहर निकल आया था, अनेक प्रयत्न करनेपर भी वह प्रसव नहीं हुआ, दो दिन बीत गये, प्रसूताके मरनेका समय निकट जान एक पुरुषने उस (प्रसूता) की योनिमें हाथ डाल बच्चेके तालुको अंगुलियोंसे फोड़

दिया जब वह रक्त बहकर शुष्क हो गया तो बाहर निकाल लिया गया। कई बार ऐसा भी हो जाता है किसी कुपथ्यवश गर्भस्थ बच्चेका रक्त मांस तो पात हो जाता है परन्तु उसका चमड़ा गर्भाशयमें रह जाताहै जिससे भविष्यमें गर्भ नहीं रहता और उस स्त्रीको समयानुसार अनेक रोग सताया करते हैं।

(१) कुमुदकी जड़, वरियारी, घी, दूध, सहत, शक्कर इन्हें भली भांति पकाकर ७ दिन पिलानेसे गर्भस्राव त्रिदोष, सूजन, वमन और सर्व प्रकारकी वेदना नाश होती है।

(२) सुगन्धवाला, अतीस, मोथा, मोचरस, इन्द्रजी इनका क्वाथ बना दूध मिश्रीके साथ पिलानेसे सगर्भाके प्रदर और कुक्षिरोग शान्त होते हैं।

(३) मुलहठी और जम्भीरीका चूर्ण दूधके साथ पिलानेसे शुष्क गर्भदोष निवारण होता है।

गर्भ रक्षा।

यदि गर्भ दिनके पहिले (याने नौ मास भीतर) पतित होता जान पड़े तो निम्न औषधियां पिलाकर गर्भ-रक्षा करनी चाहिये। प्रदरके कारणवश जिस स्त्रीका गर्भाशय कमज़ोर हो अथवा जो स्त्री गर्भाधान पश्चात् भी पतिसंग करे या तीक्ष्ण वस्तुओंका सेवन अधिक करे तो उसे ऐसा कुसमय देखना पड़ता है।

(तीसरे मासमें गर्भरक्षा)-श्वेत चन्दन, खस, पद्माख, तगर पांच पांच मासे नित्य शीतल जलमें पीसकर पीवे।

वा सुगन्धवाला, नीलकमल, वनमूंग

ये समभाग लेकर दूध मिश्रीके साथ पीवे।

(पंचम मासमें) नागकेसर, कमलगट्टा, कुमुदपुष्प, कमलनाल इन सबको बकरीके दूधमें पीवे।

(छठवें मासमें) बालछड़, इलायची, नागकेसर मुनक्का, कमलनाल शीतल जलमें पीसकर पीवे।

(सातवें मासमें) इन्द्रजौ, कैथफलकी गिरी, धानकी खील सालममिश्री समभाग पीसकर बकरीके दूधके संग पीवे।

(आठवें मासमें) गजपीपल, पद्माख, कमलकी केसर, कमलगट्टे धनियां इन चीजोंको शीतल जलके साथ सेवन करना चाहिये।

पेटमें पीड़ा होते ही, औषधि आरम्भ करे और पीड़ा शांत होते ही दवा पीना बन्द कर दे, विना प्रयोजन पीना वृथा है। कई स्त्रियोंके पेटमें एक वर्ष पर्यन्त बच्चा रहता है। नवम मासके आरंभसे ही बच्चा कभी भी उत्पन्न हो कोईआपत्ति नही। सुना जाता है कि घोड़ेकी पांव डोरको लांघ जाय तो बच्चा गर्भमें अधिक दिन रहता है। गर्भवतीकी छाया पड़नेसे सर्प अन्धा हो जाता है, गर्भवतीको यदि कोई जानवर काट दे तो उधरका बच्चा जब उत्पन्न हो जाय और उसे कभी वह जानवर काटे तो जहर बिलकुल कम चढ़ता है, गर्भवती स्त्रीको यदि बिच्छू खावे और उसे कोई झाड़े तो उसका झाड़ा नष्ट हो जाता है।

सुखप्रसव।

(१) सफेद पुनर्नवाकी जड योनिमें रखे।

(२) अपाम ... मूल जड़ योनिमें रखे।

(३) कलियारीका जड़ पीसकर जलके साथ योनिमें प्रवेश करे और नाभिपर ... करे।

(४) दशमूलका काढ़ा घी और दूध मिलाकर पिलावे।

(५) सफेद घुंघचीकी जड़ उत्तरमुंह खड़े होकर उखाड़ लावे और कच्चे सूतके साथ कमरमें बांधे।

(६) कष्टवतीके कमरेमें पके कंडेकी आग रखकर उसपर मुलहठी-का चूर्ण छिड़के और वह धुँआ उसे पिलावे तो तुरंत प्रसव होता है।

(७) कटाई और लाहौरी नमक समभाग घीके साथ खिलावे तो सुख प्रसव हो।

सुखप्रसव मन्त्र।

"ओम् मन्मथ २ वाहिनी लम्बोदर मुंच मुंच स्वाहा" यह मन्त्र पढ़कर पवित्रतापूर्वक जल भर लावे और सात बार अभि-मन्त्रित कर पिला दे।

तथा।

अस्ति गोदावरीतीरे, जम्बला नाम राक्षसी।
तस्याः स्मरणमात्रेण विशल्या गर्भिणी भवेत॥

पवित्रतापूर्वक जल भर लावे, उक्त मन्त्र द्वारा ७ बार अभि-मन्त्रित कर गर्मकर पिला दे।
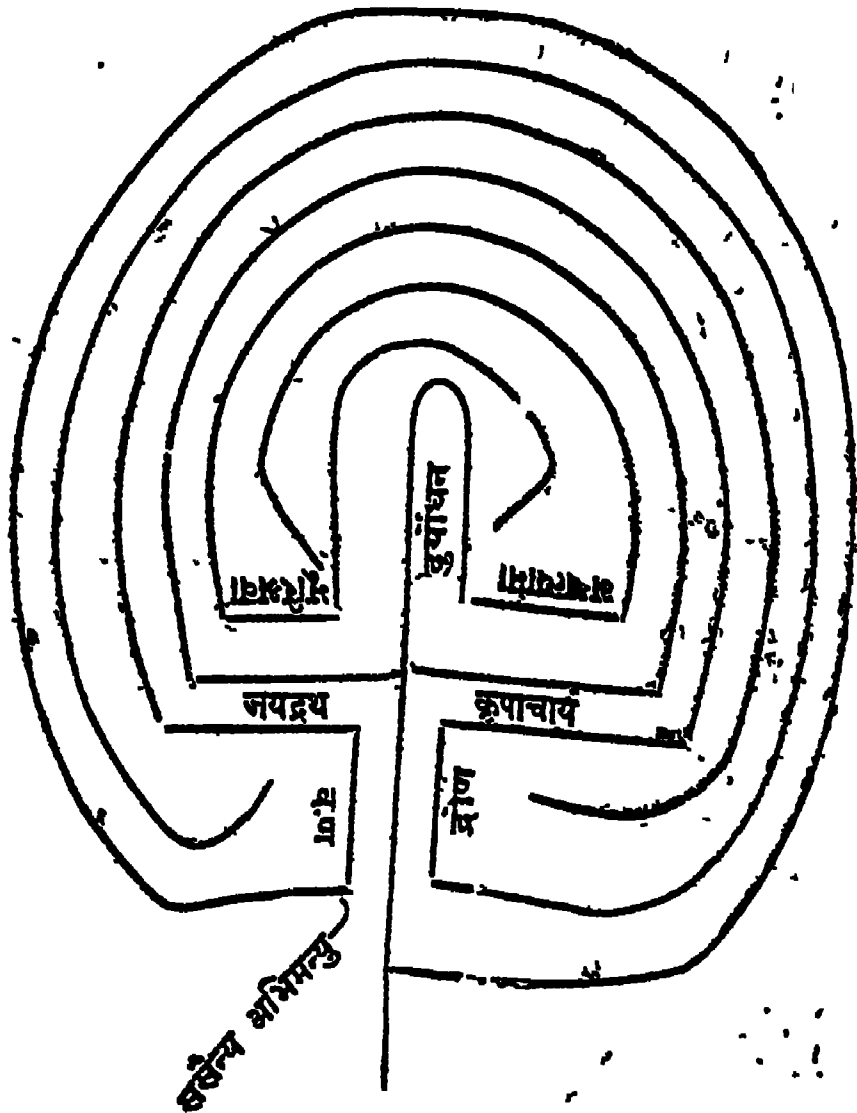
व्यूह चक्र।

उक्त व्यूह चक्रको कांसेकी चौड़ी थालीमें केशर, मृगमद, गोरो-चन तीनों वस्तुकी स्यांही बना अपामार्गकी कलमसे पूर्व मुख बैठकर

लिखे और स्वच्छ-पवित्र जल गर्मकर उसमें धोकर कष्टवतीको पिला दे, तो निश्चय सुख प्रसव हो।

जिनको प्रसवकालमें अधिक कष्ट होता हो उन्हींके लिये ये प्रयोग करना चाहिये, परन्तु जिन्हें स्वयं ही सुखप्रसव हो जाता है उन्हें कोई प्रयोगका उपयोग नहीं करना चाहिये। मारवाड़में कष्टवतीको सुखप्रसवके वास्ते गाजरका बीज औटाकर व बंगालमें गरम २ चाह पिलाते हैं।

प्रसूताके रोग।

यदि प्रसूता स्त्री बीमार हो तो निम्न औषधियों द्वारा उपाय करे- (ज्वरके लिये) सोंठ १ तो०, मिर्च, नीलाथोथा २-२ तोला, पीपली ३ तोला, सँभालूके पत्तेके रसमें खरल कर चणा प्रमाण गुटका बना ले; एक गोली नित्य प्रातः दूधके साथ खिलावे।

(दूध अधिकके कारण कुचोंमें तनाव आकर ज्वर हो तो) किसी दूसरे बच्चेको चुसाकर दूध निकलावो अथवा गरम दूधमें बदामतेल डालकर पिलावो १-२ दस्त आवेंगे ज्वर ठीक हो जावेगा।

(दूधकी अधिकतापर) जीरा, मसूर, काहूके बीज सिरकामें पीसकर स्तनोंपर लेप करनेसे दूध सूख जाता है।

(दूध फट गया हो तो) बबूलके गोंदको नरम नरम भुनकर घीमें तल ले और चीनीकी चासनीमें जमा लें, अनुमान आधा छटांक नित्य खिलावे, दूध ठीक हो जावेगा।

(दूध बढ़ानेके लिये) सोंठ खाना बन्द कर दे, दूध घृत अधिक खिलावे, जैतून तेलकी स्तनोंपर मालिस करे; पेठा, मूली, सल-

गम, गाजर, चारोंके बीज, तालमखाना, पोस्ता, गोरखमुण्डी समभागका कूटा छाना चूर्ण नित्य ९ मासा दूधके साथ सेवन करावे तथा शतावरीका चूर्ण ६ मासा नित्य मिश्री मिले हुए दूधके संग पिलावे तथा जीराका चूर्ण ऽ। घीमें भूंजकर मिश्रीकी चासनीमें जमा दे और १-१॥ तोला अनुमान नित्य दूधके साथ खिलावे।

(कफयुक्त खांसीपर) एक तोला बड़ी पीपल कपड़ेमें लपेट भूभरमें भूंज ले, पश्चात् हाथसे मलकर दाना निकला ले, उसमें सुहागा फूला १ तोला, कुलंजन १ तोला, मिर्च १ तोला, अकरकरहा ॥ तो० इन सबको गुवारपाठेकी रसमें ८ प्रहर खरल करके मटरके प्रमाण गोली बनाले और १-१प्रहरके अन्तरसे १-१ गोली चूसनेको दे।

(सूखी खांसीके लिये) बिहीदाना, मुलहटी, खूबकला, उन्नाव, जूफा तीन तीन मासे, बनप्सा ६ मासे, जौकूट करके जलमें डाल दे. जल दो पाव हो. जब एक छटाक रह जावे उतारकर छान ले और २ तो० सहत मिलाकर पिलावे।

(जुखामके लिये) बिहीदाना मुलहटी ३-३ मासा, गाजबाण बनप्सा ६-६ मासा एक पाव जलमें औटावे और छटांकभर रह जानेपर छानकर १ तोला मिश्री डाल पिलावे।

(पेट दर्द) एक बङ्गला पानमें थोड़ा सत पेपरमिंट खिला दे।

(बवासीरके लिये) किसी अनुभवी वैद्यद्वारा जिमीकन्दका पाक बनवाकर दूधके साथ खिलावे और मस्सोंपर रसौत, अफीम और कत्था पीसकर लगावे। बदाम मुनक्का आदि ज्यादा खिलावे।

(दस्तोंके लिये) एक अनारकी डोंड़ी (फूल) में १॥ मासा अफीम भरकर उसे गीले आटेमें लपेटकर भूंभरमें सेक ले जब आटा पक जाय तब डोंड़ीको निकालकर उसमें १ तोला अतीस, ।॥ तोला बेलकी गिरी डालकर खरल करे। १ मासा प्रमाण गोली बना ले, एक २ गोली प्रातः सायम् खिलावे अवश्य ही लाभ होगा।

प्रसूताको यदि कोई रोग हो जाय तो तुरन्त औषधि कराना चाहिये क्योंकि इसका कोमल अंग रहता है, यदि कोई रोग ठहर जाता है तो आयुपर्यन्त कष्ट देता है। प्रसूता अथवा सगर्भाको जुलाब देना मना है।

मिश्री १६ तोला, बंशलोचन ८ तो०, पीपल ४ तो०, इलायची-दाना २ तोला, दालचीनी १ तोला, इन सबको कपड़छान किया हुआ १॥-मासा चूर्ण ४-४ घण्टेके अन्तरसे सहतके साथ चटावे तो प्रसूताके ज्वर खांसी शांत हो, बच्चोंको भी हितकर है, मात्रा कम देना चाहिये, इसे "सीतोपलादिचूर्ण" कहते हैं।

अंक आठवां

लालन-पालन।

इस प्रकार बगीचोंके छोटे कोमल पौधे जल सींचते रहनेपर भी कुम्हला जाया करते हैं, उसी प्रकार सुकुमार बालक अधिक ठंड या तेज धूपसे मुर्झा जाते हैं, अतः इन्हें ठंड धूपसे बचाते रहनेकी अत्यन्त आवश्यकता है।

इन्हे धूपकाल में एड़ीतकका लम्बा खद्दरका कुरता पसीना सोख ने योग्य व गलेतकका कन्टोप ओढ़ाना चाहिये, और दस बजे उप-रन्त चार बजे तक वाहर फिरने नही देना चाहिये। ऐसा करनेसे इनके कोमल अंगमें लूका बचाव होता है। सायंकालके समय इन्हे प्याज हलदी और तेल डालकर लूमें तप्त किये हुये जलसे नहवाना चाहिये। इनके वस्त्र हर तीसरे दिन खार डालकर धो देना चाहिये जिससे पसीने व मैलमें जूं पिस्सू आदि उत्पन्न हो उनके अंगको हानि न पहुँचा सके। जिस समय बच्चा सोकर उठे, इस बातका ध्यान रहे कि उनके अंगमें पसीना रहते हवा न लगने पावे क्योंकि रोम छिद्रोंद्वारा हवा भीतर अंगमें प्रवेश कर, हानि करती है। नित्य ही रात्रिके समय उनके पैरके तालू और मस्तकमें मीठे तेलकी मालिस करना उत्तम है।

वर्षाऋतुमें उन्हें लम्बा ऊनी वस्त्र पहनाना चाहिये ताकि शीतल पवन अंगमें प्रवेश न करे। वस्त्र गीले होते ही तुरंत बदल देना चाहिये, अधिक कीचड़में अथवा बहते हुए जलमें इन्हें नहीं फिरने देना चाहिये, क्योंकि पैर फट जाते है। अंगुलियोंमे खारवे (एक प्रकारके जखम) हो जाते हैं, भूमिमें नही सोने देना चाहिये क्योंकि वर्षाकालमें भूमिके छिद्रोमेसे भभकाके कारण सर्प, बिच्छू, कन-खजूरे आदि विषैले जन्तु अधिक निकलते हैं। नित्य ही कडुवे तेल की मालिश कर उष्ण जलसे स्नान करा देना उत्तम होता है। वर्षाकी हवासे बचाना चाहिये, अर्थात् वर्षा हुआ जल नही पीने देना चाहिये, तालावोंके तटपर जानेसे रोकना चाहिये तथा अधिक फल पत्तियां एवं गरिष्ठ पदार्थ नहीं खाने देना चाहिये।

शीतकालमें मोटे लट्ठेका कुरता पहिरावे चाहे शिर खुला रहने दे, ताकि पुष्ट होवे। प्रातः जलदी उठनेकी आदत डाले, टट्टी बैठा-

नेके पश्चात हाथ मुँह धोकर हो सके तो उष्ण दूध पीनेको दे देवे. जापानमें बच्चोंको प्रातः चार बजे उठाकर मील दो मील हवामें घुमाते हैं ताकि बदन पुष्ट हो और तारके गुन्थे हुए पलंग अथवा काष्ठके तखतपर सुलाते हैं। शीतकालमें इन्हें एक दिनकी आड़से कडुवा तेल मर्दन कर ताजा कूवेके अथवा किञ्चित् उष्ण जलसे स्नान कराना चाहिये शीतकालकी पवन हानिप्रद नहीं, बल्की लाभप्रद होती है (परन्तु वर्षाकी नहीं)।

इनके बिस्तर स्वच्छ कीटाणु और मलरहित होने चाहिये यदि बच्चा अधिक छोटा हो तो बिस्तरपर एक और मोटा कपड़ा बिछाकर रखना चाहिये, ताकि बच्चेका मलमूत्र बिस्तरेमें न लगे और मलमूत्रवाले वस्त्रको नित्य धोकर स्वच्छ कर लेना चाहिये। मामूली पवनके स्थानमें इन्हें सुलाना चाहिये। अधिक गन्द धुंवां और मच्छर मक्खीवाले कमरेमें नहीं सोने देना चाहिये, जब ये सो जांय तब माताको चाहिये कि इन्हें सत्पुरुषोंके अथवा वीर बालकोंके चरित्र, कहानीरूपमें सुनावे, ताकि उनकी बुद्धि और विचार भविष्यके लिये दृढ़ हो। इसी लिये शिक्षित सन्तान बनानेके लिये माताओंको विद्या पढ़ी हुई होना चाहिये, इनकी इच्छानुसार वस्तु न मिलने पर चोरी करना सीख जाते हैं। इन्हें बदमाश बालकोंके साथ नदी, तालाब, कुआं, नाटकशाला, इमली बेरके नीचे, जङ्गलमें, जीर्ण मंदिरोमें अथवा भयके स्थानोंमें नहीं जाने देना चाहिये, क्योंकि उनमें बुरी लतें पड़ जाती हैं वे आयुपर्यंत दुःखी रहते हैं। जिस प्रकार छोटेसे पौधेकी टहनीको चाहे जिधर मोड सके हैं, परन्तु बड़े वृक्षकी टहनी मोड़नेसे टूट जाती है यही दशा बालकोंकी है। उन्हें सच्चरित्र या चरित्रहीन, देशभक्त या देशशत्रु, पण्डित या मूर्ख बालपनमें ही बना सकते हैं, उस समय उनकी

बुद्धि निर्मल रहती है, इस कारण बड़ी अवस्थामें वे स्वतन्त्र हो जाते हैं, मां बापकी शिक्षा वृथा होती है, पांचवें वर्षके प्रारंभमें ही शुभ मुहूर्त शोधकर पाठशालामें विद्याध्ययनके लिये बैठाना चाहिये इस समयसे बच्चोंको प्यार करना त्याग दे।

लाड़नते बहु दुःख है, ताड़नतें सुख जानि।
शिष्य पुत्र नहिं लाड़िये, लाड़ करेते हानि॥

तथा।

लालयेत् पंच वर्षाणि, दश वर्षाणि ताडयेत्।
प्राप्ते तु षोडशे वर्षे, पुत्रे मित्रवदाचरेत्॥

"अपुत्रस्य गृहं शून्यं" पुत्र विना गृह अन्धकारमय है। धन्य है उस गृहको जहां छोटे २ बालक धूलभरे केश, लारभरा मुंह और प्रेमभरे नेत्रोंद्वारा मां लोती मां लोती आदि शब्द कहते हुये आकर माताकी जंघाओंसे लपट जाते हैं और अनेक प्रकारसे बालक्रीडायें करते हैं।

इन्हें मैले कुचैले कभी नहीं रहनेदेना चाहिये, क्यों कि मैलेसे भी अनेक प्रकारकी खाज खुजली तथा दाद आदि रोग उत्पन्न हो जाते हैं।

बच्चोंकी बीमारी समझना कठिन है, क्यों कि न तो वे बोल ही सकते हैं और न संकेत द्वारा ही समझा सकते हैं। अस्तु, मैं कुछ औषधियां अंकित करता हूँ इनसे काम लें, यदि भयंकर रोग जान पड़े तो किसी वृद्धा दाई अथवा योग्य वैद्यको बुलाकर उपपायौषधि कराना चाहिये। बनते तक, बच्चोंको शीतल औषधि कभी नहीं खिलाना चाहिये, गर्म तो हर हालतमें संभाली जा सकती है परन्तु सर्दीका संभालना कठिन है।

"गर्मी जाय धेलेके जीरेसे-सर्दी न जाय लाखके हीरेसे"

इन्हें अग्निसे बहुत बचाना चाहिये, अग्निके समीप नहीं जाने दे। दिवाली होली आदि त्यौहारोंमें अपने हाथसे पटाखे नहीं चलाने देना चाहिये क्यों कि पटाखे चलाते समय कितने ही बच्चे जल-कर मर चुके हैं। यदि अभाग्यवश ऐसा समय आ जाय और बच्चेके वस्त्रोंमें आग लग जाय तो उन्हें भागने नहीं देना चाहिये, उनके वस्त्र फाड़ दे या उन पर राख छिड़क दे या भूमिपर लिटा दे। ऐसा करनेसे अग्नि शांत होती है। यदि इनमेंसे एक भी उपाय न सूझ पड़े तो पानी डाल देना चाहिये, परन्तु पानी डाल देनेसे फफोले पड़ जाते हैं। यदि फफोले पड़ जायँ तो उन्हें फूटनेसे बचाना चाहिये और उनपर कलीके चूनेका स्वच्छ जल नारियलके तेलके साथ फेंट फेंट कर लगाना चाहिये। जब दो चार दिनमें फफोलोंकी जलन शांत हो जाय, तब (फूटे हुए फफोलों पर) पीप-लके अकलेकी राख डालना चाहिये।

छोटे २ बच्चोंको सड़कके बीचमें जहांपर घोड़ा, बग्गी, टांगा, मोटर आदि आती जाती हों स्वतन्त्रतापूर्वक कदापि नहीं खेलने देना चाहिये, इसमें बड़ा धोखा रहता है। कितने ही बच्चे इस असावधानीके कारण भी अकाल मौतको प्राप्त होते हैं।

बच्चोंको आभूषण पहिराना भी हानिप्रद है, एक तो इसमें हाथ पैर दबे रहनेके कारण पतले रह जाते हैं दूसरे मेले, बाजार आदि स्थानोंमें दृष्टि चूकते ही बच्चेको दुष्ट, डाकू लोग उठा लेते हैं और उनके आभूषण निकाल, उन्हें मार, नदी नालोंमें फेंक देते हैं।

और इसी प्रकार अत्यन्त शृंगार भी वर्जित है, क्योंकि बच्चोंका शृंगारकर देनेसे नजर दीठका बड़ा भय रहता है। नजरसे पत्थर

फूट जाना सम्भव है तो एक पुष्पकलीयुत बालककी कौन गिनती है ? नजरसे बचनेके लिये उनके मस्तकपर एक काला टीका सदा ही लगा रहने देना चाहिये, उनके हाथ पैरोंको सदैव स्वच्छ रखना चाहिये ताकि उनपर धूल जमकर वे फटने न पावें इससे बचनेके लिये उन्हें मौजे पहिराकर रखना चाहिये। जन्मघुट्टी पिलाने व काजल आंजनेका नित्य ही नियमसा रखना चाहिये। काजल तिल्ली तेलका बनाकर ताजा अंजना उत्तम होता है। बच्चोंको मिठाई अथवा शक्कर अधिक खानेकी लत पड़ जाना भी बुरा है। इससे उनके पेटमें कृमि (चुरने) हो जाते हैं, शरीर कृश होता जाता है, लार बहने लगती है और मुखमें दुर्गन्ध आने लग जाती है।

बच्चोंको अफीम खिलानेका नियम डालना भी बुरा है, किसी अज्ञान स्त्रीने कार्यकी अधिकताके कारण बच्चेके स्वास्थ्यपर ध्यान न देते हुए यह प्रथा निकाल दी है, कि बच्चा अफीमके नशेमें पड़ा रहे और मैं अपना कार्य शांतिपूर्वक करूं, परन्तु उसने इस बातको नहीं सोचा कि अफीम खानेवाले बच्चेको छुड़ानेमें बड़ी व्याधियें उठानी पड़ती हैं, बच्चेको ५ वर्षकी आयुके पश्चात् २-३ रत्ती बचका चूर्ण नित्य खिलाते रहनेसे बुद्धिमान कवि होता है।

बच्चोंका कपाल (सिरका मध्य भाग) नौ मास पर्यंत अत्यन्त कोमल (हड्डीरहित) रहता है, अतः उसे चोटसे बहुत ही बचाना चाहिये। कपालमें ज्ञान और हृदयमें जीवका वास रहता है इस कारण; बच्चोंके इन स्थानोंमें थप्पड़ आदि नहीं मारनी चाहिये।

बच्चोंको हव्वा, बाऊ आया, कान काटेगा, बावा आया, पकड़ ले जायगा इत्यादि शब्दोंसे कभी डराना नहीं चाहिये। ऐसा करनेसे वे सदाके लिये डरपोक रह जाते हैं। हां, जब वे कुछ समझदार हो जावें तब उन्हें वीर बालकोंके भक्तिरसके ग्रन्थ बताना चाहिये।

बच्चोंको १०-११ मासकी आयुमें हरे पीले दस्त उल्टी हों ज्वर आवे तो इसे दांत जमनेका फिसाद समझना चाहिये। ऐसे अवसर पर कितनी ही स्त्रियें स्वइच्छा अथवा गांवकी स्त्रियोंके कहनेसे दांतकी बीमारी समझ उपाय नही करतीहैं यह उनकी निरी मुर्खता है। उनका अवश्य ही उपाय करना चाहिये, इस समयकी जरासी असावधानीके कारण सैकड़ों अबोध बच्चे कालके ग्रास बन जाते हैं! *

प्रत्येक बच्चेको ३ वर्षकी आयुपर्यंत प्रतिमास कृष्णपक्षमें ३ दिन तक एक रत्ती भूंजी हुई हींग, माताके दूधके साथ सूर्योदयके प्रथम खिला देनेसे चुरने (क्रिमि) का भय नही रहता, हीगके अभावमें पपरेल पिलावे।

यह "लालन पालन" विधि, प्रत्येक स्त्रीको जानना चाहिये और जो औषधियां नीचे अंकित की जायँगी इनका भी ध्यान रहना चाहिये।

"बालरोग निदान"

१ जिस बालकका मल फटा हुआ, पतला और दुर्गंधयुक्त हो उसे मलविकार समझना चाहिये।

२ जिस बच्चेका मल सूखा हुआ, थोड़ासा और बलपूर्वक हो तो दूध न पचनेका कारण समझना।

३ जो बालक बार २ अपनी इन्द्रिय खीचे, दांत बजावे, नाक रगड़े गुदस्थानको खुजलावे तो इसे जानना चाहिये कि चुरना है।

---

* (१) दांत जमनेके समय पीली सिरसके बीजोंकी माला बच्चेको पहरा रखना उत्तम है। (२) तथा ताम्बे और लोहेके तारको परस्पर लपेटकर ऊपरसे मखमल मढ़कर बच्चोंके गलेमें बांधना भी हितकर है। दांत और नजर दोनोंको अच्छा है।

४ जिसकी आंखें लाल हों, कीचड़ अधिक आता हो, आंख रग-ड़कर रोता हो तो उसे समझना कि आंखरोग है।

५ जिसका पेशाब लालरङ्गका और थोड़ा २ हो उसे आंतरिक गरमी जानना चाहिये।

६ जिसके मुँहमें लाल श्वेत छाले हो लार अधिक गिरती हो उसे मुँहरोग जानना।

७ सोते समय हांफे, गला घरांवे, खांसी अधिक आवे, पेटमें अफरा हो, पसलियोंमें गढ्ढे पड़ें तो सर्दी जानना। इसे ही डाभा रोग कहते हैं।

८ अंग उष्ण रहै बच्चा सुस्त हो भूख त्याग दे तो ज्वर जानना।

९ यदि बच्चा निद्रावस्थामें चमके चिल्लावे तो नजर-डीठ सम-झना चाहिये।

बालौषधियां।

चुरनापर-अनारका छिलका पानीमें औटाकर थोड़ा २ कुनकुन करके प्रातः सायम् पिलानेसे तीन दिनमें चुरने मर जाते हैं, पश्चात प्रतिमासके बच्चेको २ बूँदके हिसाबसे शुद्ध रेंडीका तेल (Caster oil) गर्म दूधमें पिला देनेसे पेट साफ हो जावेगा।

अजीर्ण मलविकार पर-सोफ या पोदीनेका अर्क २ बूंद शहतमें मिलाकर २-३ दिन चटानेसे अजीर्ण मिटता है तथा २ पाव औटे हुए जलको शीतल करके बोतलमें डाले, उसमें छः मासा कलीका चूना डाल मजबूत काक लगा दे,

१ इसमें बच्चेको सिकना लाभदायक है।

जब चूना नीचे बैठ जाय तब पानीको दूसरी शीशीमें उतार ले, इसमेंसे २ मासा पानी मांके दूधमें मिलाकर ३ दिन खिलावे अजीर्ण शांत होगा।

दस्तपर-खरियामट्टी १ तोला, मिश्री २ तो०, इलायचीदाना १ मासा, लौंग १ मासा, केशर २ मासा, जायफल ३ मासा दालचीनी ४ मासा इन सबका कपड़छान चूर्ण १-१ रत्ती दस्त होनेके पश्चात् मांके दूधमें खिलावे।

गीली खांसीपर-कतीरा १ मासा, बबूलका गोंद १ मासा, मुलेठीका सत्त (रबसूस) १ मासा, खसखस १मासा सबका चूर्ण थोड़ा २ सहतमें चटावे।

सूखी खांसीपर-पीपल और इलायची (छिलकासमेत) अग्निमें भूंज ले और चूर्णकर शहतमें थोड़ी थोड़ी चटावे।

आंखरोगपर[1]-फिटकड़ी, लोध, रसौत, आमी हरदी, मिश्री आधा २ तोला और अफीम ३ मासा, जलमें खरल करके अग्निपर पकाले और १-२ वार बाहर लेप कर दिया करें, यदि कुछ अंश भीतर भी चला जाय तो कोई आपत्ति नहीं, थोड़ा जलेगा।

मुहं आनेपर-सेंकी हुई सौंफ १ तोला, इसबगोल १ तो०, बड़ी इलायची २ मा०, सुहागेका फूल ६ मासा, पोस्तका डोडा २

---

१ औटाते हुए जलमें एक डल्ली फिटकड़ी उतार के पश्चात् फिटकड़ी निकाल कर फेंक दे और इस पानीसे आंख धोया करे।

२ दांत निकलनेके समय, मसूढ़ोंपर सुहागेका फूल सहत मिलाकर लगावे जुलाब द्वारा बच्चेका पेट साफ रक्खे ऊपरी दूध न पिलावे।

मासा इन सबका चूर्ण ३-४ रत्ती मांके दूधमें दो तीन वार नित्य पिलावे तथा १ पाव जलमें १-॥ तोला सोड़ा मिलाकर रखले दिनमें दो तीन वार रुईकी फरहरी बनाकर इसी पानीसे बच्चेके मसूढ़ोंको धोया करे।

नजरपर-किसी होश्यार आदमीसे झाड़फूंक करावे तथा नोकदार ७ मिर्च लाल, भिलावे ७ नग, नमक १ तोला, सरसों लाल १ तोला, थोड़ीसी चौरास्तेकी मिट्टी ये पांचों वस्तु मिलाकर विना बोले बच्चेके ऊपरसे ७ वार फिराकर अग्निमें डाल दे, परन्तु इस वातका ध्यान रखे ये धुवॉ आंख कानमें न लगे क्यों कि भिलावा जहरीली वस्तु है।

जन्मघुट्टी-पांच वर्षकी आयुतक बच्चेको जन्मघुट्टी पिलानी चाहिये। प्रायः सब ही पसारी जानते है, कई कम्पनियां भी बेचती हैं।

पाचक-सम्भर नमक, अजवायन, सनाय, मनूका, हर्र, जायफल, पानीमें घिसकर कुनकुना कर ले और पिलादे इसे अजीर्ण पेट-दर्द, दस्तकी बदबू आदि पेटकी वीमारियां नष्ट होती हैं।

ज्वरके लिये-चिरायता, कुटकी, हरें, कालानमक, अजवायन, अमलतास, गिलोय इनका चतुर्थांश काढा ३-३ मासे पिलाना चाहिये।

सर्दी या डाभापर-यह बच्चोंके लिए भयंकर रोग है, उचित वैद्य

१ गन्धक और लोभान, दोनों वस्तु मिलाकर बच्चेके कमरेमें धूनी देना चाहिये इसकी धूपसे कमरा स्वच्छ रहता है और भूत प्रेतादिकी बाधा नहीं रहती है।

२ लोहे और तांबेके तारको काली मखमलमें सीमकर बच्चोंके पहरानेसे नजर नहीं लगती।

अथवा वृद्धा दाईसे तत्काल उपाय कराना चाहिये, यदि दोनोंमेंसे एक भी न मिले तो ईश्वराश्रय निम्न औषधि करें-

(१) दस्तावर औशधि द्वारा पेट साफ रक्खें।

(२) बच्चेके पेट छाती पसली गला कनपटी इत्यादिको कंडेकी आगसे रेडी तेल और नमक द्वारा खूब सेंक करे, दोनों हाथकी हथेलियोंसे बच्चेको अपने पैरोंपर चित्त लिटाकर २-२ घंटेके फासलेसे सेंकना चाहिये।

(३) लोहेकी छोटी हँसिया (या और कोई लोहेकी वस्तु) अग्निमें लाल करके बच्चेकी पसलीवाली जिस नसमें गड्ढा पड़ता हो दो दो चार २ दाग लगाकर ऊपरसे गरम राख लगा दे (यही जंगली इलाज है)।

(४) इस रोगमें झाड़ फूंक भी उत्तम होती है।

(५) हवाका बचाव रखे और गरम औषधिका उपयोग करे।

(६) गौलोचन, अजवायन फूल अथवा रायसेंदूर जो वस्तु समय पर प्राप्त हो सके १-१ रत्ती अन्य बच्चेके पेशावमें घोलकर पिलाया करे।

(७) ईश्वरका चिन्तवन रखे, गरीबोंको कुछ दान करे क्योंकि " धर्मकी जड़ सदा हरी है "।

बाल पौष्टिकौषधि।

यों तो बाजारमें बालामृत-बालसुधा-बालशक्ति आदि नामधारी बहुतसी औषधियां बिकती हैं परन्तु हैं वे सब अमीरोंके लिये। धनहीन मनुष्यको तो इनके दर्शनभी दुर्लभ हैं और ऐसीही वस्तुओंपर लोगोंको श्रद्धा व विश्वास होता है और विश्वास ही फलदायक

है परन्तु सच पूछिये तो विश्वासपूर्वक बच्चेको चूनेका पानी पिलानेपर जो लाभ होता है वह लाभ उपरोक्त कोई भी औषधिसे नही होता, परन्तु लोग इसे तुच्छ वस्तु जान विश्वास ही नही करते।

एक मिट्टीके स्वच्छ घड़ेमें पानी भरकर उसमें सेरभर पत्थरका विनाबुझा (कलीका) चूना डालदो जब अच्छी तरह गल जाय तो साफ लकड़ीसे मिलादो इसके बाद उसे ढककर २४ घंटातक धरा रहने दो पश्चात् छानकर बोतलांमें भरलो (परन्तु चूनेका अंश बिलकुल न आवे) बस-इसमेंसे प्रति दिन १ तोला पानी और उतनाही दूध मिलाकर दिनभर दो बार पिलावे दूध उष्ण कालमें ताजा व शीतकालमें गरम किया हुआ हो- बच्चोंकी कमजोरी अजीर्ण आदि प्रायः सबही बीमारियोंको दावेके साथ दूर करेगी, जब यह औषधि पिलानेका विचार हो उष्ण कालसे आरम्भ करे।

अंक नववां

निरोग रहनेके उपाय।

मदनलाल-पण्डितजी! यह विद्या तो बड़ी ही रोचक और आनन्ददाता है, प्रत्येक मनुष्यको अवश्य ही जाननी चाहिये।

विद्याधरजी-हांजी बाबू साहिब! आप ध्यानपूर्वक सुनते जाइये यदि आप इसके एक दो नियम भी पालोगे तो आपका स्वास्थ्य बहुत अच्छा रहेगा, अब केवल १-२ अंक ही और शेष है। मनुष्यमात्रको चाहिये कि प्रातः जितनी जल्दी उठ सके उठे और अपने हाथोंकी हथेलियोंका दर्शन करे, क्यों कि—

रहते यदि गर्भ रह जाय तब तो कोई आपत्ति नहीं सब ठीक ही रहता ही है, परन्तु विधवा स्त्रीको गर्भ रह जानेपर बड़ी आपत्ति होती है, अतः समझदार मनुष्य पानी पहले पाल बांधते हैं।

(१) तीन वर्षका पुराना गुड़ १५ दिन तक रजकालमें ४ तोला नित्य खा लेनेसे आयुपर्यंत बांझ रहै।

(२) विषयकालमें स्खलित होते ही स्त्री पेशाब कर ले वीर्य निकाल दे।

(३) पुरुषको चाहिये कि स्खलित होनेके समयमें हट जावे और वीर्य अलग गिरावे।

(४) स्त्री पुरुष दोनो अपने गुप्त अंगमें तेल लगाकर विषय करें तो गर्भ न रहे।

कामेच्छान्यूनकरण-जिस स्त्रीको कामेच्छा अधिक होती है वह भी यथासाध्य परपुरुष ढूंढ़ा ही करती है, अतः स्त्रीको कामेच्छा कम करने योग्य निम्न औषधियां हैं—

(१) लाजवन्तीका बीज और फिटकड़ीके फूलका चूर्ण ३ मासा बकरीके दूधके साथ रजकालमें ७ दिन पिलानेसे कामेच्छा घटती है।

(२) निर्मली और नागकेसर समभाग जौकुट करके जलमें औटावे और नमक मिला रजकालमें १० दिन पिलाकर कामेच्छा घटावे।

(३) स्त्रीको नित्य १ बूंद चन्दनका तेल (Santal oil) पिलावे रहनेसे कामेच्छा नहीं बढ़ने पाती।

पुरुषोंके लिये देह पुष्टिकरने योग-

(१) मौरेठी चूर्ण सहत, दूध घीव संग खाय।
स्त्रीसंगमके ही समय, वृद्ध युवा हो जाय॥

(२) गुर्च आमले गोखरू, सम शर्करा मिलाय।
घी संग चूरण चाटिकै, ऊपर दूध पिलाय॥
अजर अमर पौष्टिक वदन, कामदेवसम होय।
मानहरन तिय मद दमन, जो यह सेवै कोय॥

(३) सकल वैद्यमत यह सुनो, पुरुष विलासी जोय।
आनि सतावरि मूलको, चूरण कीजे सोय॥
पयसँग सेवन नित करै, रमै एक सत तीय।
होय अबही तो आनिके, रतिमें देखो पीय॥

(४) खोद बिदारी कन्दको, चूरन करो सुजान।
घीव दूध संग खाइये, कर्ष जु चार प्रमान॥
वृद्ध पुरुष हो तरुणके, काम चौगुनो जान।
ताप क्षीणता हरणको, औषधि अमी समान॥

(५) गोरखमुण्डी बोकली, शिलाजीत औ खांड।
इनको खाय परहेजसे, हनूमान सम सांड॥

(६) अश्वगन्ध गोखरू मंगावे, सत्व गुरुच लजवन्ती लावे।
सेम्हर कन्द खरैंटी लीजै, तामें मिला सतावरि दीजै॥
बीजबन्द औ ईसबगोल, कौंछ बीजको डालो छोल।
तालमखाने तामें डार, तोला तोला पूरा चार॥
कूट काट कपड़ेसे छान, चूरण चार कर्ष परमान।
गौ दूध संग नित जो खाय, ताको वीर्य पुष्ट हो जाय।

(८) गुंजाकी जड़, विदारीकन्द, गुर्च, आमले, धुले हुए उड़द, काले तिल, गोखरू सम १ भागके बराबर कालपी मिश्री मिला नित्य १ तोला दूधके साथ पीनेसे अत्यन्त बल बढ़ता है।

सितारका सुरीला शब्द, चांदनी रात, सजा हुआ कमरा, सुसज्जिता नवयौवना स्त्री, घृत, दूध, काले तिल, मधु, गिरि, साठी चावल, मेवा, भङ्ग इत्यादि औषधियां कामको बढ़ानेवाली होती हैं।

आरोग्य शिक्षा।

(१) सालमें दो बार जुलाब (चैत कुँवारमे), माहमें दो बार हजामत, पक्षमें दो बार तेल मर्दन और दिनमें दो बार मलत्याग।

(२) मल, मूत्र, वायु, छींक, जमुहाई, निद्रा इनके वेगको रोकना हानिकारक है।

(३) आंखमें अंजन, दांतमें मंजन नित कर ३
नाकमें अंगुली, कानमें तिनका मत कर ३

(४) कम खाना, कम सोना आयु बढ़ानेवाला है।

(५) मल मूत्र, अथवा कोई परिश्रमकार्यके पश्चात् तत्काल जल पीना हानिकारक है, दूध गुणदाता है।

(६) बासी भोजन विकारी होता है।

(७) गुड़ मिला हुआ दूध पीनेसे सुजाक उत्पन्न होता है।

(८) निराहार व्रतसे अजीर्ण नष्ट होता है।

(९) स्वच्छतासे बढ़कर कोई औषधि नहीं, नीलाथोथा द्वारा दी-

वारें पोतनेसे मक्खी मच्छर नहीं आते और नेवला पालनेसे चूहा सर्प बिल्ली आदिका भय नही रहता।

(१०) शांतिवाले घरमें देवता और कलहवालेमें राक्षस वास करते हैं। "जहां सुमति तहँ सम्पति नाना। जहां कुमति तहँ विपति निदाना।"

(११) सायंकालको सोनेसे लक्ष्मीका नाश होता है और भोजन करनेसे दरिद्रता बढ़ती है उस समय ईश्वरका स्मरण उत्तम है।

(१२) सूर्योदयके प्रथम नाकसे जल पीनेवालेकी दृष्टि गरुड़के के समान होती है, मस्तिष्कके रोगोंसे बचा रहता है। मुंह-द्वारा जल पीनेवाला मल (उदर) रोगोंसे बचता है।

(१३) छुड़ी छड़ी, छतरी, छल्ला, छवड़ा (लोटा) पांच छकार।
इन्हें सदा संग राखिये, प्यारे राजकुमार॥

(१४) इन्द्रियका शीतकालमें गर्म, उष्णकालमें शीत और वर्षामें ताजा जलसे धोनेवाला तथा हर सप्ताह अस्तुरेसे साफ रखनेवाला नपुंसकता आतशक आदि रोगोंसे बचता है।

(१५) धीरता ही वीरता और शांति ही पुष्टिदाता है।
बादशाहने पूछा बनिये इतने मोटे (पुष्ट) क्यों होते हैं, क्या खाते हैं?

बीरबलने कहा "गम" खाते हैं।

(१६) स्त्रीका पति मर्द और मर्दका पति कर्ज (ऋण) है।
चलना भला न कोसका, बेटी भली न एक।
कर्जा भला न बापका, जो प्रभु राखे टेक॥

(१७) लोभसे पाप, पापसे नर्क और नर्कसे नीचयोनि प्राप्त होतीहै,

(१८) सुखमें लीन होजाना और दुःखमें पश्चात्ताप करना मूर्खता है।

(१९) जलको छानकर पीवे और पूर्ण भूख लगनेपर भोजन करे।

(२०) खुले पैर खुले शिर धूपमें फिरना, नाकके बाल उखाड़ना, भद्दी रोशनीमें किताब पढ़ना आंखोंकी ज्योति नष्ट करते हैं। आंख और पैरोंको ठण्डे जलसे धोते रहना उत्तम है।

(२१) शयनागारमें धुवेंवाला दीपक रखना अत्यंत हानिकारक है।

(२२) चोर, बिल्ली, बिच्छू, बर्रें दबनेसे वार करते हैं।

(२३) यदि नित्य दन्तधावनी न की जाय तो कृमि उत्पन्न हो जाते हैं।

(२४) चिन्तासे शरीर सूखता है, निकम्मे बैठे रहनेसे देह स्थूल होती है और अंडकोष बढ़कर पुरुषत्वको नष्ट कर देते हैं।

अन्य शिक्षायें।

(१) आजका काम आज ही करो। (२) जिसे तुम कर सकते हो दूसरेसे मत कहो। (३) कमानेके पहले खर्च मत करो। (४) बिना कामकी चीज सस्ती भी मत लेवो। (५) सबरका फल मीठा है। (६) अपना किया दुखदाई नहीं होता। (७) क्रोध आवे तो सौतक गिनकर बोलो। (८) कार्यको सदा सीधे मार्ग उतारो। (९) आपत्ति जितनी समझते हैं उससे आधी आती है। (१०) धर्म प्रसन्न चित्तसे करो। (११) सेवकका धर्म स्वामीको प्रसन्न रखना (१२) सब धन जाता देख आधा दीजे बांट। (१३) देकर पछताना मूर्खता। (१४) जिसे मृत्यु याद है उससे पाप न होगा। (१५) अपना दोष जाना उसने सब पहचाना। (१६) बिगड़ी सम्हाले वही बुद्धिमान् (१७) गुप्त भेद खुल जाये तो सब बोल दे। (१८) बेपीरकी सेवा मत करो। (१९) धीरज

धर्म मित्र अरु नारी; आपत काल परखिये चारी। (२०) यद्यपि सांचको आंच नहीं, परन्तु समय समयकी झूठ सचसे बढ़कर है। (२१) अजीर्णका शेष भयंकर है। (२२) संसार स्वार्थी है। (२३) कुलमें न हुई मत कर। (२४) दुःखमें धीरज बढतीमें शांति। (२५) किसीको अपना अवश्य कर रखे। (२६) अधिक सौगन्ध खाय सो झूठा। (२७) आतुरकी बात अप्रमाण। (२८) मारनेकी बनिस्बत धमकाना अच्छा। (२९) निकाम लड़का छठी अंगुली। (३०) यद्यपि दारुण दुख जग नाना, सबसे कठिन जाति अपमाना। (३१) ऐसेको दे मांगना न पड़े। (३२) भाई बांटामें घरका भेद खुले। (३३) जिसकी ओर सब देखे वही सरदार (३४) पत्र लिखने पश्चात एक बार पढ़ ले। (३५) अपना पत्र पढ़कर दूसरेको दो (३६) दूसरेका पत्र विना प्रयोजन मत पढ़ो (३७) शत्रुका पत्र जहां मिले वहां पढ़ो। (३८) प्रजामें एका तो राजा खिलौना। (३९) पंच कहें बिल्ली तो बिल्ली। (४०) कमजोरका क्रोध पिटनेको चिह्न (४१) प्रीति घट जाय तब भी दिखाऊ मत हुटने दो। (४२) नग्नमें तपे सो पाखण्डी। (४३) सुसंगसे लाभ न हो तब भी मत छोड़ो। (४४) कुसंगके लाभका भी परिमाण बुरा है। (४५) संसार निःसार रामनाम सार। (४६) दानकी शक्ति न हो तब भी सत्कार मत छोड़ो। (४७) अपयशसे मृत्यु अच्छी। (४८) अजर अमर होकर व्यापार करे। (४९) बिना विचार करनेसे हानि और हँसी। (५०) बनेपर सराहनेवाला झूठा। (५१) तमाशा दिखानेवाला मूर्ख। (५२) नग्नेवाजी मसखरीमें

सचेतकी जीत। (५३) बुरा कार्य करे तो पकड़े जानेसे कम डर परन्तु बदनामीसे अधिक। (५४) मरनेपर लोग जिसे सराहें वही स्वर्गवासी। (५५) अपना मरना प्रलय होना। (५६) औघट घाट, अन्धेरी रात, वालूकी भीत, ओछेकी प्रीति चारों दुखदाई। (५७) स्त्री अपने पास रहे जबतक अपनी। (५८) स्थान-प्रधान नच बल-प्रधान। (५९) होतेकी बहिन न होतेका भाई। गांठका पैसा औ पासकी लुगाई। (६०) स्त्री, पुत्र, शिष्य, टहलुवा इनको ताडते रहना ही अच्छा है (६१) गरीबकी हाय मत लो। (६२) मरनेके समयतक भी परोपकार याद रखो। (६३) स्त्रियोंमें बैठे वह हीजड़ा। (६४) स्त्रीकी बड़ाई करे सो गुलाम। (६५) स्त्रीनामसे चौकन्ना हो वह कामी। (६६) पराई स्त्री मां बराबर देखे वह जती। (६७) जो तुम्हारे सामने दूसरेकी निन्दा करे वह दूसरेके सामने तुम्हारी अवश्य करेगा। (६८) गुरु हरि निंदा सुनै जो काना, होय पाप गौघात समाना। (६९) हाथी चींटी सबका जीव समान। (७०) दिया दान सङ्कटका सहायक है। (७१) वचन देकर पलटे वह विश्वासघाती। (७२) अहिंसा परमो धर्मः। (७३) उलटा नाम जपत जग जाना, वालमीकि भयो ब्रह्म समाना। (७४) वें तो पहिले मर चुके, जो परघर मांगन जायं। उनके पहले वे मरे जिन मुंह निकले नांय। (७५) क्रोध और काम साधे वही साधू। (७६) कचहरी जाना, पैसा लुटाना। (७७) पिताकी बनिस्बत, माताकी सेवा अधिक करो। (७८) गया समय हाथ नहीं आता (७९) अपने धर्मपर दृढ़ रहो और दूसरेके धर्मकी निन्दा मत करो। (८०)

गरज बुरी (८१) जितने नवोगे उतने बढ़ोगे (८२) बड़ाईके लिये फिजूल खर्च करना बुरा है। (८३) मांस वेचना और बेटी वेचना बराबर (८४) मद्यपानसे द्रव्य, बुद्धि और इज्जत नाश। (८५) दान ऐसेको दो जो गरीब हो, धनाढयको देना न देना समान है (८६) ईश्वर भजनसे संकट कटता है (८७) पुत्रको न पढ़ानेवाला पिता शत्रुतुल्य (८८) अक्षर २ पढ़े, मूर्ख होत सुजान। कौड़ी कौड़ी जोड़के निरधन हो धनवान (८९) क्षमा खड्ग जिन कर लियो, कहा करे खल कोय। विन ईंधनमें अग्नि पड़े, आपहि सीतल होय (९०) जीवोंको मत सतावो (९१) सत्य बोलो (९२) समुदायका आश्रय न लो (९३) आत्मा परमात्मा। (९४) दो मित्रोंका झगड़ा निपटानेको मत जावो (९५) दो शत्रु यदि कहें तो उनका झगड़ा तै करो। (९६) डरनेवालेका बल वृथा। (९७) जिसे देशका अभिमान नहीं वह नर पशु (९८) ईश्वरकी जय (९९) जिसके पास पोथी और आचार कर्म नहीं वह देवता है (१००) इष्ट एक ही मानो।

अङ्क ग्यारहवां

इतना सुन बाबू मदनलाल बोले पंडितजी! आप ये क्या जाल में पड़ गये? आप तो ओकके अंग समझा रहे थे, उस विषयमें क्या शेष रह गया है, वही समझाइये।

इतना सुनते ही विद्याधरजी बोले बाबू साहिब! अभी तो इसके कई अंग और शेष हैं किन्तु आपको मैं १ अंग सामुद्रिकका थोड़ासा अंश और समझा कर इस विषयकी इतिश्री करता हूं।

सामुद्रिक।

❋ ससुराल-रहस्य ❋

कर्मोंका शुभाशुभ फल जो है सो हस्तरेखाओंसे ज्ञात होता है. जिसके हस्तमें अधिकरेखायें होंगी वही मनुष्य (स्त्री हो या पुरुष) ऐश्वर्यवान् धनवान्, सौंदर्यवान् और पुत्रवान् होता है। पुरुषका दक्षिण और स्त्रीका वामहस्त देखना चाहिये। दिखाऊ रूपमें तो हस्तमें ३-४ ही रेखायें रहती हैं, परन्तु ध्यानपूर्वक हस्तको स्वच्छ धोकर तानकर अथवा सकुचाकर देखनेसे अनेकानेक बारीक २ रेखायें दृष्टिगत होती हैं, उन्हींपरसे विचार करना होता है। क्षीरसागरनिवासी विष्णुभगवानने जगन्माता लक्ष्मीजीके प्रति सामुद्रिक वर्णन किया है। अत एव कदापि मिथ्या नहीं हो सकता-

यस्य मीनसमा रेखा, कर्मसिद्धिश्च जायते।
धनाढ्यस्तु स विज्ञेयो, बहुपुत्रो न संशयः॥

जिसके हस्वमें पहुंचेके मध्यमें मीनरेखा (मछलीका आकार) जान पड़े वह प्राणी व्यापार कार्यमें कुशल, धनवान्, यशस्वी और पुत्रवान् होता है ऐसा विष्णुभगवान्ने कहा है।

तुलाग्रामयुतं वज्रं करमध्ये च दृश्यते।
तस्य वाणिज्यसिद्धिः स्यात पुरुषस्य न संशयः॥ २॥

जिस प्राणीके हस्तमें तुला (तराजू) ग्राम (चतुष्कोण अथवा वज्रका चिह्न हो तो उसका वाणिज्य विश्वविदित हो और पुत्र, धन अधिक प्राप्त हो यह निश्चय जानो।

पद्मचापादि खड्गश्च, अष्टकोणादि दृश्यते।
स्त्रियश्च पुरुषस्यापि, धनवान्स सुखी नरः॥ ३॥

जिस मनुष्यके हस्तमें पद्मका चिह्न हो वह राजाओंका पति तथा अष्टकोण चिह्न हो तो राजा हो। बाणका चिह्न हो तो बाण धारी पार्थ-सदृश बाण विद्यामें कुशल हो और तलवारका चिह्न हो तो सेनापति हो ऐसा जानो।

शंखचक्रध्वजाकारो, मालाकारश्च दृश्यते।
सर्वविद्याप्रदानेन, बुद्धिमान्स भवेन्नरः ॥ ४ ॥

जिस मनुष्यके हस्तमे चक्र और शंखका चिह्न हो वह बड़ा ही पण्डित तथा शास्त्रज्ञाता होता है, ध्वजाका चिह्न हो तो दैवज्ञ वेद वेदान्तका जाननेवाला हो तथा मालाका चिह्न होनेसे व्यापारमें कुशल हो अथवा सौभाग्यवश सब रेखाएं जिस प्राणीके हस्तमें हों तो वह षट् शास्त्र, चार वेद, अठारह पुराणका वक्ता, धनी, मानी और सुखी हो।

त्रिशूलं करमध्ये तु, तेन राजा प्रवर्त्तते।
यज्ञे कर्माणि दाने च, द्विजदेवः प्रपूज्यते ॥ ५ ॥

जिस पुरुष व स्त्रीके हाथमें प्रगट रूप त्रिशूल चिह्न हो तो वह अवश्य ही राज्यसुख भोगे, यज्ञका प्रेमी हो, दाता हो और देवता, गुरु और ब्राह्मणोंको पूजनेवाला हो।

शक्तितोमरबाणाश्च, दृश्यन्ते करमध्यगाः।
रथचक्रध्वजाकाराः, शक्रराज्यं लभेन्नरः ॥ ६ ॥

जिस प्राणीके हाथमें बर्छी बाण और हल तीनोंका चिह्न हो वह अवश्य भाग्यशाली पुरुष होता है। सम्भव है कि, कोई अच्छे राज्यका राजा हो और उसीकी यशपताका सारे विश्वमे फहरावे।

अंकुशं कुंडलं चक्रं, यस्य पाणितले भवेत्।
तस्य राज्यं महाश्रेष्ठं, सामुद्रवचनं यथा ॥ ७ ॥

जिस प्राणीके हाथमें अंकुश, कुंडल और चक्र तीनों चिह्न पड़ जावें वह नीच कुलमें जन्म होनेपर भी अवश्य ही चक्रवर्ती राजा होता है। विष्णुभगवान् बोले प्रिये। इसमें सन्देह नहीं।

गिरिकंकणयोनीनां, नरमुण्डघटादिकम्।
करे वै यस्य रेखाश्च, राजमन्त्री भवेन्नरः॥ ८॥

जिस प्राणीके हाथमें पर्वत, कंकड़, योनि, मनुष्यका शिर अथवा घड़ेका चिह्न हो तो वह राजमन्त्री होता है इसमें संशय नहीं।

सूर्यचन्द्रलतानेत्रमष्टकोणं त्रिकोणकम्।
मंदिरं च गजाश्वानां चिह्नं धनयुतो भवेत॥ ९॥

जिस मनुष्यके हस्तमें सूर्य, चन्द्रमा, लता (बेल-फल), नेत्र, अष्टकोण, त्रिकोण, मंदिर, हाथी घोड़ा आदि चिह्न हो अवश्य ही वह मनुष्य बड़ा प्रतापी होता है।

अंगुष्ठद्वयमध्यस्थो, यवो यस्य विराजते।
उत्पत्तौ भुवि भोगी स्यात, स नरः सुखमेधते॥ १०॥

जिस प्राणीके हस्तमें अंगुष्ठके ऊपरकी मध्य रेखाके बीचमें यव (जौ अनाज) चिह्न हो तो जन्मसे मृत्युपर्यंत सुखी रहे।

मध्यमातर्जनीमूले, यवो यस्य च दृश्यते।
धनवान् सुखभोगी स्यात, पुत्रदारगृहादिषु॥ ११॥

जिस मनुष्यके हस्तमें मध्यमा और तर्जनीके मध्यमें यवका चिह्न हो वह प्राणी पुत्रादिसहित बड़ा धनी सुखी यशस्वी और प्रतापवान् होता है।

कनिष्ठिकापूर्वमूलादनामादिक्रमेण च।
आयुष्यं दश वर्षाणि, सामुद्रवचनं यथा॥ १२॥

कनिष्ठिका अंगुलीके नीचेसे जो रेखा है वह आयु रेखा है, यदि वह रेखा अनामिकातक जाय तो आयु केवल दश वर्षकी हो, मध्यमातक जानेसे पचास वर्ष और ठीक तर्जनी तक आवे तो पूर्ण १२० वर्षकी आयु जानना चाहिये। यदि रेखा बीच बीच खंडित हुई हो तो वहांपर भयंकर बीमारीकी सम्भावना है, यदि रेखा खंडित होकर नीचेकी ओर झुकी हुई हो तो वृक्ष अथवा अट्टालिका परसे गिरना दरशाती है।

अंगुष्ठस्याप्यूर्ध्वरेखा वर्तते नृपतेः शुभम्।
सेनापतिर्धनाढ्यश्च, मध्यमायुर्नरो भवेत ॥ १३ ॥

जिस मनुष्यके अंगुष्ठमें ऊपरी भागमें ऊर्ध्वगामी रेखा दृष्टि पड़े वह निश्चय ही छत्रपति हो और चतुरंगिनी सेना सदैव उसकी रक्षाके लिये रहे।

तर्जनीमूलपर्यन्तमूर्ध्वरेखा च दृश्यते।
राजदूतो भवेत्तस्य धननाशश्च जायते ॥ १४ ॥

तर्जनी अंगुलीकी जड़तले यदि ऊर्ध्वरेखा प्रतीत हो तो वह भावी राजदूत हो, नाना प्रकारसे मनुष्योंको सतावे, वर्णाश्रमका ध्यान न रखते हुए अनेकानेक पाप कर जीवन व्यतीत करे।

मध्यमामूलपर्यंतमूर्ध्वरेखा च दृश्यते।
पुत्रपौत्रादिसम्पन्नो, धनवांश्च सुखी नरः ॥ १५ ॥

जिस मनुष्यके हस्तमें ऊर्ध्वरेखा, मध्यमा अंगुलीकी जड़तक गयी हो वह अनेक पुत्र पौत्र और धनके सुखको भोगता है।

अनामिकायामूर्ध्वरेखा, व्यवसायो धनागमः।
सुखदुःखेन जीवेत्स, पुत्रपौत्रसहादिषु ॥ १६ ॥

जिस मनुष्यके पहुंचेसे आरंभ होकर अनामिका अंगुलीतक ऊर्ध्वरेखा आयी हो वह मनुष्य न धनी न कङ्गाल किंतु समान धनसे आयु व्यतीत करे ऐसा शेषशायी भगवान्‌ने लक्ष्मीजीसे कहा है।

दीक्षा.दानं यथाधर्मं, पदवीसुखमेव च।
विद्या मानापमानं च, अंगुलीमूलसंस्थिता ॥ १७ ॥

कनिष्ठिका अंगुलीके मूलमें रेखाएँ हों तो उनपर इस प्रकार गणना है- एक रेखावाला दाता, परोपकारी, यज्ञकर्ता। दो रेखा हों तो धर्मशील, माननीय, पूजनीय हो। तीन रेखासे बड़े ऐश्वर्य और राज भोगनेवाला तथा चौथी रेखा और हो जानेसे बड़ा पंडित हो। पांच रेखा होनेसे चौधरी माननीय पुरुष हो, छठी रेखाका फल मध्यम है और सातवी रेखाके होजानेसे वह कई दुःख और अपमान सहेगा और अनुमान जितनी रेखाएँ हों उतनी ही स्त्रियोंको वह भोगता है।

अंगुष्ठानां पृथग्रेखा, गणयन्ते नितयं पृथक्।
रेखाद्वादशकं सौख्यधनधान्यप्रदायकम् ॥ १८ ॥
अंगुलीनां पृथग् रेखा, गणने चेत् त्रयोदश।
महादुःखं महाक्लेशं, सामुद्रवचनं यथा ॥ १९ ॥
रेखापंचदशे चौरः, षोडशे धूर्तवंचकः।
पापी सप्तदशे ज्ञेयो, धर्मात्माष्टादशे भवेत ॥ २० ॥

जिस मनुष्यकी पांचों अंगुलियोंकी रेखाएँ गिननेसे १२ हो वह मनुष्य बड़ा धनी गुणी और सुखी होता है। जिस मनुष्यकी पांचों अंगुलियोंकी रेखाएँ गिननेसे १३ हों वह मनुष्य अनेक दुःख क्लेश और दरिद्रता भोगता है। रेखाएँ १५ होनेसे चोर, १६ से धूर्त, १७ से पापी और १८ से धर्मशील ज्ञानवान् और प्रतापवान् होता है

ऊनविंश भवेत्पाणौ, गुणज्ञो लोकपालकः।
तपस्वी विंशतौ ज्ञेयो, महात्मा ह्येकविंशके ॥ २१ ॥

उन्नीस रेखासे माननीय, बीस रेखा होनेसे तपस्वी, योगकर्ममें निपुण और २१ रेखा होनेसे बड़ा ही धर्मात्मा होता है।

पुरुषके वाम अङ्गमें तिल और दाहिनेमें लहसन होना शुभ है। इंद्रियपर तिल होना मसा होना शुभ है। इंद्रियका पतली और छोटी होना शुभ है। मस्तक ऊंचा होना गञ होना इत्यादि शुभ लक्षण है।

स्त्रीके अङ्गमें सर्पिणी आदि चिह्न होना, चलनेके समय पैरोंकी अंगुलियोंका अधर रहना, योनिका हिरनके खुरके समान होना या बहुत घने बालदार होना, योनिमुखका दाड़िम फलानुसार खुला रहना ये दुर्भाग्यके लक्षण हैं।

तथा लंबे मनोहर केश, कमलसदृश ओष्ठ, अङ्गमें कमलकी गन्ध योनिका कछुवाकी पीठकीसदृश ऊंचा होना, छोटे २ बिल्लीके रोम सदृश भूरे बाल होना दाहिने अंगमें तिलोंका होना, कुचाग्रभागक लाल रहना इत्यादि लक्षणोंसे स्त्री अनेक ऐश्वर्य भोगनेवाली होती है।
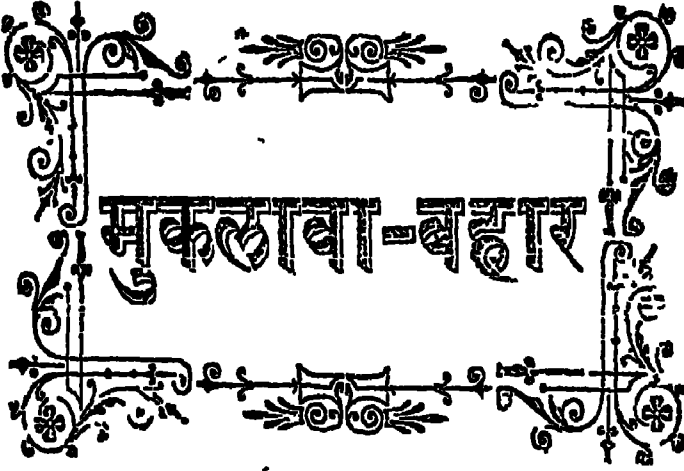
श्रीहरिः।

अर्थात्

ससुराल रहस्य

सातवां भाग।

मनोरञ्जन।

अंक पहला

वन्दना

गावैं गुनी गणिका गंधर्व औ,
सारद शेष सबै गुण गावें।
नाम अनन्त गनन्त गणेश ज्यौं,
ब्रह्मा त्रिलोचन पार न पावैं॥

जोगी जती तपसी अरु सिद्ध,
निरन्तर जाहि समाधि लगावैं।
ताहि अहीर की छोहरियाँ,
छछिया भर छाछ पे नाच नचावैं॥
शेष महेश गनेश दिनेश,
सुरेसहुं जाहि निरन्तर गावैं।
जाहि अनादि अनन्त अखण्ड,
अछेद अभेद सुवेद बतावैं॥
नारद-से सुक व्यास रटैं,
पचिहारे तऊ, पुनि पार न पावैं।
ताहि अहीर की छोहरियां,
छछिया भर छाछ पे नाच नचावैं॥

मित्रो! मनोरञ्जन एक ऐसी वस्तु है जिसे चाहे जिस विषयमें डाल दीजिये सुहावनी ही मालूम होगी। अत हम इस भागमें कुछ मनोरञ्जन संग्रह करते हैं। यदि किसी कारण आपका चित्त खिन्न हो तो इसे खोल बैठिये, अवश्य ही आपका चित्त प्रसन्न हो जायगा। मनोरञ्जन, स्वास्थ्य सुधारनेके लिये तो उपयोगी है ही साथ ही शिक्षाप्रद भी है।

(१) एक राजा साहबने रानी साहिबाके आग्रह करनेपर राजकुमारीकी सगाई करनेके वास्ते अपने सालेको भेजनेका निश्चय किया और उसे बुलाकर कहा।

राजा०-आपकी बहनने आपकी बड़ी प्रशंसा की है अतः आज आपको राजकुमारीकी सगाईका भार सौंपा जाता है। देश-देशान्तरोंमें ढूंढकर १५-१६ वर्षकी आयुवाले राजकुमारके साथ पुत्रीकी सगाई कर आओ, परन्तु जरा लियाकतसे काम करना।

साला-ठीक, आपका कहना सब समझ गया, परन्तु थोड़ी सी शंका और है, यदि १६ वर्षका राजकुमार न मिले तो क्या ८-८ वर्षके दो राजकुमारोंके साथ सगाई कर आऊं?

× × ×

(२) बाबू साहब-(नौकरके ऊपर कड़क कर) नालायक! एक कामके लिये दो चक्कर काटता है, कुछ भी शहूर नही, होशियार आदमीको एक कामके लिये भेजो तो दो काम करके आता है। नौकरने डरते हुए कहा स्वामिन्! अब ऐसा ही होगा। अकस्मात् बाबू साहबका बाप बीमार हो गया, उन्होंने नौकरसे कहा वैद्यको बुला ला। नौकर वैद्यको बुलानेके साथ कफन भी इस विचारसे फड़वा लाया कि बाबूसाहबने एक दिन कहा था कि एक कामको जाना तो दो काम करके आना।

× × ×

(३) एक मनुष्यने डाक्टर साहबको एक पत्र लिखकर नौकरके साथ भेजा कि मेरे सिरमें दर्द है, थोड़ा सा सिरका * भेजिये, लगाऊंगा। डाक्टर साहबने एक पुराना जूता कपड़ेमें लपेटकर नौकरके हवाले किया और पत्रोत्तरमें लिख

* सिरका एक औषधिका नाम है।

दिया कि "सिरका" खतम हो गया इसलिये पैरका भेजता हूं शौकसे लगाइये।

× × ×

(४) एक महाशयने पुस्तक पढ़ते २ देखा कि जिसका सिर छोटा और दाढ़ी बड़ी हो वह बेवकूफ होता है, सँभालनेपर उन्हींका सिर छोटा और दाढ़ी लम्बी थी। पछताकर उपाय सोचने लगे तो याद आया सिर तो नही बढ़ सकता परन्तु दाढ़ी छोटी हो सकती है। लगे कैंची ढूँढ़ने कैंची न मिली, चिराग जल रहा था उसीमें अपनी डाढ़ी जलाकर छोटी करनेके विचारसे लगा दी, दाढ़ी मूँछ और कुछ सिरके केश भी जल गये, तब तो पछता कर कहने लगे कि पुस्तककी लिखी बात झूठी होती, तो मैं अपनी दाढ़ी मूँछ क्यों जलाता ?

(५) लालाजी-पंडितजी! इस समय मेरा बड़ा अनिष्ट हो रहा है. इसकी शांतिके लिये११०००० जप महामृत्युंजयका कर दें।
पंडितजी-जो आज्ञा लालाजी!

कुछ कालमें जप पूर्ण हुए, पंडितजीने कहा लालाजी जप हो चुका अब कुछ हवन होना चाहिये। लालाजी बोले यदि कोई उपाय हो जिससे हवन न करना पड़े तो ठीक है। पंडितजी बोले-चतुर्थांश पाठ और कर दूंगा, पश्चात् पंडितजी बोले लालाजी! हवनके पाठभी हो चुके। अब कुछ ब्राह्मणभोजन होना चाहिये, लालाजीने फिर वही प्रश्न किया। अन्य ब्राह्मणोंका बुरा चाहनेवाले पंडितजीने कहा लालाजी! जब आपकी यही इच्छा है तो इसके लिये भी अष्टमांश पाठ कर दूंगा। अष्टमांश पाठ हो जाने पर पंडितजीने कहा-लालाजी! अष्टमांश पाठ भी हो चुका। अब लालाजीने बीच-

में ही कहा हां। मैं समझ गया, मार्ग तो अच्छा मिल गया है, हालत भी तंग है अतः दक्षिणाके लिये भी कुछ पाठ ही कर दीजिये।

पंडितजी अपना सा मुंह ले चलते हुए।

× × ×

(६) बादशाहने बीरबलसे पूछा जल कौनसी नदीका अच्छा है? बीरबलने कहा यमुनाका। बादशाहने कहा तुम्हारे शास्त्रोमें तो गंगाकी महिमा अधिक है न? बीरबलने कहा—मेहरबान! गंगाका जल नहीं, अमृत है।

× × ×

(७) लालाजीने नये नौकरसे कचहरी जानेके समय कहा—घोड़ेपर जल्दीसे चारजामा कसके ला, कचहरी जानेको देर हो रही है। नौकर भीतर गया देखा खूंटीपर तीन जामे टंगे हैं, उसने उन्हें कस लिया और एक पायजामा कस लाया। लालाजी कड़क कर बोले अबे! यह क्या किया? नौकरने नम्रतापूर्वक कहा लालाजी! आपने चार जामा कसनेको कहा था, किन्तु वहांपर तीन ही जामा थे इसलिये एक पैजामा कस लिया।

× × ×

(८) एक बेशर्म मनुष्यने अपने लड़केसे कहा जा तेरी मांसे कह दे सज धजकर तयार रहे, आज मैं महलमें आऊँगा। लड़केने (अपने बापकी इस प्रकार बेशरमाई देखकर) पूछा पिताजी! यदि मां न मिलेगी तो भुवासे कह दूंगा?

(९) बादशाहने वीरबलसे कहा जिसे तास खेलना न आवे वह भी मनुष्य योग्य नहीं है। वीरबल तासमे बड़ी दुश्मनी रखते थे। बोले मुझे तास खेलना तो आता है किन्तु कुछ कम आता है। मैं बादशाह और गुलामको एक ही समझता हूँ।

(१०) बादशाहने कहा वीरबल! तुम्हारे शास्त्रोंके निर्माण कर्त्ताने कुछ विचार नही रखा जो पैरका नाम "पाद" रक्खा। वीरबलने तुरंत उत्तर दिया श्रीमान्! तब भी आपके शास्त्रोंसे अच्छा ही है जो कि हाथको "दस्त" कहते हैं।

× × ×

(११) बाबाजीके दो चेलियां थीं. एकका नाम दया, दूसरीका नाम मया और एक चेला था जिसका नाम था कृपा। भाग्यवश दया और मयाको लेकर कृपारामजी भाग गये।

एक समय बाबाजीका एक प्राचीन दास उनसे मिलनेके वास्ते आया और प्रणामके पश्चात् (स्वाभाविक ही) पूछा बाबाजी! आजकल दया मया है कि नही? बाबाजी (अपनी बीती) बोले-दया मया भाग गयीं। दासने देखा कि बाबाजी दया मया शब्दमें नही समझे, बोला बाबाजी किरपा मेहरबानी है कि नहीं? बाबाजी बोले किरपाने ही ऐसी तैसी कराई। यह सुन दास समझा बाबाजी अब भी न समझे. बोला-बाबाजी! प्रेमदृष्टि है न? बाबाजी बोले प्रेमदृष्टि न होती तो दया मया यहां ही रहती? इतना सुन दासने जाना बाबाजीका दिमाग फिर गया है, वहांसे चलता बना। गृहस्थ साधुओंका यही हाल होता है।

(१२) एक राजा अपनी अगणित सम्पत्ति छोड़ वैरागी हो गया एक दिन उजाली-रात्रिमें कहीं जा रहा था मार्गमें उसे एक

रुपिया पड़ा दीखा, वह यह समझ उठाने लगा कि किसी भिखारीको दे देंगे, छूनेपर मालूम हुआ कि वह कौवेकी सूखी विष्ठा है। "अन्त लालच बुरा है"

× × ×

(१२) एक महात्मा खोहमें बैठे तपस्या कर (धूनी तप) रहे थे, इतनेमें एक उजड्ड पहुँचा और पूछा कि बाबाजी! क्या करते हो? महात्मा बोले बच्चा! धूनी तपते हैं, उजड्डने फिर पूछा बाबाजी! इस प्रकार अङ्ग जलानेसे क्या लाभ है? बाबाजी बोले भगवान् मिलेंगे। सुनते ही ग्वाल (उजड्ड) गद्गद् हो गया।! क्या कहा भगवान् मिलेंगे? हम हूं का बतावो हम हूं मिलैं! भगवान् तो बड़े अच्छे होते हैं। बाबाजीने मसखरी स्वरूप एक जलता हुआ मोटा लक्कड़ उठाकर ग्वालको दे दिया और कहा जा इसको अपने कंधेपर रखना गिराना मत, पूर्ण जल जानेपर भगवान् मिलेंगे। उजड्ड स्वीकारकर लक्कड़को कांधेपर रख वहांसे निकला, गुफाके द्वारपर बैठ राम राम रटने लगा "विश्वासः फलदायकः" इसका कंधा जलने लगा इसने लक्कड़ न गिराया, भगवान्ने देखा यह मेरे नामपर जल मरेगा, अतः भगवान् शंख, चक्र, गदा, पद्म लिये चतुर्भुज रूपसे आकर कहने लगे कि प्रेमी भक्त! ओ मेरे प्रेमी गोकुलके ग्वाल! नेत्र खोल मैं आ गया। सुनते ही ग्वाल बोला–यहां "मैं" नही चाहिये। भगवान् आवेंगे तबही नेत्र खोलूंगा। भगवान्ने कहा-हां हां जिसे तू ढूंढ़ता है मैं वही हूं। ग्वालने कहा "मैं वही हूं" भगवान्का नाम

नही हो सकता। वह निराकार, निरञ्जन, विश्वम्भर, दीन-
वन्धु, पतितपावन सब होसकता है किन्तु "मै" कदापि नही
हो सकता, 'मै' नाम तो अहंकारका है। भगवान् मुसक्याते
हुये बोले भक्त! जिसके नामपर तू अङ्ग जला रहा है, जिससे
मिलनेकी तेरे गुरुने कही है वही तेरा सखा कृष्ण तेरे सम्मुख
खड़ा है एकवार नेत्र खोल।

ग्वालने अवकी वार नेत्र खोले, देखा तो साक्षात चतुर्भज देव संमुख खड़े हैं। गद्गद् हो चरणोमें लपट गया। प्रेमाश्रुओंसे देवके चरणोंको धोने लगा पश्चात न जाने उसके मनमें क्या आयी कमरसे रस्सी खोल भगवान्को वांधने लगा, भगवान्ने कहा वत्स! यद्यपि तेरे गुरुको मुझपर विश्वास नही था और उसने तुझे कष्ट देनेके निमित्त ही जलता हुआ लक्कड़ दिया था, तथापि जव तेरा प्रेम है तो तू गुरुको भी बुलाले मै यहां ही खड़ा हूँ, कही नही जाऊँगा। परन्तु वांधनेसे मुझे कष्ट होगा। हां! कष्ट होगा महाराज? मैं भी चालाक हूं, कष्ट होगा? शूकर वन पृथ्वी उठाते, कछुआ वन मन्दराचलका वोझ सँभालते, महाभारतमें कोटिन वाण खाते कष्ट न हुआ अव जरासी रस्सीमें वन्धनेमें कष्ट होगा। प्रेमके वशी भगवान् अपने हाथ पांव वन्धा राते रह गये और वह गुफाके भीतर जा महात्मासे वोला—

गुरुजी! गुरुजी!! ओ गुरुजी!!! भगवान् आये हैं भगवान। गुरुजी चमत्कृत हो वोले क्या कहा, भगवान् आये है? झूठा वकीता, पर्ं हजार वर्ष मुझे तपते हो गये, भगवान् न आये और एक क्षणमात्रमें तेरे लिये भगवान् आ गये? ग्वाल वोला हां महा-

राज ! आपकी सौगंध, झूठ नहीं एकवार गुफासे निकलिये तो। मैं भगवान्‌को रस्सीसे बांध आया हूं। हँसते हुए बाबाजी बाहर आये, देखा सचमुचही भगवान् बन्धे खड़े हैं। महात्माजी साष्टाङ्ग प्रणाम करके बोले महाराज ! सहस्रो वर्ष मुझे तपस्या करते हो गये आपने दर्शन नही दिया और इसे आपने थोड़े ही समयमें दर्शन दिया।

भगवान् बोले मैं अङ्ग जलानेका भूखा नही, भस्म लगाने और जटा बढ़ानेका प्यासा नही, घर घर अलख जगवानेका इच्छुक नही, घर द्वार गृहस्थ छुड़वानेका प्रेमी नही, मैं प्रेमी हूं केवल प्रेमका।

ग्वाला महात्मा और भगवान् दोनोंको खड़ा देखकर बोला कि-

गुरु गोविंद दोऊ खड़े, किसके लागूं पाय।
बलिहारी गुरुदेवकी, गोविद दिये मिलाय॥

अतः उसने पहिले गुरुको प्रणाम किया।

× × ×

(१४) राजा भोज और कालिदास दोनों ही एक वेश्याके यहां जाया करते थे, यह बात परस्पर दोनों ही जानते थे, किन्तु वेश्या इतनी प्रवीण थी कि एकके साथ दूसरेका प्रत्यक्ष अपने शयनागारमें कदापि नही होने देती थी। अकस्मात भोजके मनमें कालिदाससे मश्करी करनेकी आयी और वेश्यासे कहा-प्रिये ! यदि कोई ऐसा उपाय हो जिससे कालिदास मुंडन करावे तो मेरा एक अच्छा कार्य सधे। वेश्याने कहा यह तो मेरे बांये हाथका खेल है। अस्तु। दूसरे दिन कालिदास आया तब वेश्याने कहा श्रीमान्‌जी ! यदि आपको मुजरा सुनना हो तो मुंडन कराकर आवो।

कालिदास इसे राजा भोजकी करनी समझ, जाकर मुण्डन करा आये और आकर बैठे ही थे कि राजा भोज आ गया, वेश्याने कालिदासको एक कोठड़ीमें बन्द कर दिया। कालिदासने कहा प्रिये! तेरे कहनेसे मैंने मुण्डन कराया है, अब तुझे मेरे कहनेसे एक काम करना होगा और वह यह कि राजा भोजसे कहना दो बार गधेकासा शब्द करे।

राजा आये, वेश्याने तीक्ष्ण कटाक्षकर कहा-सरकार! यदि आपको प्रेमालाप करना हो तो दो वार गधेकासा शब्द करो। राजा तो आतुर हो रहे थे, यहां वहां देखा कोई तीसरा मनुष्य न दीखा, तब तो राजाने जैसा बना वैसा २-३ बार गधेकासा शब्द कर दिया।

कुछ समय पश्चात् राजा अपने भवनको आया, कालिदास भी घर गया, दरबारमें सबने देखा कि आज कालिदासने मुंडन कराया है और राजाने उसका हास्य करनेके लिये कहा-

"कालिदास कविश्रेष्ठ! कस्मिन् पर्वणि मुण्डनम्"

अर्थात्-हे कालिदास! हे कवियोंमें श्रेष्ठ! आज कौनसा पर्व समझ मुण्डन कराया है?

तत्काल कालिदासने निम्नोत्तर दिया—

"राजानो गर्दभायन्ते तस्मिन् पर्वणि मुण्डनम्"

अर्थात-जिस पर्वमे राजा लोग गधे बने थे उसी पर्वमें मैंने मुण्डन कराया है।

(१५) किसी वनमें दो महात्मा कुछ अन्तरसे धूनी तप रहे थे। एक वधिक गौके पीछे खड्ग लेकर दौड़ा जा रहा था। गौ

अपने प्राण बचानेके लिये जिस ओर महात्मा धूनीपर बैठे थे उसी ओरसे वनमें घुसकर अदृश्य हो गयी. वधिकने आकर पहिले महात्मासे पूछा महात्मन्! इधरसे कोई गौ तो नहीं गयी है? महात्माने झूंठ बोलना पाप समझकर कहा हां गयी है। वधिक दौड़ा हुआ दूसरे महात्माके आश्रमतक गया, परन्तु गौका पता न लगा, तब दूसरे महात्मासे पूछा महात्मन्! इधरसे आपने कोई गौ जाते देखा है क्या? महात्माने विचार किया यदि हां कहता हूं तो यह दुष्ट जाकर अवश्य ही गोवध करेगा, इस समय तो झूंठ बोलना ही उत्तम होगा, यह विचार कर महात्माने कहा भाई! इधरसे कोई गौ नहीं गयी। वधिक निराश हो गृहको लौट गया। कुछ काल पश्चात् नारद ऋषि आये और पहिले महात्मासे कहा तुमको गौहत्या लग चुकी है, इसका प्रायश्चित्त करो।

"समयकी झूंठ भी सत्यसे बढ़कर है"

× × ×

(१६) दो मित्र थे एक कृष्णलीला देखने गया और दूसरा वेश्याके घर। मरने पर, वेश्याके यहां जानेवालेको स्वर्ग और कृष्णलीलामें जानेवालेको नरक स्थान मिला, इसका कारण? इसका कारण मनसा पाप। कृष्णलीला देखने गया किन्तु उसके चित्तमें यही था—अहा! मित्र वेश्याके यहां आनन्द कर रहा होगा। दूसरा वेश्याके यहां गया किन्तु उसके मनमें यही भाव रहा कि मित्र अवश्य ही भाग्यशाली है जो कृष्णलीलाका अमृतपान करता होगा।

× × ×

(१७) यमराजके दरबारमें एक बार दो आदमियोंका न्याय हुआ। एकके लिये हुक्म हुआ कि इसे ऐसी अग्निमें जलाओ कि तीन दिनमें अपने पापोंसे मुक्त हो जाय और दूसरेको यह हुक्म हुआ कि इसे ऐसी अग्निमें डालो कि युगांतरोंतक पड़ा पड़ा तलफा करे और मुक्त न हो, ऐसा ही किया गया। कुछ काल पश्चात् जब धर्मराज उधर गये तो वह दूसरे नम्बरवाला कैदी बोला महाप्रभो! आपके दरबारका न्याय बिलकुल असत्य है। जिस मनुष्यने अनेकानेक पाप किया हिंसा, द्यूत, चोरी, मद्यपान, परस्त्रीगमन आदि कोई कार्य उससे न बचा, वह तो तीन ही दिनमें मुक्त हो गया और मैंने ऐसा कौनसा पाप किया जो युगांतरोंसे पड़ा तड़फ रहा हूँ? धर्मराजने कहा-उसने जो कुछ किया स्वयं ही किया, परन्तु तूने ऐसे २ ग्रन्थ लिखे हैं, जिनके पढनेसे प्रत्येक मनुष्य पापकर्म करनेको उद्यत हो जाता है। यानी तू पापका मार्ग सुझानेवाला है, अतः तेरी पुस्तकोंका जबतक एक भी अक्षर भूमण्डलमें शेष रहेगा तुझे इसी प्रकार तड़फना होगा।

"पाप करनेसे बताना (करवाना) और भी बुरा है"

× × ×

(१८) भोला ब्राह्मणकी मृत्युका समय समीप देख धर्मराजने अपने दूतोंसे कहा भोलाको पकड लाओ। दूत गये और भोला ब्राह्मणके बदले भोला बनियाको ले गये। देखते ही धर्मराजने कहा अरेरेरे! यह क्या किया? इसे शीघ्र ही पहुंचाओ और भोला ब्राह्मणको लाओ। सुनते ही भोला बनिया हाथ

जोडकर बोला प्रभो ! अब मैं न जाऊंगा। मेरे बाल बच्चे एक बार रो चुके ? धर्मराजने कहा हमारे यहां बेईमानीका काम नहीं है, तेरे खातेमें अभी तेरी आयु १० वर्ष शेष है तुझे जाना ही होगा। उसने कहा प्रभो! जैसी आपकी इच्छा हो करे, मैं तो अब न जाऊंगा, धर्मराजने कहा हमारे यहां ऐसा नहीं होगा, यदि तुझे नही जाना है तो जो तेरे नामसे १० वर्ष शेष हैं इनके पीछेमें बिन्दु रख दे जिससे खाता बराबर हो जावे। बनियेने हाथमें कलम लेकर पीछेमें बिन्दु रखनेके बदले आगेमें रख दिया (० १ ० ऐसा रखना था सो १०० ऐसा रख दिया) देखते ही यमराज क्रोधित हो बोले-दुष्ट ! यह क्या किया ? बनियेने कांपते हुये कहा प्रभो ! मुझे क्या मालूम किधर बिन्दु रखना था जैसा आपने कहा मैने वैसा किया। तब धर्मराजने कहा अब तेरी आयु १०० वर्षकी हो गई, अब जायगा कि नही ? बनिया बोला महाराज ! यदि आप जिद ही करते हैं तो जाऊंगा ही। तब धर्मराजने उसे अपने दूतोंके साथ भेजकर भोला ब्राह्मणको बुला लिया। कहावत सत्य है कि-

"बनिये धर्मदरबारमें भी नहीं चूकते"

× × ×

१९) नूरजहां एक डाकुओं द्वारा लूटे गये भिखारीकी लड़की थी, जब ये लोग देहलीमें आकर रहने लगे, भाग्यसे इनके खेमेंकी ओर जहांगीर भी खेलने आया करता था येनकेन नूरजहां और जहांगीर साथ ही खेलने लगे, एक दिन नूरजहांके पासमें लगे हुये आम वृक्षमेंसे २ आम तोड़ देनेके लिये जहांगीरको कहा, उस समय जहांगीरके पास दो तीतर थे

उसने अपने दोनो तीतर नूरजहांको देकर आप उसके लिये आम तोड़ने वृक्ष पर चढ़ गया। भाग्यवश नूरजहांके हाथसे एक तीतर उड़गया, तब तो जहांगीर क्रोधित सा होकर वृक्षसे तुरत उतरा और नूरजहांसे पूछा तूने मेरा तीतर कैसे उड़ा दिया?

नूरजहांके हाथमें जो दूसरा तीतर था उसे भी नूरजहांने बड़ी नजाकतके साथ ऊपरकी ओर हाथ कर छोड़ते हुये कहा ऐसे, एक तो नूरजहां सचमुचही नूरजहां थी फिर उसकी ऐसी अनुपम नजाकत देख जहांगीर उसपर सच्चे दिलसे आशिक होगया और तख्तनशीं होनेपर उसे अपनी बेगम बना उम्र भर उसे बड़े प्रेमसे रखा।

इसी प्रकार राजा भोजने थोड़ीसी नजाकतके कारण एक अहीरकी लड़कीको अपनी पटरानी बनाया, देखो पृष्ठ नंबर २१८ भाग ४

(२०) एक तरुणवयस्क रूपगुणागरी राजपूतरमणी, कुएंपर जल भरने गई। वहां दो यात्री ब्राह्मण बैठे हुए विश्राम ले रहे थे। उन्होंने इस राजपूतानी बालाको देखकर परस्पर कहा-घोड़ी तो अच्छी है, लेकिन सवार जाने कैसा होगा? इनकी इस बातको सुनकर उस नवयौवनाने घड़ा बगलमें दबाया और इनके पास आकर बोली-पंडितजी! आप लोगोंने घोड़ी तो देख ही ली। अब आपको सवार देखनेकी इच्छा है तो मेरे साथ चलो मै सवार भी दिखा दूं।इसकी बात सुन कर उनमेंसे एक तो डर गया, परन्तु दूसरा हिम्मत करके उठा और उसके साथ साथ चल पड़ा।वह स्त्री उसे अपने घर

ले जाकर आटा दाल घी शक्कर वगैरह देकर बोली-- आप भोजन वगैरह बना लें, जबतक मेरा सवार भी आ जायेगा।

पंडितजी भोजन वगैरह बनाकर जीमे ही थे कि कुछ छम-छमाहटका शब्द सुनाई पडा, सुनते ही स्त्री बोली-पंडित उठिये—चलिये, सवार दिखाऊं। आगे-आगे वह तरुणी और पीछे-पीछे पंडितजी।

दोनों द्वारपर निकले तो देखा—एक तरुणवयस्क जवान गठीला शरीर चमकते हुए चेहरेपर चढी हुई मूछें सिरपर पचरंगा फेंटा कमरमें तरवार और पीठपर ढाल बंधी हुई श्वेत बगुला सरीखी घोड़ीपर सवार पूर्वकी ओरसे इसी ओरको आ रहा है।

जब समीप आया आगे बढकर स्त्रीने प्रणाम किया और घोड़ीकी लगाम थाम ली साथ ही वह राजपूत पृथ्वीपर कूद पडा और उस स्त्रीसे बोला—

(ब्राह्मणकी ओर लक्ष्य करके) ये तेरे साथ ब्राह्मण देवता कौन हैं?

उस नवयौवनाने (स्वाभाविक मुस्कराहटके साथ) कहा-जी, मैं जल भरने कुयेंपर गई थी, वहां ये ब्राह्मण देवता मुझे देखकर अपने साथीसे बोले-घोडी तो अच्छी है सवार जाने कैसा होगा? तो मैं इनको सवार दिखाने लाई हूं।

उस वीर राजपूतने ब्राह्मणकी ओर देखते हुए एक थप्पी अपनी घोड़ीकी पीठपर लगाई और बोला-पंडितजी! इसका भी सवार मैं हूं और दूसरी थप्पी उस स्त्रीकी पीठपर लगा-कर कहा-इसका भी सवार मैं ही हूं।

पश्चात् अपनी स्त्रीसे पूछा-पंडितजीको भोजन वगैरहका क्या प्रबन्ध किया? स्त्री बोली-ये भोजन अपने यहां कर चुके हैं। सुनते ही उस राजपूतने एक हाथमें एक रुपया और दूसरे में नंगी तलवार ले उस ब्राह्मणकी ओर बढ़ा। (पाठको! इस समय जरा पंडितजीका हृदय टटोलो क्या दशा है) रुपया पंडितजीको देकर बोला—पंडितजी! यह आपके भोजन की दक्षिणा है। और अब आप पधारें। इस तरवारकी धारको याद रखें, अगर आपने आगे किसी राजपूतरमणीके सम्मुख इस प्रकार बेहयाईपना दिखाया तो इस रुपया के बदले यह तरवारकी धार ही काम आयेगी।

(२१) एक राजपूत जब खानेको भी तङ्ग हो गया तब उसने किसी दूसरे गांवके राजपूतकी घोड़ी चुराकर बेचकर अपना गुजारा करनेका निश्चय किया।

रातको दस बजे घरसे निकला पौषका महीना था, गरीबी की वजह पासमें पूरे वस्त्र भी नहीं थे और दूसरे देशके बजाय राजपूतानेमें ठण्ड भी अधिक पड़ती है। उसे जाना भी करीब सात कोस था, ईश्वरका नाम लेकर प्रस्थान किया। अनुमान दो बजे शीतसे कांपता हुआ जहां जाना था पहुंचा, उस दिन गांवमें पंचायत थी ठाकुर साहब वहां गये हुए थे घरवाले सब बेधड़क सूते हुए थे और द्वार सब खुले पड़े थे भीतर जानेके लिये इसे कोई तजवीज नहीं करनी पड़ी आरामसे भीतर जहां इसकी देखी हुई घोड़ी बंधी थी पहुंच गया और खोलने लगा।

लेकिन अफसोस! जाड़ेकी वजह इसके हाथकी अंगुलियां ऐसी अकड़ गई थी कि यह एक गांठ भी न खोल सका और अफसोस करता हुआ खड़ा रह गया।

याद आया और ये कबू (जिसमें मारवाड़में आग रहती है) के पास जाकर देखा कि उसमेंकी राख कुछ गरम थी। हाथोंमें गरमी आई आकर घोड़ी खोला लेकिन पैर पत्थर हो गये आगे नही बढे।

ये विवश हो घोड़ीको खुली ही छोड जैसे तैसे अन्दर घुसा कोई मनुष्य रजाई ओढे सूता था, इसने उसी रजाईके एक कोनेमें अपने शीतसे अकड़े हुए शरीरको गरम करनेके लिये दबाकर चुपसे लेट रहा।

थका मांदा तो था ही वरषोंसे जाड़ा भी नहीं मिटा सका था पडते ही आंखें लग गई नींद आ गई।

वह रजाई ओढ़कर सोनेवाली स्त्रीघरकी मालकिन,ठकुराइन। सवेरेका मुरगा बोलते ही वह उठी और गृहकार्यमें लीन हुई और चोर महाशयने बेहोशी हालतमें ही और लम्बी तानी।

सवेरा हुआ ठाकुरसाहब पंचायतसे लौटे और स्त्रीसे बोले सवेरा हो गया लेकिन तेरे बिछौने अभीतक फैले हुए ही पड़े हैं।

उसने जवाब दिया आप तो सूते हुए थे इसीलिये बिस्तर न उठाये जा सके।

सुनते ही ठाकुर साहब चमत्कृतसे होकर बोले मैं कब सूता था मैं तो अभी पंचायतसे उठकरही तेरे पास आया हूँ। दोनोंके ताज्जुबका ठिकाना न रहा, कमरेके भीतर जाकर देखे तो दर असल रजाईमें कोई मनुष्य अभीतक सूता है। ठाकुर साहबने एक हाथमें खूंटीपर लटकती हुई तलवार खींच ली और दूसरे हाथसे रजाई झटककर उसे जगाया।

रजाईका झटका लगते ही वह तुरत बैठगया और ठाकुर साहबकी आंखें लाल तथा हाथमें तलवार देख हाथजोड़ अवाक् कठपूतलीकी भांति रह गया।

ठाकुर साहबने बिजलीकी भांति कड़क कर कहा-नालायक! यदि तू अपनी जानकी खैर चाहता है तो जो बात है साफ साफ कह दे, यदि जरा भी झूठ बोला तो ये तलवार और तेरी गर्दन है।

उसने कांपते हुए शब्दोंमें अपना नाम गांव बताया और बोला मै दो वर्षके दुष्कालकी वजह खाने पीनेको बहुत ज्यादा तंग हो गया हूं, मैंने कही आपकी घोड़ी देखली थी और उसे चुराकर अपना गुजारा करनेकी नीयतसे यहां आया था, यहां आनेपर जाड़ेके मारे मेरा शरीर अकड़ गया तब मैंने उसे गरम करनेकी नीयतसे इस रजाईका एक कोना ओढ़ लिया और मुझे नींद आगई बस अब आपको अख्त्यार है, मारें या छोड़ें।

सत्यकी सदा जय होती आई है। ठाकुर साहेबने तरवार वापिस रखदी और अपने एक भाईकी ऐसी दशा देख उन्हें बड़ाही त्रास हुआ।

ठकुराइनसे कहागया खीर पूड़ीकी रसोई बनावे और नाईको बुलाकर चोर महाशयकी उन्होंने हजामत करवाई। नये वस्त्र पहिनाये और बादमें अपने साथ बैठाकर प्रेमपूर्वक भोजन कराया।

ठाकुर साहेबने उन्हें विदा करते समय एक हजार रुपिये नगद और अपनी घोड़ी देकर कहा इस घोड़ीको बेचना नहीं अपने पासही रखना क्योंकि यह मुझे प्राणोंसे भी प्यारी है। हां; तुम्हारा संकटका समय व्यतीत करनेके लिये ये हजार रुपिये बहुत है और अगर कम भी पड़ जांय तो फिर मेरे पास आना।

वे महाशय, हजार रुपिये पीठपर बांध घोड़ी पर सवार हो खुसी खुसी घरकी ओर चले। समयको पलटते कुछ देर नहीं लगती, कुछही दिनो में ठाकुर साहबकी ऋद्धियां चोर महाशयके गृह और उनका दरिद्र देवता ठाकुर साहबके गृह आ विराजे, ठाकुर साहेब दाने दानेको तंग होगये। एक दिन रात्रिके समय स्त्रीके साथ, विचार करने लगे कि देखें हम भी चलें, अपनेको भी कुछ सहारा मिले तो ठीक है, नही तो बच्चे भूखके मारे मर जायंगे हम भी हजार रुपिया तथा घोड़ी दिये बैठे हैं।

दोनो औरत मर्द इस प्रकार विचारकर रवाना हुए और सायंकाल ४ बजेके समय उस गांवके किनारे पहुंचे जिस गांव-के ठाकुरको इन्होंने दुःखमें सहारा दिया था।

गांवके बाहर एक छोटासा नाला था उसके किनारे ठाकुर साहबने ठकुराइनको बैठा दिया और आप अकेलेही गांवकी ओर रवाना हुये। होतव्यता बड़ी प्रबल है ठाकुर साहबको गये मुश्किलसे आधा घंटा बीता होगा कि वहां एक अत्यन्त सुन्दर ३ वर्षका बच्चा खेलता हुवा अकेलाही आ निकला जिसके बदनपर ४-५ तोला सोना और कुछ चांदीके जेवर थे।

ठकुराइन जो नालेके किनारे बैठी थी बच्चेको देखतेही अपने लालचको न रोक सकी। उसे पकड़कर जोरसे उसकी घेंटी दबादी जिससे लड़का मृतवत् होगया और उसे अपने टोकनेमें रख ऊपरसे कपड़ा ढांक दिया।

ठाकुर साहेब गांवमें पहुंचे उनका बड़ा स्वागत हुवा जब वह ठाकुरको इन्हींके जरिये मालूम हुआ कि इनके साथमें इनकी स्त्री भी आई है और वह नालेके किनारे बैठी है तो उन्होंने अपनी स्त्री तथा २-३ बांदियोंको उसके लानेके लिये भेजा और

कहदिया खबरदार! इसके स्वागतमें किसी प्रकारकी कमी न पड़े। उन्होंने नालेके किनारे आकर आगन्तुक ठकुरानीसे अपने गृह चलनेके लिये कहा तब वह पहिले तो बहुत नटा नटी की लेकिन अन्तमें (वे इसे छोड़कर तो जाही नही सकती थीं) जानेके लिये राजी हुई, परन्तु उनके लाख जिद्द करनेपर भी, उसने अपना टोकना आई हुई ठकुराइनको, तथा उसकी बांदियोंको न देकर स्वयम्ही अपने सिर पर रख चली और जाकर एकान्त कोठरीमें, (जो इसके लिये साफ करायी गई थी,) रख दिया।

रसोई तयार हो गई अंदरसे बांदीने आकर कहा ठाकुर साहब! छोटे बाबुका पता नहीं है घंटाभर पहिले हम लोगोंके पास खेल रहाथा परंतु हम लोग तो इधर काममें लगगई, और बाबू न जाने खेलता २ किधर निकल गया?

चारों ओर आदमी दौड़ाये गये। गांवका एक दो और तीन चक्कर हुए परंतु बच्चेका कही पता न लगा।

इतना होने पर भी ठाकुर साहेबको अपने बच्चेको खोजनेकी उतनी चिन्ता नही है जितनी मेहमानोंको जल्दी जिमानेकी।

आगन्तुक ठकुराइनकी समझमें अब आया कि, उसने कैसा अन्याय कर डाला, उसने तुरतही एकान्तमे अपने ठाकुरको बुलाकर सारी घटना समझाई. सुनते ही ठाकुरकी क्या दशा हुई इसका अनुमान पाठक स्वयं कर लें।

इसका कलेजा हाथो उछलने लगा, सारे शरीरमें मुर्दनी छागई, कांपते हुए पैरोंसे ठाकुर साहबके पास आकर जैसे तैसे सारी घटना समझा दी।

ठाकुरने अपनी पुरानी बातें याद करके कहा तुम लोग किंचित

भी मत घबरावो और यह बात किसीको भी खबर न होने पावे, भूल आदमीसेही होती है उस ल्हाशको तुरत मेरे हवाले करो।

ल्हाशको उठाकर तिमंजिलेमें पहुंचे और एक खिरकीके सामने पलंगपर सुला कर बारीकसा डुपट्टा उढ़ा दिया और आप नीचे उतर आये।

अन्दरसे पंद्रा, पंद्रा मिनटमें खबर आरही थी, कि बच्चा नहीं मिला, रात बढ़ती जा रही है।

ठाकुर साहब अंदर गये और बोले गांवका कोना कोना छान डाला गया लेकिन बच्चेका कहीं पता नहीं है पहिले घरमें तो दुमंजिला तिमंजिला सब जगह खोज डालो सायद कहीं चढ़ गया हो।

सुनते ही बांदियां ऊपर दौड़ गयीं तिमंजिलेमें जाकर देखा बच्चा चद्दर ओढ़े पलंगपर सूता है, इन्होंने उसका मुंह उघाड़ा तो बच्चा आंखें खोलकर बैठ गया—

सत्यकी सदा जय होती है, बांदियां उसे गोदीमें लेकर नीचे आईं, मेहमानोको आनंदपूर्वक भोजन कराकर बादमें घरवालोंने भोजन किया। वहां ठाकुरसाहेब ४-५ दिन आनंदसे रहे लेकिन मनमें बहुत कायरसे रहे।

अंतमें ठाकुर साहेबने इन्हें काफी धन दिया तथा इनकी घोड़ी भी दे दी और अनेक प्रकारसे प्रार्थना करते हुए इन्हें विदा किया। बस।

अंक दूसरा

(मारवाड़ी भाषा)

(१)

म० पंडितजी ! के करो हो, रसोई कर चुक्या के ?

पंडितजी-कर चुक्या और जीमबी लिया ।

म०-के माल ताल घुट्यो थो ?

पंडित जी-घुटे तो कोई करम ठोक को माथो ।

म०-अजी ! के-के, माल बन्यो थो ?

पंडितजी-मालके पड़योई बूसे हे के ? चार बाटी बनाई थी-जिक्यांने सूकी पाकी मोर मारकर खा लिया ।

× × ×

(२)

बेटी—मां ! ये मां !

मां-ये बाई क्यूं ?

बेटी—काकाजीको दूध तो मिन्नी (बिल्ली) पीगई।

मां-तो के आंट हे, काकोजी मेरो दूध पी लेसी ।

× × ×

(३)

बाप—अरे बाबू, क्यों रोवे है ?

बच्चा—मेरी मां तने दाऊंदा ।

बाप—चुप चुप मत रो, चाल आपनी मां कने चालां ।

(४)

बाबू—गुवाला ओरे गुवाला !

गुवाला-हां जी बाबू साहब ! के हुकम है ?

बाबू-अरे बेटीका काइ, तूं अब तांई के करे हो रे ?

गुवाला-बाबूसाहब ! सेठानीने माटी दी, टाबरांने पाटी दी, रसोयाने लकड़ी दी, मुनीमजीने आग दी, और थांने पाणी दियो।

× × ×

(५)

" थारे कानी ब्याह मुकता किसाक हुआ करे हैं ?

" घीतो पानीकी धार बह्या करे हैं।

" अरे बारे जना तो थारे कानी क्यूंबी कोनी होवे म्हारे तो जगरामकी भूवाका मुकतामें फावड़ानं सूं लापसी काटी दी।

× × ×

(६)

जाट-भाई बोरी ! म्हे तो तेरा भरोसापर छोराको ब्याह मांडलियो

बोरी-नातो तू आगली खंदी पटाई और ना पाछलीमेंका क्यूं रुपया दिया, फेरूं तूं और मांगवानेई अयो है ?

जाट-भाई बोरी ! जुवार बोई है सिट्टा फूटेलां तो तेरा भाग ! क्यूं तेरा अगलामें देस्यूं क्यूं तेरा पाछलामें देस्यूं पण छोराको ब्याव तो तेरा सूंई होसी।

× × ×

(७)

लड़का—काकाजी ! आपणा घरसूं चिट्ठी आई है, मैं तो एक बरस सूं अठेई हूं, मेरे छोरो कैंया हो गयो ?

काकाजी-ऐया ई हुया करे हैं जब तू हुयो मैं तीन बरस पहिलीं परदेश चल्यो गयो थो ।

× × ×

(८)

बकरी चरावावालो -थे मां बाई कोनी बड़ावे।

मां (बाई सूं) ये बाई बड़ाले । आडी होरबड़ाले । भायो दुख पावे है.

× × ×

(९)

सेठजी -(मोचीसूं) अरे भायाचोद! वा छोरी बिलावे जबरदस्ती ठांस गयो ।

मोची-सेठजी ! नवी जोड़ी है तेल लगाये ।

(१०)

एक कोई लुगाई को टाबर रातने सोती बखत रोने लागगयो जदवा लुगाई आपका घरका धणीने बोली-

ओजी थे चिनेक झोल्या बनजावो तो आपना भायाने नींद आजावे ।

सुनते ही उसका धणी उसकी खाट नीचे घुस गया और हू हूहू बोलने लगा ।

इणतरां डरावनी बोली सुनकर वो टाबर आंख्यां मीचवा लाग गयो जणां फेरूं वा लुगाई आपका धणी सूं बोली—

जारे राममारया झोल्या तेरो मूंड़ो बाकूं जा झारो भायो तो सो गयो ।

(११)

सूरदासजी बाजार जा रहा था और वांको बहिरो भायलो बाजार-
सूं आवे थो दोन्यांमें राम रमी हुई—

सूरदासजी- भायला राम राम।

भायलो-बाजार जाकर आया हां?

सूरदासजी-घरमें सब राजी हैं?

भायलो-बैंगण लाया हां।

सूरदासजी-अजी टावर मजामें है क-

भायलो-सबको भड़तू बनवांगा।

× × ×

(१२)

भिखारी बामण-ओजी माजी घलाज्यो बामणाकाको खिछ्यो छे

सेठाणी-अरे बालया हाथ खाली कोनी।

भि० बामण-ओजी भीतके दे पाड़ो खाली हो जासी।

सेठाणी-छोटा मूं सूं बड़ी बात मना बोल्या करे।

भि० बामण- अजी मैं तो चून मांगू छूं बोलो थे तले आवोगा
अक मैं ऊपर जाऊं?

(मुंह लगे ब्राह्मण ऐसे ही होते हैं)

× × ×

(१३)

एक फक्कड़ एक बड़ो लम्बो भाटो भैरूंजीका नाम सूं नन्दीमें
गाड़ दियो तथा छोटा छोटा दस बीस भाटा पायचामें घालकर

भिक्षा मांगवा तांई गांवमें चाल्यो, पहला घरमें गयो, घरधणीको नाम थो "जीवो" (जीवनराम) द्वारपर "जीवो" की लुगाई बैठी थी यो जाकर बोल्यो —

फक्कड़-(स्वाभाविक ही) माई तेरो पूत जीवो, चूर्ण घलान्यो।

सुनते ही वा लुगाई आगबबूलो हो गई और बोली बापका मंधावणा जीवो तो मेरा खसमको नांव है और तू पूत बतावे है! सुणते ही विचारा वहांसे सटका और दूसरा दरवाजापर पूंच्यो उठे "जैराम" (जैरामदासकी) लुगाई चरखो काते थी। उठे जाकर विचार कर्‌यो माई तेरो पूत जीवो नही बोलनो चाहिये ऐसो विचार कर बोल्यो।

जैरामजीकी माई चून घलाज्यो।

वहा भी इसकी पहिले मकानकीसी दशा हुई। यो विचारने लाग्यो ई गांवमें जै बोलदाकी चिड़ है सो जै बोलनी ही नही चाहिये यूं विचार कर तिसरा दरवाजामें जाकर बोल्यो माई चूण घला, वा लुगाई एक आंजलो चूनको भरकर लाई, जब फक्कड़ बोल्यो इत्ता सूं के होवे है छोटा मोटा तो पायचामें हैं और लांबो देखे तो नालामें चाल, सुनते ही वह स्त्री भी आगबबूला हो गई और वहांसे अपनासा मुंह ले चलता बना।

भाग्य वचन अभागे प्रति—

अभागे तूं कही मत जा, बैठे रहना गारमें।
तूं जावेगा रेलमें, तो मैं पंहुचूंगा तार में॥

× × ×

(१४)

ग्वाला बाबू साहबकी इच्छानुसार बाजारसे ऽ।। लड्डू (८नग) ला रहा था, रस्तेमें विचार किया बाबूजी मेहनतके बदले मुझे दो लड्डू देंगे सो यहां ही क्यों न खा लूं? ऐसा विचार कर दो लड्डू खा गया। फिर विचार किया नौकर हूँ इसलिये बाबू साहब दो लड्डू देंगे, दो और खा गया। फिर विचार किया बाबू साहब सब न खा सकेंगे दो लड्डू जूठन छोड़ेंगे २ और खागया! ऊंह! दो लड्डू बाबूसाहबको क्या परसेंगे ऐसा विचार दो और ठोंक गया। घर गया तो बाबूने पूछा, लड्डू लाया? इसने कहा-हां लाया, बाबूने कहा कहां हैं? उसने सब हिसाब समझा दिया।

अंक तीसरा

मनोरञ्जन--भानमती।

आमका झाड़ लगाना।

आमकी गुठलीको तीन दिनतक (नित्य ताजा दूध डाला करे) थूहरके दूधमें भिगोवे और छायामें सुखाकर रख ले, इस गुठलीको मिट्टीमें दबाकर पानीका छींटा देते ही अंकुर निकल आवेंगे।

गुप्त अग्नि ।

फँटके मेंगनेको अग्निमें लाल करके सहतमें बुझावो और रखलो इसे तोड़कर हवाके सामने करते ही अग्नि उत्पन्न होगी ।

× × ×

अक्षर उडाना ।

कागजी निम्बूके रसमें कलीका चूना घोटकर अक्षरोपर लगा, कर धूपमें रख दो, अक्षर उड़ जावेंगे ।

× × ×

निम्बू उछालना ।

निम्बूमें छेदकर २ मासा पारा भरकर आटासे छेद बन्द करदे अग्निका ताव लगनेसे निम्बू उछलने लगेगा ।

× × ×

कांच चावना ।

कांचके टुकड़ोको अग्निमें लाल करके अदरखके रसमें बुझालेनेसे नरम हो जाते हैं, मुँहमें नही चुभते ।

× × ×

कपडेपर आगकी गैंद ।

कपूर, पारा और कोयलाके सम भागकी गैंद बनाकर जलाओ, तनी हुई चद्दरपर डाल दो और इधर उधर लुड़काने रहो । कपड़ा किञ्चित् भी नही जलेगा ।

× × ×

अधर अँगूठी ।

। मजबूत धागाको नमकके पानीमें भिगोकर इसमें हलकीसी

अंगूठी लटकाकर खूँटीपर टांग दो और धीरेसे माचिस घिसकर लगा दो धागा जल जायगा अंगूठी लटकती रहेगी।

× × ×

हाथमें अग्नि।

कपूर और नौसादरको अपने हाथोंकी हथेलीपर पीसकर पानीके साथ खूब रगड़ ले, सूख जानेपर हाथमें अङ्गार रख लो नहीं जलेगा।

× × ×

पत्थरपर जाली।

मैन और तिली तेल गलाकर पत्थरपर इच्छानुसार जाली बना दो तीन दिन बाद धो डालो, जाली बनी रहेगी।

× × ×

तुरत दूध जमाना।

तालमखानाका चूर्ण दूधमें डालनेसे दूध तुरत जम जाता है।

× × ×

चांद।

मोटे कपड़ेका चांद बनाकर उसपर गन्धकला लेप कर दे, रात्रि-समय उसपर जल छिड़कनेसे वह चमकेगा।

× × ×

बन्दूकके फैयरसे नाम लिखना।

आकके दूधसे लिखकर कागज रख लो इसे दीवारपर चिपकाकर नजदीकसे बन्दूकका फेयर कर दो अक्षर उभर आवेंगे।

पानीमें बतासा ।

तेलमें डूबे हुए बतासेको पानीमें डुबा दो, कुछ देर नहीं गलैगा।

× × ×

हथेलीमें सरसों ।

पीली सरसोंको काली कुत्तीके दूधमें २१ बार भिगोकर रखलो, इसे हथेलीमें रख मिट्टी दबा पानी छिनको, जम जावेगी।

× × ×

रंग पलटना ।

हरी पत्तियोंको अथवा फलको गन्धककी धूनी देनेसे सफेद रङ्ग हो जाता है।

× × ×

ज्वारकी खील करना ।

जुवारको ७ दिनतक थोहरके दूधमें भिगोकर सुखा ले, जब खेल दिखाना होवे कम्बल तान, उसपर जुवार डाल हथेलीसे रगड़ दो, खील हो जावेगी।

× × ×

निम्बूमें खून ।

कटहरके दूधसे सने हुए चक्कूसे निम्बू काटो तो रसके बदले खून निकलेगा। (निम्बूके अन्दर सुईसे चूना और हलदी भरकर चाकूसे काटो रक्त निकलेगा)

× ×

ठण्डी कढ़ाई।

हलवाईकी कढ़ाईमें सांडका पेशाब डाल देनेसे वह गर्म नहीं होती, ऐसा सुना जाता है, चाहे वहां कितनी भी अग्नि जलावे।

× × ×

आकाशी गोला।

बरसातके अथवा हुक्केके पानीमें साबून (गोलीवाला) घोल लो और काठकी बिलकुल बारीक नली उसमें डुबाकर दूसरी ओरसे फूंको तो कई प्रकारके रंगीन गोल बन २ कर उड़ेंगे।

× × ×

जल न छनै।

एक तारकी चलनीमें २-२-बार गुवारपाठेका रस लगावे और सुखा ले, उसमें पानी डालनेसे नहीं छनैगा।

× × ×

कागजकी कढ़ाहीमें गुलगुले।

मोटे कागजकी कढ़ाही बनावे और उसमें तिल्लीतेल भरकर आंचपर रख दे, इस बातका ध्यान रहे कि आंच अङ्गारोंकी हो उसमें लूक बिलकुल न उठे, जब तेल गरम हो जाय तब उसमें इच्छानुसार बड़े गुलगुले बनालो, बन जावेंगे × ×
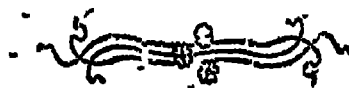
अंक चौथा

गणित मनोरञ्जन।

नारंगी (सन्तरा) के बीज बताना।

नारंगीकी फांके गिनती करनेसे, जरी हों तो फाकोंसे तिगुने बीज और पूरी हों तो दुगुने बीज होंगे।

तरबूज (मतीरा) के बीज।

तरबूजमें जितनी लकीरें हो उनमें ८० से गुणा करनेसे बीजोंकी संख्या जानी जाती है।

× × × ×

अनार (बिदाना) के बीज।

अनारके जितने कंगूड़े (पंखड़ी) हों उसको तिगुना तिगु-नाको चौगुना और चौगुनाको छः गुना करके बीजोंकी गिनती ठीक आजाती है।

× × × ×

गर्भका हाल बताना।

स्त्रीके नामाक्षरमें बीस अंक और जोडो तथा पूछनेके दिनके अक्षर तिथि तथा छः और जोडकर नौका भाग करो, शेषमें विषम अंक (१-३-५-७-०) बचनेसे लड़का और पूरा सम (२-४-६-८) बचनेसे लड़की होगी।

संवत जानना।

संवतको दूना करके तीन घटा दो और ७ का भाग दो शेषमें १-४ बचे तो अकाल, २-५ बचें तो सुकाल और ३-६ बचे तो मध्यम।

दूसरेकी कल्पित तिथि बताना।

लेनेवालेसे कहो " अपनी कल्पित तिथिमें ६० जोड़कर १६ भाग करे "। शेषको तुम पूछलो और उसमें ४ जोड़कर पड़वासे गिनकर तिथि बता दो।

नोट- तुम्हारे ४ जोड़ने पर यदि १६ से अधिक होजाय तो १६ बाद करके गिनो और बतादो।

दूसरेकी कल्पित संख्या बताना।

प्रश्नकर्त्तासे कहो तुम्हारी संख्याको दुगुनी करो और सोला जोड़कर दो का भाग दो। जो लब्धि आवे उसे तुम पूछ लो उनमेंसे ८ घटाकर बता दो। उदाहरण-उसने ९ किया दूना १८ हुआ १६ जोडा-३४ हुआ दो का भाग दिया तो १७ लब्धि आया उसमें ८ घटा दिया तो ९ शेष रहा।

दूसरेके मनकल्पित फल बताना।

पूछनेवालेसे कहो जितने फल लिया हो उतनेही देवदत्तसे और ले ले तथा (१०-२०) कुछ फल तुम अपनी ओरके दे दो सबको जोड़ ले तब आधे मन्दिरमें दिला दो, जितने देवदत्तके लिये थे वे उसको दिला दो अब जितने निंबू (फल) तुमने दिये हों उनके आधे बता दो उसका शेष बराबर मिल जावेगा।

मनमें कल्पना की हुई बाढ़ीका रुपया बताना।

प्रश्नकर्त्तासे कहो अनाज बाढ़ी दे उसमें इच्छानुसार बाढ़ी लगा दे, जितना अन्न बाढ़ीका आया हो उसको मूल अन्नमें जोड़ दे और जितना बाढ़ीका अन्न आया हो उस हिसाबसे सबको बेच दे और रुपिया बनाले इससे तुम केवल बाढ़ीका दर पूछ लो और एक मन पर हिसाब करके रुपया बतादो, ठीक उत्तर मिल जावेगा। उदाहरण–प्रश्नकर्त्ताने ५ मन अनाज ३२॥ की मनके हिसाबसे बाढ़ी दी जिसका मूल धन, और बाढ़ी कुल अन्न ५।३॥ आया इसे उसने बाढ़ी (।३२॥) के भाव से बेचा, कुल १७) हुए और यही १७) रुपये १३॥ सेर के होगे ३२॥ के भावसे।

हिसाबोंकी कुञ्जिया।

(१) एक रुपयेकी जितनी छटांक, उतने ही मनके ६४० रुपया।

(२) एक रुपयेकी जितनी पुहाई* उतनेही खंडीके ३२०) रुपया।

(३) एक रुपयेकी जितनी सेर, एक आनेकी उतनी ही छटांक।

(४) जितने रुपये मन, उतनेही आनेको अढ़ाई सेर।

(५) जितने रुपिया तोला उससे दूने पाईकी एक रत्ती (३ पाई का एक पैसा)

(६) जितने रुपया सैंकड़े एक तगड़े उतनेहि आंक, (१०० आंक का एक रुपिया)

---

* १६ पुहाईका माटा और २० माटकी खण्डी।

चमत्कारिक-गणित ।

पांच गुप्त अंकोंमेंसे बीचका अंक बताना ।

३		४
	६	
५		७

पूछनेवालेसे कहो दोनो ओरसे तिरछे अंक जोड़ो और चारों कोनोंके चार अंक जोड़कर-उसमेंसे घटावो शेष तुम पूछकर उसका आधा बीचका अंक बता दो ।

मिटाया हुवा अंक बताना ।

प्रश्न करनेवालेसे कहो कुछ संख्या लिखकर उसके अंकोंको परस्पर जोड़े और उस संख्यामेंसे घटा दे, शेषमेंसे एक अंक चाहे जहांका मिटा दो अब (मिटाने पश्चात) जो संख्या बचे उसे तुम पूछकर उसमें ९ का भाग लगावो, जो शेष अंक बचे उसे पूरा ९ करनेके लिये जितने अंक कम हों वही उसने मिटाया।

उदाहरण-प्रश्नकर्त्ताने ५७३७०३ लिखा और परस्पर जोड़ा तो २१ हुआ जब पच्चीस उसमेंसे घटाया तो ५७३६७८ बचा उसने ३ मिटाकर शेष ५७६७८ तुमको बताया तुम इसमें ९ का भाग करो तो शेषमें ६ बचा। अब ९ पूरा होनेके लिये ३ अंक कम हैं इस लिये उसने ३ का अंक मिटाया है।

अग्रिम जोड़ सादा।

यदि कोई मनुष्य तुम्हे कोई संख्या अग्रिम जोड़के निमित्त लिखा कर दे, तो तुम उसे यह पूछलो कि वह उसके नीचे (उतने २ ही अंकोंकी) कितनी संख्या और लिखैगा. वह जितनी संख्या लिखनेको बोले उतनी ही संख्या तुम भी लिखोगे. यह बात उससे कह दो। अब उसने जो अग्रिम जोड़के वास्ते संख्या लिखी है उसमेंसे जितनी संख्या वह और लिखनेको बोले उतने अंक उसकी लिखी हुई संख्यामें आगेसे घटाकर पीछेमें लिख दो (बाकी वेही अंक लिखो जो उसने लिखे है) बस जोड़ लग गया। अब वह अपने कथनानुसार रकम लिख ले उसके नीचे तुम भी उतनी ही संख्या लिखो, परन्तु इस बातका ध्यान रखो कि तुम्हारी नम्बरवार रकमोंका हर एक अंक उसकी नम्बरवार रकमके अंकोसे ९ की बाकीका हो, तो तुम्हारा लिखा हुआ उत्तर बराबर मिलेगा।

उदाहरण-एक आदमी १९३०८ की संख्या तुम को जोड़के वास्ते लिखता है और कहता है मैं दो संख्यायें और लिखूंगा अब तुम २ अंक अगले अंक आठ (८) मेंसे घटाकर पीछेमें इस प्रकार रख दो २१९३०६ बस अग्रिम जोड़ हो गया।

क्रिया—१९३०८ — जोड़के लिये दी हुई रकम।

+५५७१८ } पूछने वालेकी दो संख्या
+४३५२७ }

+४४२८१ } बताने वालेकी दो संख्या.
+५६४७२ } ९ की बाकीवाले अंक ऊपरके अंकोंसे.

२१९३०६

अग्रिम मिश्र जोड।

इस जोड़में जितनी संख्या लिखनेवाला कहे, उसमेंसे घटानेकी आवश्यकता नहीं। केवल पीछेमें उतनाही अंक लिख देना चाहिये। अब तुम अपनी संख्या लिखनेके समय इस बातका ध्यान रखो कि रुपयोंकी संख्या तो ऊपर क्रिया-अनुसारही लिखो, परन्तु आना पाईकी रकम उसकी नम्बरवार रकमसे ठीक १) की बाकी हो। उत्तर ठीक आवेगा।

उदाहरण-५७५॥=) ७ का जोड़ अग्रिम बतावो, दो संख्या और लिखी जायेगी।

क्रिया-५७५॥=)७ दी हुई रकम:

३७२॥-) ३ } पूछने वालेकी दो संख्या.
६५९।≡) ५ }
६२७।=) ९ } बतानेवालेकी दो संख्या
३४०॥) ७ }

३५७५॥=)७

अंग्रेजी महीनोंके दिन।

तीन दिनोंका माह सितम्बर, ऐसेहि अप्रेल जून नवम्बर।
माह फरवरी अट्ठाईस मानो, बाकी सब इकतीसा जानो॥

भूत भविष्यकी तारीखका दिन बतानेवाली क्रिया।

उत्तरार्ध सन् चौथफल, पुनि तारीख मासंक।
जोड़ सनांक पुनिसत करि, शेष वार लिहशंक॥

भावार्थ-उत्तरार्ध सन (अर्थात् सनके अन्तिम २ अंक) और उसका चौथाई (याने ४ का भाग देनेपर जो लब्धि अंक आयें उनको धरो शेषको छोड़ दो।)

(इसको ५ धरो) पश्चात् तारीख और मास अंक, तथा सैकड़ा सन का चौथाई (इसके मुताबिक मास अंक धरे) जोड़कर सातका भाग देतो।

मासांक दोहा।

सेप्ट दिसम्बर (१) एक है, अपर जुलाई दोय (२)।
जन अक्टूम्बर(३) तीन हैं, मई चौ (४) अग पँच(५)होय॥
मार्च फरवरी नवम्बर. छ्य (६) अंकहि गुनि लेय।
जून शून्य (०) मन राखिके, पूछे दिन कहि देय॥

शेष दिन विचार।

शनि शून्य (०) रवि (१) है, सोम दोय कुंज तीन (३)।
बुद्ध चार (४) गुरु पांच (५) औ, छ्य (६) शुक्रहि ले चीन्ह॥

उदाहरण—१९३० जनवरी ४ तारीखका दिन—

उत्तरार्ध सन.	३०
चौथफल.	७
तारीख.	४
मास अंक.	३
सनांकका चौथफल.	५

७) ४९ (७
४९
—
० शून्यमें शनिवार।

A. L. Gupta

सूक्ष्म कलेण्डर बाबत सन् १९५२ ई०

पहिली जनवरीसे आखिरी दिसम्बरतक	१, ८, १५, २२, २९	२, ९, १६, २३, ३०	३, १०, १७, २४, ३१	४, ११, १८, २५, ०	५, १२, १९, २६, ०	६, १३, २०, २७, ०	७, १४, २१, २८, ०
जनवरी ३१	बृ	शु	श	इ	सो	मं	बु
फरवरी २९	इ	सो	मं	बु	बृ	शु	श
मार्च ३१	सो	मं	बु	बृ	शु	श	इ
अप्रैल ३०	बृ	शु	श	ई	शु	मं	बु
मई ३१	श	इ	सो	मं	बु	बृ	शु
जून ३०	मं	बु	बृ	शु	श	इ	सो
जुलाई ३१	बृ	शु	श	इ	सो	मं	बु
अगस्त ३१	इ	सो	मं	बु	बृ	शु	श
सितंबर ३०	बु	बृ	शु	श	इ	सो	मं
अक्टूबर ३१	शु	श	इ	सो	मं	बु	बृ
नवम्बर ३०	सो	मं	बु	बृ	शु	श	इ
दिसम्बर ३१	बु	बृ	शु	श	इ	सो	मं

नोट—(१) पहिली जनवरीका दिन देखकर चाहे जिस सालका कलेण्डर निकाल लो।
(२) जिस सन्‌में ४ भाग कट जावे उस सन्‌में फरवरी २९ दिनका होगा।

विविध।

किसी कारखानेमें ३६ पीपा तेल आया। कर्मचारी चालाक था। मैनेजर जब गिनतीको आये तब पहिलेको क्रिया नम्बर १ द्वारा ३२ पीपे रख ३६ गिनाये, दूसरेको दूसरी क्रियानुसार २८ २८ रखकर, तीसरेको तीसरी क्रियानुसार २४ रखकर और चौथेको चौथी क्रियानुसार २० ही पीपे रख ३६ गिनादिये।

पीपे रखनेकी क्रिया।
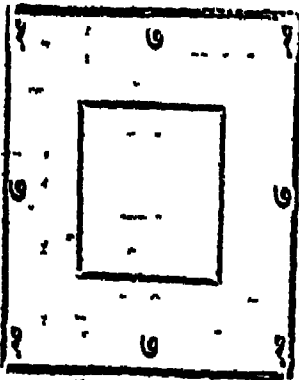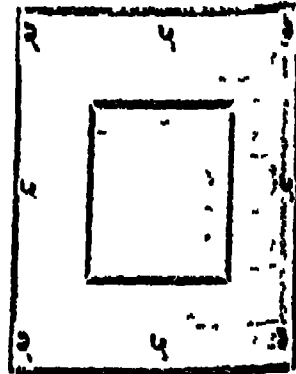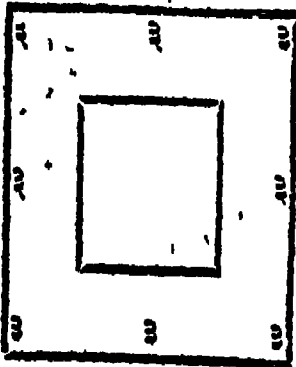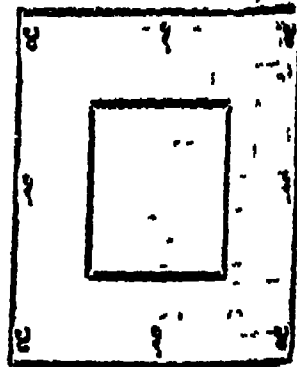
गणित निर्माण कर्ताओंने खूब सोचकर क्रियाएँ लिखी हैं वे कदापि गलत नहीं हो सकतीं, यदि कोई गणित गलत जान पड़े तो निर्माणकर्ताको मूर्ख न समझकर उसकी ठीक कुञ्जी ढूंढना चाहिये।

सन्.

१०७ वर्षोंका कैलेण्डर (१९०० से, २००० तक)

इसको देखना किया यह है—जिस सालमें जिस माहकी ता० निकालनी हो, पहले सनके, खानेमें वह साल देख, उसी खानेके सिरेका अक्षर याद रखो, फिर उसी माहके खानेमें देखो, उसके सिरेका अक्षर

शु	क	ला	वा	ब	हा	र
❀	१९००	१९०१	१९०२	१९०३	❀	१९०४
१९०५	१९०६	१९०७	❀	१९०८	१९०९	१९१०
१९११	❀	१९१२	१९१३	१९१४	१९१५	❀
१९१६	१९१७	१९१८	१९१९	❀	१९२०	१९२१
१९२२	१९२३	❀	१९२४	१९२५	१९२६	१९२७
❀	१९२८	१९२९	१९३०	१९३१	❀	१९३२
१९३३	१९३४	१९३५	❀	१९३६	१९३७	१९३८
१९३९	❀	१९४०	१९४१	१९४२	१९४३	❀
१९४४	१९४५	१९४६	१९४७	❀	१९४८	१९४९
१९५०	१९५१	❀	१९५२	१९५३	१९५४	१९५५
❀	१९५६	१९५७	१९५८	१९५९	❀	१९६०
१९६१	१९६२	१९६३	❀	१९६४	१९६५	१९६६
१९६७	❀	१९६८	१९६९	१९७०	१९७१	❀
१९७२	१९७३	१९७४	१९७५	❀	१९७६	१९७७
१९७८	१९७९	❀	१९८०	१९८१	१९८२	१९८३
❀	१९८४	१९८५	१९८६	१९८७	❀	१९८८
१९८९	१९९०	१९९१	❀	१९९२	१९९३	१९९४
१९९५	❀	१९९६	१९९७	१९९८	१९९९	❀
२०००	❀					❀

याद रखो, फिर ता०के खानेमें उसी अक्षरके नीचेकी तारीखोंको निश्चित माहकी ता० मानो। याद रखने वाले केवल ७ अक्षर (शुकलावा बहार) ही है, पहले सनका खाना देखो, बाद मासके खानेका अक्षर देखो और सनवाले अक्षरको छोड़ दो, फिर मासके खानेमेंसे निकाले हुए अक्षरोंसे तारीख निश्चय कर दो।

❋ मुकलावा-बहार ❋

महीना.

महीना	मु	क	ला	वा	ब	हा	र
जनवरी	क	ला	वा	ब	हा	र	मु
फरवरी	हा	र	मु	क	ला	वा	ब
मार्च	हा	र	मु	क	ला	वा	ब
अप्रैल	ला	वा	ब	हा	र	मु	क
मई	मु	क	ला	वा	ब	हा	र
जून	ब	हा	र	मु	क	ला	वा
जुलाई	ला	वा	ब	हा	र	मु	क
अगस्त	र	मु	क	ला	वा	ब	हा
सितम्बर	वा	ब	हा	र	मु	क	ला
अक्टूबर	क	ला	वा	ब	हा	र	मु
नवम्बर	हा	र	मु	क	ला	वा	ब
दिसम्बर	वा	ब	हा	र	मु	क	ला

दिन।

नाम दिन	मु	क	ल	धा	व	हा	र	नाम	मु	क	ला	व्रा	छ	हा	र
सोमवार	१							बृहस्प	१८	१७	१६	१५	१४	१३	१२
मंगल	२	१						शुक्र	१९	१८	१७	१६	१५	१४	१३
बुध	३	२	१					शनि	२०	१९	१८	१७	१६	१५	१४
बृहस्पति	४	३	२	१				रवि	२१	२०	१९	१८	१७	१६	१५
शुक्र	५	४	३	२	१			सोम	२२	२१	२०	१९	१८	१७	१६
शनि	६	५	४	३	२	१		मंगल	२३	२२	२१	२०	१९	१८	१७
रवि	७	६	५	४	३	२	१	बुध	२४	२३	२२	२१	२०	१९	१८
सोम	८	७	६	५	४	३	२	बृहस्प	२५	२४	२३	२२	२१	२०	१९
मंगल	९	८	७	६	५	४	३	शुक्र	२६	२५	२४	२३	२२	२१	२०
बुध	१०	९	८	७	६	५	४	शनि	२७	२६	२५	२४	२३	२२	२१
बृहस्पति	११	१०	९	८	७	६	५	रवि	२८	२७	२६	२५	२४	२३	२२
शुक्र	१२	११	१०	९	८	७	६	सोम	२९	२८	२७	२६	२५	२४	२३
शनि	१३	१२	११	१०	९	८	७	मंगल	३०	२९	२८	२७	२६	२५	२४
रवि	१४	१३	१२	११	१०	९	८	बुध	३१	३०	२९	२८	२७	२६	२५
सोम	१५	१४	१३	१२	११	१०	९	बृहस्प		३१	३०	२९	२८	२७	२६
मंगल	१६	१५	१४	१३	१२	११	१०	शुक्र			३१	३०	२९	२८	२७
बुध	१७	१६	१५	१४	१३	१२	११	शनि				३१	३०	२९	२८
								रवि					३१	३०	[illegible]
								सोम						३१	[illegible]
								मंगल							३१

श्री जरंग-प्रश्नावली देखनेकी क्रिया।

हाथपैर धोकर शुद्धतापूर्वक शांतचित्त बैठकर अपने मनमें कल्पना करते हुए इसके एक खानेमें अनामिका अंगुली रखे, जो हो उसका शुभाशुभ आगेमें देख लो। जैसा अच्छा या बुरा उत्तर आवे, उसीपर विश्वास रखे। बारबार न देखे। अच्छा बुरा सब ईश्वराधीन है। प्रश्नावली देखकर अपने समुद्ररूपी मनके तरंगरूपी विचारोंको बढ़ा अथवा घटा लेनेके अतिरिक्त अन्य कोई लाभ नहीं।

अ	ग	ठ	प	ल
ई	च	ड	फ	व
उ	छ	त	ब	श
क	ज	थ	य	स
ख	ट	द	र	ह

अ-अभी मनोरथ सिद्धिमें विलम्ब है। वर्तमान दशा उतर जानेपर इच्छा पूर्ण होगी। सबरका फल मीठा है।

ई-ईश्वरका भजन करो। संभवतः इच्छा पूर्ण हो। आशा एक आना और निराशा पंद्रह आना है।

उ-उत्तर और इसके दक्षिणभाग (पूर्व) में जानेपर संभवतः कुछ लाभ हो परन्तु पश्चिम और इसके बाम (दक्षिण) की यात्रा तुमको अशांतिदायक होगी।

❀ ससुराल-रहस्य ❀

क-कहीं भी जावो अभाग्य साथ है यह सारे प्रयत्न निष्फल देता है-परन्तु धैर्य त्यागना अथवा आलस्ययुक्त गृहमें बैठ जाना मनुष्यतासे बाहर है, अतः प्रयत्न करते ही रहो।

ख-खबरदार ! जिसके लिये तुम मरमिटनेको तत्पर हो, जिसे तुम अपना विश्वासी समझ रहे हो वही तुम्हारे लिये छुरीकी धारको शान चढ़ा रहा है, भावार्थ-तुम्हारे साथ बड़ा भारी विश्वासघात होगा।

ग-गई वस्तु प्रयत्न करनेपर भी प्राप्त न हो चिंता नहीं, परन्तु उसके लिये पश्चात्ताप करना मूर्खता है।

च-चम्पाका फूल न चढ़नेवाले देवका यदि तुमको सच्चा इष्ट हो तो उसका प्रेम-विधि सहित पूजन जप करो तो तुम्हारी सकल कामनाएँ निस्सन्देह पूर्ण हों।

छ-छायादार, यदि एक भी चाहे जैसा हो मकान पथिकोंके विश्राम योग्य (धर्मशाला) बनवा दो सो तुम्हारी पुत्र तथा द्रव्यकी दोनों कामनाएँ पूर्ण हों।

ज-जहां तक उपाय करोगे प्रायः सब ही निष्फल होंगे। तुम्हें सिद्धि होनेकी सम्भावना नहीं है।

ट-टक्करें बहुत खा चुके हैं। कई बार तुम्हें मित्रोंने धोखा दिया है, परन्तु आशा है अब चित्त-पासा पड़ेगा।

ठ-ठहरो, इस समय जो तुम्हारा विचार है उसे कुछ समयके लिये स्थगित कर दो, नहीं तो आपत्तिमें फँसोगे।

ड-डरो मत, डरनेवालेकी प्रायः सब ही इच्छाएँ निष्फलसी होती हैं। जो कार्य करना हो निर्भय होकर करो, ईश्वरेच्छा, सफल मनोरथ होवोगे।

त-तलाव, नदी, कूपादि जलस्थानोंमें तुम्हें धोखा है अतः इन स्थानोंमें जानेके समय सावधान रहा करो। देखो तुम्हारी जीभ काटी तो नही है? तुम्हारे प्रश्नपरसे ज्ञात होता है कि कभी तुम्हें बिजुली अथवा विषधरका भी भय हो।

थ-थके हुए अतिथिका सत्कार प्रेमसे करो, तुम्हारी मनोकामना पूर्ण होगी। अतिथि सत्कारका बड़ा महत्त्व है।

द-दरबारमें यदि जाना हो तो न्यायकारी राजा विक्रम अथवा परोपकारी हातिमका स्मरण करके जाओ और झूठ तथा जालसाजीका विचार मत करो, अवश्य ही विजय होगी। सत्यका सदा बोलवाला है।

प-पहिले यह देखो तुम्हारे बांये और दाहिने ओर कौन कौन हैं, तुम्हारे प्रश्नमें दाहिनी ओर उच्च तथा बांई ओर अपनेसे नीच मनुष्यका होना शुभ है और इसके विपरीतको अशुभ जानो।

फ-फल मिले या नही परन्तु जो तुमने दृढ़ कर लिया है उसे कदापि मत त्यागना। सम्भवतः लाभ ही हो किन्तु त्यागनेसे तो हँसी और हानि प्रत्यक्ष है।

ब-बड़ेसे बड़ा तथा छोटेसे छोटा चाहे जैसे कार्य हो अवश्य सिद्ध होगा। परन्तु धैर्य और विश्वास तथा प्रयत्न न त्यागना।

य-यदि प्रश्नकर्ता पुरुष है उसकी दाहिनी स्वांसा चलती है तो कार्यकी सिद्धि होगी। वाम स्वांसा चलती है तो असिद्धि; तथा प्रश्नकर्ता स्त्री हो तो इसके विपरीत जानो।

र-रक्षक तो परमेश्वर है परन्तु कोई भी इच्छा तुम्हारी पूर्ण न होगी। तुम्हारे पूर्वके जो पाप हैं वे आकर तुम्हारी कार्यसिद्धिमें

बाधक हो जाते हैं (खैर) अब भी यदि कुछ पुण्यका संचय करोगे तो तुम्हें भविष्यमें कुछ सुखकी आशा होगी।

त–लकीरके फकीर बनना ठीक नहीं, यदि तुम्हारे उच्च विचार हैं और समाजकी किसी भद्दी प्रथाके कारण उन्हें पूर्ण नहीं कर सके तो ऐसी प्रथा (बन्धन) को तोड दो तब सफलता मिलेगी।

न–वहां और यहां दोनों जगह तुम्हारी करनी अच्छी है तुमको अवश्य सुख रहेगा तुम्हें प्रश्नावली ढूंढ़नेसे कुछ प्रयोजन नहीं।

श–शङ्करजी शीघ्रही प्रसन्न होनेवाले हैं तुम उनके प्रसन्नार्थ कुछ जप करो या करावो तब तुम्हारी कार्य सिद्धिमें जो विघ्न है शांत होगा।

स–सवार है इस समय तुमपर कोई भयंकर ग्रह, उसके शांतिका पहिले उपाय करो पीछे प्रश्नावली देखना।

ह–हनुमान्जीका सुमरण करनेसे सब कार्य सिद्ध होते हैं, यदि तुमको भी भयंकर व्याधि, संकट अथवा भय है तो उन्हींका स्मरण करो सब शमन होगा।

अंक छठवाँ

कई स्थानोंमें मनुष्य लज्जा, प्रेम, भय अथवा अशक्तताके कारण मुंहसे न बोल सके तो निम्न विषयानुसार संकेत द्वारा ही इच्छा पूर्ण कर सकता है।

मित्रो! यह वही संकेत है, जो रामचंद्रजीने शूर्पणखाका नाक कान काटनेके लिये लक्ष्मणको समझाया था, तथा राम लक्ष्मण जिस समय ऋष्यमूक पर्वतके

समीप पहुँचे और सुग्रीवने भयातुर हो उनका परिचय लेनेके लिये हनूमानको भेजते वक्त कहा था—

"कहहु मोहि निज सैन बुझाई।"

यद्यपि इन संकेतोंके सरल करनेमें कुछ समय लगता है, तथापि सरल हो जानेपर मनुष्य बड़ी शीघ्रतापूर्वक बातचीत कर सकता है।

संकेतोंके नाम।

(१) अहिफण (२) कमल (३) चक्र (४) टंकार
(५) ताल (६) पवन (७) यौवन (८) शृंगार।

अंगुलि अक्षर चुटकी मात्रा, करत रामलक्ष्मण इमि बाता॥

(१) अहिफण–हाथको सर्पके फणसरीखा दिखाना।
(२) कमल–अंगुलियोंको कमलके आकार दिखाना।
(३) चक्र–अनामिका अंगुलीसे चक्र चलानेका संकेत करना।
(४) टंकार–अंगुलिसे रुपया बजानेका संकेत करना।
(५) ताल–ताली बजाना।
(६) पवन–पंखेका संकेत करना।
(७) यौवन–मूछोंपर (अथवा कुचोंपर) हाथ फेरना।
(८) शृंगार–केशोंपर हाथ फेरना।

इन प्रत्येक शब्दोंके सेवक।

अहिफण–अ-इ-उ-
कमल–क-ख-ग-घ-ङ-
चक्र–च-छ-ज-झ-ञ-
टंकार–ट-ठ-ड-ढ-ण–
ताल–त-थ-द-ध-न-
पवन–प-फ-ब-भ-म–
यौवन–य-र-ल व–
शृंगार–स-ह-क्ष-त्र-ज्ञ-

जो८ शब्द हैं ये गुरु और जो इनके साथ अक्षर हैं वे सेवक हैं। जो अक्षर हो, पहिले गुरु शब्दका संकेत कर जिस नम्बरपरका अक्षर बोलना हो उतनी अंगुली दिखा दे जैसे "बर" बोलना है पहिले पवनका संकेतकर तीन अंगुली दिखा दे तो "ब" और यौवनका संकेत करके दो अंगुली दिखा दे तो "र" हो गया अर्थात् "बर" शब्द हुआ।

मात्राओंका काम चुटकियोंसे लिया जाता है, पहिले गुरु शब्द-का संकेत कर अंगुली दिखा अक्षर समझावे, पश्चात् क्रमानुसार चुटकी बजा मात्राएँ समझावे।

(मात्रा-	ा	ि	ी	ु	ू	े	ै	ो	ौ	ं	:)
चुटकी संख्या	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११

जिस मात्राके नीचे जितने नम्बर हैं उस मात्राके लिये उतनी ही चुटकी बजानी चाहिये।

उदाहरण—"विरहकी रतियां दुखदाई"

अक्षर-गुरुशब्द		अंगुली	चुटकी	पूरा रूप
वि	यौवन	४	२	(वि)
र	यौवन	२	×	(र)
ह	शृंगार	२	×	(ह)
की	कमल	१	३	(की)
र	यौवन	२	×	(र)
ति	ताल	१	२	(ति)
यां	यौवन	१	१०	(यां)
दु	ताल	३	४	(दु)
ख	कमल	२	×	(ख)
दा	ताल	३	१	(दा)
ई	अहिफरण	२	२	(ई)

विरहकी रतियां दुखदाई।

कितने ही मनुष्य उल्टे सीधे (अन्यान्य अक्षर मिश्रण कर) कई प्रकारसे बोलते हैं, दो चार नमूने नीचे लिखते हैं, इनमें केवल चतुराईका काम है इनके समझने और बोलनेमें कोई परिश्रम नहीं।

उदाहरण—(१) काल शामकी गाड़ीसे कलकत्ता जाऊंगा।

लाक मासंकी डागीसे लकलत्ता वाजूंगा ॥

उदाहरण-(२) मेरे लिये एक चिनाई दुपट्टा लाना।

मरफेरे लरफिये अरफेक चिरफनाई दुरफुपट्टा लरफाना ॥

उदाहरण-(३) आजकल विलायती माल मत वापरो।

चआ चज चक चल चवि चला चय चती चमा चल चम चत चवा चप चरो।

उदाहरण=(४) चाहे जो हो तुम तो ला ही देना।

चनसाहे जनसो हनसो तुनसुम तो लनसाही दनसेना आदि २

अंक सातवां

ज्योतिषकार पूर्वजोंने जो ज्योतिष लग्नादि निश्चय किये हैं वे अवश्य ही अचूक हैं। जिस कार्यको लग्न साधकर करो अवश्यही सिद्ध होता है। शुभ कार्योंमें अनेक बाधायें हुआ करती हैं, अतः शुभ कार्यमें तो अवश्य शुभ लग्न ढूंढना चाहिये। यदि लग्न देखकर भी कार्यकी सिद्धि न हो, तो ज्योतिषको झूठा न कह बैठो किन्तु गणित करनेकी गलती समझो।

उदाहरण-एक मनुष्य किसी ज्योतिषीके यहां अपनी लड़कीके व्याहका लग्न शोधन करानेको गया, द्वारपर पहुंचते ही देखा कि उसकी (ज्योतिषीकी) लड़की विधवा बैठी है, वह वहींसे लौटने लगा, तब उसको ज्योतिषीने पुकार कर कहा भाई, क्या कारण है जो तुम आप और लौट चले?

उसने कहा, महाराज ! मैं अपनी लड़कीके ब्याहका मुहूर्त निकलवाने आया था, परन्तु द्वारपर आपकी विधवा पुत्रीको देख मुझे भ्रम हुआ, कि बिना मुहूर्तके ही कार्य कर देना अच्छा होता है, क्योंकि आप सरीखे ज्योतिषियोंकी ही लड़की श्रेष्ठ लग्नमें विवाह होनेके कारण विधवा हो गई तो मेरी कौन गणना है; क्योंकि आपने तो परिश्रमके साथ अतिश्रेष्ठ लग्न ही ढूंढा होगा।

ज्योतिषीने कहा—लोगोंको उचित मुहूर्त ढूंढना आता नहीं और आता भी है तो उचित मुहूर्तमें कार्य करते नहीं, इसीसे आपत्तियां होती हैं और शास्त्रको झूठा बताते हैं इसका मैं इसी समय प्रमाण देता हूं—तुम जाकर ७ पत्ते कोई भी वृक्षके तोड़ लावो। वह गया पत्ते तोड़कर ले आया और पंडितने उसे ७ सुइयां लोहे की देकर कहा मैं जिस समय इशारा करूं एक एक सुई; एक एक पत्तेमें लगा देना परन्तु सावधान ! समय खाली न जावे। पंडितजी चुप्पी साधकर बैठ गये। उस मनुष्यने कुछ देर तो ज्योतिषीके संकेतकी प्रतीक्षा की, पश्चात् किसी अन्य ही ध्यानमें मग्न हो गया। ज्योतिषीजीका लग्न आया, उन्होंने संकेत किया, परन्तु वह तो दूसरे ही ध्यानमें मग्न था। ज्योतिषीने दुबारा संकेत किया, तब उसने सावधान हो पत्तोंमें सुइयां जमाई। थोड़ी देरके बाद देखने से मालूम हुआ कि एक सुई स्वर्णकी, दूसरी चांदीमिश्रित स्वर्णकी और तीसरी चांदीकी हो गई, और सब सुइयां लोहेकी ही रह गयीं। ज्योतिषीने कहा देखा गणितका चमत्कार ! मेरे संकेतकी प्रतीक्षा करते करते तू दूसरे ध्यानमें मग्न हो गया अतः जिस समय तूने पहिले पानमें सूई लगाई उस वक्त मुहूर्त कुछ शेष था, इसलिये

पूरा सिद्ध हुआ। दूसरे पानमें लगानेके समय जाता हुआ था, अतः अर्धसिद्धि हुई, तीसरेमें लगानेके समय उस लग्नकी छाया मात्र थी, अतः सुईचांदीकी हुई, अन्य सुइयां लगानेके समय मुहूर्त बीत चुका था, । मैंने भी अपनी कन्याके व्याहका लग्न मुहूर्त देखा था, किन्तु उसमें कुछ भूल रह गयी थी, इसही कारण यह इस दशाको प्राप्त हुई, अतः शास्त्र झूठे नहीं हैं, परन्तु देखनेवालोंकी भूल है।

गौने (मुकलावे) का महूर्त।

धातृयुग्मं हयो मैत्रं श्रुतियुग्मं करत्रयम्।
पुनर्वसुद्वयं पूषा मूलं चाप्युत्तरात्रयम् ॥
विषमे संवत्सरे मासे मार्गे मेषे च फाल्गुने।
मकरे मिथुने मीने लग्ने कन्या तुला धनुः ॥
भौमार्किवर्जिता वारा गृह्यंते च द्विरागमे।
षष्ठी रिक्ता द्वादशी च अमावस्या च वर्जिता ॥

भावार्थ--रोहिणि, मृग, अश्विनी, अनुराधा, श्र०, ध०, ह०, चि०, स्वाती, पु०, पु०, रे० मू०, उत्तरा त्रय ये नक्षत्र श्रेष्ठ हैं, विवाहसे विषम वर्ष श्रेष्ठ है, अगहन, वैशाख और फाल्गुन ये मास श्रेष्ठ हैं और म० मि० मी० क० तु० धन ये लग्न श्रेष्ठ हैं तथा मंगल, शनीवार और छठ चौथ, नवमी, चौदस, बारस, अमावस ये तिथी वर्जनीय हैं।

प्रसूतिस्नान-मुहूर्त।

पुनर्वसुद्वयं चित्रा विशाखा भरणी द्वयम्।
मूलमार्द्रा मघा हेषा श्रवणो दशमस्तथा ॥

सोमशुक्रबुधा नारी प्रसूता स्नानकर्मणि ।
हेया प्रतिपदा षष्ठी-नवमी च तिथिस्त्रयम् ॥

भाषार्थ—पुनर्वसु, पुष्य, चित्रा वि० भ० कृ० मू० आ० म० अ० ये दस नक्षत्र वर्जित हैं। एकम० छठ० नौमी अमावस्या तथा क्षय तिथी वर्जित हैं और सोम, शुक्र और बुध ये वार वर्जित हैं।

कुवां पूजने का मुहूर्त ।

मूलादितो द्वयं ग्राह्यंश्रवणं च मृगःकरः ।
जलवाप्यर्चने हेयाः शुक्रमंदार्कभूमिजाः ॥

भाषार्थ—मूल, पूर्वाषाढ़, श्रवण, मृगशिर, हस्त ये नक्षत्र शुभ हैं, शुक्र शनि, रवि, भौम, ये वार त्यागके शुभ तिथीमें प्रसूतिको कूप जलाशय पूजन उत्तम है।

बालकोंको प्रथम अन्न प्राशन मुहूर्त ।

आद्यान्नप्राशने पूर्वा सर्पार्द्रा वरुणो यमः,
नक्षत्राणि परित्यज्य वारे भौमार्कनन्दने ।
द्वादशी सप्तमी रिक्ता पर्व नन्दास्तु वर्जिताः ॥
लग्नेषु च झषो ग्राह्यो वृषः कन्या च मन्मथः ।
शुक्लपक्षे शुभे योगे संग्राह्याः शुभचन्द्रमाः ।
मासे षष्ठाष्टमे पुंसां स्त्रियो मासि च पंचमे ॥ १ ॥

भाषार्थ—तीनों पूर्वा, आश्लेषा, आर्द्रा, शतभिषा, भरणी, रेवती, ये नक्षत्र वर्जित हैं तथा, बारस, सातें, नवमी, चौदस अमावस एकम, छठ ग्यारस, ये तिथी तथा व्यतीपात योग वर्जित हैं सोम तथा शनि ये वार वर्जित हैं तथा मीन वृष मिथुन कन्या ये लग्न

शुभ हैं, शुक्ल पक्ष शुभ योग, तथा शुभ चन्द्रमा देखकर लड़के को ६ और ८ वें महीनेमें तथा कन्याको पांचवें महीनेमें प्रथम अन्न पिलावे।

अथ—चूड़ा पहराने का मुहूर्त।

पुनर्वसुद्वयं ज्येष्ठा मृगश्च श्रवणाद्वयम्।
हस्तत्रये च रेवत्यां शुक्लपक्षोत्तरायणे॥
लग्नं गोस्त्री धनुः कुंभो मकरो मन्मथस्तथा।
सौम्ये वारे शुभे योगे चूड़ाकर्म स्मृतं बुधैः॥

भाषार्थ—पुष्य, पुनर्वसु, ज्ये०, मृ० श्र०, ध०, ह०, चि०, स्वा०, रे०, ये नक्षत्र, शुक्ल पक्ष, उत्तरायण, वृष, कन्या ध० कुं०, मकर मिथुन ये लग्न तथा चन्द्र बुध, शुक्र, ये वार श्रेष्ठ हैं, जन्म मास और रिक्ता तिथी ये चूड़ाकर्ममें वार्जित हैं।

अथ मुंडनकर्म।

हस्तत्रये हरिद्वन्द्वे पूर्वार्श्व मृगपञ्चके।
मूले पौष्णे च नक्षत्रे बुधार्के गुरुशुक्रयोः॥

भाषार्थ—ह० चि० स्वा० श्र० ध० पू० तीनों, मृ० आ० पु० पु० अश्लेषा, मू० रे० ये नक्षत्र रवि, बुध, गुरु, शुक्र, ये वार शुभ है।

विद्यारंभ-मुहूर्त।

देवोत्थाने मीनचापे लग्ने वर्षे च पंचमम्।
विद्यारंभे विवर्ज्याश्च षष्ठचतुर्थ्यायरिक्तका॥
रिक्तायां च अमावस्यां प्रतिपच्च विवर्जयेत्
बुधेन्दुवासरे मूर्खः शनिर्भौमो मृतिप्रदः

विद्यारम्भे गुरुः श्रेष्ठो मध्यमौ भृगुभास्करौ।
बुधेन्दू चोपविद्यायां शनिभौमौ परित्यजेत्॥

भावार्थ—देवोत्थान याने कार्तिक शुक्ल ११ से आषाढ़ शुक्ल ११ तक मीन धनु लग्नमें बच्चेके पांचवें वर्षमें छठ अमावस्या एकम चतुर्थी नवमी चौदस ये तिथी टालकर बच्चेको पढ़ाई आरंभ करे बुध और सोमवारका आरंभ करनेसे मूर्ख हो शनि और मङ्गलवार मृत्युप्रद हों, गुरुवार सर्व श्रेष्ठ है शुक्र और रवि मध्यम हैं।

अथ कर्णवेधमुहूर्त।

श्रुतित्रये दितिद्वन्द्वे मैत्रे हस्तत्रयोत्तरे।
भगे विधियुगे मूले पूषाश्वे सौम्यवासरे॥
द्विस्वभावे घटे लग्ने कर्णवेधः प्रशस्यते।
चैत्रपौषौ हरिस्वापं वर्षं च युगलं त्यजेत्॥

भावार्थ—श्र० ध० श० पुष्य पु० अनु० ह० तीनों उ० पूर्वाफाल्गुनी रो० मृ० मू० रे० अ० ये नक्षत्र, सोमवार तथा मिथुन, धन, कन्या मीन, कुंभ ये लग्न, मंगसिर, माघ, फाल्गुण, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़ ये महीने शुभ हैं, तथा विषम वर्ष हों, आषाढ़ सुदी ११से कार्तिक सुदी ११ तक तथा चैत्र पौष मास तथा सम वर्ष वर्जित हैं।

यात्रा-मुहूर्त।

दिनके दिन लौट आना हो, दुर्भिक्षमें और गांव-उपद्रवमें मुहूर्त आदि नहीं देखते हैं। यदि मुहूर्त आजका बनता हो और किसी

नोट—अटके हुये समयमें काम चलानेके लिये कुछ मुहूर्त लिख दिये गये हैं लेकिन पण्डितोंकी राय लेना इस काममें आवश्यक है।

कारणसे रुकना पड़े तो अपने दुपट्टेके एक कोनेमें हरी दूब, धनिया, हल्दी, सुपारी, हरे मूंग इत्यादि शुभ वस्तुयें बांधकर जिस दिशामें जाना हो गांव-बाहर किसीके यहां रख दे और जानेके समय अपने साथ लेता जाय, ऐसा करनेसे अनिष्टकारक दोष शांत होते हैं।

अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, हस्त, मृग, अश्विनी, पुष्य, रेवती ये नक्षत्र शुभ हैं। ४-५-६-१२-१४ ये तिथि वर्जनीय हैं। चन्द्रवास सन्मुख और दाहिने शुभ है, बायें और पीठ पर नष्टकर्ता है। दिशा-शूल, कालचक्र, योगिनीवास ये सब बायें और पीठपर शुभ है, सन्मुख और दाहिने हानिकर्त्ता हैं। जन्मतिथि, जन्मलग्न, जन्मवारमें भी यात्रा करना मना है, इत्यादि।

दिशाशूल ले जावे बायें, राहु जोगिनी पूठ।
सन्मुख लेवे चन्द्रमा, लावे लछमी लूट॥

कालचक्र वास।

रविवार उत्तर, सोमवार वायव्य, मंगलवार पश्चिम, बुधवार नैऋत्य, गुरुवार दक्षिण, शुक्रवार आग्नेय और शनिवारको पूर्वमें जानो।

दिशाशूल वास।

सोम और शनिवारको पूर्वमें, शुक्र और रविवारको पश्चिममें, मंगल और बुधको उत्तरमें और गुरुवारको दक्षिणमें जानो।

योगिनी वास।

तिथि १-९ पूर्व, ५-१३ दक्षिण, ६-१४ पश्चिम, २-१० उत्तर, ३-११ आग्नेय, ४-१२ नैऋत्य, ७-१५ वायव्य और ८-३० ईशानमें जानो।

योगिनी सुखदा वामे, पृष्ठे वांछितदायिनी।
दक्षिणे धनहंत्री च, संमुखे मरणप्रदा॥

चन्द्र वास।

मेष, सिंह और धनका चन्द्रमा पूर्वमें; वृष, कन्या और मकरका दक्षिणमें; तुला, कुंभ और मिथुनका पश्चिममें; कर्क, वृश्चिक और मीनका चन्द्रवास उत्तरमें जानो।

संमुखे अर्थलाभाय, दक्षिणे सुखसम्पदः।
पृष्ठतः प्राणनाशाय, वामे चन्द्रो धनक्षयः॥

आवश्यक यात्रा।

रविको तांबूल, सोमको दर्पण, मङ्गलको अन्न, बुधको गुड़, गुरुको राई, शुक्रको दधि और शनिको बिड़ंगसे शांत करना चाहिये।

नोटः-यदि दो लग्न शुभ हों और एक अशुभ भी रहे तो भी यात्रा हानिदाता नहीं होती है। रामनौमी, अक्षय-तृतीया, गंगा-दशहरा रथद्वितीया, जन्माष्टमी, विजयादशमी, अन्नकूट, वसन्तपंचमी आदि दिन श्रेष्ठ माने गये हैं।

छींक विचार।

ज्योतिष-छींकका शब्द सुनकर अपने पैरसे छाया नापे, जितनी हो उसमें १३ जोड़कर आठका भाग देवे, शेष रहे उसपर विचार करे १ में लाभ, २ में सिद्धि, ३ में हानि, ४ में शोक, ५ में भय, ६ में लक्ष्मी, ७ दुःख, ० में निष्फल ऐसा जानो।

छींक फलाफल विचार।

भोजन, स्नान, दान, पुण्य आदिमें बांई, और पीठपर छींक उत्तम

तथा पढ़ने, दवा खाने, युद्ध करने, बीज बोने, तथा यात्रा करनेमें दाहिने और सन्मुख छींक शुभ है।

यात्रा आदिमें श्रेष्ठ शकुन।

तिलकधारी, विप्र, घोड़ा, हाथी, फल, दूध, दही, घृत, गौ, अन्न, कमल, श्वेतवस्त्र, वेश्या, मंगलगीत, पुष्प, जल, छत्र, मृत्तिका, रक्त कन्या, पगड़ी, श्वेत बैल, मद्य, सपुत्रा स्त्री, प्रज्वलिताग्नि, दर्पण, अञ्जन, धोबी, मछली, सिंहासन, रुदनरहित मुर्दा, बाजा, मधु, बकरी, शस्त्र, गोरोचन, भरद्वाज, सोनचिड़िया, पालकी, वेदध्वनि आदि मिले तो श्रेष्ठ है, इन्हें दाहिने लेकर जाना चाहिये।

अनिष्ट शकुन।

वन्ध्या, विधवा, निपुत्रा, चर्म, भूंस, लवण, सर्प, धूवांवाली अग्नि, ईंधन, नपुंसक, पागल, विष्ठा, तेल, चर्बी, औषधि, शत्रु जटाधारी, सिरमुंडा, असाध्य व्याधियां, नंगा, अङ्गहीन, रजस्वला, भूखा, भिखारी, गेरुवा या काला वस्त्र, गुड़, छाछ, कुटुम्बकलह, गीली मृत्तिका (कीचड़), फटा वस्त्र, काला पदार्थ, रुई, वमन, क्रोधी, दाहिनी ओर खरका शब्द, कुत्तेका कान फटफटाना या रोना स्यारोंका रोना, बिल्ली या सर्पका रास्ता काटना, बारीक बूंद गिरना बादल गर्जना, तथा रीता घड़ा मिलना इत्यादि अशुभ है।

जंगली शकुन।

कोकिला, छिपकली, छछूंदर, गीदड़, लोमड़ी, ये बांई ओर शुभ। शिकरा, नीलकंठ, बन्दर, रुरू, मृग, मोर, सोनभद्र, काक, रीछ, ये सब दाहिनी ओर शुभ है।

था।

एक विद्यार्थी काशीजीसे ... आधा कार्यके लिये उज्जैन जा रहा था ... सोनभद्र-पक्षीका शकुन दाहिनी ओर लेकर जाना। उसने ... किया जिस दिन उज्जैन पहुंचा दिन दो घड़ी शेष था। ... रईसके यहां बरात आयी थी, परन्तु वर था का... इस विचारमें था यदि कोई सुन्दर लड़का मिले ... दूं और दूसरे दिन अपने पुत्रको प्रगट करें, ... तो काणा लडका देख सम्भवतः भांवरोंमें गड़बड़ी ... अस्तु, यह लड़का बरात (डेरा) के सामनेसे निकला ... थी, बढ़ता हुआ रक्त बड़ा ही सुन्दर रूप जान पड़ता था।

दुलहाके बापने उसे बुलाकर कहा-भाई! मेरा एक काम साध दो तो तुम्हारा बड़ा उपकार हो और इसके बदलेमें तुम्हें ५ हजार रुपये भी दिये जांयगे। लड़केने इस बातको स्वीकार कर लिया, पश्चात इसे नहवाया, तेल उबटना आदि लगाया गया, इसे "सोनेमें सुगन्ध" बना दिया, भांवरोंका समय हुआ, गड़बड़ीके कारण इस लड़केको किसीने भोजन तककी भी न पूंछी, केवल सबको यही ध्यान था कि जैसे तैसे हमारा कार्य सफल हो।

अस्तु! भांवरें हुईं, दुलहा दुलही रंगमहलमें पहुंचाये गये। पहुंचते ही दूल्हेने कहा प्रिये! प्रथम मेरे भोजनका प्रबन्ध करो, मुझे भोजन किये दो दिन हो गये हैं। क्षुधासे जीव व्याकुल है, अभाग्यवश वहां कोई भी खाद्य पदार्थ नहीं था। वह लड़की

...नोंमें प्रथा है कि भांवरें होते ही दूलहा दूलही रंगमहलमें पहुंचा

चालाक थी। उससे इस प्रकार पति देवको क्षुधापीड़ित न देखागया उसने अपनी गोदमें मिला हुआ है। चांवल जलके लोटेमें डाला और चीर जलाकर भात बनाकरके देवकी क्षुधा शांत की। रात्रि को आनंद केलि के पश्चात् दोनों, दासी, फल । प्रातः चार बजे दूल्हा तो उठकर बरातमें शय्या, मंगलगीत, कर गृहकार्यमें लीन हुई। दूल्हेके बापने उस दूल्हे) को अपने वचनानुसार ५०००) देकर बिदा का हर्षित होता हुआ काशीजीको आ गया। और सिंहासन दूल्हीकी बिदा कराने बरात मार्ग में गयी उस समय दूल्हा भरद्वाज होनेके कारण उसकी आंखमें पट्टी बांधकर ले गये इन्हें लड़कीके बापने जिस समय पट्टी बांधनेका कारण पूछा तब दूल्हाके बापने कहा इसकी एक आंख आ गयी है। जैसे तैसे लड़की का बाप इस बातको मान गया, परंतु लड़कीने पितासे कहा पिताजी ! मैं चाहती हूँ कि एक बार आप इनकी आंख खुलवाकर देख लें मुझे भ्रम है कि, जिन्हें मैं अपना सर्वस्व अर्पण कर चुकी हूँ वह रात्रिवाले प्राणनाथ ये नहीं हैं। अस्तु लड़केकी आंख खुलवाकर देखा गया, उसकी एक आंख में बड़ा भारी फूला था, ज्यादा क्या लिखें दूल्हे बाबाको बिना दूल्ही चाचीके बैरंग लौट जाना पड़ा।

अब लड़की और उसके कुटुम्बियोंको असली दूल्हेके खोजनेकी चिंता हुई, परंतु यह नहीं समझमें आया कि उसे किस ढंगसे ढूंढें कई दिन बीत जानेपर लड़कीने कहा पिताजी ! मैं एक दोहाके दो चरण लिख देती हूँ, उसे पूर्ण करानेके लिये चारों ओर शोर कराइये जिससे प्राणनाथका स्वतः ही पता लग जायगा और साथ ही यह भी कहवा दीजिये कि—जो पुरुष इस दोहेकी हमारी इच्छा

पूर्ति करदेगा, उसे ५०००) रुपया पुरस्काररूप दिया जायगा। पूछनेपर लड़कीने आधा दोहा इस प्रकार लिख दिया—

"पिया क्षुधित मन जानि ... व्याकुल ही नार"

कुछ ही कालमें ... गयी कि इस दोहे की पूर्तिकर देगा ... पुरस्कार मिलेगा। जिस समय यह बात ... कि ... गया कि, यह वही लड़की है ... दूलहा बनकर भांवरें ली थीं। अन्तमें मनुष्य इतना ... पुनः उज्जैनकी ओर रवाना हुआ, ... उसकी ... जाकर बोला, श्रीमान् मैं आपके दोहेकी ... दूसरे मनुष्यसे आया हूं, आप कृपा कर सुनें और अपनी प्रतिज्ञानुसार ५०००) रु० दें। लड़की पडदेमें बैठी थी उसके पिताने कहा सुनाओ, तब लड़केने इस प्रकार सुनाया—

"अपना चीर जलायके, भात किया तैयार।"

इस चरणको सुन लड़कीने परदेके छिद्रमेंसे ध्यानपूर्वक देखा और अपने प्राणनाथको पहिचानकर पितासे कहने लगी कि पिताजी! यही मेरे सर्वेश हैं। अतः उस लड़केका वहां आदर सत्कार किया जाने लगा। कुछ दिन पश्चात् गृहधनीने अपनी लड़की और जामाइको कई सहस्रका माल देकर सादर बिदा किया। इससे प्रकट होता है, कि लग्न अथवा शकुन साधकर जाना कदापि निष्फल नहीं होता है।

ज्योतिषानुसार क्षौर करानेका दिन।

शनिवारको हजामत बनवानेसे ७ मास, रविवारको बनवानेसे ३ मास और मङ्गलवारको बनवानेसे ८ मास आयु कम होती है।

सोमवारको हजामत बनवानेसे ७ महीना, बुधवारको ५ महीना, गुरुवारको १० महीना, तथा शुक्रवारको हजामत बनवानेसे ११ महीना आयु बढ़ती है।

गौवदेमें श्रे शुभ विचार।

पश्चात द्रोव, हाथी, फल

रविवारको शय्या, मंगलगीत, कर गृहकांतिवर्धक, मङ्गलको मृत्युप्रद, बुधको बैल, मद्य, सपु लहे) को नाशक, शुक्रको विपत्ति दाता और शनि का हर्षित सम्पत्ति प्राप्त होती है।

सिंहासन दूल्हीकी बिदा

नूतन वस्त्र धारण होनेके कारण शुभ फल।

रविवारका जल्दी जीर्ण होनेके वापने की सदा अशुद्ध रहेगा, मङ्गलका शोकप्रद होगा, बुधका धनवर्धक, गुरुका ज्ञानवर्धक, शुक्रका मित्रप्राप्ति और शनिवारका पहिना हुआ वस्त्र सदा मलिन रहेगा।

ज्योतिषद्वारा समय निकालनेकी क्रिया।

छायापादं रसोपेतं, एकविंशशतं भजेत्।
लब्धांके घटिका ज्ञेया, शेषांके च पलाः स्मृताः॥

सीधे खडे होकर अपनी देहकी छाया पैरसे नापो, जितनी हो उसमें ६ और मिलाओ। पश्चात इसका १२१ से भाग करो लब्धि आवे वो घड़ी और शेष आवे सो पल हैं। दिनके चढ़ावमें जो उत्तर आवे उतना दिन चढ़ा है तथा दिनके उतारमें जो उत्तर आवे उतना दिन शेष जानना।

(६० पलकी १ घड़ी और २॥ घड़ीका १ घण्टा)

ससुराल-रहस्य

अंक आठवां
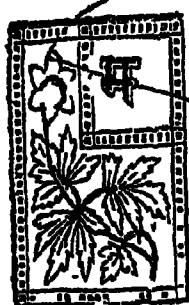
मनुष्यकी स्वप्नावस्था प्राय बड़े [illegible] लगे रहस्य है सुना जाता है कि म[illegible] प्राणियों सब [illegible] अवश्य ही निद्रावस्थामें भ्रमण [illegible]कको [illegible] जाती है। स्वप्नमें मनुष्य इतना [illegible] जाता है, कि रोते २ उसकी हिचकियें [illegible] जाती हैं। जब दूसरे मनुष्य सचेत होते हैं और उसे जगाते हैं तब उसका चित्त शांत होता है। कितने ही मनुष्य स्वप्न देखते २ खिलखिलाकर हंसने लगते हैं और स्वप्नका प्रभाव भी अक्सर पड़ा ही करता है। चढ़ती रात्रिमें जो स्वप्न आते हैं उनका प्रभाव देरसे होता है और प्रभात समयमें स्वप्न आवें तो उनका फल अति शीघ्र होता है। अति दुष्ट स्वप्न हो तो स्वप्नके पश्चात् निद्रा भंग होनेपर भी पुनः सो जावे तथा प्रातः उठनेपर कुछ दान पुण्यादि करे। प्रत्येक मनुष्यसे स्वप्नका हाल कह दे जिससे कि उसका दुष्ट फल न होवे और अच्छा स्वप्नके पश्चात् यदि निद्रा-भङ्ग हो जावे तो फिर न सोवे, ईश्वरका भजन करे और स्वप्नको गुप्त रखे। कह देनेसे स्वप्नका फल विपरीत हो जाता है। याने अच्छे स्वप्नोंका बुरा और बुरे स्वप्नोंका फल अच्छा।

प्रत्यक्ष प्रमाण।

एक दिनकी बात है बच्चोंने खेलते खेलते मेरे तौलनेके बांट

(पाश और अथपई) चूनरसींके विण्डलोंमें डाल दिये। मैंने उन्हें सायंकालतक खूब ढूंढा कुछ पता न लगा। मैंने निश्चय कर लिया कि कोई देहाती उठा ले गया। रात्रिको सोनेके समय मुझे बाट को जानेका [illegible] न समरण हो आई। प्रातःकाल स्वप्न हुआ कि बाट (जो [illegible] [illegible] चूनकी रस्सि[illegible]के विण्डलोंमें मिल गये। प्रातः हो गया थ[illegible] पश्चात [illegible] फेर जाकर दुकान खोली रस्सियों के विण्डलोंको देखा, मंगल[illegible] वाट मिल गये।

[illegible] की [illegible] बैल, मख्खि [illegible] दृष्टान्त ।

एक मनु[illegible] किसी सुनारके यहां गया। उसने उसके आंगनमें एक [illegible] पत्थरकी कुण्डी पड़ी हुई ऐसा देखा। कुण्डी बड़ी सी थी, जान पड़ता था कि वह सदा उस ही स्थानमें पड़ी रहा करती होगी। उस कुण्डीपर १ हरे रङ्गकी अति सुहावनी मक्खी भनभना रही थी, यह जानेवाला व्यक्ति उस मक्खीकी ओर ध्यानपूर्वक देखने लगा, और साथ २ उस सुनारको (गृहधनीको जो इस समय घोर निद्रामें पड़ा था) भी पुकार पुकार कर जगानेकी चेष्टा करता जाता था। इतनेमें अचानक वह मक्खी वहां से हटी और जाकर सुनारकी नाकमें घुसी। जिससे वह नाकको मसलता हुआ उठ बैठा, उठते ही उसने आनेवाले व्यक्ति से कहा—भाई ! तुमने मुझे नाहक जगा दिया, मैं बड़ा अच्छा स्वप्न देख रहा था। उसने चमत्कृत होकर पूछा क्यो भाई क्या स्वप्न था ? तब सुनार बोला— एक जलसे भरा सुन्दर कुण्ड था। उसके नीचे एक अशर्फियोंका [illegible] दिखाई पड़ता था। मैं उस कुण्डके चहुं ओर इस विचारसे फिर रहा था कि भीतर घुसकर अशर्फियां निकाल लूं। वैसे ही आपने आकर जगा लिया। वह आदमी चालाक था उसने तुरंत अनुमान कर लिया कि इस

कुण्डीतले इनके पूर्वजोंका रखा हुआ कुछ द्रव्य अवश्य है। उसने इस बातको गुप्त रखा और धनको निकाल लेनेके लिये समय ढूँढ़ने लगा, दो चार दिन बाद वह ... कार्यवश बाहर गांव गया, तब यह उ... फिर पीछे ... देखो ... उसने कुण्डीके नीचेसे भूमिको खोदा ... बनो सह ... माया ... ड़ा अश- फियोंका मिला।

स्वप्नमें जलमें तरना, आकाशमें ... पाक्यो सब ... मतलबको ... य, प्रज्वलित अग्नि, ध्रुवादि तारे, बड़े बड़े महल मन्दि... यके शिखरपर चढ़ना इत्यादि दीखे तो शुभ है, कार्यकी सि... है।

स्वप्नमें मद्यपान, चर्बी मांसका भक्षण अथवा ..., विष्ठाका लेप अथवा रक्तका लेप, श्वेत चन्दनका लेप लगाना, नानाप्रकार के श्वेत अलंकार पहरना इत्यादि देखनेवाला मनुष्य धन्य है।

स्वप्नमें देवता, ब्राह्मण, चन्द्रमा, छत्र, भूमिकाल, राजा, श्वेत कलश, श्वेत अलंकार करके सुसज्जित स्त्री, हेमाचलादि पर्वत, दूध, वटवृक्ष तथा फल सहित वृक्षपर चढ़ना, ऐना, मांस, फूलमाला इनका पाना, इनके देखनेसे धनकी प्राप्ति तथा रोगका नाश होवे।

स्वप्नमें यज्ञके खम्भे, वाल्मीक और नीम वृक्षपर चढ़ना, तेल कपास, रूई और लोहेका मिलना, विषय करना, रक्त वस्त्रका पहिरना, ओढ़ना, नदीको काटकर जाना, पके हुए मांसका भोजन करना इत्यादि देखनेसे विपत्ति आती है।

स्वप्नमें हाथी, घोड़ा, बैल, गौ, शूकर, सिंह, राजा, इत्यादि देखनेसे कुटुम्बमें वृद्धि होती है।

स्वप्नमें दाहिने हाथको श्वेत सर्पका काटना देखे तो दश दिनमें असीम द्रव्य प्राप्त हो।

स्वप्नमें जो मनुष्य अपनेको जलमे डूबना अथवा बिच्छू काटना देखे तो उसे पुत्ररत्नकी प्राप्ति हो।

स्वप्नमें [illegible] अथवा पर्वतपर चढ़कर समुद्रपार जावे वह [illegible] नकी [illegible] प्त हो तथा तालावके मध्यमें कमलपत्रमें [illegible] वह भी इसी फलके योग्य होता है। [illegible] शय्या, मंगल [illegible]

स्वप्नमें [illegible] बैल, [illegible] क्रौंचपक्षीको देखता हुआ जाग जाय, तो उत्तम कुल [illegible] देशी कन्या उसकी वधू होती है।

स्वप्नमें [illegible] हाथ पाँवोंमें जंजीर बंधी हुई देखना, अपना बिस्तर, आसन, पालकी, देह, इक्का इत्यादिको चलते हुए देखना, सूर्यमंडलको प्रकाशित देखना, उत्तम वस्त्र पहिरे हुए तरुण स्त्री द्वारा अपनेको नहाते देखना इत्यादि हो तो धन-पुत्र इत्यादि मिलें तथा रोग नष्ट हो।

स्वप्नमें खड़ाऊं, जोड़ा, छत्र, धारवाली तरवार इत्यादि देखे तो धन प्राप्त हो। स्वप्नमें घी मिलना अच्छा और खाना बुरा और, दही मिलना तथा खाना दोनो उत्तम हैं।

स्वप्नमें अपनेको ग्राममें अग्निसे घिरा हुआ देखे तो चार कोस भूमिका मालिक हो।

स्वप्नमें श्वेत वस्तु सब शुभ है, किन्तु कपास, भस्म, तक्र और भात अशुभ है और काली वस्तु अशुभ हैं।

स्वप्नमें फेनसहित दूध पीनेसे बड़ा भारी लाभ है, जो मनुष्य

स्वप्नमें सूर्य चंद्रमाको निस्तेज तथा तारोंका टूटना देखै उसे मरण अथवा शोक प्राप्त हो।

स्वप्नमें कनेर, आक, अशो[illegible] इत्यादि वृक्षोंका देखना अशुभ है। यदि स्वप्न[illegible] देखे तो परदेश जाना पड़े।

स्वप्नमें लाल व[illegible] लगाये हुए स्त्रीद्वारा स्नान करे तो मृत्यु[illegible]

स्वप्नमें ते[illegible] अंगमें लगा देखे तो रोग आवे।

स्वप्नमें दांत गिरें या केश गिरें तो धन व[illegible] नाश हो तथा स्वप्नमें गदहा, ऊंट, महिषके रथमें बैठे तो मृत्यु या भयंकर रोग प्राप्त हो।

स्वप्नमें अपने नाक कान कटावे, कीचड़में फँस जावे इत्यादि देखे तो मृत्यु प्राप्त हो।

यदि दुष्ट स्वप्न हो तो जो उसका इष्टदेव हो उसका पूजन हवन इत्यादि करना चाहिये। स्वप्नका हाल स्त्री बालक तथा नीचसे न कहे।

श्रीहरिः।
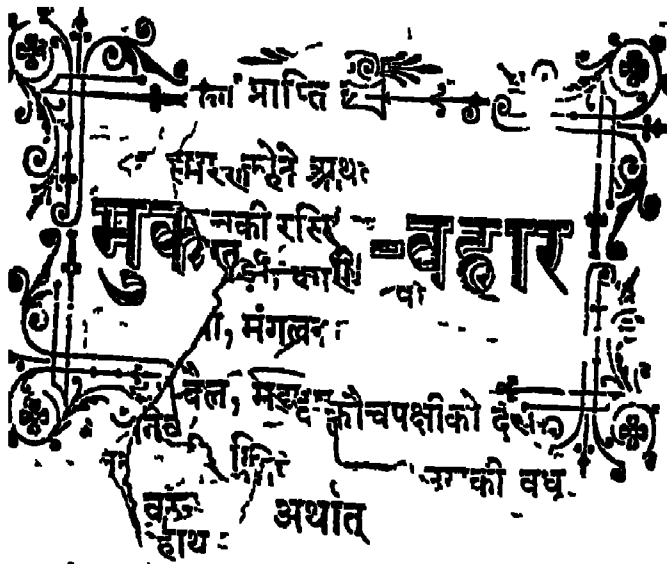
ससुराल रहस्य

लावनी संग्रह

लावनी गौरक्षा।

दो०-विपत सुनी इक गायकी, पारथ भयो उदास।
धनुष बाण भूल्यो वहां, जा न सके रनवास॥
जो नहीं गाय बचाइहौं, धर्म कर्म सब नाश।
महल द्रोपदीके गये, सहनो हो बनवास॥

टेर—द्वादश वर्ष वन खण्डमें रहना, अर्जुनने सिर ठान लिया।
द्रुपद सुताके महल जाय निज, धनुष खड्ग और बाण लिया॥
अपना दुख नहीं देखा जिसने, क्षत्रिधर्मपर ध्यान दिया।
गोमाताके प्राण बचाये, फिर पीछे जल पान किया॥
तोड़-उसी वंशके तुम हो मित्रो, बनो सहायक माताके।
गौशालाकी करो तयारी, प्राण बचे गौ माताके॥ १॥

दो०—दूध पिया जिस गायका, पाल्यो सब परिवार।
वृद्ध भई लागै बुरी, मतलबको संसार॥

टेर-हुए यहां श्रीग [illegible] सिंह, धर्म गऊके रखवारे।
फते बुलाई [illegible] की, शस्त्र बांधकर ललकारे॥
निज प्राणों [illegible] त्यागकर, गरज गरज शत्रू मारे।
अन्तिमको [illegible] हित, प्राण आपने दे डारे॥
तोड़-ऐसे हैं कोई शिष्य गुरुके, बनो सहायक माताके।
गौशालाकी करो तयारी, प्राण बचैं गौ माताके॥

दो०-मिश्र विप्र जो निर्धनी, खर्च देख घबराय।
बेचत गैया लोभवश, रक्षा करी न जाय॥

टेर-बूढ़ी ढूंढी सस्ती गौ ला, बनिये दान कराते हैं।
खर्च देखकर डरैं पुरोहित, गाय बेचकर खाते हैं॥
एक वर्षमें दश दश गैया, दान मिश्रजी पाते हैं।
कोई पूछे इतनी गैया, किसके घर दे आते हैं॥
तोड़-कर विचार गोदान करो तुम, बनो सहायक माताके।
गौशालाकी करो तयारी, प्राण बचे गौ माताके॥ ३॥

दोहा-गौरक्षा सम धर्म नहीं, हिंसा सम नहीं पाप।
फल याको प्रत्यक्ष लखि, समुझि लीजिये आप॥

❋ मुकलावा-बहार ❋

टेर-तुम सब सुखमें भूले फिरते, मांस गायका भुनता है।
इसी पापसे देश दिनों दिन, अधिक २ अब घुनता है॥
निरख गायका संकट भारी, शोक कलेजा धुनता है।
हरि भक्तोंके बिना गायका, दुःख कौन अब सुनता है॥
तोड़-मंगल देव कहत भक्तोसे, बनो सहायक माताके।
गौशालाकी करो तयारी, प्राण बचैं गौमाताके॥४

लांवनी ख्याल राजा चकवा वैनकी।

शेर- बादलोकी फौज चढ़ इन्द्र हस्तीपर असवार है।
ओलोंका गोला बरसता औ बीजली तलवार है॥
कोकिल पपीहा मोर पिव पिव करैं औ नृतकार है।
मौसम सुहानी रहनकी अब बाग बीच बहार है॥
टेर-बरसाकी बहार फैलकर घटा छुटा सूं आवे है।
नहि महल सुहावे बागकी सैर करन चित चावे है॥
भोमी बालपर करे ख्याल इन्द्र पाल फूट कर वाल भरैं।
मोर पपीहा सुनें शोर जब अछिछिम २ निरत करैं॥
चलैं तीरसी सीर पवनकी नीभर भरना नीर भरैं।
सुखी संयोगन वियोगन नारी नेक न धीर धरैं॥
शेर-इन्द्र औ तिरिया अकेलीके सदासे वैर है।
वो बरसे खुस होय इसके बूंद बिजली कहर है॥
पास जो मीतमके प्यारी लेत सुखकी लहैर है।
जिसका पिया परदेस हो बरसात उसको झैर है॥
टेर-नरनारीको मेल मिलादियो आनन्द अधिक लखावे है।
नहिं म्हेल सुहावे बागकी सैर करन चित चावे है॥१॥

❀ ससुराल-रहस्य ❀

हो घोड़े असवार बागमें जानेकी मैं ठहराई।
बागवानपर आकर झटपट मोरी खुलवाई॥
भीतर बँगले बीच पलंगपर परी एक सूती पाई।
जाको बदन गुलाबी रंग अंगपर छाय रही थी ज़रदाई॥
शेर–इसके पती इसकूं तजी क्या कर्म उसका सौ गया।
लानत उसी बेशर्मकूं सुख धर्म दोनूं खो गया॥
क्या शाम भोली प्रेमका अंकूर दिलमें बो गया।
इसके अमाने रूपपर अब मैं दिवाना हो गया॥
टेर–भोग बिलास करूं इसके संग या मनमें मेरे आवे है।
नहि महल सुहावे बागकी सैर करन चित चावे है॥
मुख महताब चांदको टुकड़ो अदां परीकी छिपा हरै।
हूं फिदा आनते मधुर मुसक्यान करूं क्या कतल करै॥
देख नासिका कीर अधीर भयो धीर धरै नहिं चुगो चरै।
नैन देख बेचैन होय मृग जा वन खण्डमें बिपत भरै॥
शेर–दसनकी निरख चमक बिजुरी चिमक पिछतात है।
जुल्फकारी देखवारी नागनी पछतात है।
कुच गोल औ करेड़े निरख निबु निकाई मात है।
बिधना घरी रसकी भरी केला छरीकी जात है॥
टेर–वारनके भारसे बार बार त्रिया लरज लंक लचकावे है।
नहि महल सुहावे बागकी सैर करन चित चावे है॥
मेरे गुरु महराज बिप्र हरिदत्तजी हद किरपा कीनी।
मुझ अज्ञानकूं ग्यान बताया काव्यरीति सिखला दीनी॥
घनश्यामदास स्योबक्सराम करी म्हेर चातरी जब चीनी।
गोविंदरामके पांव पकड़ सेवक होय शरणा लीनी॥

❀ मुकलावा-बहार ❀

शेर-काव्यमें परिश्रम है जो उसको गुणी पहचानता।
ज्यों प्रसवकी पीड़ाकूं बांझ दिल नहिं जानता॥
गुणीकी गम दूर शुन ले फिर गुणीकी मानता।
माने नहिं नर मूढ़ सठसम मूढ़ताई ठानता॥

टेर-नानूलाल कहै कूंड कवि चोरी कर उमर वितावै है।
नहिं महल सुहावे बागकी शैर करन चित चावै है॥ ४॥

लावनी नरसी मेहताकी।

शेर-त्रिभुवनपति यादवपति भक्तन-पति रघुनाथजी।
तुम विना किनसे कहूं अन्तःकरणकी बात जी॥
मेरी नांव अटकी भंवरमें दे कान तुम विन साथ जी।
करुणा करै नरसीजी मेहतो जोर राख्या हाथ जी॥

टेर-मैं करुणाकर कहूं जाऊं बलिहारी कुंवड़ कन्हाई के।
हे वनवारी! आज माहेरो भरज्या नान्ही बाई के॥
श्रीरंगजी म्हारे सगे बत्तीसी विप्रां हाथ खिनाई जी।
म्हारे घणां दिनाको ब्याव माहेरो भरस्यां करां चढ़ाई जी॥
पत्रीमें उण जियास लिखी सो म्हारे एक भी नाई जी।
हम लेकर पत्री पंथ द्वार पीपलीतले रखवाई जी॥

झड़-मैं कुनवे ने बुलवाई, सब हाल दियो समझाई।
कापड़ो एक एक द्यो सब भाई, आस करै नान्ही बाई॥
तोड़-भाई सब नट गया न आया नीचे तिलभर राई के।
हे गिरधारी आज माहेरो भरज्या नान्ही बाईके॥ १॥

ससुराल-रहस्य

शेर-कछु साथ ना दीयो नट्या म्हारा सगा सब भाई जी।
बलद बूढ़ा टूटी गाड़ी ईसान कर कर ध्याई जी॥
घरकीं नार लजावण लागी कर कर भात बुराई जी॥
जूनागढका हँसे हथेली ठोकें लोग लुगाई जी॥
तूंबड़ी खंभरी तँबूरा गाढ़लीमें भर लिया।
तुलसीकी माला हाथमें और श्वेत चन्दन भाति लिया॥
लंबो तिलक माथे लगा कटिमें कसी लंगोटजी।
हरषयुत व्यामें चल्या संताकी लेकर ओटजी।
टेर-मानदास और ध्यानदास और ज्ञानदास ब्रह्मचारीजी।
हांक हांक मचायें सूरद्या भज भज कर गिरधारीजी॥
फिर गया बैल टूट गई गाड़ी मञ्जल हो गई भारीजी।
सहाय करें कुण आय बिना उन त्रिभुवनपति मुरारीजी।
वो ही सहाय करें आकर जिन डूबत विरज उबारीजी।
गिरिनख धारयो वंश उबारयो नन्दनन्दन अवतारीजी॥
झड-वो सहाय करेगो म्हारी, द्रुपदीकी लाज उबारी।
बड़ो वो सांवरियो गिरधारी, थकायो दुस्सासन बलकारी॥
तोड़-कीर पढ़ावत गणिका तारी दुख काटे मीरा बाईके।
हे बनवारी आज माहेरो भरज्या नान्ही बाईके॥ १॥
शेर-लाख तारे भक्त प्रभुजी आज बेर हमारी जी।
कहना सो कह चुक्या आगे इच्छा रही तुम्हारी जी॥
जब सुनी करुणा भक्तकी गरुड़ तज प्रभु आये जी।
जब सखा खाती जातके हरि साथ अपने लाये जी॥
टेर-नरसीकी गाड़ी बन खाती श्रीकृष्णचन्द्र सुधार दई।
वा चली कूंच दर कूंच दूसरी मञ्जल नगर अंजार गई।

देख सवारी नरसीकी गोकले विप्र मन खुसी हुई ॥
उन दौड़ राह श्रीरङ्गजी साहने जाय इनाकी खबर दई ॥
गोविंदराम गुरसदकी अब मैं हितच्चितसंती सरण गही।
स्योबक्स राम गुरु मिल्या मोय गुण सागर येलम सार सही ॥

झड़-ये उस्तादोंकी माया, जिन येलम हमें सिखाया ।
उजीरे तेलीने यूं गाया, ख्याल नरसीका नया बनाया ॥

तोड़-श्रीरङ्गजी याने डेरो, दोनो उमदो मांहे हथाईके।
हे गिरधारी आज माहेरो, भरज्या नान्ही बाईके ॥ २ ॥

लावनी हीर रांझाकी ।

शेर-छुरी कटारी तीरका घाव हो जाता भरा ।
पर नैनका जो घाव है वह दिन बदिन रहता हरा ॥
खुदा किसका दिल किसीसे भूलकरना तू फंसा।
जो फँसावे तो उसीके यारसे उसकूं मिला ॥

टेर-स्वपनेमें महबूब मिल्या सखि अब नही सुरत दिखावे है।
उस ज्यानी बिन करूंक्या अनपानी नहिं भावे है ॥
चन्द्र कहूँ या सूर्य सखीरी इन्द्र कहूं या देव सुरेस।
खुदा बनाया प्रीतमको सबसे आला सुन्दर बेस ॥
सुपने नेह लगाय खेल हँस काम किया उन अपना देश ।
मैं जागी जब मिला न मुझको वो सिरका श्याम नरेश ॥

शेर-दरश दे सुपनेके अन्दर काम अपना सारग्या।
मैं जगा जब नेह नावने यार पार उतारग्या ॥
मोहनी सी सुरत वाला मोहनीसी डारग्या ।
कर चुकी थी पीव मैं पर जरी कूं वो जारग्या ॥

तोड़-कहै हीर चितचोर मिले बिन कछुयन मोंय सुहावे है।
उस ज्वानी बिन क्या करूं अनपानी नहि भावे है॥ १॥

टेर-वो चितचोर मुझे नहि बेरा रहता कौन ठिकाने जी।
कोई लाय मिलावे रहेर करै मेरा मनजद माने जी॥
इश्क तीरकी पीर सही सो दर्द हमारा जाने जी।
सुखी न जाने सच कहूँ घायलकी घायल जाने जी।

शेर-सितमकर गया हाय ज्यानी आय सुपनेमें हरी।
कहां जाऊं क्या करूं मुझे मुशकल एक घरी॥
यारकी लख कर जुदाई आय मूर्च्छा घरी घरी।
वैद ल्यावे गुल मचावै पिलावै औषधि जरी॥

तोड़-वात पित्त कफ रोग बतावैं, हो लतियों ता न पावे हैं।
उस ज्यानी बिन क्या० नहि भावे हैं॥ २॥

टेर-पच पच वैद गये अपने घर मरज किसे नहिं पाई जी।
तब मुझे सुलाकर एक अरथमें भौजाई चल धयाई जी॥
बाग मांय एक पीर औलिया वाकूं नबज दिखाई जी।
वो यूं बोला भावजसे कोई आशकने कर्द चलाई जी॥

शेर-भावजसे फक्कड़ यूं कही आया इसे जंजाल हो।
इश्कके फंदेमें फँस गई ये विचारी बाल हो॥
इसके मन औषधि कार हो सब जान डाला हाल हो।
जिसने चलाई कर्द ओ ही दवा देवे भाल हो॥

तोड़-जब मैं आंख खोलकर देखी पूरा फक्कर लखावे है।
उस ज्यानी बिन क्या करूं अनपानी नहिं भावे है॥ ३॥

टेर-मै भावजकूं यूं कही हटजा फक्कड़से बतलाऊंगी।
इनकी सेवा करके अपने मनकी मुराद पाऊंगी॥

भावज गई लगा हिरदे फक्कड़ तोय सीस नवाऊंगी।
फक्कर हत्यारा गजबक्षा मारा कहे न नींद आऊंगी॥

शेर-फक्कर नट नाके हटा कुछ ना सुनी दिलगीरकी।
ऐ दई दुरसीस गुदड़ी जलने लगी फकीरकी॥
फक्कड़ बोला मुझे गुदड़ी लखी अजमत हीरकी।
रांझा मिलाऊं अभी जाऊं दुहाई गुर पीरकी॥
तोड़-फक्कर बना कासीद ओलिया हवा वागसे जावे है।
उस ज्यानी बिन क्या करूं अनपानी नहिं भावे है॥४॥
शेर-हरदत्तजी घनस्यामदास स्योबक्स रामगुरु मैं पाया।
उनकी म्हेरसे ज्ञान मान, मेरे घट भीतर दरसाया॥
गोविन्दराम गुरास ... गरुके चरणकमल विच चितलाया।
रहत देख अनूठी ... घाव हो ... हियड़ा घबराया।
नानूलालकी सुनी लावणी, ... दुष्ट चकराया॥
शेर-गुरु ब्राह्मण दो बड़ा सेवा करेमें सार हैं।
सीख गुरु कमसल बदलते, जिन्होंको धिक्कार है॥
हर जनोंके हृदयमे, गुरु विप्रका आधार है।
जब जोड़ सुन सज्जन सुखी, दुश्मनके सिर पेजार है॥
तोड़-नानूलाल कहे हीर हजारे, खुश हो फक्कर खिनावे है।
उस ज्यानी बिन क्या करु- अनपानी नहिं भावे है॥५॥

लिलहारी लीला।

मनमोहन मोहनि रूप धरे, बरसाने चले बनिके लिलहारी।
वृषभानुके धाम आवाज दई, प्रभु लीला गुदावो कोई बृजनारी॥
राधे आवाज सुनी जब ही तब, लीन्ही बुलाय पड़ा बनिहारी।

❀ ससुराल-रहस्य ❀

ले आवो बुलाय हमारे इतै एक, आई है आज नई लिलहारी ॥ १॥

उन जाय कही लिलहारिनसे, तोहि चाल बुलावत राधिका प्यारी।
अपने करसों कर साथ लिये जहँ, बैठी हुती बृखभानु दुलारी॥
सिर पे जो धरा सो उतार धरयो, अरु जाय खडी प्रिय पास अगारी।
तबही हँस राधे जबाब दियो, तुमही लिलहारी हो गोदनहारी ॥ २ ॥

लिख दे भुज दंडन बालगोविंद, मुजे भगवान गरे गिरधारी।
टोड़ी पै मूरति ठाकुरकी, अरु ओठन पै लिखु कृष्ण मुरारी ॥
नाककी नोकमें नाम नरायण, भौहनमें लिख कुंजबिहारी।
ह्वैके अधीन सबै लिख दे सुनि, ले लिलहारीकी गोदनहारी ॥ ३ ॥

लिख दे भुज दंड पे बालगोविंद, सो गोल कपोल कुंजबिहारी।
नाभि पै मूरत हो मुरलीधर, हो छतियों पर छैल मुरारी ॥
भांति यही नखसे सिख लो लिख, नाम अनंत इकंत हो प्यारी।
सांवरे रङ्गसे गोद दे अङ्ग, सुनो लिलहारीकी गोदनहारी ॥ ४ ॥

दंत पे नाम दमोदरको अरु, कंठपर होकर गिरवरधारी।
दाहिनी ओर लिखो सजनी कर, चार भुजाहुंके कुंजबिहारी ॥
मस्तकमें मनमोहनको अरु, बेंदिनमें लिख दे बनवारी।
कानोंमें नाम कन्हैया रहै, सुनियो लिलहारीकी गोदनहारी ॥ ५ ॥

लिख मूर्ती जनार्दन जांघनमें, परमानन्द पेटपे हो सुखकारी।
कोऊ अङ्ग न शेष रहै सजनी, परमेश्वर दे लिख पीठि हमारी ॥
घनश्याम लिखो घुटनों बिचमें, नखमें नटखटकी मूरत प्यारी।
हाथ रंगो पुनि पांव रंगो सुनि, ले लिलहारीकी गोदनहारी ॥ ६ ॥

काम हमारो यही सजनी हम, हैं परदेशी सही रोजगारी।
तुम जोइ कहौ मैं सोई लिखौ, तेरे अङ्ग ही अङ्गमें भेदौ मुरारी ॥
वृषभानुलली बरसाने घरा, बड़े राजनकी तुम राजदुलारी।
देवोगे कहा सो कहौ हमसे, हम हैं लिलहारीकी गोदनहारी ॥ ७ ॥

दै हौं मैं हार हजारनको, दुलरी तिलरी हँसुली वड़ि भारी।
दै हौं छला दोऊ हाथनके, कंगना वड़े मोल वनाये सुनारी॥
और अभूषण दैहौ वहू अरु, पैधनकी अपनी तनसारी।
मोतिन माल अमोल देऊं, सुनिये लिलहारीकी गोदनहारी॥८॥
हाथपे हाथ धर्यो जवही तव, चौक उठी वृषभानुदुलारी।
श्याम सिखे छल छन्द वड़े तुम, काहेको भेष वनावत नारी॥
देखनको तोही प्रेम वढ़्यो तवही, इम रूप कियो लिलहारी।
पद्माकर यों वृजनार कहै, हम है हरिके पद धोवनहारी॥९॥

लावनी चौमासा।

सखि आयो मास चौमास दहै नित छाती।
गये जवसे पिया परदेश लिखी नहि पाती॥
लाग्यो है मास असाढ़ घटा घन छाई।
विजुली चमके चहुँ ओर जिया डरपाई॥
सखि हाय! निठुरको जरा दया ना आई।
लव दिलसे दिया उतार सुरत विसराई॥
निशदिन ताकों मैं राह रहा ना जाती॥ पिया जवसे गये०॥१॥
सावनमें ना सखि सजन सलौना आया।
क्या जाने किस सौतनके कहां विलमाया॥
सिरपर श्रावण त्योहार तीजका आया।
सखि दहै कलेजा वलम कहां मेरा छाया॥
सव सखी खुशी और गेहमें सावणगाती ॥पिया जवसे० ॥२॥
भादोमें वरसे नीर पीर तनु भारी।
विन पिया सखीरी दुःख न जात सम्हारी॥

तकते निर्मोही राह हुवा जो भारी।
सुन पपीहाका बैनें नैन जल जारी॥
जो होतपता मालूम बांह गहि लाती॥ पिया जबसे गये० ॥३॥

सखि क्वाँर कंथने आय दरश जब दीन्हा।
जो लगा हियेमें तीर पीर हर लीन्हा॥
भरके मोतियनका थार न्योछावर कीन्हा।
नरपति तनमन धन वारी उसीपर दीन्हा॥
कहै कृष्ण बिहारी पिया करी मन भाती।
पिया जबसे गये परदेश लिखी ना पाती॥ ४॥

लावनी भरत बारामासी।

चैत्र पिछले पक्ष रामनौमीको रामने जन्म लिया।
अवधपुरी सुखधाम सखिन मिल मङ्गलचार किया॥
खबर जब दशरथने पाई।
दिये दान गज बाजि गौ दिन थोरेकी बधाई॥
सभा सब प्रफुलित हो आई।
कर्म लेख ना मिटै करो कोई लाखौं चतुराई॥ १॥
लागतही वैसाख केकई बावरी कर डारी।
धृक जीवन धनमाल जिन्हों घर तुमसी महतारी॥
दुःख तैंने नगरीकूं दीन्हों।
तीन लोकके नाथ राम तैंने बनवासी कीन्हों।
क्रूर मति कैसी बनि आई॥ कर्म लेख०॥ २॥
ज्येष्ठ पंच मिल कही भरतको गद्दी बैठारो।
भरत धरैं कानोपै हाथ मोहि गर्दन क्यों मारो॥

सरै नहिं इन बातन काजा।
तीन लोकके नाथ राम हैं अयोध्याके राजा॥
बात ये सबके मन भाई। कर्म लेख ना मिटै० ॥ ३ ॥
अषाढ़ आसा राम मिलनकी मनमें लागि रही।
राम कौन बन हमहिं बताओ भरतजी बात कही॥
नगरके नर औ सब नारी॥
रथ डोला गज बाज भीर भई भरत संग भारी॥
नदी ज्यौं सागरकूं धाई। कर्म लेख ना मिटै० ॥ ४ ॥
श्रावण शृंगबेरपुर पहुँचे भीर भई भारी।
भीलन कटक जोरी दल लीन्हें लड़नेकी त्यारी॥
भरतसे पूछिके रार करौ।
राम लखन सिय काज तीर गंगाके जूझ मरौ॥
खबर ये भरतहुंने पाई। कर्म लेख ना मिटै० ॥ ५ ॥
भादौं भरत भीलसे भेंटे भक्त जानि मनमें।
कन्द मूल फल तोड़ भीलने भेंट करी वनमें॥
भील जब अगुआ कर लीन्हो।
भरद्वाज प्रयाग आनकर दर्शन दे दीन्हों।
प्रयागकी दुनियां सब धाई। कर्म लेख ना मिटै० ॥ ६ ॥
कुँवार करी मिजमानी मुनिने पूंछी कुशलाता।
दोऊ कर जोरे देव परिक्रमा कौशिल्या माता॥
आज मेरो जीवन सफल भयो।
इतनी बात सुनी मुनिने सब आशिर्वाद दियो॥
भरतकी माता समुझाई। कर्म लेख ना मिटै० ॥ ७ ॥

❀ ससुराल-रहस्य ❀

कार्तिक कूच प्रयागसे कीन्हे चित्रकूट आये।
वल्कल वस्त्र सिर जटाजूट श्रीराम लखन पाये॥
भरत जब चरणन जाय परे।
राम उठाय भरत हिय लाये. नैनन नीर भरे॥
भरत तुम भाई। कर्म लेख ना मिटै०॥ ८॥
अगहन बारम्बार भरतको रघुवर समझावें।
भ्रात उलटि घर राज्य तुम करो अयोध्या जावें॥
लोग सबही सुख पावेंगे।
चौदह वर्ष जाय बीति फेर व्हां हमहूँ आवेंगे।
भरतकूं ऐसे समुझाई। कर्म लेख ना मिटै०॥ ९॥
पूस मास सिय राम लखनके जुरि गई भीर घनी।
जनक वशिष्ठ आदि समझावें कह अपनी अपनी॥
बीनती बहुत भांति कीन्ही।
राम आप श्रीचरण खड़ाऊं भरतहिं दै दीन्ही॥
उलटि घर जाव भरत भाई। कर्म लेख ना मिटै०॥ १०॥
माह महीना मान रामने सुख, पायो मनमें।
जनक जनकपुरकूं पहुँचायो भरत अयोध्यामें॥
खड़ाऊँ गादी धर दीन्ही।
रामचन्द्रसे कठिन तपस्या भरतहूने कीन्ही॥
बड़ाई याहीमें पाई। कर्म लेख ना मिटै०॥ ११॥
फागुन फेर हरी सीता जब रावण वस कीन्हीं।
रावण मार्यो राज्य लंकको विभीषणकुं दीन्हीं।
जीतिके अवधपुरी आये।

शिव सनकादि और ब्रह्मादि दर्शनकूं धाये ॥
रामकूं गादी ठहराई । कर्म लेख ना मिटे० ॥ १२ ॥
नव्वे साल नौंदकी भादों अगहन ग्रहण पर्यो ।
बांसबरेलीके लालदाससे राम नाम उच्चर्यो ॥
भरतकी यह बारामासी ।
गावे सुने परम पद पावै । कटै यमकी फांसी ।
वेद मिलि ऐसेही गाई । कर्म लेख ना मिटे० ॥ १३ ॥

लावनी नीलकंठ महादेवकी ।

आदि शंभु स्वरूप मुनिवर चन्द्र शीश जटाधरम् ॥
मुंड माल विशाल लोचन वाहनं वृषभध्वजम् ॥
नाग चर्म त्रिशूल डमरू भस्म अङ्ग विहङ्गमम् ।
श्रीनीलकंठ हिमाल जलधर विश्वनाथ विश्वेश्वरम् ॥ १ ॥
गङ्ग सङ्ग संग सरिता कामदेव सुसेवितम् ।
नाद बिन्दु संयोग साधन पंचवक्त्र त्रिलोचनम् ॥
इन्दु बिन्दु विराज शशिधर सेवितं सुरवंदितम् ।
श्रीनीलकंठ हिमाल जलधर विश्वनाथ विश्वेश्वरम् ॥ २ ॥
ज्योतिलिंग सुलिंग फणि मणि दिव्य देव सुसेवितम् ।
मालती तनु पुष्प माला गन्ध धूप नैवेद्यकम् ॥
अनल कुंभ सुकुंभ झलकत कलश कंचन शोभितम् ।
श्रीनीलकंठ हिमाल जलधर विश्वनाथ विश्वेश्वरम् ॥ ३ ॥
मुकुट क्रीट सुकर्ण-कुण्डल मंडितं मुनि रंजितम् ।
हारमुक्ता कनक रेखा रेखितं सु विशेषितम् ॥

गन्ध मर्दन शैल आसन आसनं पद्मासनम् ।
श्रीनीलकंठ हिमाल जलधर विश्वनाथ विश्वेश्वरम् ॥ ४ ॥
मेघ डम्बर छत्र धारण चरण कमल रसातलम् ।
पुष्परथ पर मदन मूरति गौर सङ्ग सदाशिवम् ॥
क्षेत्रपाल सुपाल भैरव कुसुम नवग्रह भूषितम् ।
श्रीनीलकंठ हिमाल जलधर विश्वनाथ विश्वेश्वरम् ॥ ५ ॥

त्रिपुर दैत्य सु दैत्य दानव प्राप्यते फलदायकम् ।
रावण दश कमल मस्तक अगज जलधर सायकम् ॥
श्रीरामचंद्र सुचंद्र रघुपति सेतुबन्ध-निवासितम् ।
श्रीनीलकंठ हिमाल जलधर विश्वनाथ विश्वेश्वरम् ॥ ६ ॥

मथित दधि जल शेष विगलित भ्रमत मेरु सुमेरुकम् ।
स्रवत विगलित दीप प्रवरात युग्म नेत्र सुनेत्रकम् ॥
महादेव सुदेव सुरपति सर्व देव विश्वंभरम् ।
श्रीनीलकंठ हिमाल जलधर विश्वनाथ विश्वेश्वरम् ॥ ७ ॥

रुद्र रूप सुतेज नमस्कृत भक्षमान हलाहलम् ।
गगन वेधित अखिल धारा आदि अंत समाहितम् ॥
काम कुंजर भान केशव महाकाल विश्वंभरम् ।
श्रीनीलकंठ हिमाल जलधर विश्वनाथ विश्वेश्वरम् ।

ऋतु वसंत सु चक्र चौदश प्राप्यते फलदायकम् ।
पूर्व काशी भये बासी मनुज मंगल-दायकम् ॥
अवके तट बैजनाथं शैल शिखर महेश्वरम् ।
श्रीनीलकंठ हिमाल जलधर विश्वनाथ विश्वेश्वरम् ॥ ९ ॥

लावनी नशेबाजोंकी।

सखी सात घर से चली जल भरन कुएँपर सुन ज्ञानी।
नशेबाज सातोंके पिया दुख रोती जायँ भरें पानी॥
पहली सखी यूं कहे सखीरी मेरा पिया भंग पिया करे।
पीकर भंग जंग हमसेती नाहक किस्सा किया करें॥
और रहें चुल्लूमें उल्लू वो लोटा भर लिया करें।
ना जानूं क्या मजा उसे सब घरके ताना दिया करे॥
दौड़-अच्छे घरमें ला डाला, कैसी कीन्ही नन्दलाला।
ऐसेसे पड़ा मेरा पाला, भंग पिवे नित्य मतवाला॥
तोड-सखीरी यों ही चली जवानी। नशेबाज सातोंके०॥ १॥
सखी दूसरी कहे सखीरी मेरे पियाने चरस पिया।
बड़े फजरसे उठे चिलम पी पीके कलेजा फूंक दिया॥
ये पीना दो छोड पिया कुछ चंद रोज जो चहो जिया।
कफ खांसी खुर्रा उनको दड मारे चरसने जोर किया॥
दौड़-वो पीवे चरस जिठानी, ना कही हमारी मानी।
लाचार रहूँ खिसियानी, गई इसी फिकरमें ज्वानी॥
तोड-सखी आदत उनकी न जानी। नशेबाज सातोंके पति०॥ २॥
सखी तीसरी कहे पियाने अफीमका सीखा खाना।
सुखा दिया तन बदन जिस्मका गया खून फिर नहिं आना॥
बुरी लगी है शौक सखीरी छूटे नही जिय संग जाना।
बहुतेरा समझाया पियाकूं कहा हमारा ना माना॥
दौड़-सखि मेरी किस्मत फूटी, टूटीकी लगे नहि बूंटी।
ना ये लत उनकी छूटी, ज्वानी गैरोंने लूटी॥

ससुराल-रहस्य

तोड़-प्यारी पे ही लिखी मेरी ख्यानी। नशेवाज सातोंके पति० ॥३॥
चतुर सखी यूं कहे सखीरी बहुत बुरा गांजा पीना।
मेरे पियाने बहुत पिया तन जर्द आपना कर दीना॥
यही वस्फ़ गांजेकी सखीरी फुंका जिगर जल गया सीना।
नहिं ताकत कुछ रही बदनमें थका जोर मुश्किल जीना॥
दौड़-गांजेकी सखी लत भारी, भर भरके पीवे हरबारी।
निज काय खांख कर डारी, है उम्र हमारी बारी॥
तोड़-मुझसे अब ना डटे जवानी। नशेवाज सातोंके पति० ॥ ४ ॥
सखी पांचवीं कहैं सखीरी मेरा पिया है मतवाला।
भर प्याली बोतल कर खाली घरका पटपड़ कर डाला।
हो गाफिल रहे पड़ा मुझे दुख पड़ा और कहे भरवाला
रहे नशेमें चूर सखीरी दिलभर वो पीवे प्याला॥
दौड़-पी पी शराबकी प्याली, कई बोतल कर दे खाली।
मैं समझाकर बहु हारी, मेरी एक भई ना कारी॥
तोड़-सखी मेरी दुखकी भरी कहानी। नशेवाज सातोंके पति० ॥५॥
छठी सखी यूं कहै मेरा पिय पोस्ता छानै बड़ी फजर।
कहै सो करना पड़ै सखीरी हमें हुक्मसे कहा उजर॥
लली पिनक बेहोश नशेमें चूर जो देखे भरके नजर।
इसी रंजसे हाथ सखी मेरी जल भुनकाया गई पजर॥
दौड़-उन पोस्त पिया मन भाया, सुख जरा न हमने पाया।
सब कर्म रेखकी माया, यों ही रो रो जन्म गमाया॥
तोड़-पियाने सार हमारी ना जानी। नशेवाज सातोंके पति० ॥६॥
सखी सातवो कहै सखीरी मेरा पिया सुरती खावे।
थूंक थूंक घर द्वार लाल सूरत मुरदी सी दिखलावे॥

जरा देरमें शर्म होय गर गलती कुछ मुझसे पावे।
बना बना दिन रात पान देऊं ईश्वर पीछा छुटवावे॥
दौड़-रिसालगिर उस्ताद हमारे, नन्दा चेता मित्र पियारे।
झुम्मन गोपी मिल गाते, नत्थूलाल चङ्ग खड़काते॥
तोड़-देवीसिंह लिखा प्रिय वानी।
नशेबाज खातोंके पिया दुख रोती जायँ भरें पानी॥ ७॥

लावनी अप-टु डेट।

—हिन्दुस्तानकी नीम ज्येण्टलमैनी—

हिन्दुस्तानकी कमाई देखो कुछ कौडी छै पाई है।
जिनका खर्चा होता उनकी ये तहरीर बनाई है॥
दोकी टोपी सवा कमीचका नकटाई छै आनेको।
पांचका चश्मा और छै आनेका कालर टाई लगानेको॥
नहीं आठसे कम लगते हैं वेस्टेंड कोट बनानेको।
कमसे कम पतलून चारकी ग्यालिस बारह आनेको॥
तिसरे दिन चार आना इनकी लगने लगी धुलाई है॥१॥ हिन्दु०॥
डासनके फुल बूंट सातके है मशहूर जमानेमें।
अश औ पालिसकी शीशी भी आती नौ नौ आनेमें॥
साढ़े सात तो अवश्य होना वेस्टेंड वाच लगानेमें।
सोला आने पूरे जाते पचान्सी छड़ी उठानेमें॥
ब्रिटिश जुर्राबकी कीमत हमने छै आने बतलाई है॥ २॥ हिन्दु०॥
बीसकी सेकण्ड हैण्ड साईकल ये भी आजकलका फैशन।
एक मील पैदल नहिं चलते ऐसे मिष्टर भारतीयन॥
सवा रुपयेका स्लीपर घरमें रखना पड़ता मजबूरन।

गलती हो तो माफ कीजिये बतलाता हूं तखमीनन ॥
एक आना रोजीना इनसे लेता गनेश नाई है ॥ ३ ॥ हिन्दु० ॥
सेफ्टी पिन और कंघी साबुन इनको यार बताऊँ क्या।
दस आनेसे कमती कीमत इनकी और लिखाऊँ क्या ॥
सिग्रेट चुट्टे ऐसे जलते जिनके दाम लगाऊँ क्या।
"चन्द्र" कहैं यह खर्च थर्डका फर्स्ट क्लास बताऊँ क्या ॥
सी अमीरीने भारतको घर घर भीख मगाई है।
हिन्दुस्तानकी कमाई देखो कुछ कौडी छै पाई है ॥ ४ ॥

कवित्त ।

ईश गिरिजाको छांडि ईशू गिर्जामें जांय,
शंकर स्वदेशी लोग मिष्टर कहावेंगे।
कोट पतलून बूट हैट टोप टाई डाट,
शर्टकी पाकिटमें वाच लटकावेंगे ॥
फिरैंगे घमरडी बने रण्डिनको पकड़ हाथ,
पीवें बरण्डी मीट होटलमें खावेंगे।
चुरूटकी धूम्रसे आकाशको ढांपि डारे,
मानो स्वदेशका नाम ही डुबावेंगे ॥

हनूमानजीकी मूंदडी।

रंगत मारवाडी।

माता सीताकी गोदीमें हनुमत डाली मूँदडी ॥ टेर ॥
सुनके जाम्बवन्तका वाक, हनुमत मारी एक फलांक।

❋ मुकलावो-बहार ❋

हिरदे ध्यान रामको राख, समुदर लांघि गयो हनुमान॥
सीसपर राखी मूंदड़ी॥ १॥

लंका फिर फिरके कपि जोई, तिंगे सीताकी नहि होई।
पूछ्यां बतलावे ना कोई, वो तो जाय खड्यो पनघटपर
बातां करती सुन्दरी॥ २॥

बातां सुणकर पतो लगायो, चलकर अशोक बागां आयो।
सीता मांका दर्शन पायो, सीता झुरे भिखाके मांय॥
जाय गिराई मूंदड़ी॥ ३॥

सीता देखत ही पहचानी, यां है रघुबरकी सैनाणी।
यांपर कौन निशाचर आनी, मनमें बहुत कल्पना करके॥
हिये लगाई मूंदड़ी॥ ४॥

हनुमत बोले मधुरी बानी, माता क्यूं मत चिन्ता आनी।
रघुबर भेजी है सहजानी, माता हुकम हुये रघुवरको॥
आय मैं दीन्ही मूंदड़ी॥ ५॥

मैं तो ना जानूं तोय बीर, तू तो है कोई छलगीर।
कैसे आवे मुझ मन धीर, तूं तने करी राक्षसी माया॥
लायो छलकर मूंदड़ी॥ ६॥

मैं तो रामचन्द्रको पायक, वे हैं मेरे सदा सहायक।
जिनको नाम सदा सुखदायक, मत कर सोच रती तूं माता॥
या नहीं छलकी मूंदड़ी॥ ७॥

वनचर देख सिया मुस्क्यानी, बोली ऐसे मुख सूं बानी।
तेरी छोटीसी जिन्दगानी, किण विध लांघ्यो भारी सागर॥
कैसे लायो मूंदड़ी॥ ८॥

माता छोटो मत मोहिं जान, मैं हूं बहुत बड़ो बलवान।

सागर कहां विचारो जान, रघुवर कृपा भई मो ऊपर ॥
इस विधि लायो मूंदड़ी ॥ ९ ॥

हनुमत भीमरूप दिखलायो, ज्याको सिर आकाशां लायो ।
पाछो छोटो रूप बनायो, आयो हाथ जोडके सन्मुख ॥
ठाड्यो विनवे मूंदड़ी ॥ १० ॥

ऐसी देखी माता बात, धीरज अपना मनमें लात ।
याको भेज्यो है रघुनाथ, वनमें हर्षित हो अति भारी ॥
पल पल निरखे मूंदड़ी ॥ ११ ॥

माता भूखो भोजन पाऊं, देवो हुक्म तोड़ फल खाऊं ।
दरखत पाड़ पाड़ छिटकाऊं, अब मैं अपनो बल दिखलाऊं ॥
जेस विधि लायो मूंदड़ी ॥ १२ ॥

बोली सीता सुन हनुमान, रक्षक निश्चर भट बलवान ।
तोकों मार गिरावें आन, फिर मैं झुर २ के मरजाऊं ॥
पड़ी रहिजावे मूंदड़ी ॥ १३ ॥

बोले हनुमान सुन माय, इनको डर कुछ मुझकूं नांय ।
जो तुम हुक्म देवो हरखाय, सबकूं मार मार कर डारूं ॥
पेटभर खाऊं मूंदड़ी ॥ १४ ॥

सीता बोली बीर सिधावो, जावो तोड़ २ फल खावो ।
निश्चर मार मार छिटकावो, जाती बिरयां मिलकर आवो ॥
हियेमें राखो मूंदड़ी ॥ १५ ॥

आज्ञा माताकी जब पाई, हनुमत गरज कालकी नाई ।
दरखत तोड़ २ छिटकाई, निश्चर जाय कही रावणकूं ॥
कपि एक लायो मूंदड़ी ॥ १६ ॥
दरखत तोड़ २ महिडारे, निश्चर गरज गरज कर मारे ।

शंका नहिं मनमें कुछ धारे, ऐसो वनचर है बलवान
मनमें ध्यावे मूंदड़ी ॥ १७ ॥

सुनकर दशमुख सूर पठाया, सस्तर ले सब बागां आया
कपिसे भारी युद्ध मचाया, वहांपर हुवा घोर संग्राम।
हनुमत जीते मूंदड़ी ॥ १८ ॥

योद्धा इन्द्रजीत बलकारी, जान्या हनुमत सैन्य सँहारी
तब ब्रह्मफांस गल डारी, लाये बांधि सभा रावणकी॥
झट दिखलाई मूंदड़ी ॥ १९ ॥

वहांपर मारन इसकूं लागे, वस चलता ना हनुमत आगे।
निश्चर देख रे सब भागे, यह तो निश्चय ना मरनेका ॥
ध्यान मन राखे मूंदड़ी ॥ २० ॥

सारी सभा युक्ति बतलाई, लीजो तेल रुई मंगवाई।
बन्दर पूंछ देवो बन्धवाई, पीछे अग्नि देवो लगाय॥
तुरत जल जावे मूंदड़ी ॥ २१ ॥

सारा नग्रकी रुई मंगाई, दीनी बांदर पूंछ बन्धाई।
ऊपर तेल घिरत छिटकाई, जिस दम अग्नी लाय लगाई।
कपी मन ध्याई मूंदड़ी । २२ ॥

झपट कपि रावणके ढिग जाई, वाकी डाढ़ी मूंछ जलाई।
पीछे चढ़यो कंगूरन आई, लंका जारदई कपि सारी॥
टे मनही मन मूंदड़ी ॥ २३ ॥

लंका कपि सारी जलाई, घर एक विभीषणको नाई।
ारी बच्चा ले ले धाई, जावे सत्यानाश रावणको॥
ाहक छेडी मूंदड़ी ॥ २४ ॥

ाकर समदर पूंछ बुझाई, पाछे सीताके ढिग जाई।

आज्ञा देहु कहै शिर नाई, माता दे मोय कुछ चीह्ना ॥
ज्यौं प्रभु भेजी मूंदड़ी ॥ २५ ॥

सीता कहै पुत्र तुम जावो, संगमें रघुनन्दनको लावो।
आकर निश्चर वंस मिटावो, जो नाआवो मासकें भीतर ॥
तो मर जाऊं मूंदड़ी ॥ २६ ॥

बोले हनुमत यूं हरखाय, आज्ञा रघुनन्दनकी नाय।
ना तो चलतो संग लिवाय, केवल सुधि लेनेकूं आया ॥
माता लेकर मूंदड़ी ॥ २७ ॥

कंकण दीन्हा मात उतार, लेकर चाले पवनकुमार।
उतरे जाकर सागर पार, जहांपर बैठी सब कपि सैन्य ॥
हृदय लगाई मूंदड़ी ॥ २८ ॥

पहुंचे जाकर रघुपति पास, कहा सीताका सब रहवास।
मातकूं रहे रातदिन त्रास, रोवे आठ प्रहर झुर २ के ॥
याद कर २ के मूंदड़ी ॥ २९ ॥

सीता विकल सुनी रघुराई, अखियां प्रेम जल भर आई।
कपिको लीन्हें कंठ लगाई, तो सम नहीं दूसरो प्यारो ॥
सरा है रघुबर मूंदड़ी ॥ ३० ॥

जो कोई कथा मूंदड़ी गावे, प्रभुबल मन इच्छा फल पावे।
सगरे क्लेशदुःख बिसरावे, सुमरो राम राम निज मनमें ॥
चितमें राखो मूंदड़ी ॥ ३१ ॥

सीता माताकी गोदीमें हनुमत डाली मूंदड़ी।

❀ मुकलावा-बहार ❀

लावनी लैलाकी।

रे काग [illegible] विपति [illegible] न मैं भी प्रेम निभाती हूं।
चाहे मां बरजो मोही आज लाज तज मिलन उसीसे जाती हूं॥
आज सुगनकूं देख खुशी [illegible] नयनमें मोती भरकत है।
झूल झूल ढबढबी और मा [illegible] नीलफूल सर[illegible]त है॥
नान्हूं नान्हूं [illegible] है [illegible] [illegible] [illegible]कत है।
प्रीतम मिलसी [illegible] सखि [illegible] आंख मोरी फरकत है॥

शैर-सुगनकी तदबीर लखकर आज दिल करता कहा।
बांह फरकत कंवल खुश है कलेजा तिरपत भया॥
अंगमें अंग ना समावे वदन रतिपति छा रहा।
बैन निकलत हंसीसे मेरा नैन चपला हो रहा॥

टेर-सदा उदास रहा करती मैं आज मनमें हरखाती हूं।
चाहे मां बरजो मोय आज लाज तज मिलन उसीसे जाती हूं॥१॥

सटक सहरसे कही अटकी सुध जंगलकी ठहराई।
अब क्यों निसरी ओ डरूं बनमे दिलगारी मेरे मन छाई॥
जंगल झाड़ ढूंढने लागी पिव करके कुराई।
निकल गई थी स्वांस लहास मजनूंको मोय पड़ी पाई॥

शैर-टूट बिजली सी पडी औ तीरसा हिरदे लगा।
पार मेरे हो गया और दरद ना जाता सहा॥
ईस घर क्या ज्वाब दूंगी जोव ऐसे डर गया।
हाय! मेरे इश्कमें मजनूं-तड़फ कर मर गया॥

टेर-हाय प्रभू क्या लिखा करममें हाथ मसल पिसताती हूं।
चाहे मां बरजो मोय आज लाज तज मिलन उसीसे जाती हूं॥२॥

जनम जनमका आशक मजनूं मैं तो तुझकूं हेरा था।

अधविच तजसी मोय ऐसा मुझको नहिं बेरा था ॥
बिलखत मोय मत छोड़ चेतकर तूं हिल मालक मेरा थां
मेरी रहती थी याद तुझे और मुझे भरोसा तेरा था ॥

शेर-इश्कमें भोगी मुसीबत जिगर दोनों जर गये ।
मार गये मजनूं मुझे आप नहिं कुछ मर गये ॥
ये सुनी करतार करुणा सरब संकट हर गये ।
ईश्वर कृपा दो संत आये काज मनके सर गये ॥

टेर-मेरे काज औलिया आये उनकूं शीस नवाती हूं ।
चाहे मां बरजो मोय आज लाज तज मिलन उसीसे जाती हूं ॥३॥

द्विज कुलमें अवतार प्रगट घर गुरु हरदत्तजी ज्ञान दिया ।
ज्ञान काव्यकूं जान दास सम आप मुझे गुणवान किया ॥
स्योबक्सराम आनंद सहित मोय भेद बताकर सुजस लिया ।
गोविंदरामकी म्हेर हुई जब प्याला पूरण प्रेम पिया ॥

शेर-करणा ले विद्या कपटसे रह गये रणमें खड़े ।
धारके रसवीर हारे देख लो ऐसे लड़े ॥
फायदा सेवक क्यों ना फायदा गुरुसे अड़े ।
वेद गाकर यूं सुणावे नरकमें नुगरे पड़े ॥

टेर-नाहनलाल कहे फिट नगुरांकु मैं सुगुरांका साथी हूं ।
चाहे मां बरजो मोय आज लाज तज मिलन उसीसे जाती हूं ॥४॥

लावनी ।

कोई हाल मस्त कोई माल मस्त, कोई तूती मैना सूवेमें ।
कोई खान मस्त पहिरान मस्त, कोई राग रागिनी धूवेमें ॥
कोई अमल मस्त कोई रमल मस्त, कोई सतरंज चौपड़ जूवेमें ।

मुकलावा-बहार

एक खुद मस्ती विन और मस्त, सव पड अविद्या कूवेमें ॥ १॥
कोई अकल मस्त कोई सकल मस्त कोई चञ्चलताई हासीमें।
कोई वेद मस्त कोई तिब्ब मस्त कोई मक्केमें कोई काशीमें॥
कोई ग्राम मस्त कोई धाम मस्त कोई सेवकमें कोई दासीमें।
एक खुद मस्ती विन और मस्त सब फँसे अविद्या फांसीमें॥२॥
कोई पाट मस्त कोई ठाठ मस्त कोई भैरवमें कोई कालीमें।
कोई ग्रन्थ मस्त कोई पंथ मस्त कोई श्वेत पीत रंग लालीमें॥
कोई काम मस्त कोई खाम मस्त कोई पूरणमें कोई खालीमें।
एक खुद मस्ती विन और मस्त सब बँधे अविद्या जालीमें॥३॥
कोई हाट मस्त कोई घाट मस्त कोई; वन पर्वत औजारामें।
कोई जात मस्त कोई पांत मस्त कोई तात भ्रांत सुतदारामें॥
कोई कर्म मस्त कोई धर्म मस्त कोई मसजिद ठाकुरद्वारामें।
एक खुद मस्ती विन और मस्त सब बहे अविद्या धारामें॥४॥
कोई राज मस्त गज वाज मस्त कोई छप्परमें कोई फूलेमें।
कोई युद्ध मस्त कोई क्रुद्ध मस्त कोई खड्ग कुठार बघूलेमें॥
कोई प्रेम मस्त कोई नेम मस्त कोई छींकेमें कोई झूलेमें।
एक खुद मस्ती विन और मस्त सब पड़े अविद्या चूलेमें॥५॥
कोई साक मस्त कोई खाक मस्त कोई खासेमें कोई मलमलमें।
कोई योग मस्त कोई भोग मस्त कोई स्थितमें कोई चलचलमें॥
कोई ऋद्धि मस्त कोई सिद्धि मस्त कोई लेन देनकी गलगलमें।
एक खुद मस्ती विन और मस्त सब दबे अविद्या दलदलमें॥६॥
कोई ऊर्ध्व मस्त कोई अधो मस्त कोई बाहरमें कोई अन्दरमें।
कोई देश मस्त परदेश मस्त कोई औषधिमें कोई मन्तरमें॥

कोई आप मस्त कोई ताप मस्त कोई नाटक चेटक तन्तरमें
एक खुद मस्ती विन और मस्त सब भ्रमे अविद्या जन्तरमें ॥ ७ ॥
कोई सुष्ट मस्त कोई तुष्ट मस्त कोई दीरघमें कोई छोटेमें ।
कोई गुफा मस्त कोई सुफा मस्त कोई तूँबेमें कोई लोटेमें ॥
कोई ज्ञान मस्त कोई ध्यान मस्त कोई असलीमें कोई खोटेमें ।
एक खुद मस्ती विन और मस्त सब रहे अविद्या टोटेमें ॥ ८ ॥
यह लौकिक मस्त कहां लौ वरणों हैं मायाके दङ्गलमें ।
कौन करे तिनकी गिणती सब जड़के हैं दृढ संगलमें ॥
क्षणमें रुष्ट तुष्ट इक छिनमें स्थिती सदा अमंगलमें ।
एक खुद मस्ती विन और मस्त जब भूले अविद्या जंगलमें ॥ ९ ॥

जवाब तुर्रांका ।

श्रीकृष्ण नन्दजीके नन्दनने धरा भेष मनिहारिनका ।
आप हरि जहां गये तहांपर बहुत झुण्ड ब्रजनारिनका ॥
पहिर जनाना भेष हरीने रचि रचिके शृंगार करो ।
हंसुली और हमेल गले बिच झलझल झलकत पनाहरो ॥
ठठ गुजराती सजा घांघरा ओढ़न दखनी चीर खरो ।
रवि शशि कोट बदनकी शोभा ऐसे हरिने रूप धरो ॥
कुन्चा बनायके आटी चोली औ कुरता फुलक्यारिनका ॥१॥
श्रीकृष्णजी फिरैं पूछते कोई चुरिया पहिरोगी खरी ।
काली पीली जरद जंगली सुरप खोसनी और हरी ॥
एक सखी यूं बढ़कर बोली खरी आव तू मनिहारी ।

यदि ऐसे भजनोंका पूर्णानंद लेनाही हो तो 'प्राचीन भजनमाला' के
- हलकके यहां मिलेगी ।

चुड़िया मोतीचूर कड़ाबंद लाई तो पहिना जारी ॥
मुंह मांगे लो दाम हमें तूं झुठा बतारी मोल भारिलका ।
श्रीकृष्ण पहिराने लगे औ पहिरे राधा सहेलिनी ।
कर छूते तनुमार छिपे नहि लख गई राधा पहेलिनी ॥
राधामुख सरमाय कहे फिर पूछोरी सखियां अकेलिनी ।
फिरी जाय चौफेर कृष्णके जितनी थीं सब नवेलिनी ॥
हरलीया अभुमान किया अपमान सखी सब सारिलका ॥ ३
अनेक छल बल किये कृष्णने सब सखियां छलने खातर ।
कहँलग कोई सिफत करेंगे तुमकव गिरि कहते गाकर ॥
लछमन ब्राह्मण धर्मा कहते बैठो शायर मत हो आतुर
जसूलालके चङ्गके ऊपर निरत करे परवा पातुर ।
लहै शुणी जैराम भारती, चंगपर तुर्रा तारलका ॥ ४ ।

जवाब कलँगीका ।

अंधी रातके विषे कृष्ण राधेके महलको जाते भये ।
कर सरोजसे जाके द्वारके पट कपाट खटकाते भये ॥
चौंक उठी वृषभानुनन्दिनी कौन मेरे द्वारे आया ।
ये नाम बताओ आकर मुझको नींदसे काहे जगाया ॥
परस्थानमें घुसे आन तुम जरा न मन दहशत लाया ।
फिरो दिवाना दिवाना होकर किसीका भरमाया ॥
मधुर वचन सुनकर राधेके कृष्णचन्द्र सनुभांत भये ।
कर सरोजसे० ॥ ॥ १ ॥

माधो नाम है मेरा जगतने तेरे पास आया हूं अली ।
कहै राधिका शरदमें ऋतु वसन्त नहि लगे भली ॥

ऋतु वसन्त नहिं जान प्रिया मैं चक्री हूं तू डोर अलो।
चक्री हो तो यहांसे सरको कुलालकी तुम पूछो गली॥
धरणीधर कहते हैं मुझको वेद शास्त्र यूं गाते भये।
कर सरोजसे० ॥ २ ॥

जान गई तुम शेषनाग हो सहस्त्रसीस तनके कारा।
शेष नही मैं प्रिया हूं सर्पोंका मारनहारा॥
शेष नही तो गरुड़ हो गये विनताको करो प्रतिपाला।
प्रिया हरि हूं मेरा है सारे जगत्में उजियाला॥
सूर्य होयकर स्वर्ग छोड़के मेरे भवन क्यूं आते भये।
कर सरोजसे० ॥ ३ ।

कृष्ण कृष्ण यूं कृष्णचन्द्रने तीनें वार उच्चार किया।
उठी राधिका दिये पट खोल गलेका हार किया॥
"मूलचन्द"पै कृपा करोरी जिसने ऐसा विहार किया।
भक्त जनोंका हरीने छिनमें बेड़ा पार किया॥
तर्कि सुनकर जवाब कलगीके होश उड़ जाते भये।
कर सरोजसे० ॥ ४ ॥

लावनी मनिहारी।

छलने वृषभानुदुलारीको बनगये आप मनिहारी॥ टेर॥
कहने लगे कृष्ण मुरार सुनो मेरे यार मनसुखा प्यारे।
चिन्ता इक मनमें लगरही आज हमारे॥
मनिहारी रूप बनाय सवेरे जा वृषभान दुवारे।
छलें राधा कूं उमदा मेरा भेष बनारे॥
चौक-शृंगार भवनमें जावो, सामान सभी लै आवो।
मोतियनसे मांग भरावो मनिहारी मुझे बनावो॥

❁ मुकलावा-बहार ❁

कव्वाली-सुनके ग्वाल मदसुखाजी करनेको लगे श्रृंगार।
लहँगा सो अतलसी और चूनड़ी सितारेदार॥
चोलीकी छवि छाई और दुलाकी बनी बहार।
मोतियोंसे मांग भरी अगर सिन्दूर डार॥
बिन्दीकी चमक और कजराकी रमक न्यारी।
पटियां झुकाय लीन्ही जुल्फ नागनीसी कारी॥
गल बिच पंचलडी हँसली हमेल हारी।
गजरा बाजूबन्द छल्ल पहुँलीकी शोभा न्यारी॥
तोड़-बन ठन मनसुखा। सिंगारीकोंदी दना अनोखी नारी॥ १
अगणित श्रृंगार बनाय हँसे यदुराय हुये रंगभीनी।
हुई चन्द्रप्रभा चन्द्रकी ज्योति करी हीनी॥
झब्बेदार चुड़ेदार पे शोभादार सीस धर लीनी।
झूमते चले मनिहारी बनी नवीनी॥
झेक-चोलियो सीस टेकाके, बरसाने पहुँचे जाके।
चुड़लेका नाम बताके, दीन्ही आवाज लगाके॥
कव्वाली-झुम झुम करते चाले प्रभू हस्ती ज्यूं झुमाई चाल।
राधेजीकी ड्योढ़ी ऊपर जाकर पहुँचे नन्दके लाल॥
ड्योढ़ी पर दरबानी देखा मनिहारीका मस्त हाल।
देखके अनूप रूप खुश भई मनमें वाल॥
कहने लगी प्यारी जरा चोलियो उतार देव।
छायामें करो आराम थोड़ी देर स्वांस लेव॥
ठंडी पौन लेव ज्यांसे तनका मिटे पसेव।
थाककी सौगंध वेरी सोह तोसे ना कछु है छेव॥
तोड़-सुनके यूं वचन दरबानीके झट सिरसे छाब उतारी॥ २॥

❀ ससुराल-रहस्य ❀

भीतरसे ललिता सखी आनकर लखी अनोखी नारी।
लिया रूप निरख मनमें मुसक्याई प्यारी॥
है कौन तुम्हारो ग्राम और क्या नाम प्रिये मनिहारी।
सुनकर ललिताके बैन हँसे बनवारी॥

चौक-रहूं नँदगांवके मांही, है नाम श्यामसखीबाई।
मनिहारी जात बताई, चुड़ला बेचनकूं आई॥

क० सां-चुड़ले बेचनकूं आई सुनके राधाजीको नाम।
राधाजीके विना प्यारी कौन देवे पूरा दाम॥
चुड़ले हैं अनोखे महा सुन्दर औ शोभाके धाम।
पहिनाके राधेको सखी पाऊंगी भारी ईनाम॥
इतना ये संदेश मेरा राधेकूं दीजो सुनाय।
मरजी वाकी होवे मोकूं सैनसूं लीजो बुलाय॥
सुनके बैन ललता गई राधेजीके भौन मांय।
मनिहारी नवेली एक द्वारे पै खड़ी है आय॥

तोड़-मुख देखत चन्द्र उजारीदो मैंतो भूलगई सुधि सारी॥ २॥
सुनकर ललताकी बैन राधे लागी कहन बुलाकर लावो।
है कौन अनोखी नारि हमें दिखलावो॥
ले आवो अपने साथ पकड़ कर हाथ मती शरमावो।
चुड़ला तुम करो पसंद मुझे पहिनावो॥

चौक-सुन ललता बाहर आई, मनिहारी कूं सैन चलाई।
चौलियो सीसपर ठाई, ललताके संग सिधाई।
क० सां०-ललताजीके संग चली पहुँची महलों बीच जाय॥
रूप तो अनूप देखि राधेजी गई शरमाय॥
मनिहारी नवेली जान पासमें लई बैठाय।

कहन लागी प्यारी कोई सुन्दरसो चुड़लो दिखाय॥
ये लो चुड़ला देखो इनका भारी मोल छाने नहीं।
चातरे लें पिछान मूरख मोल तोल जाने नहीं॥
चुड़ले हैं अनोखे हम झूंठ तो बखाने नहीं।
कहना मानो प्यारी ऐसे चुड़ले फेर आने नहीं॥
तोड़-सिणगार सुहागन नारीको चुड़ला बिन फीको प्यारी॥ ४॥
सुनकर यूं राधे बात पसारे हाथ मुझे पहिरावो।
चुड़ला बिन फीको लगै शृंगार बनावो॥
नाहै उधारको काम खरे लो दाम मोल बतलावो।
ऊपरसे मिले इनाम मती घबरावो॥
चौक-सुनकर नंदलाल कन्हाई. राधेकी पकड़ कलाई।
उपरको जरा उठाई, निरखत तन शोभा पाई॥
क० सां०-नन्दजीके लाल फेर वहियेंको दीन्ही मरोर।
मनमें मुस्क्याय रहे चोलीको रहे टटोर॥
काया सारी निरखी तोभी राधे ना पिछाने तौर।
यशोदाके छैया फेर वहियां पै लगाया जोर॥
कहने लगी राधे काहे वहियां कूं मरोरे नार।
हाथमें चुड़ला पहिरावे वहियां क्यों दीन्ही उघार॥
मनिहारी ना मुखसे बोले राधेजी रही पुकार।
सारे अंग निरख करके निज रूप लिया धार॥
तोड़-को जाने भेद बनवारीको हीरा ने यूं अर्ज गुजारी॥ ५॥

कविवर रहीमकृत नंदनाष्टक।

दृष्ट्वा तत्र विचित्रतां तरु:तां.
मै था -गया बागमे। -

ससुराल-रहस्य

काँचित्तत्र कुरंगशावनयनी,
गुल तोड़ती थी खड़ी।
उन्नद्भ्रूधनुषा कटाक्षविशिखैः,
घायल कियाथा मुझे।
तंत्सीदामि सदैव मोहजलधौ,
है दिल गुजारी मुकर। १।

कलित ललित माला वा जवाहिर जड़ा था,
चपल चखन वाला चांदनीमें खड़ा था।
कटितट बिच जेला पीत सेला नवेला,
अलि बनि अलबेला यार मेरा अकेला॥ २॥

अलक कुटिल कारी देख दिलदार जुल्फें,
अलि कलित निहारै आपने दिलकि जुल्फें।
सकल शशि कलाको रोशनी हीन लेखों,
अहह वृज ललाको किस तरह फेर देखो॥ ३॥

वहति मरुति मन्दं मैं उठी रात जागी,
शशिकर कर लागे सेजको छोड़ भागी।
अहह विगत स्वामी मैं करूं क्या अकेली,
मदनशिरसि भूयः क्या वला आन लागी॥ ४॥

छवि छकित छबीली छैलराकी छड़ी थी,
मणि जटित रसीली माधुरी सुंदरी थी।
अमल कमल ऐसा खूबसे खुब लेखा,
कहि सकत न जैसा कान्हका हस्त देखा॥ ५॥

विगत-घन-निशीथे, चांदकी रोशनाई,
सघन-घन-निकुंजे, श्याम बंशी बजाई।
सुतपतिगतनिद्रा, स्वामियां छोड़ भागी,

मदनशिरसि भूयः, क्या वला आनलागी ॥६॥
हरनयनहुताशज्वालया भस्मिभूत,
रतिनयनजलौघे खाक वाकी वहाया ।
तदपि दहति चित्तं, मामकं क्या करोगी,
मदनशिरसि भूयः क्या वला मान लागी ॥ ७ ॥
हिमऋतुरतिधामा सेज लोटौ अकेली,
उठत विरहज्वाला क्यों सहौंरी सहेली ।
इति वदति पठानी मद् मदांगी विरागी,
मदनशिरसि भूयः क्या वला आन लागी ॥ ८ ॥

लावनी प्रेम ।

कभी रहैं यमुनापे कभी गंगाके किनारे फिरते हैं ।
योगी वनके मुन्तजिर यार तुम्हारे फिरते हैं ॥ टेर

क० कभी रहैं मथुरामें कभी वृन्दावनमें विश्राम करैं ।
नन्दगांवमें कभी कभी गोवरधन पै आराम करै ॥
कभी कुञ्जगलियों फिरके गोकुलमें मुक्काम करै ।
सिवा उसीकी यादके और न कोई काम करै ॥

शैर-कभी काशीमें रहैं जाते कभी केदारको ।
प्रयागको जाकर कभी जाते हैं फिर गिरनारको ॥
कभी आबू देखके फिर चलादिये हरिद्वारको ।
हर ठिकाने ढूंढते फिरते उसी दिलदारको ॥
तोड़-तलब गार दीदारके दर दर मारे मारे फिरते हैं ॥ १ ॥
क० मक्केमें जव गये मगरवी मिले वहुतसे हमें फकीर ।
पूछा उनसे कही देखा है तुमने वो माह मुनीर ॥
कसमें खाकर लगे वे कहने हसी सववसे हुवे हकीर ।

उमर गुजर गई यादमें हाथ न आई वह तसवीर ॥

शैर—आसमानी लोग भी कई एक मिले व्हां आनकर ।
उनसे भी पूछा कहीं कि खूबरू आया नजर ॥
वे सभी कहने लगे कुल आसमानोंका जिकर ।
नाम तो हमने सुना पर है निशांकी नहिं खबर ॥
तोड़—इसी फिकरमें महर और माह सितारे फिरते हैं। २

क० मिले दक्षिणी लोग वहुतसे और मिले उतराखण्डी ।
कोई झोलीये लिये कांधे कोई लटकाये झण्डी ॥
कोई विरागी कोई उदासी कोई बनवासी बनखण्डी ।
कोई अचारी ब्रह्मचारी कोई संन्यासी दण्डी ॥

शैर—पूछते सबसे फिरैं दिलदारको देखा कहीं ।
वे तो सब कहने लगे सपने तलक मुतलक नहीं ॥
पता जिस जांपर लगा ज्यौं त्यौंसे कर पहुँचे वहीं ।
पर न देखा है वो दिलवर जिस जगह ढूंढा तहीं ॥
तोड़—सबके सब लाचार कि खिस्ता ख्यार विचारे फिरते हैं॥ ३ ॥

कली—कोई कहै घरवार छोड़कर फिर आये हम चारों धाम ।
अड़सठ तीरथ भी न्हाये हाथ न आया वो गुलफाम ॥
कोई कहै हम ठाठ अमीरी छोड़ दिया ऐसो आराम ।
दुनियांसे भी गये पर तो भी न पाया है इसलाम ॥

शैर—कोई कहता उम्रभरकी है हमारी आरजू ।
मिलैगा किस रोज प्यारा दिलमें है यह जुस्तजू ॥
मैं मैं कहते हैं कई और कई कहते तूंही तू ।
पड़ गये छाले जबांपर पर मिला नहिं माहरू ॥
तोड—इसी सबवसे दिलपर हरदम गमके आरे फिरते हैं ॥ ४ ॥

कली–करते थे अफसोस अंदेसा सबके दिलमें बड़ा मलाल।
दास अमर भी कहै किस रोज मिले यह दीनदयाल॥
इतनेमें आ गये कहीसे इक बुजुर्ग साहबे कमाल।
सफेद दाढ़ी दस्तमें तसवी और सब पाक जमाल॥
शैर–धरदिया सिरपर मेरे पंजा हुए वो मेहरबां।
आगये नजरोमे सातो तह जमी कुल आसमां॥
पवनसे पतला था परदा जिसके आगे लामका।
नूरके चौरङ्गपर बैठा था वह शाहे जहां॥
तोड़–करीम कमतर उस गुलपुरपर तन मन वारे फिरते हैं।
जोगी बनके मुन्तजिर यार तुम्हारे फिरते है॥५॥

लावनी द्रौपदी पुकार।

अब छिटकायां नासरे प्रभू कहो फेर कब आवोगे।
झट प्रगट दरश द्यो नही तो नगन देख पछितावोगे॥
वेद शास्त्र यूं कहे प्रभूको ढूंढ़ो निज दिलके अन्दर।
प्रभु दूर नहीं हैं, बना घट घटमें उनका मन्दर॥
उस मंदर बड़ तिरे विभीषण वैर भाव कर दशकन्धर।
तर गई भीलनी तरे धडे बड़े भालू बन्दर॥
जहां ध्यान अस्त होय चलो नही तो विरदके दाग लगावोगे॥१॥
योगीजन यूं कहैं द्वारिका वसैं निरंजन अविनासी।
वैकुण्ठ निवासी अनामय ब्रह्म अनामय सुखरासी॥
मेरी तो पति जाय नाथ पण संग तुम्हारी भी जासी।
लो भगत आपकी जगतमें अब कीरत कैसे गासी।
उतर जाय पत नाथ आय फिर क्या मुखड़ा दिखलावोगे॥२॥
भीषम द्रोण विदुरसे ज्ञानी अवनीमें दृष्टि लाई। -

सब मौन होगये मिचगये नेत्र नहीं बोली आई ॥
धर्मपुत्र बंधरहे धर्मजंजीरकी देखो दृढ़ताई ॥
भये प्राण भिन्न लो चित्रकी प्रीतिमान पांचो भाई।
अब प्रगटनमें देर करो फिर हाथ मसलते जावोगे॥ ३॥

करुणानिधान भगवान् सुनी जब द्रोपदीकी करुणा वानी।
झट वस्त्र रूप भये दुष्टने मचादई ऐंचातानी॥
दस हजार गजको वल हर लियो भयो सुस्त मन अभिमानी॥
द्रौपदी मगन भई लखे जब पट सरूप अन्तरयामी॥
मीरांके प्रभु गिरधर नागर क्यों नहिं धीर बँधावोगे॥ ४॥

अंक नववां

रेल यात्रियोंके जानने योग्य बातें।

(१) विशेष गर्म वस्तुओंका सेवन न करे।

(२) सब सामान अपनी दृष्टिमें रखे।

(३) ट्रंकें दो चार हो तो उनपर विस्तर बिछावे। कई मनुष्य ट्रंकके दोनों कड़ोंमें चैन रखते हैं जिसे रेलके पाटियोंमें फँसाकर ताला लगा रखते हैं।

(४) रेल या मुसाफिर-खानामें (यदि अपने पास अधिक सामान हो तो) निश्चिन्त होकर न सोवे।

(५) आभूषणादि ट्रंकमें न रखकर अपने अङ्गमें रखना अच्छा है।

(६) आभूषण या नगद कैश नोट वगैरह प्रत्येक मनुष्यके सामने नही खोलना चाहिये, इससे धोखा होता है।

(७) खिड़कीमें झांकनेके समय अपना फेटा अथवा टोपी संभाल कर रखना चाहिये, अच्छा हो यदि एक चश्मा आंखोमें लगा रहे। क्यो कि इंजिनका धूंवा और बारीक कंकर आंखोमे पडनेसे हानि पहुंचती है। रेलके द्वारपर बैठना भी खतरेसे खाली नही है।

(८) छोटे २ बच्चोंकोरेलकी खिड़की और दरवाजोंके पास बैठाना या खडे करना नहीं चाहिये, वड़ा धोखा होता है। हम लोग देश गये उस समय जब जयपुर स्टेशनके पास गाड़ी पहुँची और लाइनोंपर गाड़ीमें हलचल होने लगी (जब गाड़ी सांदेपर एक लाइनसे दूसरे लाइन पर जाती है हिला करती है खड़खड़ाहट होता है) मेरी एक बच्ची १६ महीनेकी खिड़कीके पास खड़ी थी, उसे ऐसा झटका लगा कि तुरत खिड़कीके बाहर झुक गयी, भाग्यसे उसकी माने उसका पञ्जा पकड पाया, और उसे हम लोगोने वापिस खीचा।

मै कलकत्तेसे आ रहा था, टाटा नगर स्टेशनपर एक चार वर्षका बच्चा फाटकके पास खडा था, (गाड़ी खडी थी) एक मुसाफिरने बच्चेका ध्यान न रखते हुए भीतरसे फाटकको बंद कर देनेके विचारसे जोरके साथ ढकेल दिया बच्चेका अंगुठा फाटककी दराजमें दबकर फट गया और उसमंसे रक्त बहने लगा। मैंने अपने ट्रंकसे टिंचर आयडिन निकाला और जखम पर डालकर गीली पट्टी बांध दी, जिससे पीड़ा कम पड़ी और रक्त-प्रवाह बन्द हुआ और बच्चेको नीद आगई।

(९) ट्रेनमें सिवाय रेलवे ठेकेदारोंके और किसीसे भी मिठाई, फ्रुट्स, पान, खमीरा, इत्र आदि वस्तुएं लेकर उपयोग नहीं करना चाहिये क्योकि धूर्त लोग खाने पीनेकी वस्तुओंमें

मादक पदार्थ (नशैली चीजें) मिलाकर बेहोश बना देते हैं और माल असबाब उठा ले जाते हैं।

(१०) थर्डसे इंटरका ड्योढ़ा, सेकन्डका चौगुना और फर्स्ट क्लासका अठगुनाके करीब किराया लगता है। ३ वर्षकी आयुतक टिकिट नही लगता और ११ वर्षकी आयुतक आधा टिकट लगता है। फर्स्ट क्लासके सोये हुए यात्रीको टिकिटकलेक्टर जगा नही सकता। यदि फर्स्ट-क्लास-यात्री स्टेशनपर भोजन करना चाहे तो उसके लिये (गार्डको कह देनेसे) गाड़ी ३ मिनट ठहर सकती है, किसी भी दर्जेका सीट रिजर्व करालेनेसे उसमें अन्य यात्री नहीं बैठ सकता।

(११) प्रत्येक फर्स्ट क्लासके यात्रीको २ऽ, सेकन्ड क्लासके यात्रीको १॥ऽ, इन्टर क्लासके यात्रीको ॥ऽ और थर्डके यात्रीको ॥ऽ५ सेर सामान अपने साथ रखनेका नियम है, इससे अधिक हो तो लगेज करा लेना चाहिये। बिस्तरोंका वजन नहीं लिया जाता है। लगेज किये हुए मालको गार्डके डब्बेमें या अपने साथ रखना यात्रीकी इच्छापर निर्भर है। लगेजकी रसीद ले लेना चाहिये परन्तु इसमें बिजनेस सामान न हो।

(१२) जिस ट्रेनपर लिखा हो "स्त्रियोंके लिये (For Ladies) उसमें ११ वर्षके ऊपर आयुका पुरुष नही बैठ सकता। बनतेतक स्त्रियोंको जनाने डब्बेमें न बैठाकर अपने साथ ही बैठाना अच्छा है।

(१३) यात्री न बैठ सके और गाड़ी खुल जाय तो स्टेशनमास्टरको कहकर टिकिटका पैसा वापिस ले लेना चाहिये। यदि स्थानाभावका कारण होगा तो पूरा पैसा मिलेगा; यदि

अपने मनमें रुके तो उसमेंसे -) पेनाल्टी कट जायगा परन्तु कारवाई २ घण्टाके भीतर हो। यदि ऊंचे क्लासका टिकिट हो और स्थानाभावके कारण नीचे दर्जेमें बैठना पड़े तो गार्डको चेताकर बैठे और आगे जाकर इससे सार्टी फिकेट लेवे तो दरख्वास्त करनेपर पैसा वापिस मिल जाता है। और नीचे दर्जेका टिकिट हो तथा स्थान न मिले तो गार्डको कहकर ऊंचे दर्जेमें बैठ जावे इसका अधिक किराया (excess fare) गार्डकी इच्छापर निर्भर है ले चाहे छोड़े नियम तो लेनेका ही है।

(१४) यदि किसी कारणसे टिकिट न खरीदी जा सके और बिना टिकिट बैठना पड़े तो गार्डको कहकर बैठ जावे। आगे स्टेशनपर गार्डसे रसीद लेकर पैसा दे दे। इसमें महसूलके साथ ही =) पेनाल्टी और लगता है। यदि समयाभावके कारण गार्डको न कह सके और मार्गमें टिकिट कलेक्टर चेक करे तो दुगुना महसूल न दे। पिछले जंकशनसे जहां उतरना हो वहांतकका महसूल और १) जुर्माना देना पड़ता है, आधी टिकिटमें जुर्माना भी आधा ही होगा। यदि मुसाफिर यह साबित कर दे कि मैं फलाने स्टेशनसे बैठा हूं तो जंकशनसे किराया न लेकर जिस स्टेशनसे वह बैठा हो वहांसे ही किराया लगेगा।

यदि टिकिट बीचमें बदलना हो (याने जहांका टिकिट हो वहां उतरकर आगे जाना हो) और छोटा स्टेशन होनेके कारण टिकिट न बदला जा सके तो उसही स्टेशनपर गार्डको कह दो अन्यथा आगे स्टेशनपर इस अधिक यात्राका दूना चार्ज होनेका नियम है।

यदि यात्रीका टिकिट लम्बा हो और किसी कारणसें बीचमें ही उतर जाना पड़े, तो स्टेशन मास्टरको टिकिट देते समय एक सार्टीफिकेट (स्टेशन मास्टरसे) लिखाले और क्लैम करें तो इस कम यात्राका पैसा १० वां हिस्सा कट कर वापिस मिल जाता है।

टिकटोमें पेनालटी भी दर्जोंके अनुसार कम और अधिक है, उपरोक्त नियम करीब २ सबही थर्ड क्लासके हैं।

जो लोग व्याह वगैरहके समयमें साबुत डब्बा रिजर्व कराते हैं उन्हें जितने मनुष्यका डब्बा हो उतना पूरा महसूल लगता है, यह नियम उसी समयके लिये है। जिस गाड़ीसे बरात जाना हो और उसी गाड़ीमें डब्बा अगले जंकशनसे आवे यदि डब्बा पहिले गाड़ीसे मँगाकर रोक लिया जाय तो उसमें हौलेज (Haulage) चार्ज और पड़ता है।

किसी भी यात्रीको अपना टिकिट किसीको देने, बदली करने या बेचनेका अधिकार नही है।

उपरोक्त नियम बी एन रेल्वेके हैं संभव है कि अन्य रेलवाइयोंके नियम कुछ इनसे विपरीत हो।

(१५) वर्त्तमानमें कई कंपनियोंका नियम है कि,शुक्र, शनि अथवा सोमवारके दिन रिटर्न (आनेजानेवाली) टिकिट अथवा एकतरफकी भी टिकिट कम मूल्यमें मिलती है। कई कंपनियोंमें यह नियम ५० मीलसे ऊपर की टिकेटमें है—तथा जो आने जानेवाली टिकिट होगा वह चाहे कितनी ही लम्बी क्यों न हो बीचमें नही उतर सकते, यदि उतरे तो दोनों तरफकी टिकिट जप्त हो जाय। रेल्वे पोलिस (G. R. P.) जो रेल्वेमें रहती है उसे अख्त्यार रहता है कि, किसी प्रकारका शक हो जानेपर मुसाफिरकी

जांच करे व तलाशी लेवे। टिकिट कलेक्टरको पावर है कि हर हालतमें मुसाफिरका टिकिट व सामान जांच सके, रेलवे द्वारा विषैले पदार्थ, शराब अफीम, गांजा, भांग इत्यादि सिवाय ठेकेदारोंके दूसरा कोई भी मनुष्य (मामूली से ज्यादा) नही ले जा सकता और यदि ले जावे तो गवर्नमेंटके कानूनके मुताबिक दण्डका भागी होता है। मुसाफिरखानेमें अथवा रेलवेमें यदि कोई रेलवे—कर्मचारी किसी प्रकारकी घूस मांगे अथवा नाहक तंग करे तो स्टेशनमास्टर या गार्डके पास रिपोर्ट करे, किसी प्रकारका महसूल देना पड़े तो बिना रसीदके कदापि न दे। यदि स्टेशनपर गाड़ीकी टाईममें रहना हो तो -) में प्लाटफार्म टिकिट खरीद लें, डिब्बेमें जितने मुसाफिरोंकी संख्या लिखी हो उससे अधिक बैठानेका कम्पनीको अधिकार नहीं है।

(१६) यदि चलती हुई गाड़ीमे दंगा फसाद हो जावे अथवा कोई कीमती वस्तु गिर पड़े तो अलार्म सिग्नल (Alarm Signal) की जंजीर खींचनेसे गाड़ी रुक जाती है, परन्तु बिना प्रयोजन खीचनेवालेको ५०) दंड होता है।

(१७) प्रत्येक टिकिटमें हर १०० मीलपर मुसाफिर मार्गमें एक दिन ठहर सक्ता है यानै ४०० मीलकी टिकिट हो तो मुसाफिर मार्गमें ४ दिन रुक जानेका अधिकारी हो जाता है (टिकिट नहीं बिगड़ता) परन्तु स्टेशनमास्टरसे टिकिटपर लिखा लेना चाहिये। टिकिट खरीदनेके समय टिकिटका नम्बर, तारीख, मूल्य और दोनो स्टेशनोंका नाम नोटबुक या कागजमें लिखकर अपने पास रख ले यदि असावधानीके

कारण टिकिट गुम जाय तो इस नम्बरसे दुबारा महसूल देना नहीं पडता है। डिब्बेमें बैठनेपर डिब्बेका नम्बर और मारका भी अवश्य ही ले, उतरनेके समय यदि भूलसे ट्रेनमें कोई वस्तु रह जावे अगले स्टेशनमास्टरको वहांके स्टेशनमास्टरसे कह कर तार दिलादो डिब्बेका नम्बर बता दो तो भूले हुए सामानका सहजहीमें पता लग सकता है। इस तारका पैसा यात्रीको लगेगा।

(१८) यदि यात्री निद्रावश या अन्य किसी असावधानीके कारण निश्चित स्टेशनपर न उतरकर आगे चला जाय और स्टेशनकी सरहदके बाहर गये बिना पहली ट्रेनसे वापिस लौट आवे तो उसे इस अधिक यात्राका महसूल या दण्ड कुछ न देकर केवल वापिस आनेका महसूल देना पड़ेगा।

(१९) यदि यात्री अपनी गठड़ी स्टेशनपर रखकर जाना चाहे तो स्टेशनमास्टरको संभलाकर उससे रसीद ले ले। इस गठरीका उसे प्रथम दिनका =) और शेष दिनोंका -) रोजके हिसाबसे देना होगा। यदि धर्मशालामें सामान रखकर कहीं जाना हो तो कमरेमें मजबूत ताला लगाकर चौकीदारसे कहकर जाना चाहिये। कई धर्मशालाओंमें तीसरे दिन पश्चात् किराया देना पड़ता है।

(२०) लगेज पारसलके वजनमें टिकिटका वजन काटकर शेषपर प्रति २५ मीलमें ।=) मन महसूल लगता है, टिकिटका वजन लगेज कराया जाय तबही कटेगा यदि रास्तामें अथवा अगले स्टेशन पर महसूल लगे तो टिकिटका वजन नहीं कटता और पारसल ऽ२॥ सेरका ५०० मीलतक ।-) ऊपर चाहे जहां भेजी जावे १।) तथा ऽ५ सेरका २५० मीलतक ।=) ऊपर

२॥-) और अधिक वजन हो तो प्रति ३५ मीलपर ।⁄) मन लगता है। १० सेरसे नीचेपर १० सेरका, १० सेरसे ऊपर २० सेरतक २० सेरका, २० सेरसे ऊपर ३० सेर तक ३० सेरका और ३० सेरसे ऊपर ४० सेरतक पूरे मनका चार्ज होता है। आजकल पार्सलमे ५५ सेरका भी हिसाब लागू हो गया है।

(२१) पार्सलमे जो माल हो साफ लिखाना चाहिये, किसी प्रकारका परदा या वजनमे चोरी नहीं करना। कई मनुष्य महसूलके भयसे औरका और लिखा देते हैं इसमें बड़ी नुकसानी उठानी पड़ती है। यदि कीमती माल हो तो बीमा बेचना चाहिये। १४ सेरसे अधिक वजनका पार्सल माल गाड़ी (by goods train) में भेजना चाहिये जिससे महसूलमें बहुत बचत होती है।

(२२) यदि पारसलकी रसीद खो जाय तो तीन दिनके भीतर ही पारसलको स्टॉप भरकर (Indemnity bond) जो कि स्टेशनमें ही ॥) ॥।) या १ में मिलती है छुड़ा लेना चाहिये। नहीं तो फी मन =) दैनिकके हिसाबसे डमरीच (demarage) होता है। यदि पारसल भेजनेवालेने पारसलको सेल्फ (याने पानेवाला भी अपना ही नाम) चलान किया है और रसीद खो जाय तो ऐसी हालतमें या तो भेजनेवालेसे स्टाम्प भराकर मँगावे या बुकिङ्ग स्टेशनसे डिलेवरी स्टेशनमास्टरको तार दिलाया जावे जब डिलेवरी मिलती है। कारटेजका माल (जैसे खड़ी सायकिल, लगे हुये भाड़, कागजकी फूलवाडी इ०) जो वजनमें वाजिबसे कम हो और स्थान अधिक

रोके ऐसे पार्सलका महसूल वजनपर नहीं लगता नापपर लगता है।

(२३) स्टेशनोमें प्रायः ८ वजे प्रातःसे ५ वजे सायम् तक बुकिङ्ग और डिलेवरीका काम होता है। इतवार अथवा बड़े दिनको काम बन्द रहता है। बुकिङ्गमास्टर आदिको कोई फीस या इनाम देनेकी कोई आवश्यकता नही है। यदि छुट्टीके दिन भी रेलवे कर्मचारी काम करें तो उन्हें कोई आपत्ति नही।

(२४) यदि पार्सल रेलवे कर्मचारियोंकी असावधानी (अथवा पेकिङ्ग ठीक न होने) के कारण मार्गमें टूट जावे तो स्टेशनमास्टरसे कहकर रेल्वे इन्स्पेक्टरको बुलवावे और अपने वीजकसे मिलाकर ओपन डिलेवरी (खुला माल) ले। यदि कोई माल कम हो तो रसीद ले ले। यदि पार्सलमेंसे कुछ माल निकल जानेका शक हो (परन्तु पार्सलकी हालत ठीक हो तो) पार्सलकी डिलेवरी रसीदके वजन अनुसार तौलकर लेना चाहिये। वज़न कम हो तो जितना कम हो डिलेवरी रजिष्टरमें अपने दस्तखतके नीचे उतना वजन कम पाना लिख दे। इन दोनो प्रकारकी नुकसानी लेनेके लिए अथवा कोई अधिक चार्ज हो जाय, टिकिट वैरङ्ग हो जाय या रेलवे कर्मचारी कोई गैरवाजिव पैसा ले ले इन सबकी रिपोर्ट उस ही रेलवे (जिसमें काम हो) के सुप्रिण्टेण्डेण्टके पास करनेसे वाजिव पैसा वापिस मिल जाता है, परन्तु हो पूरी साबूती रसीद वगैरहके साथ। और म्याद (एक माह) के भीतर।

प्रमाण।

मैंने चांपा स्टेशनसे तिलदा आनेके लिये मेल (डांक) गाड़ीका

टिकिट खरीदा। गाड़ी तिलदा स्टेशन २॥ बजे रातको पहुंचती थी। निद्रावश मुझे तिलदा स्टेशनका पता न लगा और मैं रायपुर चला गया, वहां टिकिटकलेक्टरने बहुत कहने सुननेपर भी तिल्दासे रायपुर तकका महसूल ।-) और ॥-) दंड दूना महसूल १=) चार्ज कर ही लिया। प्रातःकी गाड़ीसे मैं तिलदा लौट आया। उस रसीदको एक पत्रके साथ सुपरिंटेंडट आफिस आफ बी० एन० रेलवे-कलकत्ता (क्योंकि रायपुर स्टेशन-बी० एन्० रे० है) भेज दिया ८ दिन वाद १=) मनीआर्डर द्वारा वापिस आगया

अंक दशवां

देशी डांक (पोस्ट) के साधारण नियम।

पोस्टका समय।

बड़े शहरोंमें पोस्ट-आफिस ६ वजे प्रातःसे ८ वजे रात्रितक खुले रहते हैं। और १-२ पोस्ट ऐसे भी रहते हैं जो प्रायः चौवीसों घंटा चालू रहते है। छोटे गांवोंमें पोस्ट-आफिस १० बजे खुलने और ५ वजे बंद हो जानेका नियम रहता है, प्रति रविवार तथा त्यौहारोंके दिन पोस्टमें भी अन्य डेपार्टमेंटोंकी भांति छुट्टियां रहा करती है। छुट्टीके टाईममें यदि काम कराना हो तो लेट फी देनेपर हो सक्ता है।

आर्डिनरी (मामुली) तार.

मामूली तारकी फीस ॥।-) है, यदि ८ शब्दसे अधिक होंगे तो और फी शब्द -) के हिसावसे लगेगा। आखरीसे आखरी एक शब्द १५ अक्षरका माना जाता है इससे अधिक अंचर हों तो वह दो शब्द गिने जाते हैं और अंकोंकी संख्या एक शब्दमे ५ अंक लिये जाते हैं।

जरूरी (अरजेंट) तार.

इसका चार्ज मामूली तारसे ठीक दूना होता है, शब्दोकी गिनतीमें भेजे जानेवाले पोस्टका नाम नही गिना जाता है, जिन दूकानदारोका पता लम्बा चौड़ा होता है वे लोग २०) वार्षिकके हिसाबसे चार्ज भरकर अपना केवल खास शब्द रजिष्टर करा लेते हैं, जिससे उनको तार देनेमें या मंगानेमें पूरा पता न लिखकर केवल एक रजिष्टर शब्दका नाम ही लिख देना पर्याप्त होता है। वह शब्द जो रजिष्टर कराना हो १२ अक्षरतकका हो सक्ता है। ऊपर अक्षर होनेसे दूना महसूल होगा। गांवका नाम तो लिखना ही होगा।

लेट-फी।

लेट-फी-जब पोस्टका टाईम बीत चुका हो (अथवा रविवार या दूसरा कोई छुट्टीका दिन हो) ऐसी हालतमें बाबू स्वतंत्र रहता है, उस समय पोस्ट-मास्टरको लेट-फी भरनेसे काम कर देनेका हुक्म है। तारकी लेट-फी १) है (यदि जहां तार देना हो वहांका आफिस भी छोटा होगा तो दोनो ओर की लेट-फी २) देना पड़ेगा और तारका चार्ज भी दूना लगेगा)। अरजेंट तार कही रोका नही जाता है। लाइन साफ होते ही पहले वह तार दिया जाता है।

जवाबी तार।

तारका जवाब मँगाना हो तो तार महसूलके साथ ।।।-) और भरा जाता है (आपसी जावाबके वास्ते) इस ।।।-) की रसीद तारवालेको तारके साथ मिलती है। इस रसीदके द्वारा वह वहांही (जहांसे तार आया हो) नही वल्कि अपनी इच्छानुसार कही भी तार दे सक्ता है। यदि कही भी तार न दिया जाय तो इस रसीदका ।।।-) पैसा चीफ सुप्रिंटेंडंट आफ इंडिया टेलीग्राफ चेक आफिस कलकत्ताके पास क्लेम्स (Claims) करनेसे वापिस मिल सक्ता है।

देहाती तार।

जहां तार देना हो वह गाव यदि तार आफिससे अलग हो तो=) प्रति मीलके हिसावसे पीयुन (Peon) का चार्ज भरना पड़ता है। ऐसा न करनेसे जिस दिन विलीज (Village) पोस्टमैन उस गांवकी चिठ्ठियां पहुंचाने जावेगा उसी दिन तार भी लेजावेगा, इसमें बहुत विलंब हो जाता है।

रेलवे तार।

रेलवे द्वारा भी जहां इच्छा हो तार दिया जा सक्ता है परन्तु यह तार वहुत देरसे पहुंचता है, जब रेल्वे कामसे लाइन साफ होती है तब दिया जाता है और जब रेल्वे सरवेंट खाली रहतेहैं, तब पहुंचाने जाते है इस देरके लिये रेलवे कंपनी जवाबदार नही है।

पोस्ट कार्ड।

पोस्ट-कार्डपर एक तरफ पूरा और एक तरफ आधा भाग लिखनेके लिये रहता है। शेष आधे भागपर पता लिखना पड़ता है।

यदि किसी कार्यवश पोस्टमें कार्डका अभाव हो तो मोटे कागजका कार्ड बनाकर उसपर)॥ का टिकिट लगाकर डाल देना चाहिये। बैरंग कार्ड फाड़कर फेंक दिये जाते हैं। यदि जवाब भी मँगाना हो तो डबल कार्ड (Reply Card) भेजना चाहिये। इसका -) आ० खार्ज होगा। पता वगैरह बिलकुल साफ लिखना चाहिये। टिकिट के समीप ही पता लिखनेसे वह पोस्टकी मोहर लगनेके समय कट जाता है, जिससे बराबर समझमें नही आनेके कारण पत्र वापिस आ जाताहै। जवाबी कार्डमें ऊपरवालेमें पानेवालाका नाम, पता और समाचार तथा नीचेवालेमें केवल पतेके स्थानमें अपना पता लिखना चाहिये।

कार्डपर पता लिखनेका नमूना।

)॥ का.
पोस्ट टिकिट
लगाओ.

यह स्थान समाचार
लिखनेके लिये है।

लाला श्यामलाल शंकरलाल वर्मा
मुकाम पोस्ट साम्हर लेक
(जि० [illegible] जयपुर)
SAMBHAR.

❋ मुकलावा-बहार ❋

चिट्ठी।

चिट्ठी १॥ आनेके लिफाफेमें भरकर भेजी जाती है। इसमें आधा तोला वजनपर -)॥ का टिकिट लगता है, आधा तोलासे अधिक होनेपर हर १॥ तोलाके अंशपर -)। का टिकिट लगाना पड़ता है। विना टिकिटके चिट्ठी वेरंग भेजनेपर उसका लेनेवालेको दूना महसूल भरना पड़ता है। यदि वह लेनेसे इनकार करे तो वह भेजनेवालेके पास वापिस आती है और पैसा भेजनेवालेको देनापड़ता है। लिफाफे पर भेजनेवालेका नाम भी लिखना ही चाहिये। अगर लिफाफेपर कम टिकिट लगाया जायगा तो कमके लिये वेरंग होगा।

यहां टिकिट लगावो.

लाला नागरमल जगदीशप्रसाद—
डि.—शर्मा चटर्जी एण्ड कंपनी—
वेलिंगटन स्ट्रीट नंबर ३
कलकत्ता.
3 Wellington Str. CALCUTTA.

भेजा—
अरजुनलाल
अग्रवाल
नेवरा

बुकपोस्ट ।

जिस पैकिट (बेग) का दोनों सिरा खुला हो अथवा खुली चिट्ठी हो उसे बुकपोस्ट कहते हैं, इसमें छपे हुए कागज, क्यालेंडर, केटलाग, पुस्तकें, विज्ञापन, नकशे आदि जा सक्ते हैं, परन्तु चैक, हुंडी, पोस्ट-टिकिट, हाथकी लिखी चिट्ठियें इत्यादि वस्तुएँ नहीं जा सकती, बुकपोस्टमें प्रथम २॥ तोलाके भागपर) ॥ का टिकिट और बादमें हर २॥ तोलाके अंशपर) । का टिकिट लगाना चाहिये । यदि किसी मालका नमूना भेजना हो तो एक कपड़ेकी थैली सिला उसमें भरकर मुंह बांध दे, यह पैकिट भी बुकपोस्ट हो सकता है । उसी महसूलपर जाता है परन्तु इसमें हाथकी लिखी चिट्ठी नहीं होना चाहिये ।

पार्सल ।

इसमें सब वस्तुएँ जा सकती हैं परन्तु पेकिङ्ग अच्छा हो।वस्तुके टूट जाने का भय न हो । भीतरकी वस्तुएँ ज्यादा हिलती न हों यदि कपड़ेमें पार्सल बनाया जाय तो सिलाई बारीक और मजबूत धागे-(धागा एक ही रंगका हो)-से की जाय । बैरंग पार्सल नही जाता, पहिले ही टिकट लगाना पड़ता है । महसूल २० तोले के पार्सल का ~) इससे ऊपर ऽ१० तक हर आधसेर पर ।) के हिसाबसे महसूल लगता है । एक पार्सलमें १० सेरसे अधिक वजन नहीं जाता है । वह रेलसे भेजना चाहिये । जिस पार्सलके खो जानेसे अपना नुकसान हो उसे =) अधिक चार्ज देकर रजिस्ट्री करा देना चाहिये । पोस्टसे रजिस्ट्री पार्सलकी रसीद मिलेगी । यदि पानेवालेके दस्तखतकी जरूरत जान पड़े तो ~) और देकर ऐंकनालेजमेंट फारम भी भर देना चाहिये ।

रजिष्ट्री (Registration)

लिफाफेमें कागजात जो कामके हों भरकर चिट्ठीको रजिष्ट्री करा देना चाहिये। यदि मामूली रजिस्ट्री हो तो उसकी रसीद पानेवालेका हस्ताक्षर कराकर पोस्टमें ही रख ली जाती है, इसका महसूल ।) लगता है और यदि उसके हस्ताक्षर (पानेवालेका) भेजनेवालेको भी मंगाना हो तो -) और अधिक भरकर एकनालेजमेंट (Acknowledgement) फारम साथमें देना चाहिये। इसपर पानेवालाका हस्ताक्षर होकर भेजनेवालेके पास वापिस आता है। यदि चिट्ठी १ तोलेसे अधिक होगी तो -) का टिकिट और लगाना होगा।

बीमा (Insurance)

जिस लिफाफेमें नोट या जिस पार्सलमें सोने चांदीके आभूषण हों उसे अच्छी तरह बन्द करके ऊपरसे लाख लगाकर सील कर देना चाहिये और उसका बीमा कराना चाहिये, यदि नोट भेजे जांय तो चिट्ठीके मुताबिक चार्ज और यदि पार्सल भेजा तो पार्सलके मुताबिक चार्ज लगनेके बाद रजिस्ट्रीका तथा नीचे मुताबिक बीमा खर्च लगता है, १००) का ।) २००) का ।-)॥ ३००) का ॥) १०००) तक =) सैकड़ा, बाद २०००) तक -) सैकड़ा है। जितने का माल हो उतने हीका बीमा बेचना अच्छा होता है। कम या अधिकका बेचनेके कारण लोगोंको कई बार नुकसान उठाना पड़ता है। बीमा यदि खो जाय तो उसकी रकम डिपार्टमेण्ट भर देता है। नोट भेजे जानेवाला पक्का लिफाफा (कपड़ेका बना हुआ) पोस्ट आफिसमें मिलता है जिसका दाम ।)॥ है इसमें सिर्फ बीमा चार्ज और लगता है। बीमाके साथमें ऐकनॉलेजमेंट फार्म बिना महसूलके जाता है।

वी. पी. पार्सल या चिट्ठी.

जिस पार्सलकी (अथवा रेलद्वारा भेजे हुए मालकी रेलवे रसीद की) वी. पी. करना हो तो उसकी निश्चित रकम जो है वह वी. पी. फारममें भरकर पार्सल (या बिल्टीके लिफाफे) सहित पोस्टमें दी जाती है और रसीद ले ली जाती है। उस वी. पी को (जितने रुपयेकी हो) रुपये लेकर पोस्टकर्मचारी पानेवालेको दे देते हैं। ये रुपये भेजनेवालेके पास आ जाते हैं। वी. पी १०००) तककी जा सकती है परन्तु वी पी फारम ६००) से ज्यादा न होगा ६००) से ज्यादा रकम हो तो २ फारम लिखना पड़ेगा। वी. पी पहुँचने पर यदि रकम तैयार न हो तो वी पी पोस्टमें ७ दिन डिपाजिट रखी जा सकती है। वी. पी आनेपर पोस्टमैन (पानेवालेको) इन्टीमेशन (सूचना) फार्म देकर वी. पी डिपाजिट कर लेता है। यदि ७ दिनके भीतर पानेवाला न छुड़ा ले तो विना सूचित किये ही वापिस कर दी जाती है। वी पी की निश्चित रकमके अतिरिक्त १) सैकड़ा पानेवालेको अधिक लगता है, यह वापिसी मनीआर्डरकी फीस है। यदि वी. पी. ८ दिनसे अधिक रुकवाना हो तो =) का टिकिट लगाकर पोस्ट मास्टरके पास दरख्वास्त कर देना चाहिये। जिससे वी. पी रुक जायगी, परन्तु जबतक छुड़ाई न जावेगी =) प्रतिदिनके हिसाबसे डेमरीच लगेगा और उसकी भी मियाद ७ दिनकी मिलेगी याने ७ दिन की और ७ दिन =) रोजसे. ज्यादा नही।

मनीआर्डर।

मनीआर्डर फीस १०) तक =) पीछे प्रति १० रुपयोंके भागको =) ऐसे हिसाबसे १००) को ११) लगता है। जरूरी मनीआर्डरको तारद्वारा भेजना चाहिये जो उस

ही दिन पहुंच जाता है। इसमें मनीआर्डर फीसके अतिरिक्त ।।।-) तारका अधिक लगेगा। म० आ० ६००) से अधिक एक फारममें नही होगा।

नोट-पोस्टमैन या विलीज पोस्टमैनको मनीआर्डर, बीमा, रजिस्ट्री तार, पार्सल आदि वस्तुएं तकसीम करनेके समय कोई इनाम बकशीस देनेका कायदा नहीं है। तार, मनीआर्डर, वी. पी रजिस्ट्री, ऐकनॉलेजमेंट फारम आदि प्राय: सब ही (जैसा देश हो) अंग्रेजी, हिन्दी, मराठी. गुजराती, बंगला, तैलंग आदि भाषाके पोस्टमें मुफ्त मिलते हैं और ये सब भेजनेवालेको ही लिखने पड़ते है। हां जहां ऐसा मनुष्य न हो जो लिख सके तो पोस्टमास्तरको लिख देनेका हुक्म है (परन्तु पोस्टमास्तरके फुरसतका समय हो) यदि पोस्टके कर्मचारियोंकी किसी प्रकारकी रिपोर्ट हो तो जनरल पोस्ट-मास्तर, पोस्टइन्सपेक्टर या सुप्रिएटेंडेण्टके पास भेजना चाहिये। परन्तु रजिष्ट्री भेजना अच्छा है। गजट आदि)।. के टिकिट पर ही (जिन्होंने रजिष्ट्री करा लिया है) भेजे जाते है। विदेश (जर्मनी, फ्रांस, जापान, लंडन, अमेरिका आदि) के लिये पोस्टखर्च, चिट्ठी, पार्सल, मनीआर्डर आदि सबहीका अधिक लगता है जो पोस्टगाईडमें इण्डियाभरके (छोटे बड़े सब) पोस्टोंका नाम, पोस्टके नियम आदि रहते हैं। यदि किसी कागजातपर पता गलत लिखा हो अथवा और कोई कारणवश तकसीम न हो सके तो वे वापिस होकर बिना किसी फीसके भेजनेवालेको तकसीम होंगे।

सेविंग बैंक।

इसके द्वारा पैसा सुभीतेसे इकट्ठा होता है, इसका काम पोस्ट डे० मे० के जिम्मे है इसमें कमसे कम ।) चार आना तक जमा हो सकता है। इसकी किताब भी मिलती है उसे सावधानीसे रखना पड़ता है। रुपया जमा कराने अथवा निकालनेके समय उसमें लिखा लेना पड़ता है। ब्याज २००) तक सालाना १॥) बाद २) रु० मिलता है उपरोक्त पुस्तक गुम जानेपर १) पेनाल्टी लगता है, जिस जिलेके पोस्टमें काम खोला जाय उस जिलेके किसी भी पो० आफिसमें (उसी किताबके द्वारा) रुपये जमा कराये जा सकते हैं परन्तु रुपये खास पोस्टसे ही उठाये जा सकते हैं (दूसरेसे नहीं) और वे भी हफ्तामें केवल १ ही बार (कमसे कम।) अधिकसे अधिक जितने जमा हों) यदि किसी दूसरे पो० आ० में जाकर रुपया उठाना पड़े तो अपने हिसाबका ट्रान्सफर कराना पड़ता है। ब्याज हिसाब इरस ल मार्च में होकर वह रुपया असलमें शुमार हो जाता है।

अंक ग्यारहवां

—XOX—

पक्षी मनोरञ्जन।

हंस-यह पक्षी देवीका वाहन है। पहिले भारतवर्षमें राजा महाराजा इसपर सवार हो देशाटन किया करते थे। इसमें यह विशेष गुण है कि दूध और जल मिलाकर देनेसे दूध पी लेता और जलको छोड देता है। सिवाय मोतीके दूसरी वस्तु नहीं खाता है वर्तमानमें ये मानससरोवरकी ओर पाये जाते हैं। 'हंसा तो मोती चुगे या लंघन करजाय'

शुतरमुर्ग-यह भी एक प्रकारका ऊंचा पक्षी है, अरबकी तरफ या अन्य रेतीले स्थानमे इससे सवारीका काम लिया जाता है। यह उडता नहीं है। भूमिपर बडी तेजीसेचलता है। इसमें भूख प्यास सहनेकी प्रबल शक्ति है और दो मन तक बोझ ले जा सकता है।

सारस-यह पक्षी जङ्गलोंमें जलाशयोंके किनारे पाये जाते हैं। इनके पैर अनुमान ३-३॥ फीट लम्बे होते हैं। इनमें एक विशेष शक्ति है कि बिना जोड़ाके नहीं जी सकता, नरके मर जानेपर मादी और मादीके मर जानेपर नर अपने प्राण त्याग देता है।

बगुला-यह एक प्रकारका पक्षी है जो जलमें रहकर मछलीका आहार करता है. मौनता साधकर अपना कार्य बनानेका

इसमें विशेष गुण है। उसके सिरमें एक प्रकार पंख जमता है जो २०) ४०) रुपये तोला विकता है। यूरोपियन मनुष्य प्रायः अपनी टोपियों और वस्त्रोंमें लगाते हैं।

मोर-(मयूर) यह पक्षी, रेतीके स्थान (मारवाड़ और ब्रज) की ओर पाया जाता है। यह लाल मिर्च खानेका अधिक प्रेमी है। इसको नरेंद्रिय नही होनेके कारण यह विषय नही करता है। जिस समय घटा चढ़ती है और कामोन्मत्त होकर अपनी पूंछको छत्राकार बनाकर नाचता है उस समय इसका वीर्य अश्रुरूपसे पात होता है जिसे मादी उठाकर खाती है, जिससे इन्हें गर्भ रहकर अण्डज उत्पन्न होते हैं। इसके पंख कृष्ण भगवानके शृङ्गारकी एक वस्तु है और यह सरस्वतीका वाहन है। इसका स्वर सब पक्षियोंसे तेज है।

चमगीदड़-यद्यपि यह भी पक्षी है तथापि इसका चरित्र सब पक्षियोंसे विलक्षण है। यह दिनको अन्धी रहती है और वृक्षोंपर उलटी लटकती है इसे रात्रिको दीखता है जब ही यह अपना खाना दाना ढूंढती है, सब पक्षी अपने बच्चोंको दाने खिलाते है परन्तु यह अपने स्तन (दूध) पिलाती है।

चील-इसकी दृष्टि बड़ी तीव्र होती है। इसे ऐसी बूंटी याद है जिससे जन्मान्ध मनुष्यकी आंखें खुल सकती हैं, उस जड़ीको यह अपने बच्चोंकी आंख खुलनेके समयमें लाया करती है इसके और गिद्धके चरित्रोंमें थोड़ा ही भेद है।

उल्लू-यह बड़ा भयंकर पक्षी है, इसे रात्रिको दीखता है। तब ही यह ग्रामोमें आता है और दिनको जङ्गलों

और झाड़ियोंमें छिपकर रहता है, कई प्रकारके शब्द करता है। इसे कंकर मारना और इसके सामने किसीको नाम लेकर पुकारना बड़ा भयंकर है। इसमें मनुष्यको मार डालने की शक्ति है, इसकी बोली हड्डी, त्वचा, केश, नख, रक्त, मांसद्वारा बड़े लोक मारण, मोहन, उच्चाटन आदि कई क्रियामें सिद्ध करते हैं।

कौआ-इसकी दोनों आंखोंमें एक ही पुतली होती है। उसे दोनों आंखोंमें घुमाघुमाकर काम लेता है। एक आंख त्रेतायुगमें रामचन्द्रजीने नष्ट कर दी थी, इसमें गुप्त विषयका बड़ा अच्छा गुण है। इसका विषय कोई देख नहीं सकता। यह सदा सावधान रहता है।

खञ्जन-यह एक प्रकारका सुहावना छोटे कदका पक्षीहै। इसका रङ्ग सफेद होता है। इसके सिरमें चौमासेमें एक मौर उगता है जिससे यह अदृश्य हो जाता है। जब पानी बिलकुल बरस चुकता है तब यह झड़ जाता है जिससे यह प्रगट हो जाता है। उस समय लोग सगुन देख लेते हैं कि अब पानी न बरसेगा। सुना जाता है यदि मनुष्य भी किसी प्रकार इस मौरको (जो चौमासेमें उगता है) प्राप्त कर ले और स्वर्ण या चांदीके तावीजमें मढ़ाकर अपने सिर में रखे तो अदृश्य रहे। यह पक्षी पथिकोंको शकुन देनेमें भी बड़ा शुभ है।

कबूतर-ये पक्षी प्रायः ग्रामोंमें (जङ्गलोंमें बहुत कम) ही पाये जाते हैं। सहस्रोंकी संख्यामें गोल बांधकर रहते हैं। जितने पक्षी हैं प्रायः सब ही मांस कीड़े भक्षण करते हैं परन्तु यह कीड़ों अथवा मांसके समीप भी नहीं जाता, यही इसमें

विशेष गुण है। अन्नके दाने न मिलने पर ये कंकड़ खाकर अपना निर्वाह करते हैं इसीलिये धनाढ्य लोगोंने इन्हें दाने डालनेका उचित २ स्थानोंमें प्रबन्ध कर रखा है। इसकी विष्ठाकी पट्टी चढ़ानेसे कैसा भी फोडा क्यों न हो फौरन पककर फूट जाता है और जो स्त्री युवावस्था आ जाने पर भी ऋतुमती नहीं होती उसे ३ मासा विष्ठा मधुके साथ चटानेसे ऋतुमती होने लगती हैं। अनाजके दानोंमें जिसमें कीड़ा हो यह छोड़ देता है, बिना कीड़ावालेको खाता है।

तोता– यह एक घरेलू पक्षी है। परिश्रम करनेपर उसे जैसा बोलना सिखाओ सीख सकता है। ये कई रंगके होते हैं जैसे-सफेद, पीला, लाल, हरा, नौरंग, सातरंग आदि। कद इनका मामूलीसे लेकर चीलके बराबरतक हो सकता है। कोई कोई तोतेकी पूंछ २–२॥ फीटतक लंबी होती है, जंगली तोते प्रायः हरे ही रंगके पाये जाते हैं। तोतेको पढ़ा लिखा लेनेसे गृहकी रखवालीके लिये एक मनुष्यका काम देता है।

बुलबुल–यह पक्षी छोटे कद और स्याह रंगका होता है परन्तु इसकी गुदा सुर्ख होती है और यह बड़ी तेज चलती या उड़ती है।

मुर्ग–यह पक्षी प्रायः पालतू ही पाया जाता है इसमें प्रातः उठनेके कारण विषयशक्ति बहुत ही बढ़ी रहती है। मुर्गीको वर्षमें १० माहतक १ अंडा नित्य ही प्रसव होता है (केवल २ माह इसका प्रसव बन्द रहता है) इसके (मुर्गके) सिरमें मौर रहता है। इसमें यदि मीठा तेल लगा दिया जाय तो वह बांग नहीं दे सकता याने बोल नहीं सकता है। यह लड़नेमें बड़ा अपील होता है–पीछे नहीं हटता।

चकवा—यह पक्षी प्रायः तालावोंमें पाये जाते हैं। इनको किसी पतिव्रताका शाप होनेके कारण दिनमें नर-मादीका मेल नही रहता याने एक स्थानमें नहीं रह सकते। रात्रिको एकस्थानमें रहते है। प्राचीन मनुष्योंके शाप मिथ्या नहीं होते थे और वर्तमानमें भी दुःखित हृदयके शाप मिथ्या नही होते।

सीप-यह पक्षी प्रायः समुद्रों, नदियों और नालोमें पाया जाता है। इसके केवल दो हड्डियां रहती है जिनका आकार पंखस-रीखा होता है और इसके हाथ पैर कुछ नही होते। यह अपने दोनों पैरोको फैलाये हुए समुद्रके किनारे पड़ा रहता है और जब स्वाती नक्षत्रमें दो चार बूंदें इसके ऊपर टप-कती है तब यह दोनों पंख एकमें मिलाकर समुद्रमें घुस जाता है वे ही बूंदें भीतर ही भीतर पक्के मोती हो जाते हैं। नदी और नालोंके सीपमें मोती नही होते है, केवल बटनके काम आती है।

अजेरू सर्प-सर्प भी एक बड़ा भयंकर जंतु है, शेरको यदि मनुष्य देख ले तो भागकर, वृक्षपर चढ़कर, जलमें घुसकर, अग्नि जलाकर, हथियार चलाकर अपनी रक्षा कर सकता है, परन्तु यह ऐसा जानवर है कि अनजानमें ही पैरोंसे लपटकर काट लेता है। सूनी इमारत, तालाब, खेतोंकी पाल पुराने पोने, दरख्त, कूड़ाकर्कट तथा पत्थरोंकी ढेरियोंमें प्रायः सब ही स्थानोंमें यह पाये जाते हैं। इसकी जाति कई प्रकारकी है, जो काले रंगके होते है वे बहुत ही विषैले होते हैं, इसका आकार एक बालिस्तसे ८-९ हाथतक साधारण होता है और जंगल और पहाड़ोंमें स्वतंत्र विचरनेवाला सर्प जिसे

अजगर कहते हैं अनुमान ५०-५० हाथतकका होता है, एक बार कलकत्तेमें गंगाघाटपर एक अजगर मारा गया था, जिसका वजन ३० मण था। वैद्यक ग्रन्थमें सर्पके १६० पैर होना कहते हैं, प्रत्यक्षमें इसके एक भी पैर नहीं दिखाई देता। इसका शब्द चूहेका सा अथवा कुटकुटता हुआ होता है और इसकी फुंकार बड़ी तेज होती है। बाजे २ सर्पकी फुंकारका शब्द २, ३ फर्लांग तक सुनाई पड़ता है कोई २ सर्पकी फुंकार लगनेसे ही मनुष्य मर जाता है। सर्प जब काटता है तो अपने दांत जमाकर एकवार घूमता है जिससे उसके तालुमें जो विषभरी थैली रहती है उसमें दांतकी ठोकर लगकर वह फूट जाती है और जखममें विष उतरकर मनुष्यके अंग २ में बिजुलीकी नाई दौड़ जाता है जिससे मनुष्य बेहोश होजाता है, मुंहमें फेन आजाता है, अंग काला पड़ जाता है, यदि सर्पके दांत जमांतेही (वह घूमने न पाये) झटका देकर हटा दिया जावे तो जहर नहीं चढ़ता, इसमें श्रवणशक्ति नहीं है इसी कारण यह पैरके आहट से भागता नहीं, यदि अभाग्यवश ऐसा दुष्ट समय आ जाय तो सर्प काटते ही उसे एक वालिस्त ऊपर एक अच्छा मजबूत बंद लगावे, पुनः चार अंगुलपर १ बन्द लगावे और जहांपर सर्पने काटा है वहांपर मुंह लगाकर चूस २ कर थूकता जावे, इस प्रकार यदि तत्क्षण किया जावे वो जहरका दौरा बहुत कम होता है। परंतु जिनके मसूड़े जख्मी हैं उन्हें नहीं चूसना चाहिये। पुनः वैकस्यिकामें

चक्कूसे जख्म बनाकर उसमें पोटाश परमेगनैट भर दे। कई सर्प ऐसे हैं जिनके काटनेसे मनुष्य कुछ देर पश्चात् मूर्छित होता है और कई सर्प ऐसे हैं इस ओर डंक लगा और मनुष्य मूर्छित हुआ, ठंडके समय-वर्षा कालमें तथा धूपकालके समय, प्रातःकालमें, उजाली रात्रिमें, घासके स्थानमें, विना जूता और विना मोजाके घूमनेसे बड़ा धोखा होता है इसके लिये झाड फूंक और जड़ी बूटियां वि ष गुणकारी है। कहां तक सच है, यह तो नही मालूम परन्तु सुना जाता है कि सर्पके काटेहुए मनुष्यके प्राण ब्रह्मायड (कपाल) में चढ जाते हैं, प्रयत्न करनेपर वह ६ माहतक भी जीवित हो सकता है। सर्पकी आयु १००० वर्षकी सुनी जाती है। वृद्धकालमें इसके पंख जम जाते हैं जिससे यह उड कर मलयागिर चन्दनके वृक्षमें जा लपटता है। इसके काटनेके पश्चात् द्वार नहीं लांघना चाहिये, ऊपर कहे अनुसार बन्ध तो लगाना ही चाहिये परन्तु सर्पके काटते ही सिरपर एक छोटा पत्थर भी बांध लेना उत्तम है, यदि अंगुली अथवा किसी ऐसे स्थानमें सर्प काटे जो काट डालने योग्य हो तो चाकू-वगैरहसे उसी समय काट देना चाहिये। सर्पके डंसपर मुर्गीका छोटा बच्चा लाकर उसको गुदाकी ओरसे चिपकावो चिपक जायगा, जब वह गिर जाय दूसरा चिपकावो इस प्रकार ५-७ बच्चे चिपकानेसे जहर उतर जाता है यदि सर्प जहरसे गला और दांत जम जाय तो केंडुवेको निचोडकर सक्कर मिला इसके नाकसे चढ़ाना चाहिये।
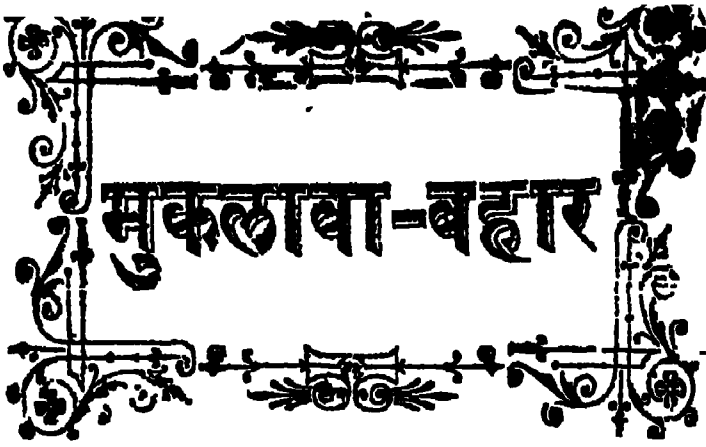
श्रीहरिः ।

मुकलावा-बहार

अर्थात्

ससुराल रहस्य

नववां भाग

वाक्चातुरी

वन्दना

कुण्डलिया–कालीरूप करालका, उर मुण्डनकी माल ।
मेघवर्ण नग्नांगि पड्, दश शिर बाहु विशाल ॥
दश दिश बाहु विशाल चन्द्र अवतंस त्रिलोचन ।
खुल केश मनमुक्ति सदा वरदा भयमोचन ॥
कह ईश्वरीप्रसाद, मातु जग दीनदयाली ।
ज्ञान भक्ति वर देव, अटल देवी जै काली ॥

❋ मुकलावा-बहार ❋

त्रो! शब्दबोध और कहावतें भी प्रत्येक मनुष्यको कुछ न कुछ जानना ही चाहिये, इनके जाने विना मनुष्यको वाक्चातुरी नहीं आ सकती। दूसरी बात यह है कि इस पुस्तकमें प्रसङ्गानुसार प्रायः सब ही विषय आ चुके हैं तो ये ही दो विषय क्यों शेष रहैं, अतः इस भागमें कुछ उस विषय तथा कुछ गृहस्थों-पयोगी औषधियोंके नुसखोंका संग्रह करता हूँ—

दो शब्दोंका बोध।

दो यात्री-सूर्य, चन्द्रमा
दो प्रवल- दाना, पानी.
दो गरीव-बेटी, गौ
दो लोक-स्वर्ग, नर्क
दो करनी-भलाई, बुराई

तीन शब्दोंका बोध।

तीन पुरुष-उत्तम, मध्यम, अधम
तीन नायिका-मुग्धा, मध्या, प्रौढ़ा.
तीन लिङ्ग-पुँल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग; नपुंसकलिङ्ग
तीन अवस्था-बाल, युवा, वृद्ध
तीन त्रिपुटी-ज्ञान, ज्ञाता, ज्ञेय
तीन गुरु-पिता, माता, आचार्य.
तीन भय-राजभय, वनभय, ईशभय.
तीन द्रव्यगति-दान, भोग, नाश.
तीन गण-देव, राक्षस, मनुष्यगण.

❋ ससुराल-रहस्य ❋

तीन देव–ब्रह्मा, विष्णु, महेश.

तीन लोक–आकाश, पाताल, मृत्युलोक

तीन काल–भूत, भविष्य, वर्तमान।

तीन कांड–कर्म, उपासना, ज्ञान।

तीनमें दूध–मनुष्य, पशु, वनस्पति।

तीन जीव– जलचर, थलचर, व्योमचर

त्रिफला–हर्र, भैर, आंवरे।

त्रिकुटा–सोंठ, मिर्च, पीपल।

तीन मुसल्मान–अमीर, फकीर, पीर।

तीन हिन्दू–सपूत, ऊत, भूत।

तीन गुण– सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण।

तीन अवस्था– जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति।

शीघ्र नष्ट होनेवाली तीन वस्तु; परदेशीकी प्रीति, वालूकी भीत, फूसका ताव।

आगेका आदर करनेवाले तीन–भट, भटियारी, वेश्या।

तीन भयंकर–पुलिसका शक, डाक्तरकी सार्टीफिकेट, मजिस्ट्रेटकी राय।

तीन झगड़े–जर, जोरु, जमीन, (चौथा झगड़ाही नही है)

भोजनके तीन मार्ग–एकबार जोगी, दो बार भोगी, तीन बार रोगी।

तीन बातोंसे शीघ्र मृत्यु–अति भोजन, अति निद्रा, अति मैथुन.

तीन नाड़ी–इडा, पिंगला, सुषुम्ना।

तीन प्रकृति– कफ, पित्त, वाव।

सुखी रहनेके उपाय तीन-प्रिय भाषण, परोपकार, सत्संग।

तीन कदर-युवा अवस्थाकी वृद्धावस्थामें, आरोग्यताकी पीड़ामें, और धनकी दरिद्रतामें कदर होती है।

तीन मनुष्य दुःखी-बुद्धिमान जो किसी मूर्खके अधीन हो, निर्बल जो बलवानका सेवक हो, दयावान जो निर्दयीका आश्रित हो।

तीन चीजे तीन समयमें बहुत कठिन होती हैं-वृद्धावस्था अकेलेपनमें, शारीरिक व्यथा दरिद्रतामें और यात्रामें पैदल चलना लम्बे मार्गमें कठिन होता है।

तीन पदार्थ तीन पदार्थोंसे कदापि प्राप्त नही होते-धन केवल अभिलाषासे, युवावस्था खिजाब लगानेसे, आरोग्यता औषधि खानेसे।

तीन अवस्था-जिसका उपकार करे उसका तू स्वामी, जिससे कुछ मांगे उसका बंधुआ, जिससे कुछ भय व आशा नहीं उसके बराबर है।

तीन वस्तु बच्चोंको दुखदाई-सौतेली मां, दुष्टकी दृष्टि, मैदा और खोयाका पकवान्न।

तीन वस्तु बंगालकी मशहूर-छाता, बाजा, केश।

तीन वस्तु बंगालियोंको प्रिय-तेल. तम्बाकू. पान।

तीन बाजा-चाम, तार, फूंक।

चार शब्दोंका बोध।

चार रिपु-काम, क्रोध, लोभ, मोह।

चार स्त्री-पद्मिनी, चित्रिणी, शंखिनी, हस्तिनी।

❀ ससुराल-रहस्य ❀

चार पुरुष- शशक, मृग, वृषभ, अश्व।

चार युग-सत्ययुग, द्वापर, त्रेता, कलियुग।

चार रात्रि-कालरात्रि, महारात्रि. मोहरात्रि, दारुणरात्रि।

चार वेद-ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्वणवेद।

चार वर्ग-धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष।

चार वर्ण-ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र।

चार आश्रम-ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यास।

चार योग-भक्तियोग, मंत्रयोग, लययोग, चर्यायोग।

चार गवैये-खटरागी, घटरागी, बटरागी, मठरागी।

चार दाढ़ी-मानमनोहर, ढड्ढा, फजीहत और थलथल।

चार आतुर-भूखा, प्यासा, उनीदा, और कामातुर।

चार देवला-दाना (रामचन्द्र) मस्ताना (कृष्ण) सिड़ी (परशुराम) सिप्पी (व्यासजी)।

चार स्थानमें अकल ठिकाने नहीं रहती-गाते, विषय करते, बच्चेको खिलाते और देना देखते।

चार स्थानमें ज्ञान होता है-श्मशानमें, कथावार्तामें, तीर्थस्थानमें और विषयके पश्चात।

चार स्थानमें हिम्मत रखना चाहिये-मैदानमें, नुकसानमें, बिमारीमें, परदेशमें।

चार काममें मौन रहना चाहिये-मलमूत्रत्याग, दंतधावनी, भोजन और विषय।

चार बातें दिल्लीकी मशहूर हैं-बादशाहत, अमीरयत, गवैया और बोली।

चार बातें जयपुरकी मशहूर हैं-लोटा, रूमाल, कलाकंद और झूठ बोलना।

चार चीज बीकानेरकी मशहूर हैं-ऊंट, मिश्री, तरबूज, और स्त्रीकी सुन्दरता।

चार चीजें छत्तीसगढ़की मशहूर हैं-चावल, चिरौंजी, खेड़ा और डरपोकपन।

चार रंग बखें-भूखो बामण सोवे, भूखो बनियो हँसे; भूखो जाट रोवे और भूखो राजपूत कमर कसे।

चार प्रकारके दर्शन-राजा, यति, पतिव्रता, ब्राह्मण।

चारके बिना चारकी शोभा नहीं रहती-चन्द्रमा बिना रात्रिकी, जल बिना नदीकी, मेघ बिना बिजुलीकी और पुरुष बिना स्त्रीकी।

याद रखने योग्य चार बातें-स्त्रीजातिपर विश्वास मत करो; अपनी सम्पत्तिपर फूलो मत, भूखसे अधिक खावो मत और ऐसी वस्तुका सञ्चय मत करो जिससे कभी लाभकी आशा नहीं!

चार बातोंसे ईश्वर प्रसन्न होते हैं-माता पिता गुरुकी सेवा जीवनपर्यंत, उसके उपकारोंको न भूलना, ईश्वराधीन समय कार्य करना, इन्द्रियजित बनकर रहना।

चार बातोंसे ईश्वर अप्रसन्न होता है-वृथा किसीको कलंकित करना, माता पिता गुरुको कष्ट देना, धर्मनष्ट पुरुषकी साक्षी देना, कुलधर्मविरुद्ध जीविका करना।

पुरुषार्थियोंकी चार प्रकृति-सत्यवादी होना, संसारको असार जानना, इच्छानुसार परोपकार करना, सुख दुःखको समान जानना

चार असन्तोषियोकी प्रकृति-बिना बुलाये दूसरेके घर जाना, जने जनेके सन्मुख घरका दुःख रोना, धनियोंके सम्मुख अपनेको

धनीसा मान बढ़ाना, अपनी आधी रोटी छोड़कर दूसरेकी सारी रोटीपर ध्यान देना ।

चार प्रकृति सूमड़ोंकी होती हैं-मित्रोंसे मुंह छिपाना, किसीको देते देख दुखी हो चिन्ता करना, अतिथिको देख मुंह फेर लेना, धनको सञ्चय कर पृथ्वीमें रख मर जाना ।

चारको चार नहीं त्याग सकते-चन्द्रमा चांदनीको, सूर्य धूपको, मेघ श्यामताको और पतिव्रता स्त्री पतिको ।

चार प्रकृति धन नाश होनेकी हैं-आलसी होना, मूर्खता करना, नौकरोंको स्वतन्त्रता देना और जूवा खेलना ।

चार प्रकृति मूर्खताकी हैं-विद्या न पढ़ना, नीचोंकी सङ्गति करना, गलियोंमें घूमना, अहंकारसे वितण्डावाद सभामें करना ।

चार प्रकृति नम्रताकी हैं-सर्वदा सज्जनोंका भय करना, मनुष्य-मात्रके अधीन होना, दीनोंकी चित्तवृत्तिपर सर्वदा ध्यान देना, विद्वानोंके संग रहना ।

चार प्रकृति घमण्डियोंकी हैं-वृद्धोंके वाक्यको खण्डन करना, अपने कहेको श्रेष्ठ मानना, अपनेको सबसे भला समझना, प्रणामका उत्तर न देना ।

चार प्रकृति लज्जाकी हैं-मधुरभाषी होना, सर्वदा धैर्य चातुर्य्य-युक्त रहना, गलियां, मेलों, स्त्रियोंमें न जाना, विना प्रयोजन न बोलना ।

चार प्रकृति निर्लज्जोंकी है-पनघटपर बैठना, विना प्रयोजन धनिकोंके पास बैठना, विनाविचारे हर एक कोईसे बोलना, स्त्रियोंसे वाग्युद्ध करना ।

चार प्रकृति उत्तम जनोंकी हैं-किसीसे मांगना नहीं; गम्भीर

हृदय होना, लज्जासे प्रेम रखना, भोजन अपने भागका भी बांट कर खाना।

चार प्रकृति बहुत बुरे जनोंकी हैं-सूम होना, अहंकारी होना, निर्लज्ज होना, विश्वासघात करना।

चार प्रकृति अदबकी है-वृद्धोंका मान करना, सद्गुरुओंकी शोभा बढ़ाना, सभामें विना पूछे बोलना नही, सर्व समयमें शुद्ध शरीर रखना।

चार प्रकृति प्रतिष्ठित बना देनेवाली है-गुप्त बात किसीसे न कहना, परधन परदारापर दृष्टि न देना गुरु लोगोंसे मान न चाहना, जिह्वासे दुर्वचन न बोलना।

चार प्रकृति बेसमझोंकी हैं-साधुओ और परदेशियोंसे हास्य करना, सभामें अनधिकार बैठ वृथा बकवादमें तत्पर होना, मित्रोंकी प्रतिष्ठाके हानिकारक शब्दोंका कहना, छोटे बड़ोका ध्यान न कर बद्शब्द बोलना।

चार प्रकृति स्त्रैण पुरुषोंकी हैं-स्त्रीको लेकर मेलाओंमें जाना, सभामें स्त्रीकी शोभा करना, स्त्रीकी आज्ञाको वेदाज्ञा मनाना, स्त्रीको स्वतन्त्र विचरनेकी आज्ञा देना।

ब्याह चार सपूतोंसे सुधरे और होली चार कपूतोंसे।

पथिकको दुखदाई चार वस्तु-बद्लकी घाम, अंधेरी रातमें बिजलीका झलका, नदीका पूर और काटोंका मार्ग।

किसानको अखरनेवाली चार वस्तु-कायर बैल, अहाल स्त्री, न बरसनेवाला बादल और फालतु घास।

चार चूतिया-चुगलखोर, जार्व, मिथ्या बकवादी, दूसरेकी बढ़ती देख जलनेवाला।

पांच शब्दोंका बोध ।

पांच अंगुली-कनिष्ठिका, अनामिका, मध्यमा, तर्जनी और अंगुष्ठ

पांच देवता-ब्रह्मा, विष्णु, महेश, शारदा और गणेश ।

पांच पांडव-युधिष्ठिर, भीमसेन, अर्जुन, नकुल और सहदेव ।

पांच गौड़-सारस्वत, कान्यकुब्ज, गौड़, मैथिल, उत्कल ।

पञ्च द्राविड़-तायल, महाराष्ट्र, कर्णाटक, तैलंग और गुर्जर ।

पंचक-धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपदा, उत्तराभाद्रपदा, रेवती ।

पंच गव्य-दही, दूध, घृत, गोबर, और गोमूत्र ।

पंचामृत-दूध, दही, घृत, मधु, चीनी ।

पंचतत्त्व-पृथ्वी, वायु, जल, अग्नि और आकाश ।

पंच गुण पृथ्वीके-शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गन्ध ।

पांच आततायी-बालहत्या करनेवाला, परस्त्री हरनेवाला, पराये घर अग्नि लगानेवाला, चोरी करनेवाला, जहर पिलानेवाला ।

पांच रत्न-सोना, चांदी, मोती, लाजवर्द, प्रवाल ।

पांच मूर्ख-रस्ते चलते खानेवाला, बात करते हसनेवाला, गये हुएका सोच करनेवाला, अपने कियेका मान करनेवाला, दोके बीचमें तीसरा जानेवाला ।

पांच वस्तु संसारकी फीकी और निरर्थक हैं ।

राज्यपदवी बिना न्यायके-जैसे बहल बिना वर्षाके ।

वैराग्य बिना सन्तोषके-जैसे बिना जल कुआ ।

युवा पुरुष बिना विद्याके-जैसे बिना दीपकके सुन्दर महल ।

रूपवती स्त्री बिना लज्जाके-जैसे बिना लवणके व्यञ्जन ।

धनाढ्यता बिना दातव्य और उदारताके-जैसे बेफल और छायाहीन वृक्ष ।

पांच महारत्न-बिलौर, वज्र, पद्मराग, नीलम, सरिक्त ।

छह शब्दोंका बोध ।

छह शास्त्र-मीमांसा, पातञ्जली, सांख्य, न्याय, वैशेषिक, वेदांत।

छह राग-भैरव, मालकोश, हिंडोल, दीपक, श्री और मेघ।

छह ऋतु-हिम, शिशिर, वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद्।

छह रस- मीठा, खारा, कड़ुवा, कसायला, खट्टा, चरपरा।

छह शत्रु-काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर।

छह मंत्र-मारण, उच्चाटण, स्तंभन, वशीकरण, शांतिकरण, विद्वेष।

छह व्यसन-मद्यपान, परस्त्रीगमन, द्यूतकर्म, चौर्यकार्य, मांसभक्षण, झूठ बोलना।

सात शब्दोंका बोध।

सात पदार्थ-द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय, अभाव।

ऊपरके सात लोक-भूर्लोक, भुवर्लोक, स्वर्लोक, महर्लोक, जनलोक, तपोलोक, सत्यलोक।

नीचेके सातलोक-अतल, वितल, सुतल, महातल, तलातल, रसातल, पाताल।

सात स्वर-षड्ज, ऋषभ, गान्धार, मध्यम, पञ्चम, धैवत, और निषाद।

सात सुख-आरोग्यता, लक्ष्मी, इच्छानुगामिनी भार्या, आज्ञाकारी पुत्र, भला पड़ोस, राज्यमें मान, गौकी सेवा।

सात ऋषि-कश्यप, अत्रि, भरद्वाज, वशिष्ठ, गौतम, विश्वामित्र, जमदग्नि।

सात राजश्री-मन्त्री, शास्त्र, घोड़ा, हाथी, देश, कोष, गढ़।

सात धातु-सोना, चांदी, तांबा, रांगा, जस्ता, शीसा, लोहा।

सात उपधातु-सोनामखी, रूपरज, तूतिया, कांसा, सेन्दुर, शिलाजीत, गौदन्ती।

शरीरकी सात धातु-चर्म, रुधिर, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा, और वीर्य।

आठसे २० तक शब्दोंका बोध।

आठ अङ्ग योगके-यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, और समाधि।

आठ सिद्धि-अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व, वशित्व।

आठ नाग-वासुकी, तक्षक, कर्कोटक, शंख, कुलिक, पद्म, महापद्म, महानाग।

आठ वस्तु-इन आठवस्तुओंकी प्राप्तिसे कदापि तृप्ति नहीं होती-नेत्र देखनेसे, पृथ्वी वर्षासे, याचक मांगनेसे, स्त्री पुरुषके संगसे, विद्याभिलाषी विद्यासे, कृपण धनके सञ्चयसे, नदी जलसे और अग्नि काष्ठसे।

आठ वस्तु आठ वस्तुओंको नहीं त्यागते-चन्द्रमा चांदनीको, सूर्य घामको, हरदी जर्दीको, आम खटरसको, अम्बर श्यामताको, वृक्षादि हरियालीको, शीलवन्त गुणको, दुष्टजन अगुणको।

नवरत्न-माणिक्य, मुक्ता, पन्ना, पुखराज, हीरा, नीलम, लहसुनीया, वैडूर्य, गोमेदक।

नवनाथ-परमानन्दनाथ, प्रकाशनानन्दनाथ, काकुलेश्वरानन्दनाथ, कालेश्वरानन्दनाथ, भुगानन्दनाथ, सहजानन्दनाथ, गङ्गानन्दनाथ, निमलानन्दनाथ और नाथ।

दश वायु-प्राण, अपान, समान, उदान, व्यान. नाग, कूर्म, कृकल, देवदत्त, धनञ्जय।

दश दिशा-पूर्व (इन्द्र), आग्नेय (अग्नि), दक्षिण (यम), नैऋत्य (कुवेर), पश्चिम (वरुण), वायव्य (वायु), उत्तर (राजराज), ईशान (हर), स्वर्ग (ब्रह्मा), भूमि (वीभत्स).

दश अवतार-मत्स्य कूर्म, वाराह, नृसिंह, वामन, परशुराम, राम, कृष्ण, बौद्ध, कल्कि।

दश इन्द्रिय-श्रवण, त्वचा, जिह्वा, नासिका, नेत्र. (ज्ञान इद्रिय) हाथ, पैर, गुदा, लिंग, मुख (कर्म इन्द्रिय)।

ग्यारह रुद्र पशुपति, भैरव, रुद्र, विश्व. विश्वेश. अघोर, रूप, त्र्यम्बक, कपर्दि, शूल, ईशान।

बारह सूर्य-सूर्य, वरुण, वेदांग, रवि, भानु, गभस्ति, विष्णु, दिवाकर, मित्र, यम, रैति, आदित्य।

चौदह विद्या-ब्रह्म, गायन, रसायन, ज्योतिष, वैद्यक, शास्त्र, तैरना, व्याकरण, छन्द, कोक, काव्य, सवारी, नट, चातुरी।

चौदह गुण-बुद्धि, सुख, दुःख इच्छा, द्वेष, यत्न, संख्या, प्रमाण, पृथक्त्व, संयोग, विभाग, भावना. धर्म, अधर्म।

सोलह मनुष्योंको सोलह प्रकारसे प्रसन्न करना-मित्रको सुजनतासे, शत्रुको शीलतासे, कृपणको धनसे, बड़ेको सेवासे, छोटेको नम्रतासे, पण्डितको विद्यासे, मूर्खोंको मनोरञ्जनसे, स्त्रियोंको प्यारसे, अभिमानीको प्रशंसासे, क्रोधीको शान्ततासे, अपनेको सहारासे, परायेको उपकारसे, पड़ोसीको दयासे, संसारको मित्रतासे, रोगीको औषधिसे, शिक्षक और वैद्यकी इनामसे।

सोलहको धिक्कार-नहरके पटवारीको, हड्डियोंके व्यापारीको, जुवेके खिलारीको, कंगालकी सरख्वारीको, बूढ़ेकी जिनहकारीको, बेवकूफकी यारीको, कमीनाकी दिलदारीको, लौंडेकी इश्ककारीको, खुल्ली खरारीको, गीदड़ोंके शिकारीको, गँवारकी भैयाचारीको, बेशरमी नारीको, नामर्दकी हिम्मतदारीको, सायकिलकी सवारीको, मतलबकी मित्रकारीको, अज्ञान पसारीको।

अठारह पुराण-पद्म, स्कन्द, गरुड़, मत्स्य, वायु, ब्रह्मांड, लिङ्ग, अग्नि, कूर्म, वामन, नारद, विष्णु, मार्कण्डेय, भविष्य, बाराह, शिव, ब्रह्मवैवर्त, भागवत।

अठारह उपपुराण-काली, साम्ब, सनत्कुमार, वरुण, मारीच, नन्दी, शिव, दुर्वासा, मनु, नारदीय, कपिल, सौर, माहेश्वरी, शुक्र, भार्गव, नृसिंह, धर्म, पाराशर।

अठारह स्मृति-मनु, याज्ञवल्क्य, च्यावन, हारीत, पाराशर, भृगु, व्यास, कात्यायन, वसिष्ठ, भारद्वाज, कौशिक, बार्हस्पत्य, गौतम, कश्यप, शंख, जमदग्नि, आत्रेय, यम।

उन्नीस शस्त्र-खट्वांग, खड्ग, चर्म, पाश, अंकुश, डमरू, शूल, चाप, बाण, गदा, शक्ति, भिन्दिपाल, तोमर, मूसल, मुद्गर, पट्टिश, परिघ, भुशुण्डि, चक्र।

हिन्दी कहावतें।

नौ रोकड़ तेरा उधार।

नाच न आवे आंगन टेढ़।

आंखोंके अंधे नाम नैनसुख।

बाप न दादा तीन पीढ़ियां।

❀ मुकलावा-बहार ❀

एक पन्थ दो काज ।

सबके दाता राम ।

तेल देख तेलकी धार देख ।

लेना एक न देना दो ।

हाथसे नखून अलग नहीं होते ।

सत्य धूलमें नही छिपता ।

अन्धेर नगरी अबूझ राजा ?

सब धान बाईस पसेरी ।

खरी मजूरी चोखा काम ।

बंदर क्या जाने अदरखका स्वाद ।

नदी-नाव-संयोग ।

घरके पीरोको तेलका मलीदा ।

जान है तो जहान है ।

अपना मरना प्रलय होना ।

बावन तोले पाव रत्ती ।

जूठा खाय तो मीठेको ।

घरका भेदी लंका नाश ।

देशी घोड़ी परदेशी लगाम ।

चोरकी दाढ़ीमें तिनका ।

लगे तो तीर नही तो तुक्का ।

बगल लड़का शहर ढिंढोरा ।

बनिया मीत न वेश्या सती ।

गधेको खशका निवाला ।

मेंडकको भी-जुखाम ।

रबड़ीके लिये भी दांत ।

घर फूंक तमाशा देख ।

❋ ससुराल-रहस्य ❋

घी गया तो खिचड़ीमें ।

ऊपर सुन्दर भीतर काला।

जिसकी लाठी उसकी भैंस।

जबरदस्तका ठेंगा सिरपर।

जबरदस्त मारे रोने न दे ।

सीधी अंगुलीसे घी नही निकले।

दूधकी साख बिलाई ।

चोरके भाई दरवेस ।

जैसे देव तैसे पुजारी ।

लातोंके देव वातोंसे नहीं माने।

अंधोंमें काणा सरदार ।

हाथकंकणको आरसी क्या।

भिखारीके क्या दिवाला ।

अकल बड़ी कि भैंस ।

दिवानेको भंग रपटनपर धक्का ।

कहां रामराम कहां टांयटांय।

कहां राजा भोज कहां गंगा तेली।

आप करे आप भरे।

तीरथ गये मुंडाये सिद्ध।

भेली दी पर गांडा न दिया।

मारके आगे भूत भागे ।

तुरत दान महापुण्य।

गया समय नहीं मिलता।

नीयत जैसी बरक्कत,

लेनेके बदले देने पड़े ।

जानके लाले पड़े।

❀ मुकलावा-बहार ❀

अपने घरके सब ही राजा।
टूटीकी बूंटी नहीं।
काले काले बापके साले।
बासी बचे न कुत्ते खांय।
टेढ़ जानि शंका सब काहू।
लकीरके फकीर।
तीन पांच मत कर।
सौ सुनारकी एक लुहारका।
आप भला तो जग भला।
अटका बनिया देय उधार।
आगे नाथ न पीछे पगहा।
आठ कनोजिया नौ चूल्हा।
अकलमन्दको इसारा काफी।
अपकारके बदले उपकार।
आंख बची माल दोस्तोंका।
पत्ता खटका बन्दा सटका।
आंखका अन्धा गांठका पूरा।
इमानदारको कमी नहीं।
इस हाथ दे इस हाथ ले।
अंगुली पकड़ते २ पहुँचा पकड़े।
उतावला सो बावला।
उलटा चोर कोतवालको डांटे।
ऊंची दुकान फीका पकवान।
एकान्तवासा झगड़ा न झांसा।
एक म्यानमें दो तलवार।
एक पीछे एक ग्यारहके बराबर।

ससुराल-रहस्य

एक हाथसे ताली नहीं बजती।

दोनों हाथ मिलानेसे धुलते हैं।

कमखर्च बाला नशीन।

गरीबीमें गीला आटा।

कास प्यारा है चाम प्यारा नहीं।

कोयलेकी दलालीमें काले हाथ।

गरजे सो बरसे नहीं।

केहनेसे करना भला।

किसीका मुंह चले किसीका हाथ।

कोईका सिर कटे नाईकी सीखें।

जिसमें खाय उसमें छेद करे।

हम लेने आये तुम्हें तुम ले बैठे हमें।

आप डुम्बते पांडिया ले डूबे यजमान।

गुरु गुड़ चेला शक्कर।

गोकुलसे मथुरा न्यारी।

घरकी हानि लोगकी हांसी।

घरमें धन सिरपर ऋण।

चोरका माल चण्डाल खाय।

चढ़े सो गिरे।

चाचा चोर भतीजा काजी।

चिकने घड़ेपर बून्द नहीं ठहरती।

छोटा मुँह बड़ी बात।

जोड़ू न जाता खुदासे नाता।

जैसी करणी तैसी भरणी।

रस्सी जलगई पर ऐंठ न गई।

बाप जैसा बेटा।

❀ मुकलावा-बहार ❀

कुम्हार वैसा लोटा।

स्वांसा जबतक आसा।

जीना जबतक सीना।

सांयाकी मेख तमासा देख।

तिनकाकी ओट पहाड़।

दुधारी गायकी लात भली।

दुनियां दुरंगी-मकाने सराय।

दिनभर चले अढ़ाई कोस।

दिन दूना रात चौगुना।

स्वदेश चोरी परदेश भीख।

दगा किसीका सगा नही।

दमड़ीका कपड़ा टका सिलाई।

दिया तले अन्धेरा

दुष्ट देवकी भ्रष्ट पूजा।

दमड़ीके तीन २ हो जावोगे।

नाम बड़े दर्शन खोटे।

नाईकी बरातमें सबही ठाकुर।

पूतके पांव पालनेमें दीखते हैं।

पढ़े न लिखे नाम विद्याधर।

पानी पीकर जाती पूछना।

पांचो अंगुली बराबर नही होतीं।

पढ़े फारसी बेचे तेल।

पनीमें रहकर मगरसे वैर।

पासा पड़े सो दांव, पंचोंमें परमेश्वर

बड़े बोलका सिर नीचा।

बैठेसे बेगार भली।

ससुराल-रहस्य

ऊँघतेको बिछाया मिला-झेड़ियाधसान।
भीख मांगे नखरे राजोंके।
भयबिन प्रीति नहीं मुँह देखी बातें।
जैसा मुंह वैसा थप्पड़।
मरी बछिया ब्राह्मणको दान।
मूंड मुड़ाये तो ओला पडे।
मुंडा जोगी और घुटी दवा।
रंगमें भंग करे।
रंडीका दोस्त पैसा।
राजा माने सो रानी।
लड़ाईका मुह काला।
लड़ाईकी जड़ हांसी।
सदा दिन एकसे नहीं रहते।
सांचको आंच नहीं।
सुनना सबकी करना मनकी।
सौ स्यानोका एक मत।
हाकिम आंखसे नही देखता।
हार माने झगड़ा टूटे।
आती लक्ष्मीको ठोकर मारना।
आप लिखे खुदा बांचे।
ऊधोका लेना न माधोका देना।
कहनेसे कुम्हार गधापर नहीं चढ़े।
गांवका जोगी आनगांव सिद्ध।
जलेपर नमक मत डालो।
जोई राम सोई राम।
चट्ट रोटी पट्ट दाल।

❋ मुकलावा-बहार ❋

नौकरीकी जड़ पत्थरपर।

पोपाबाईका राज्य है।

मांगनेसे मौत नहीं मिलती।

राजा कर्णका वखत।

जैसे कंता घर भले तैसे भले विदेश।

काजीजी दुबले क्यों? गांवके अंदेशेसे।

नामर्दी तो खुदाने दी मार २ तो करते जाओ।

ओढ़ ली लोई तो क्या करेगा कोई।

जनमन देखा बोरिया सपने पाई खाट।

अपनी नाक कटायके परको असगुन देत।

मरे तो मरे आगरा तो देखा॥

तेलीका तेल जले मसालचीका सिर दुखे।

भंग भखन तो सहज है, लहर कठिन ही होय।

उत्ते पैर पसारिये जित्ती लम्बी सौर।

सूत न कपास जुलाहोंसे लट्ठा लट्ठी।

बड़े मियां सो बड़े मियां, छोटे मियां सुभान अल्लाह।

घरमें ना दो दाने बीबी चली दलाने।

सच्चेका बोल वाला, झूठेका मुंह काला।

सांच कहे तो मारा जाय, झूठ कहे तो लड्डू खाय।

सौखीन बुढ़िया चटाईका लहँगा।

महफिलमें नाचे तो लाज कैसी।

ओखलीमें सिर दिया तो चोटोंका क्या डर।

अनोखा नाई बांसकी नहरनी।

आग लगन्ते झोंपड़ा, जो निकले सो लाभ।

सब धन जाता देखके आधा दीजे बांट।

❀ ससुराल-रहस्य ❀

च्यार दिनोंकी चांदनी, फिर अँधियारी रात।
चलनी दोषै सूपको, जाके सरसर छेद।
जिसका खावे दाना, उसका गावे गाना।
खाय खसमका दाना, गावे भैयाका गाना।
अन्धेके आगे रोवे, अपने दीदे खोवे।
जागे सो पावे, सोवे सो खोवे।
गरीबकी लुगाई, सबकी भौजाई।
गुरु कीजिये जानके, पानी पीजै छानके।
गुरू चेला लालची, दोनों खेलैं दांव।
तुलसी कारी कामरी, चढ़े न दूजो रंग।
अपनी २ तानमें, चिड़िया भी मस्तान।
जिस गांव जाना नहीं, उसकी राह क्यों पूछना।
मांग तांगकर आग लावे, नाम धरे वैसन्धर।
घासकी मढ़ैया अलीगढ़का ताला।
एक पाव ज्वार बरेली चली बजार।
पीतलकी नथनी बड़ा गुमान।
बाप न मारी मेंढकी, बेटा तीरंदाज।
बाबाजीके बाबाजी, तरकारीकी तरकारी।
आमके आम, गुठलियोंके दाम।
बांझ क्या जाने प्रसवकी पीड़ा।
गञ्जेको खुदा नाखुन दे तो खुजला २ कर मर जाय।
कच्चा वैद जमराजका पड़ोसी।

आदमी २ अंतर, कोई हीरा कोई कङ्कर।
दोनों दीनसे गैले पांड़े, हलवा मिला न मांडे।
पांडेजी पछताओगे वही चनाकी जावोगे।
एक तो करेली खुद कड़ी, दूजे नीम चढ़ी।
एक दिन मेहमान, दूसरे दिन बेईमान।
एक घरमें दो मता, कुशल कहांसे होय।
कुआ खोदै औरको, पहिले आप गिरे।
कभी गाड़ी नावपर; कभी नाव गाड़ीपर।
बोया पेड़ बबूलका, आम कहांसे आय।
दबी बिल्ली चूहांसे कान कटाती है।
जैसी हांडी काठकी चढे न दूजी बार।
कागजकी नाव आज डूबी कल डूबी।
तीन बात याद रहीं, नून तेल लकड़ी।
दाना दुश्मन अच्छा, पर नादान दोस्त नहीं।
योगी था सो रम गया, आसन रही भभूत।
बहता पानी निरमला, जोगीजन रमता भला।
जोग जुगत जानी नहीं, कपड़े रंग भये भाड़।
गूलरके कीड़ेको गूलरही ब्रह्मांड है।
जान मारे बनिया अजान मारे चोर।
गये थे छब्बे होने सो दुब्बेजो हो आये।
दूल्हा मरे या दूल्हन नाईका टका तयार।
रंडी किसकी जोरू, भंडुवा किसका साला।

सांप तो निकल गया, लकीरको पीटा करो।
सदा दिवाली संतके, आठों पहर त्यौहार।
वा सोनाको जारिये, जासे टूटे कान।
सदा न फूलै तोरई, सदा न सावन होय।
वकरेकी मां कवतक खैर मनायेगी।
धोवी वसकर क्या करै, दिगम्वरोंके पास।
आदमी जानिये वसे, सोना जानिये कसे।
आंखें हुईं चार, तो जीमें आया प्यार।
आंखों देखी वात जो कभी न झूठी होय।
एक तवेकी रोटी क्या छोटी क्या मोटी।
गये थे नमाजको रोजा गले पड़ा।
गुड़ देनेसे जो मरे, क्यों विष दीजे ताहि
न्याकरसे कूकरभला सोवे सुखकी नींद।
दातासे सूम भला झटपट उत्तर देय।
जगन्नाथका भात जगत पसारे हाथ।
तनमें लगा घाम कौन करे काम।
डेढ़ पेड़ व ग़ायन मियां वाग चले।
छोड़िये न जवान, खींचिये न कमान।
खेलिये न जूआ, लांघिये न कूआ।
तलवारकी वनिस्वत जवानका घाव गहरा।
भलेकी हंडी फूटी कुत्तेकी जात जानी।
दूधका जला छाछको फूंक फूंककर पीवे है।

❋ मुकलावा-बहार ❋

दुविधामें दोनो गये, माया मिली न राम।

धोबीका कुत्ता न घरका न घाटका।

नकटेकी नाक कटी सवागज और बढी।

नामी साव कमा खाय, नामी चोर मारा जाय।

सातपांचकी लाकड़ी, एक जनेका बोझ।

वखत पड़े बांका, गधेको कहिये काका।

बाप भला न भैया, सबसे भला रुपैया।

बाप मरा घर बेटा हुआ उसका टोटा उसमें गया।

मन चंगा तो कठौतीमें गंगा।

मूर्ख वैद्यकी मात्रा, वैकुण्ठकी यात्रा।

सिर कटे सिपाहियोंका सरदारका नाम

हिसाब कौड़ीका बक्सीस लाखकी।

करताके संग करिये, पाप दोष नहि गनिये।

हंसा थे सो उड़ गये, काग भये परधान।

अपनी जांघ उघारिये, आपहि मरिये लाज।

ऐसी तैसी किया व्यापार, सोलासौके हुए हजार।

कर्महीन खेती करै, बैल मरे या सूखा परे।

जहां न पहुंचे रवि, वहां पहुंचे कवि।

हाजरमें हुज्जत नही, गैरमें तलास नही।

बारह बरस दिल्लीमें रहकर भी भाडही झोंका।

आलूके लड्डू खाये सो पछताये, ना खाये सो पछतावे।

खानेमें अगाड़ी और लड़नेमें पिछाड़ी।

❋ ससुराल-रहस्य ❋

खाके सो जाय मारकर भग जाय।

होनहार बिरवानके, होत चीकने पात।

श्रावणके अंधेको हराही हरा दीखे।

हाकिमी गरमकी, दुकानदारी नरमकी

औरत शरमकी, दलाली बेशरमकी।

आसा करमकी, आड़त धरमकी।

सराफी मरमकी, पूंजी धरमकी।

मारवाडी कहावतें।

गयो चोर घड़ामें ढूंढे।

भूवो हाथ चोर मरावे।

कीड़यां पर पसेरी बावे।

डाकन वेटा ले भक दे।

कुठोड़ घाव सुसरो वेद।

थोथा पिछोड़े उड़ उड जाय।

बिधगया सो मोती।

हाथ सुमरणी बगल कतरनी।

चूत जीको पुन्य।

जीसा देश उसा भेस।

ठालासूं वेगार भली।

राड़ आगे बाड़ भली।

उतावला सो बावला।

ओंधा पीसे कुत्ता खाय।

टेकूको हिमायती हारे।

❋ मुकलावा-बहार ❋

आंधा न्यूत्या दो दरे आया।
पाव चूण चौवारे रसोई।
आंगलीं पकड़तां पूंच्यो पकड़े।
आप मरयां जग परलै होय।
एक घर तो डाकन भी छोड़े।
दो तो चूनका भी बुरा।
दूबलाने दो आसाड़।
कात्यो पिंद्यो कपास कर दियो।
ऊत गांवमें कुम्हार म्हेतो।
कभी घी घणा कभी मूठी चणा।
थोथा चणां बाजे घणां।
वांड़ा कुत्ताको लाय में के दाजे।
पूंजी राख दिवालो काढे।
बाखी बचे न कुत्ता खाय।
भोला ढोलाका राम सोला।
मानो तो देव नातो भीतको लेव।
मनभावे सिर हलावे।
सब घर माटीका चूल्हा हैं।
सावण सूखा न भादवा हरया।
जींने देख्यां ताप आवे जिकोई निपूतो ब्यावण आवे।
आंधा वांटे सीरनी घर काहीने दें।
ऊंचा चढ़कर देखो घर घर योई लेखो।
कोईने बैगण बायला कोईने बैगण पथ।
आछी मेरी टाटी जीमेंई दाल बाटी।
नदीपरका रूखड़ा जब तब होय विनास।

ससुराल-रहस्य

बोया पेड़ बबूलका आम कठासूं खाय ।

पूतका पग तो पालने ही दीख आवे हैं ।

सदा दिवाली सन्तके आठूं पहर तिवार ।

सात मामाको भाणजो भूखोई उठ जाय ।

नीम ना मीठा होय सींच गुड़-घीवसुं ।

ज्यांका पड्या सुभाव जायगा जीवसूं ।

आला बचे न आपसूं सूखा बचे न कोईका बापसूं ।

चालनीमें दूध काढे करमने दोष देवे ।

घर आयो नाग न पूजियो बंमई पूजन दाय ।

आगे मांडे पाछे दे घटे बढ़े कागजसे ले ।

जीकी कदे न फटे बिवाई वो के जाने पीर पराई ।

एक काणो एक खोड़ो राम बनायो जोड़ो ।

गधामें ग्यान नही मूशलमें म्यान नहीं ।

मसजिदमें तालो नहीं दलालके दिवालो नहीं ।

देना तीरका मिलना वीरका खाना खीरका ।

जीमना थालीका परोसना सालीका ।

खाना लाडूका मिलना साडूका ।

धोती लट्ठाकी चिलम चट्ठाकी ।

आशा करमकी लुगाई शरमकी ।

मर्द खटाईसे लुगाई मिठाईसे बिगडे ।

बैठ्यो भायांको चाहे बैरकी हो ।

थीणो भैंसको चाहे सेरही हो ।

छायां भौकांकी चाहे कैरही हो ।

चालनो गैलाको चाहे फेरही हो।

जीमवो मातासुं चाहे झेरही हो।

रमवो आनन्दसुं चाहे देरही हो।

गांवमें घर नही रोईमें खेती नही।

रूपकी रोवे करमकी खाय।

चूतियाको माल मसखरा खावे।

वोई पूत पटेलीमें वोई गोवर पानीमें।

धाई माई तेरी छाछ।

तेरा कुंवराने राख।

बूरका लाडू खावे सो भी पिछतावे ना खावे सो भी पिछतावे।

घन धणयांको, गुवालके हाथ लकड़ी।

संस्कृत कहावतें।

विषस्य विषमौषधम्।

शठं प्रति शाठ्यं कुर्यात्।

येन केन प्रकारेण।

व्यापारे वसते लक्ष्मीः।

यथा नाम तथा गुणाः।

यथा राजा तथा प्रजा।

स्थानं प्रधानं न वलं प्रधानम्।

निराशा परमं सुखम्।

वृथा वृष्टिः समुद्रेषु।

वृथा तृप्तेषु भोजनम्।

अभ्यासकारिणी विद्या।

अति सर्वत्र वर्जयेत्।

❋ ससुराल-रहस्य ❋

आपत्सु मित्रं जानीयात्।

उद्योगः पुरुषलक्षणम्।

कायः कस्य न वल्लभः।

खलः करोति दुर्वृत्तम्।

गतानुगतिको लोकः।

गर्दभानां मिष्टान्नपानं किम्।

तृणेन कार्यं भवतीश्वराणाम्।

देहलीदीपकन्यायः।

दारिद्र्यान्मरणं वरम्।

दैवाधीनं जगत्सर्वम्।

निजं गुणं मुञ्चति किं पलाण्डुः।

न मूर्खजनसंपर्कः।

न भूतो न भविष्यति।

न वारिणा शुद्धयति चान्तरात्मा।

विनाशकाले विपरीतबुद्धिः।

मानो हि महतां धनम्।

मौनं सर्वार्थसाधनम्।

मौनं सम्मतिलक्षणम्।

मूर्खस्य नास्त्यौषधम्।

यस्यार्थास्तस्य मित्राणि।

लोभः पापस्य कारणम्।

शुभस्य शीघ्रम्।

सर्वः स्वार्थं समीहते।

माणिक्यं न गिरौ गिरौ।

स्वार्थी दोषं न पश्यति।

❀ मुकलावा-बहार ❀

सूचीप्रवेशो मुसलप्रवेशः ।

क्षीणा नरा निष्करुणा भवन्ति ।

हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः ।

अशक्तस्तु भवेत्साधुः ।

अधिकस्याधिकं फलम् ।

इतो भ्रष्टस्ततो भ्रष्टः ।

अंते धर्मो जयः पापक्षयः ।

क्षमा वीरस्य भूषणम् ।

परान्नं विषभोजनम् ।

पाखंडा. पूजिता लोके साधुर्नैव च नैव च ।

बहुरत्ना वसुन्धरा ।

फारसी कहावतें ।

चिराग गुल पगड़ी गायब ।

तन्दुरुस्ती हजार न्यामत ।

तुख्म तासीर सुहबत असर ।

हिम्मते मरदां मददे खुदा ।

खामोशी अलामते रजास्त ।

दुश्मने दानां वेह अज दोस्त नादां ।

नेकी बरबाद गुनाह लाज़िम ।

नीम हकीम खतरे जान ।

नतीजा कारबदका कारबद है ।

मुफ्त माल दिले बेहरम ।

पढ़े भटकते हैं लाखों पण्डित हजारों मुल्ले करोड़ों स्याने
जो खूब देखा तो यारो आखिर खुदाकी बातें खुदाही जाने ॥ १ ॥
न रीझें भूलकर भी आप बाहरकी सफाईपर ।
चढ़ा सोनेका चपकाया है गोबरकी मिठाई पर ॥ २ ॥

❋ ससुराल-रहस्य ❋

बुराई है आज बोलनेमें न बोलनेमें भी है बुराई।
खड़े हैं ऐसी बेढब जगहपर इधर कुआं है इधर है खाई ॥ ३॥
गिरते हैं वह सवार ही मैदाने जंगमें ।
वह तिफ्ल क्या गिरेगा जो घुटनोंके बल चले ॥ ४॥
कौड़ीके सब जहानमें नक्शे नगनि हैं।
कौड़ी नही है पास तो कौड़ीके तीन हैं ॥ ५॥
रखो इस मकूलेपर दारोमदार ।
हैं नौ नक्द अच्छे न तेरह उधार ॥ ६ ॥

दुनिया दुरंगी मकाने सराय-कहीं खैर खूबी कही हाय हाय ॥७॥
सदा दौरदौरा दिखाता नही,गया वक्त फिर हाथ आता नहीं ॥८॥
सुबह होती है श्याम होती है-उम्र यूंही तमाम होती है ॥ ९॥
झूठकी टहनी फलेगी नही, नाव कागजकी चलेगी नहीं ॥ १०॥

सारी खुदाई एक तरफ, जोरूका भाई एक तरफ। ११।
पूछा जब उसने आपका परदा कहां गयदा।
कहने लगीं कि अक्ल पै मर्दोंके पड़ गया ॥ १२॥
जो सती सतपर चढ़े तो पान खाना रश्म है।
आबरू जगमें रहे, तो जान जाना पश्म है ॥ १३॥
भूखे गरीब दिलकी प्रभूसे न लगन हो।
सच है कहा किसीने भूखे भजन नहो ॥ १४॥
तवायफके बिछौनेपर बना है काम सोनेका।
न ठहरेगा मुलम्मा है अबस है जरके खोनेका ॥ १५॥
चैनसे जुगनू चमकले यह बनेकी बात है।
मूढ़ क्योंकि हमेशा होती नहीं बरसात है ॥ १६॥

सुर्खरू होता है इन्सां ठोकरें खानेके बाद।
रंग लाती है हिना पत्थर पै पिस जानेके बाद ॥ ७७ ॥

दुनियांके जो मजे हैं हरगिज वे कम न होंगे।
चर्चे यही रहेंगे अफसोस हम न होंगे ॥ ७८ ॥

सजावट छिप नहीं सक्ती बनावटके उसूलोंसे।
कि खुशबू आ नहीं सक्ती कभी कागजके फूलोंसे ॥ ७९ ॥

गुजराती कहावतें।

अति लोभ तें पापनूं मूल।
अन्न मारे अन्न जिवाड़े।
उड़तो पहाड़ो पगपर लेवो नही।
उजड़ गाममां अरेंडो प्रधान।
ऊपर वागा ते मांहि नागा।
ऊंघता सिंघने न जगाड़यो।
ऊंटने सिंघ जोइये नथी आख्यां।
एकनी पागड़ी बीजाने पहेरावबी।
आप डूबता पंड्या जजमानने डुबाड़े।
एक लिख्या ने सो वक्या।
अंधामुल्ला ने फूटी मसजिद।
आंधा आगल आरसी।
वहरा आगल गान।
एवूं सोनुं शुं काम पहिरिये कै कान टूटे।
कमजोर गुस्सा बोत।
कहवूं थोडूं करवूं घणूं।

ॐ ससुराल-रहस्य ॐ

कक्कानामें केरू न जाने।

कुंडामं गुंमड़ां ने सुमगे वैद।

कुतरांनी पुंछड़ी वांकी ने वांकी।

खोटो रुपयो चलई घणां।

गाय दोही कुतरांने पावी।

गधानी लात थी गधो न मरी सके। ऊंटानुं आयुष्ट द्वार पड़ी।

जोगीनी गांठ नहीं ने वैधना मरे रही।

दमड़ीनी दश नौगण।

दमड़ीनी राई ने सासवहूनी लड़ाई।

दरजीनी गति दरजी जाने।

दातारी दान देने भंडारीनां पेट कुत्ते

दूधनुं दूध पाणीनुं पाणी।

दाईआगा आगल पेट छुपावनुं।

दूध पाईने सांप उछेरवो।

दांते दरद ने माथे करज।

नागो न्हावे शूं अने निचोवे शूं।

नाक कापवाने असगुन करचां।

पाणी वलोये माखन न निसरे।

फरै ते चरे ने वांध्यूं भूखे मरे।

वलतां मां घी होमवु।

बुरा लिवाला खाइये पर बुरा बोल न बोलिये।

बीछुका मन्तर न जाने अने सांपना बिलमां हाथ डाले।

❀ मुकलावा-बहार ❀

मोंडा घणां वैकुण्ठ सांकड़ी।

घर घर भाड़े न लेवुं।

भुस्या कुत्ता काटे नथी।

गरजे ते वरषै नथी।

मारी पाड़ौसन चांवल छड़ै ने मारे हाथ फफोला पड़ै

शेठना साला सौ थवा जांय।

शेरना माथे सवासेर।

सोहुं देख्यां मुनिमन चाले।

सर्प मरै नहीं ने लाठी भंगे नहीं।

हाथी पछवाडे कूतरा भूस्याज करे।

हैये छे पण होठे नथी।

हरिगुण गाती ने पेटमां काती।

हाथां न आवड़े ते अंगूर खट्टा।

हाथना आवली वाजी खोवती नथी।

अंधेरी रात ने मग काला।

कागड़ो कोयल ने हँसै।

काणी सहेवाय पण फूटी न सहेवाय।

लभिमां जहर ने जीभ मां अमृत।

जेणां ऊपर मरे ते जाणे।

न्हाता मूते तेने कोण पकड़े।

पेटनी आग पेट जाने।

बिलाड़ीनो पेटमां खीर टके नथी। दोनूं हाथने ताली पड़े।

भलानी दुनियां नथी। रांध्या फेर न रंधाय।

लंका जाली ने हनुमान अलगका अलग।

व्यापार वधंती लक्ष्मी।

घाघ कविकी कहावतें।

आंता तीता दांता नोन।
पेट भरै ना तीनो कोन,
आखों शुरमा कानों तेल।
कहै "घाघ" वेदाई गैल ॥ १ ॥
ढाली बैंठ कुल्हाडी डाले,
हँसके मांगे दम्मा।
हे हौ कहिके नारि बुलावे।
तीनो "घाघ" निकम्मा ॥ २ ॥
वे मांघे घी खिचड़ी खाय।
वे मेहरी ससुरारे जाय।
वे भादो पहाई पव्वा।
कहै "घाघ" ये तीनों कव्वा ॥ ३ ॥
कुच्चकट पनही वतकट जोय।
जो पहिलौठी बिटिया होय।
पातर कृषी बौरहा भाय।
"घाघ" कहै दुख कहां समाय ॥ ४ ॥
मुए खालसे खाल कहावे।
भुंई हो सकरे सोवे।
कहै "घाघ" ये तीनो भकुवा।
उढ़रि जाय औ रोवे ॥ ५ ॥
बनियाके सखरच ठकुरके हीन।

मुकलावा-बहार

बैदके पूत व्याधि नहि चीन्ह।

भाटके चुप औ बेश्या मईल।

कहैं "घाघ" पाओ घर गईल ॥ ६ ॥

संथर जोते पूत बरावे।

जेठ मास भूसौवल छावे।

सावन भादों उड़े जो गरदा।

तीस बरष तक जोते बरदा ॥ ७ ॥

भुइयां खेती हरहां चार।

घरहो गिहिथिन गो दूधार।

अरहरकी दार जड़हनकी भात।

गागल निबुआ औ घीव तात ॥ ८ ॥

सनरन हरी खेड जो होय।

वाके नैन पहले जोय।

कहे "घाघ" नव नवदी झूठा।

कहां छोड़ हूँ बैकुण्ठा ॥ ९ ॥

उधार काढ़ि ब्यौहार चलावै।

छप्पर डारे तारो।

सासके संग बहू पठावै।

तीनोंको मुंह कारो ॥ १० ॥

बड़ा दल पातुरिया जात।

ना घर रहै लच्छमी होय।

नमकट गड़िया दुलहन और।

कहैं 'घाघ' ये बिपतिके ओर ॥ ११ ॥

गृहोपयोगी औषधियां।

मलशुद्धि-जिस मनुष्यका मल शुद्ध है वह प्रायः सब ही बीमारियोंसे बचा रहता है, अतः प्रत्येक मनुष्यको चाहिये कि अपना मल शुद्ध रक्खे। यदि किसी कारणसे मल बिगड़ जाय तो एक या दो रोज निराहार व्रत रखे जिससे मल शुद्ध होवे। जिनका मल बिगड़ा है उनको भोजनोपरान्त दोनो समय निम्न चूर्णका ४-४ मासाके प्रमाणमें सेवन करना हितकर होगा।

लवणभास्कर चूर्ण।

साम्हर नमक ४ पैसेभर, काला नमक २ पैसेभर, वायबिडङ्ग ५ टंक, सेधा नमक ५ टंक, धनिया ५ टंक, पीपल ५ टंक, पीपलामूल ५ टंक, पत्रज ५ टंक, कालाजीरा ५ टंक, नागकेसर ५ टंक, चव्य ५ टंक, अमलबेत ५ टंक, काली मिर्च ५ टंक, जीरा २ टंक, सोंठ २ टंक अनारदाना १० टंक, तज एक टंक, इलायची १ टंक, इन सबको कपड़छान कर ले। गर्म प्रकृतिवालेको ताजा माठाके साथ तथा कफ प्रकृतिवालेको शीतल जलके साथ सेवन करना चाहिये।

खून खराब होना-भी बहुत ही भयंकर है। खूनमें गरमी आनेसे वह बिगड़ता है और उसके बिगड़नेपर अनेकानेक बीमारियां जैसे खाज, दाद, गठियावात, अपरस, पित्ती आदि व्याधियां हो जाती है। यह भी उन्ही कारणसे (मल बिगड़नेसे) बिगड़ता है, अतः किसी प्रकारका जुलाब लेकर प्रथम उदरशोधन करे, पश्चात् २१ दिनतक निम्न योग बनाकर पीवे।

उसवा, सहतरा, चिरायता, कुटकी, मन्धरीकपरी. गोरखमुंडी, मुलहटी, सौंफ, मनुका, सरफोक, सब चीजोंको समभाग लेकर जौकुट चूर्ण करले। इसमेंसे रात्रि समय १ तोला पावभर जलमें मिट्टीकी हण्डीमें भिगो देवो, प्रातः उनको हाथोसे मसल हंडीको आगपर चढ़ा दो मंदी आंचसे पकावो, ऊपर कोई बरतन ढांप दो जब छटांक भर पानी रह जाय उतार कर छान लो और तोलाभर सहत मिलाकर ठंडा होनेपर पिलावो। २१ दिन पीनेसे खून शुद्ध होकर व्याधि शांत हो जावेगी। खटाई, मिर्चे, तेल, गुड़का पथ्य रखें। यह योग बहुत ठंडा है अतः अधिक ठंड अथवा वर्षाके दिनोमे नही पीना चाहिये।

तथा-शुद्ध आंवलासार गन्धक * ३-३ मासेकी फंकी गरम दूधके साथ खानेसे २१ दिनमें खून शुद्ध होकर चमड़ेकी प्रायः सबही बीमारियां साफ हो जाती है।

गन्धक शोधनसे निकला हुवा घी, खानेका चूना और सांभर नमक तीनों वस्तु समभाग फेंटकर रख ले नहानेके एक घंटा पहिले मालिस करले, पश्चात् शीतल जलसे स्नान करे तो सूखी गीली खुजली फोड़ा फुंसी आदि सब शमन हो जाते है।

मैनसिल, गन्धक, सुनारीसुहागा, और गेरमिट्टी, इन चारो वस्तुओंका चूर्ण घृतमे मिलाकर लगानेसे दाद आदि बीमारी शांत होती है।

ववासीर-भी मनुष्यके लिये एक भयंकर व्याधि है, वह भी प्रायः कब्ज अथवा अधिक तीक्ष्ण पदार्थके सेवनसे उत्पन्न होती है। यह दो प्रकारकी होती है-एक खूनी दूसरी बादी।

* गंधक शोधन किया हुआ लेना।

खूनी बबासीर उसे कहते हैं-मलद्वारसे कष्टके साथ रक्त गिरना और बादी बबासीरमें रक्त नहीं जाता। मलद्वारके चहुँओर एक वा दो अथवा कई एक मस्से हो जाते हैं, जिनसे बहुत पीड़ा हुआ करती है। ये मस्से बिना आपरेशनके नष्ट होते तो बहुधा कम देखे गये हैं, किन्तु ये औषधियोंसे इनका कुछ कालके लिये दब जाना (बैठ जाना) संभव है।

मुस्सबर (कडुवा बोर-काला) और कलमी सोरा जलमें गलाकर रख लिया जाय, अंगुलीसे मस्सोंपर १-२ बार नित्य लगानेसे तथा उक्त दोनों वस्तुओंके समभाग चूर्णकी फंकी १॥-१॥ मासा प्रातः सायं शीतल जलके साथ लेनेसे बादी बबासीरमें लाभ होता है।

तथा-परवरका पत्ता, जवासा, चिरायता, नागरमोथा, रक्तचन्दन, दालचीनी, खश, दारुहलदी नीमकी अन्तर्छाल इन सबका काढ़ा सहत मिलाकर पीनेसे खूनी बबासीरमें लाभ होता है।

आतशक उपदंश (गर्मी) यह बड़ी ही भयंकर बीमारी है। दूषित योनिवाली स्त्रीके साथ सम्भोग करनेसे अथवा नखूनादिकी चोट लग जानेसे इन्द्रियपर जो जख्म हो जाते हैं इन्हीका नाम आतशक है। यह रोग स्त्रियोंको भी होता है, रोगीकी पेशाब करके सूखी हुई भूमिपर पेशाब करनेसे भाफद्वारा यह रोग जमा जाता है। रोगीकी धोती पहिर लेनेसे भी यह छूत रोग लग जाता है। इस रोगके उत्पन्न होते ही औषधि करना या कराना चाहिये। यदि यह रोग ८ दिन भी सुना छोड़ दिया जाय तो बड़ा ही भयंकर रूप धारण कर लेता है।

जो प्रथमावस्थामें वारीक २ फुंसी हो जाती हैं व फटकर जखम हो जाते हैं। जिनका विष रक्तमें मिलकर सर्वांगमें चकते पड़ जाते हैं। बालोका झड़ना, तालू फटना, हाथ पांवमें जलन यहां तक कि ज्यादा पुराना होनेसे सारे शरीरमें फूट निकलता है। नाक और हाथ पैरकी अंगुलियां झड़ जाती हैं। इन्द्री तो किसी कामकी नहीं रह जाती है। अतः इस दुष्ट रोगको उत्पन्न होते ही इसका उपाय करना चाहिये।

छोटी इलायचीके दाने, मुर्दाशंख, शुद्ध रसकपूर और वंगला पानका रस प्रत्येक वस्तु ६-६ माशा, गोल मिर्च छिली हुई २ तोले गायका घी १ पाव सब वस्तुओंको कूट कांसेके वर्त्तनमें डाल नीमके सोटेसे २० प्रहर (६० घंटा) घोटे और चौड़े मुंहकी शीशीमें धर ले, इसमेंसे नित्य प्रातः दो रत्ती घी वंगलापानमें खाय, उसके एक घंटा बाद दो तोला घीमें थोड़ा काली मिर्चका चूर्ण डाल कुनकुन करके पीवे और त्रिफलाके जलसे जख्मको दोनो समय धोकर यही घृत लगावे तो पूर्ण लाभ हो।

तथा-प्रथमावस्थामें बदाम और मजीठ समभाग ले रात्रिको जलमें भिगो दे, प्रातः पीसकर मिश्री मिलाकर पीवे और जख्म-पर मुर्दाशंख और कुपी कपूर सौ वार धोये हुए घीमें मिलाकर लगावे तो लाभ होवे।

यदि जख्म वगैरह बहुत बढ़ गये है तो प्रथम उचित जुलाब लेवे, पश्चात ११ दिन रक्तशोधक ओषधी पीवे (जो कि हम इसी भागमें बता आये है) तत्पश्चात् साठ घराटा खरल किया हुआ घी पानसे खाय तो निश्चय लाभ हो।

दिनमें सोना, मूत्रवेगको रोकना, भारी अन्न, अधिक गर्मपदार्थ गुड़, मैथुन, मिर्च, खटाई, तेल ये सब बंद रखना।

सूजाक (या मूत्रकृच्छ्र) के उत्पन्न होनेके भी कई कारण हैं, दूषित योनिवाली स्त्रीसे विषय करना विषयआनन्द न सह सकनेके कारण, वीर्यको अधबीचमें ही रोकलेना, निद्राअवस्थामें वारवार स्त्रीसे लपटते रहना जिससे वीर्य आकर नलीमें रुक जावे। प्रसवके पश्चात् उठी हुई स्त्रीसे (जो कि रजस्वला न हुई हो) विषय करना, रजस्वला स्त्रीसे विषय करनेसे, इत्यादि कई एक कारणोंसे यहरोग उत्पन्न होता है इसकी प्रथमावस्थामें पेशाबमें केवल जलन होती है, दो तीन दिन पश्चात् धोतीमें धब्बा पड़ने लगता है। सुजाक- इन्द्रीके भीतर भागमें जो जख्म होता है उसे कहते हैं, इसीसे पीव वहकर धोतीमें धब्बे लगते हैं, यह रोग पुराना होनेसे जलन और पीवतो कम आती है या समय २ पर आती है परन्तु पेशाबकी धार पतली पड़ जाती है, पेशाब रुक २ कर होता है, आंखें धंस जाती हैं। कमर और पेडूमें सदैव पीड़ा हुआ करती है इत्यादि।

प्रथमावस्थामें इन्द्रिय जुलाब लेना हितकर है, जिससे वीर्यका कतरा जो नलीमें रुक गया है निकल जावे।

इन्द्रिय जुलाब।

रेवाचीनी, कबाबचीनी, छोटी इलायचीके बीज, दालचीनी, धनिया, सफेद जीरा, गुलाबफूल प्रत्येक १॥-१॥ मासा, कलमी सोरा ३ मासा, मिश्री ६ मासा, सबका कपड़छान किया हुआ चूर्ण फांककर ऊपरसे पेटभर लस्सी पीवे (१ एक सेर दूध चार सेर पानी) लंगोट कस ले, खूब हाजत होनेपर एकांतमें जाकर लंगोट

खोल दे. फिर कस ले. फिर हाजत होनेपर खोल दे, थोड़ा मूंगकी दाल और भात खाना चाहिये. जब एक दो दिनमें मूत्र साफ होजाय तो निम्न औषधि सेवन करे।

रेवाचीनी, छोटी इलायचीके बीज, फिटकड़ी प्रत्येक एक एक तोला, कलमीशोरा ११। तोला, कवावचीनी २ तोला, सबको कपड़छान कर २-३ मासाकी पुड़िया बना ले नित्य ४ पुड़ियां लस्सीके साथ सेवन करे।

तथा मखाना, नीमकी भीतरी छाल घीमें तला हुआ बबूलका गोंद प्रत्येक वस्तु समभाग लेकर कपड़छान करे और ६-६माशाकी पुड़िया बना ले. प्रातः सायम् १-१ पुड़िया लस्सीके साथ खानेसे यह रोग समूल नष्ट हो जावे।

प्रथम हालतमें ग्यारह लौंग रात्रिसमय फूलसहित मिट्टीके पात्रमें भिगो दी जावे प्रातः उसे पीस ३ मासा मिश्री डाल २ तोला ठंढाई बनाकर पीवे तथा एक छटांक सफेद गेहूं और ११ दाना शीतलचीनी रात्रिको भिगो देवे प्रातः पावभर जलमें ठंढाई बना मिश्री मिलाकर पीवे तो लाभ होवे।

अंडवृद्धि।

व्यर्थ ही पिचकारियां लेते रहनेसे वातविकार हो पानी उतर आनेसे यहरोग उत्पन्न होता है,इसका शीघ्र ही उपाय करना चाहिये।

पावभर गायके दूधमें १ तोला शुद्ध अंडी तेल मिलाकर नित्य प्रातः एक महीना पीनेसे वातरोग-जनित अंडवृद्धि शीघ्रही नष्टहोती है और भविष्यमें कभी उत्पन्न नहीं होती.यदि किसी अन्य कारणसे अंड बढ़ गये हों तो कचूरको बकरीके दूधमें पीस गरम कर लगावे

तो लाभ होता है तथा तमाखुका सूखा पत्ता कुछ देर भिगो दे और कपड़ेसे खूब पोंछ उसमें अंडीका तेल लगा गरम कर बांध दे तो लाभ होता है। अंडवृद्धिवालेको ढीली धोती नही बांधना चाहिये।

सिरदर्द।

गर्मी या सर्दीसे सरमें दर्द हो तो उसमें कपूर और अजवाइन-फूल मिलाकर लगानेसे शान्त होता है, तथा एक शीशीमें नौसागर तथा कलीका चूना थोड़ा २ डालकर उसमें पानी भरकर मजबूत काक लगा दे, कुछ समय पश्चात् शीशी हिलाकर डाट खोलकर सुंघा दे, शिरशूल शांत होजावेगा तथा कौड़िया लोबान और वगड़ चावल पीसकर गरम कर लेप करे और कंडेकी आंचसे सेंक करे तो सर्दीका शूल सिरका शांत हो तथा सोंठ और अफीम मिलाकर लेप कर कंडासे सेंके तो शिरशूल सर्दी शान्त हो। सिरदर्द आधासीसी जो कि केवल आधा सिर दुखता है ज्यों २ कि सूर्य चढ़ता है दर्द बढ़ता है और ज्यों २ सूर्य उतरता है दर्द उतर जाता है, इसके लिये केसर और घीकी नस लेना चाहिये तथा पुरानी रुई जलाकर उसकी धूवां विपरीत (जिस ओरसे दर्द हो उसकी दूसरी ओरसे) सुंघना चाहिये। सिरदर्द यदि मस्तिष्क निर्बल हो जानेके कारणसे है तो बादामका हलुवा कुछ दिन खाना चाहिये। बादाम ८–१० नग तथा खशखश १ तोला रातिको भिगो दे, प्रातः उन्हें पीसकर ॐ–घीमें तले उसमें मिश्री २॥ तोला, इला-यची, वंशलोचन और केशर तीनो समभागका कपड़छान किया हुआ चूर्ण ३ रत्ती डालकर खाना चाहिये तथा ऐसी हालतमें–बादाम तेल सूंघना भी हितकर हो सकता है। सिरदर्दके वजरङ्गी बाम नामक औषधि भी अत्यन्त लाभदायक है जो लेखकके पास मिलती है (विज्ञापन आगे देखो)।

आंखोंका आना।

अक्सर धूल वगैरहमें खेलते रहनेसे बच्चोंकी आंखे अधिक आया करती हैं। १ डली फिटकड़ी पानीमें डालकर पका ले और डली निकालकर फेंक दे, उस पानीसे आंखोंको धोयाकरे और २-२ चार-चार बूंदें उसी पानीकी भीतर डाला करें। तथा सफेदा (white-Zinc) और फिटकड़ीका फूल गुलावजलमें खरलकर गोली बना ले, ये गोली थोड़ी २ पानीमे घिसकर आंजनेसे आई हुई आंखोंको शीघ्र फायदा होता है। गुड़ और चूना मिलाकर कनपटीपर थोड़ा २ लगा देनेसे आई हुई आंखोंकी लाली कटती है तथा रसौद, फूलफिटकड़ी, अफीम, हीराकसीस, मिसरी समभाग नींबूके रसमें डालकर लोहेके खरलमें खूब खरल करे और गरम करके आंखके बाहिरी भागमें लगावे तो लाभ हो।

बड़ोको चाहिये कि आखोंकी रक्षाके निमित्त पेबिलका चश्मा हमेशा लगाये रहें। आंखोंको गरम जल न लगाया करें, बिना जूता अथवा बिना टोपीके धूपमें न फिरा करे, ऊपरके दांत और बाल न उखड़ाया करें, अधिक तेल मिर्च न खाया करें इत्यादि पथ्य रखनेसे आंखे सदा ठीक रहती है। आंखोंकी रक्षाके निमित्त सिरमें ठंडा तेल और सुर्मा नित्य ही लगाना चाहिये। सुर्मा और आखकी दवा तो लेखकके पास तयार भी मिल सकती है तथा तेलका नुस्खा यहां लिखते है, बना लिया करे।

छड़ीला, नागरमोथा, खश, गुलावके फूल, नेत्रवाला, कपूरकचरी, धनिया, सुगन्धकोकिला, नह, श्वेतचन्दन, रत्नज्योति, दोनों इलायची, लौंग, चम्पावती, कंकोल, दालचीनी, बालछड़, नरकचूर, पानड़ी, जावित्री, यह प्रत्येक वस्तु एक एक तोला लेकर

जौकुट करो और एक सेर काले तिलके तेलमें मिलाकर मिट्टी अथवा कांचके वर्तनमें डालकर आठ दिनतक आंगनमें रख दो. दिनरात धरा रहे, परंतु पानी न लगे, हां ! ऊपरका ढक्कन अच्छा हो, आठ दिनके बाद छानकर उपयोगमें लावो । इसके सेवनसे मस्तिष्ककी निर्बलता, आंखोकी गर्मी, वालोंका कुसमय झड़ना, फिरास आदिको हितकर है ।

दांतोंका बिगड़ना—अधिक गन्दे रखनेसे (साफ न करनेसे) दिनरात खोदनेसे, चूना अधिक खानेसे, ठंडेके पीछे गर्म और गर्मके पीछे ठंडा पदार्थ खानेसे इत्यादि बातोंसे दांत बिगड़कर "पायरिया" नामक बीमारी हो जाती है, याने दांतोंसे पीव बहना, दांतोका हिलना, कीड़ा लगना, दर्द होना, मसूढ़ोका फूलजाना इत्यादि हुआ करता है ।

अस्तु, यदि अधिक खराबी हो तब तो "डेनटिस्ट" को (दांत बनानेवालोंको) दिखाकर इलाज करना चाहिये और मामूली हालतमें निम्न औषधियां करना चाहिये । सोनेके समय राईतेल (पहिले दांतोंको साफ करके) अच्छी तरह मसूढ़ा और दातोंपर बाहर भीतर मलो और कुरला करके सो जाओ, ऐसा करनेसे हिलते हुए तथा दुखते हुए दांत कुछ दिनमें बैठ जाते हैं । ककोरका दातून भी हितकर होता है । तथा फिटकड़ी ४ तो० स्याह-मिर्च १ तो० कपड़छान करके रख लो और नहानेके समय नित्य मंजन करनेसे दांत सुरक्षित रहते हैं, तथा १ गिलासपानीमें २ बूंद करबोनिक एसिड (Carbolic acide) डालकर कुल्ला करनेसे दांतका दर्द शांत होता है ।

:५

ज़ख़्म लगना-जख्म यदि ऐसा है जिससे खून न बहता हो तो उसपर गीली पट्टी बांधना चाहिये और उसे कुछ २ देरमें तर करते रहना चाहिये, जिससे कुछ समयमें उसका दर्द शांत हो जावेगा। यदि ऐसी चोट हो जिसमेंसे खून बहता हो, परन्तु हो छोटी तो उसपर तुरंतही पेशाब कर देना चाहिये तथा मिट्टीतेल या स्प्रीट डाल देना चाहिये तो दर्द मिटता है और पकता नहीं। जख्म लगते ही यदि उसमें देशी शक्कर भरभर पट्टी बांध दी जाय और २-३ दिनतक पानी बचाकर नित्य शक्कर पलट दी जावे तो जख्म भर जाता है। यदि बड़ा जख्म लगा हो तो उसमें रेशम अथवा वस्त्र ही जलाकर उसकी राख भर दी जावे और टिंचर डाल कर कोई किस्मका पत्ता ऊपर रख पट्टी बांध देनेसे जख्मके बिगड़नेका भय नहीं रहता परन्तु २-४ दिन पानी बचाना जरूरी है। यदि किसी असावधानकी कारण पक भी जाय तो परमेगनेट पोटास मिले हुए गर्म पानीसे जख्मको धोकर पुनः इसी प्रकार कपड़ाकी राख भरकर टिंचर डालना उत्तम है। जख्मोंपर टिंचर आयडीन (Tincture Iodin) डाला जाता है। जख्मको गन्दा नहीं होने देना चाहिये उसके गंदे होनेसे उसमें एक प्रकारके बारीक २ जन्तु पैदा होते हैं, वे जख्मको बढ़ाकर हड्डियोंतक पहुंच देते हैं जिससे वह नासूर पड़ जाता है।

नासूर।

नासूरपर मक्खीके मैलाकी पट्टी (बत्ती) चढ़ानेसे लाभ होता है। बत्ती बनाकर नासूरमें दबादे १-२ दिनमें जब वह ऊपर आवे उसे

हटाकर दूसरी वत्ती चढ़ा दे तो कुछ दिनमें अवश्य लाभ होता है मक्खीका मैला छप्परोमें लटकती हुई रस्सियोंमें पाया जाता है।

धनाढ्य लोगोंको जिन्हें कि ईश्वरने इस योग्य वनाया है गरीबोंकी रक्षार्थ वांटनेके लिये कुछ औषधियां अपने पास अवश्य रखना चाहिये।

वजरंगी वाम-शिरदर्दकी अक्सीर दवा मूल्य		।)
आई आंखकी दवा १२ गोलीकी डिब्बी	"	॥)
टिंचर आयडिन १ औंसकी शीशी	"	।-)

मोती, ममीरा, भीमसेनी कपूर, सौ वर्षकी पुरानी चमेलीकी जड़ आदि अप्राप्य वस्तुओंका वना धुंधा, फूली-जाला, माड़ा, ढरका, मोतियाविन्द आदिको फायदा पहुँचानेवाला शुर्मा तो० १॥)

जो महाशय इकट्ठा मंगाना चाहे कमीशन वगैरह पत्रद्वारा तै करें।

ए० एल० गुप्त।
पो० नेवरा सी० पी०
(रायपुर जिला)

अमृतौषध।

शुद्ध देशी कपूर ४ भाग, अजवाईनफूल २ भाग, सत पीपरमेण्ट १ भाग तीनो वस्तु मिलाकर शीशीमें रख दो, कुछ देरमें यह स्वयम् ही एक प्रकारका तेल वन जायगा। इसकी प्रकृति शीतोष्ण होगी अर्थात् इसे शीतल औषधिमें मिलानेपर इसकी प्रकृति शीतल और गर्म औषधिमें मिलानेपर गर्म होजावेगी। जैसे सुजाकवालेको खिलाना हो तो चन्दनतेलमें मिलाकर और ज्वरवालेको खिलाना हो तो पानके रसमें डालकर (इसकी मात्रा २ से ३ बूंदतक हो सकती है)

उचित अनुपानसे देनेपर यह प्रातः पेटसम्बन्धी, सिरसम्बन्धी, सर्वांगसम्बन्धी रोगोंपर लागू हो सकती है, परन्तु कपूर शोधकर डाला जावे। पहिले कपूरको केलाकंदके रसमें अच्छी तरह खरल करे और छायामें सुखाकर डाले. तीनो वस्तु सीसीमें मिला लेने पश्चात जो नीचेमें गाद बैठ जावे उसे दूसरी सीसीमें निथार लेना चाहिए।

केश-रोग।

तिलके फूल और गोखरू पीसकर लेप करनेसे केश बहुत बढ़ते तथा चमकीले होते है। हाथीदांतका चूर्ण तथा रसौद बकरीके दूधके साथ लगानेसे बीस दिनमें गंज रोग अच्छा होता है। यदि गंजरोग बहुत वृद्धिव होगया हो तो जूतेका तला जलाकर रेंडीतेलमें मिलाकर लगानेसे गञ्जरोग अच्छा होता है और बाल जमते हैं। यदि केश झड़ने लगें-तो घुंघचीको जलमें पीस शहत मिलाकर लगानेसे बालझड़रोग दूर होता है। भटकटैयाको पीसकर शहतमिलाय लेप करे तो इन्द्रलुप्त रोग द्वारा झड़े हुए केश पुनः जम जाते हैं। तथा कच्ची फिटकड़ी २ मासे, सङ्गासिख १ तो०, नौसागर ६ मासा, माजूफल २ तो० (माजूफलको भून लेवे) सब वस्तुओंको बारीक पीसकर लोहेके खरलमें लोहाकी मुसलीसे घोटे और आंवलेके जलमें मिला बालोंपर लगा दे, १ प्रहर बाद आंवलाके ही पानीसे धो डाले तो बाल काले होवें। आंवलोको पीसकर रख लेवे, नहानेके समय पानीमें भिगो बालोंपर रगड़ लिया करे और धोकर नहालेनेसे नेत्र शीतल रहें, मगजमें ताकत आवे और बाल काले होते है। गर्म प्रकृतिवाला मनुष्य यदि मट्ठाके साथ लगावे तो और उत्तम हो।

कृष्ण-(बधाई) गजल।

— भक्तोंके हित ब्रजमें आकर
अवतार लिया बंशीवालेने।

❀ ससुराल-रहस्य ❀

प्रथमहि जलवा श्रीदेवकीको दिखला दिया वंशीवालेने ॥
जब शंख चक्र औ गदा पदम
धारण करके दर्शन दीन्हा ।
अद्भुत प्रकाशमें सूरजको शर्मा दिया वंशीवालेने ॥ १ ॥
वसुदेवके बंधन खुलनेको—
दरवाजे जेलके सभी खुले ।
घर नन्द बबाके जानेको फरमा दिया वंशीवालेने ॥ २ ॥
धर सूपमें जब वसुदेव चले—
घनघोर घटा बिजुली चमके ।
रिम झिम मेहा बरसे बरसा दिया वंशीवालेने ॥ ३ ॥
प्रभुके पद्म-पंकज परसनको—
जमुनाजी जब बढ़कर आई ।
तब अपने चरण बढ़ा करके समझा दिया वंशीवालेने ॥४॥
जब नन्द बबाके घर पहुंचे—
तब वांय वांय रोवन लागे ।
आनन्दका डंका ब्रज घर घर बजवा दिया वंशीवालेने ॥५॥
जब कंस राजाको खबर पड़ी—
तन मनकी सुधि सगरी बिसरी ।
कहे "कृष्णानंद" असुरोका दिलदहला दिया वंशीवालेने॥६॥*

इति शुभम् ।

श्रीहरिः ।

अर्थात्

दशवां भाग

गंजीफा-मनोरञ्जन ।

सर्व शक्तिमान जगन्माता पार्वती सहित जगत्पिता श्रीमहादेवजी, जो अनेक विघ्न वाधाओंके नाश करनेवाले है उन्हें सर्व प्रथम साष्टांग प्रणाम कर मुकलावा-बहारका दशम भाग संकलित करता हूँ और आशा है कि पाठक अन्य भागोंकी भाँति इसे भी सप्रेम अपनाएंगे ।

हम सबकी ओरसे धन्यवाद उन महोदयोको है जिन्होंने ताश (५२ पत्ते १३-१३ प्रकारकी चार जातिमें) निर्माण किये जिसके

पीछे आज देश विदेशमें बड़े २ कारखाने चालू हैं तथा कितने ही दुकानदार, मदारी, तथा बेकार मनुष्योंका निर्वाह होता है और जो मनोरंजनकी सामग्रियोमें सर्वोत्तम मानी जाती है।

निश्चय है लोगोंने अपनी कल्पना शक्तिसे इन्हीं ५२ पत्तों द्वारा सेकड़ो नहीं हजारों चमत्कारिक खेल बनाये, पुस्तकें लिखीं तथापि धन्यवादके पात्र तो इनके आदि निर्माणकर्ता महोदय ही होसक्ते हैं।

यों तो तासके बहुतसे खेल हैं जिनमें कई प्रकारके तास पहिलेसे काटकर छीलकर बनाकर रखना पड़ता है परन्तु मैं यहां-पर बिल्कुल सरल सरल १०-१२ कौतुक केवल इसी अभिप्रायसे लिखता हूं कि चार दोस्तोंमें जब गपशप करने बैठें तब इन कौतुकों द्वारा मनोरंजन करलिया जावे और साथमें बहुतसी तासें भी न लादनी पड़ें, न कि किसी भाईको मदारी या प्रोफेसर बनाने-नेके विचारसे।

पहिले इसमें बताये हुए खेलका एक एक अक्षर पढ़ो, जब ठीकसे समझमें आजाय तो उस खेलको १०-१५ या २० बार खूब ट्राईकरो जबतक कोई भी खेल अच्छी प्रकार सरल न होजाय चार मित्रोंमें बैठकर दिखानेका साहस कदापि न करो ऐसा करनेसे सिवा लज्जित होनेके कुछ लाभ नहीं हो सकता।

ऐसा कोई भी खेल नही है जो कठिन हो लेकिन अभ्यासकी सबमें जरूरत है, अभ्यास करने पर बड़ी बड़ी कठिनाइयां हल हो जाती हैं फिर ये तो तुच्छ बातें हैं अपने जाने हुये खेल छोटे बच्चोंको मत सिखावो और खेल करनेके समय नीचे लिखी बातोंको ठीकसे स्मरण रखो।

(१) जबतक ठीक तौरसे सरल न होजाय, हरगिज उसे दिखानेका साहस मत करो।

(२) अपने पीछे दायें बायें अथवा बिलकुल समीप किसीको बैठने या खड़ा मत रहने दो।

(३) एक खेलको कई बार मत दिखावो

(४) यदि उसी खेलको देखनेके लिए लोग आग्रह करें तो कुछ हेरफेर करके दुबारा दिखावो।

(५) पहिले हलके और फिर क्रमवार ऊंचे दीखावो।

(६) दिखानेवाले खेलका महत्त्व पहिलेसे मत कह दो कि हम अमुक खेल करेंगे।

(७) खेल दिखाते समय चुप मत रहो, कुछ कुछ कहते रहो जिससे दर्शकोंकी सावधानी भंग रहे लेकिन बातें नपी तुली हो. बहुत ज्यादा न हो और न किसी खास आदमीके प्रति व्यंग या दिल्लगी हो, हां यदि हो सके तो अपने चेहरेके भावको ऐसा बना रखो जैसे तुम्हारे किसी देवताकी साधना हो।

(८) खेल करते समय बार बार तासों की ओर मत देखो क्योंकि ऐसा करनेसे प्रायः सबही की दृष्टि उसीओर पड़ेगी और चतुराई भंग हो जायगी।

(९) अपने तास दुसरेंके हाथमें मत दो अगर देनाही पड़े तो ज्यादा देर मत छोड़ो।

(१०) यह और भी अच्छा हो कि पत्ता निकालनेके समय दर्शक से कोई गिनती गिनावे या फूलका नाम पूछे या खुद कुछ मंत्रसा बोलता रहे

(११) तास दिखाते समय बहुत आतुर मत होवो क्योंकि अक्सर ऐसा हुआ ही करता है।

(१२) यदि कोई खेल बिगड़ भी जाय तो कदापि हिम्मत मत हारो, कुछ हेर फेर करके दिखादो अगर फिर भी न जमे तो कहदो आज अच्छा चन्द्र नहीं है।

(१३) यदि कोई आदमी बीचमें दखल दे तो कह दो कि भाई हम तुम्हारे मुवाफिक मदारी तो हैं नही हमतो केवल मनोरंजन करते हैं, यदि आपकी इच्छा है तो आपही दिखाइये हम पत्ते छोड़ देते हैं और नही तो मेहरबानी करके चुप बैठिये और साथ ही इतना भी कह दो कि हम नही जानते थे कि " चनाही भाड़को फोडने चलेगा" या "गुरुसे चेला बढ़जायगा " और अगर किसी प्रकार दखल देने वालेको झेंपा सको तो और भी उत्तमहो उसे बोलते ही झेंपा दो।

(१४) तासोंकी गिनती एक्कीसे दहला तक तो एक्कीको एक और दहलाको दस ही गिनना चाहिये इसके आगे गुलाम ग्यारह मेम बारह और बादशाहको तेरह गिनना चाहिये।

फेंटना।

तासोंको ऊपर नीचेसे लेकर बीचमें रखना अथवा बीचसे खींच कर ऊपर या नीचे रखना इसे फेंटना कहते हैं इससे लगे हुवे तासोंका क्रम बिगड़ जाता है।

काटना।

गड्डीमेंसे कुछ तास खींचकर ऊपर रखते जाना इसे काटना कहते हैं, चाहे जितनी बारभी करें ऐसा करनेसे लगे हुये तासोंका

क्रम नही बिगड़ता प्रत्युत सहायता ही मिलती है, लेकिन बीचसे बिलकुल पत्ते न खींचें।

पास करना।

किसी भी निश्चित तासको सफाईसे ऊपर ले आना इसीको पास करना कहते हैं इसमें हिकमतसे काम लेना चाहिये।

अंटियाना।

किसी भी (और कितनी भी) तासको दर्शकोंकी नजर बचा हथेलीमें दवा लेनेको अंटियाना कहते है।

दिखौवा फेंट।

इसका मतलव यह है कि असली (इष्ट) तास गड़वड़में न पड़े और देखनेवालोको मालूम पड़े कि गड्डी खूब पीसी जा रही है। पहिले निश्चित तास पास करके ऊपर ले आवो फिर फेंटो इस फेंटकी दो क्रियाएं है।

(१) गड्डी बांये हाथमें लेकर दाहिने हाथसे फेंटते वक्त तुम्हारे दाहिने हाथकी तर्जनी (अंगूठाके पासवाली) अंगुली तासकी गड्डी के ऊपर (जहां तुम्हारी इष्ट तास है) रहे और नीचे या बीचसे पत्ता खींचते वक्त तर्जनीके सहारे ऊपरका पत्ता भी खसक आवे और नीचेकी खींची हुई पत्तियोंके साथ वह ऊपरकी ऊपर चला जाय चाहे जितनी वार फेंटो लेकिन सफाई और फुरती से फेंटो जिससे कोई नजर न जमा सके।

(२) यह फेंट उससे ज्यादा अच्छी है लेकिन कुछ कठिन है बहुत देरके अभ्याससे सरल होती है।

इष्ट तासको पास करके ऊपर ले आवो और फेंटो कि नीचे या बीचमें कुछ तास खींचकर ऊपर रखो लेकिन जरा ठहरो

यदि इसप्रकार रखदोगे तो तुम्हारा इष्ट तास जो ऊपर रखा है गुम हो जायगा, सुनो-नीचेसे तास खींचकर ऊपर रखते समय दाहिने हाथके अंगूठा और मध्यमा अनामिका और तर्जनी अंगुलियोंके सहारेसे बांये हाथमें बचे हुवे तासोंमें कुछ तास इस सफाईसे उठावो कि जो तुम्हारे दाहिने हाथमें पहिलेसे खींचे हुवे पत्ते हैं उसीके नीचे ये भी तास रहें लेकिन उनमें मिलने न पायें उनमें और इनमें करीब तिल भरका फर्क रहे क्योंकि वही पर तुम्हारा इष्ट तास है जिसे ऊपर लगाना है।

अब दाहिने हाथके तासोंको बायें हाथकी अंगुलियोंसे फेंटते जावो जब नीचेसे खींची हुई पत्तियां समाप्त होजांय (इस बातको जाननेके लिये हाथकी अंगुलियां ही काफी हैं नजर नही रखना चाहिये) और केवल पीछे उठाई हुई तास ही बचें उन्हें सबकी सब ऊपर रख दो तुम्हारा इष्ट तास ऊपर आगया अवश्य ही पढ़नेमें यह आपको बेढब जान पड़ेगा लेकिन ठीकसे समझने पर बिलकुल सरलता जान पड़ेगा और यदि दिमागसे काम करेंगे तो इस एक फेंट द्वारा ही आप कई प्रकारके खेल दिखा सकेंगे।

खास ट्रिक।

इसका मायने यह है कि पत्ता-दर्शक तुम्हारी इच्छानुसार खींचे और मनमें समझे कि मैंने अपनी इच्छानुसार खींचा है जिस तासको तुम खिंचवाना चाहो उसे सबसे नीचे रखो, खींचने वालेके सामने नीचेसे आधे पत्ते काटकर (खींचकर) ऊपर रखो लेकिन इन्हें बांये हाथमें बचे हुवे पत्तों पर रखते समय उन पत्तोंसे जौभर बढ़ाकर रखो क्योंकि इन्हीं पत्तोंके नीचे तुम्हारा देखा हुआ तास है, अब तुम बाये हाथके अंगूठेसे तासोंको दाहिने

हाथमें सरकाना शुरू करो; दर्शकसे कहो कि एक पत्ता आप चाहे जहांसे खींचलो जब वह खींचनेको हाथ बढ़ावे तुम पत्तोंको सफाईसे सरकाते रहो (याने उसे पत्ता पकड़नेका अवकाश मत दो) और जहां तुमारा इष्ट तास है सफाईसे उसे एक जौ और बढ़ा कर ५ सेकंडके लिये रुको (लेकिन तुम्हारा रुकना और तासका आगे बढ़ाना किसीके समझमें न आवे) खींचने वाला निश्चय वही तास खींचेगा, कदाचित वह उस तासको खींचता हुवा न जान पड़े तो तासोंको मिला दो और कहो ठहरिये अबकी बार खींचिये ।

ऐसा कह सफाईसे बीचकी तास देखकर वही तरकीब लगावो अबकी बार निश्चय तुम्हारी विजय है । यद्यपि यह कार्य भी बड़ा बेढब जान पड़ता है लेकिन अभ्यास करने पर किंचित भी असाध्य नहीं है, इसी एक ट्रिकपरसे लोगोंने पचासों खेल लिखडाले हैं ।

इस ट्रिक द्वारा होनेवाले कुछ खेल ।

(१) पत्ता खिंचाकर नब्ज देखकर बताना *

(२) पत्ता खिंचानेके पहिले कागजपर पत्तेका नाम लिखना *

(३) पत्ता खिंचाकर किसीकी जेबसे निकालना (याने जो तास खिंचाना हो उसी नमूनेका तास पहिलेसे दुसरेकी जेबमें रखे)

(४) पहिले दर्शकका पत्ता दुसरेके और दुसरेका पत्ता पहिले के हाथमें बदल जाना पहिले खासट्रिकद्वारा पत्ता खिंचा कर उसको ऊपर रखाले और दिखौवा फेंटकी दुसरी क्रिया द्वारा खूब फेंटडाले और तास बदलनेवाली क्रियाद्वारा पहिले

---

* जहां ऐसा चिन्ह है वह खेल एकरंगे पत्तों द्वारा भी होता है ।

खिचाया हुआ पत्ता दुसरेके हाथमें और दुसरेको दिखाया हुवा पत्ता पहिलेके डाथमें देदेना चाहिये। अब पहिलेको पूछे तुमने कौनसा पत्ता खींचाथा वह जिस पत्तेका नाम लेगा वह दुसरेके हाथमें और दुसरेका देखा हुवा इसके हाथमें ऐसा देखकर बड़ा चमत्कार होगा।

५) खास ट्रिकद्वारा एक पत्ता खिचाकर पासकरके ऊपर ले आवो और दर्शक हाथमें गड्डी लेकर उसे दबावे परंतु दबाते समय गड्डीका मुंह ऊपर याने दर्शकके सामने रहैं और अपने बायें हाथकी तर्जनी अंगुलीको मोड़कर तासोके नीचेके कोनेमें और उसी अंगूठेको ऊपर कोनेमें दबावे याने तासके एकही कोनेमें नीचे साईजमें उसको मुड़ी हुई तर्जनी अंगुली और ऊपर साईडमें अंगूठा रहै अब तुम उसके बायें पहुंचेको अपने हाथसे पकड़लो और गड्डीके सामने कोने पर दाहिने हाथकी अंगुलियोसे एक चपत मार दो सारी पत्ती गिरजावेंगी केवल उसका देखा हुवा पत्ता जो सबके नीचे है उसके हाथमें रह जावेगा लेकिन पहिले भली भांति समझकर अच्छा अभ्यास कर रखना चाहिये।

(६) पत्ता खिंचाकर उलटा डाथमें लेकर दुसरे हाथमें टटोल कर पत्तेका नाम बतादेना। ❋

तास बदलना।

पहिले दाहिने हाथके अंगुठा और तर्जनी अंगुलीके सहारे दो पत्ते पकड़ो लेकिन उन दोनोंमें केवल तिलभरका अंतर हो. सामनेसे देखनेवालेको ये समझमें आवे कि एकही पत्ता है, अब तुम

सामने बैठे हुवेको दिखादो जब वह देखले तुम उसे पलक मारते ही दाहिने हाथको सबके सामनेही बायें हाथपर (जिसमें तासकी गड्डी है) लेजाकर जफाईसे एक पत्ता उसपर छोड़ दो जो उन्होंने देखा है और दूसरा पत्ता उसके हाथमें उलटा देदो।

यह क्रिया इतनी जल्दी होती है कि देखनेवालोंके कुछभी समझमें नहीं आता. बस इसी प्रकार पहिलेका देखाहुवा पत्ता दुसरेको धरादो, पत्ता बदलनेके समय बहुत फुरती हो और अपना शरीर कुछ झुकाये रहना चाहिये कैसाभी ताड़नाज हो यदि यह क्रिया उसे पहिलेसे मालूम नहीं है तो कभी ताड़ नहीं सकता, इसी क्रियाद्वारा चतुर लोग कितनेही खेल करते हैं।

गाय दुमे पत्ते।

तासोंकी गड्डीके बीचोंबीच आड़े और खड़े दोनों ओरसे सुतलीसे इस प्रकार कस दो कि तास हिले नहीं और तेज लोहेकी रेती (कानस) से इस गड्डीके एक ओरके दोनों कोनोंको आध तिलके बराबर रगड़ दो ताकि उस साईडकी चौड़ाई दुसरे साईडसे कुछ कम होजाय जिससे कि बिना रेता सिरा घुमाकर रेते हुवे की ओर कर देनेसे टटोलने पर पता लगजाय लेकिन जल्दी २ के कारण इतने ज्यादा न रेत डालना कि बिना रेता हुवा पत्ता इधर आनेपर आंखसे सहजही दिखाई पड़े, रेते हुवे पत्तोंमें बिना रेते पत्तेको अपने दाहिने हाथका अंगूठा और तर्जनी अंगुली ठीक तौरसे पहिचान सकेगी, खेल दिखानेके पहिले ठीकसे टटोलकर रेते हुवे सारे कोने एक रूख करलेना चाहिये इस प्रकार बने हुवे पत्तो द्वारा अच्छे २ चमत्कार किये जासकते है लेकिन दिमागकी जरूरत है।

पहले तासोंका रेता हुवा सिरा अपनी ओर रखें तथा साबुत सिरा सामने करके खेंचने वालेको १ पत्ता उसकी इच्छानुसार खीचनें दो, जब वह खीचकर देखने लगे तुम फौरन तासकी गड्डीको घुमाकर उसमें पत्ता रखालो याने उसके पत्ते वाला साबुत सिरा तुम्हारे रेते हुवे सिरोंकी ओर होगया। अब तुम सहजमें ही इसका पत्ता लगा सकते है।

गौडुमें पत्तोंद्वारा होनेवाले कुछ खेल।

(१) पत्ता खीचाकर मिलाकर उसे ऊपर ले आवे और देखकर मिलादे (दुसरा न समझे) और गड्डी उसके हाथ पकड़ा कर नब्ज देखकर बतादे।

(२) अपने हाथोंको तास समेत रूमालसे ढांकलेवे और किसीसे अपनी आंखें बन्द कराकर पत्ता निकाल देना।

३) पत्ता खिंचाकर गड्डीमें रखाले और खूब फेंटकर दाहिने अंगूठा और तर्जनीद्वारा टटोल कर जिस जगह वह तास हो वहां जमाले और ऊपर हाथ कर तासोंको ऊंपरकी ओर उछाल दे वही पत्ता हाथमें रह जायगा।

४) १२ चित्र और १४ पत्ते सादे इस प्रकार एककी आड़में एक रखे याने चित्र और सादे पत्ते दो दो एक स्थानमें न रहें लेकिन इसपर पूरा ध्यान रखो कि रेतीसे घिसे हुवे किनारे सब चित्रोंके एक ओर तथा सादे पत्तोंके दूसरी ओर रहें अब इन पत्तोंको दर्शकोंके हाथमें दे दो सब देखलें फींसदें वगैरह बादमें तुम पत्तोंको हाथमें लेकर और फेंटलो तथा तासके दोनों सिरो पर दायें और बांये हाथका अंगूठा

और अंगुलियां धीरेसे दबाकर सफाईसे झटका दो सब चित्र व सादे पत्ते अलग अलग हो जायंगे। अपने दायें वायें बैठे हुवे आदमियोंमेंसे दो आदमीको दोनो हाथोंसे पत्ते देदो वे लोग देखकर बड़े अचंभित हो जायंगे। लेकिन पत्ते खींचकर अलग करनेके समय बहुत फुरती करना चाहिये ताकि कोई भांप न सके।

तास जमानेका क्रम नंबर १

पहिले नीचे लिखी कविताको याद करो, उसका मतलब समझो और उसके अनुसार पत्ते जमाओ यह क्रम भी बहुतसे बड़े बड़े खेलोंकी जड़ है।

आदम साह के दम दो साथी,
नायक पांच औ बारह हाथी।
चार एक खट है हलकारे,
हुकुम पाय खग ईटन मारे।

अर्थ-आदम=अट्ठी-साह=बादसाह-के=तिक्की दस=दहला-दो=दुक्की—साथी=सत्ती-नायक=नहला-पांच=पंजी-बारह=मेम-चार=चौकी एक=एक्की-खट=छक्की हलकारे=गुलाम-हुकुम=हुकुम-पाय=पान-खग=चिड़ी-ईटन=ईंट ।

अब इसको इस प्रकार जमावो कि पहिले अट्ठा उठावो और पहिले हुकुम रंग है इसलिये हुकुमको उसे बांये हथेली पर औंधा रख दो बादमें बादशाह उठावो, दूसरा रंग है पान इसलिये पानका और हथेली वाले पहिले पत्तेपर धरो, बादमें तिक्की उठावो और तिसरा रंग है चिड़ी इस लिये चिड़ीकी और पहि-

लेकी दोनो पत्ती पर औंधी रखो बादमें दहला उठावो चौथा रंग है ईंट इसलिये ईंटका और हाथकी तीनो पत्तीपर औंधा रख दो फिर दुक्की उठावो, हुकुमकी सत्ती पानका नहला चिड़ीका पंजा- ईंटकी फिर मेम हुकुमकी चौकी पानकी एक्की चिड़ीकी छक्की ईंटकी, फिर गुलाम हुकुमका फिर अट्ठा आया तो पानका इसी प्रकार ऊपर बताये क्रमके मुताबिक एक पत्ता एक एक रंगका उठाकर ७२ पत्ते जमालो इसे चाहे जितना काटलो (लेकिन फेंटो मत) क्रम कदापि नही बिगड़ेगा ।

इसी क्रम द्वारा होनेवाले कुछ खेल ।

(१) कोई आदमी अपने मनसे पत्ता उठाले और उसका नाम बता देना ।

(२) कौन तास किस गिनती पर है बता देना ।

(३) तासोको हाथोसे टटोल टटोल कर बता देना ।

(४) गड्डीको उल्टी रखकर एक एक तास बताते जाना ।

(५) कुछ पत्ते लोगोको देकर दूर हटकर उनके नाम बताना लेकिन वे पत्ते उठाले तब उनको उलट पुलट दो जब दूसरा पत्ता उठावे तो अगर ऊपरमें उठावे तबतो कोई दलीलही नही अगर बीचसे लेनाचाहे तो २ थप्पी दना दो वह उठाले अथवा फैला कर खिचादो लेकिन पत्ता लेनेके बाद अपनी चालाकीसे अपनी सीट ज्यों की त्यों करलो और उसने पत्ता लेकर वहां ही रखा जहांका वह पत्ता है। यदि तुम अपनी सीट बराबर कर चुकेहो तो वह पत्ता एकदम ऊपर या एकदम नीचे रखदो।

तास जमानेका क्रम नंबर २

तासके चारो रंग अलग २ छांटकर वादसाहसे एक्की तक क्रम वार चारों गड्डी वनालो और उसमें पहिले ईंटकी गड्डी पृथ्वी पर चित्त रखो उसपर चिड़ीकी, उसपर पानकी और उसपर हुकुमकी रखदो।

अब शुरूमें जो हुकुमका वादसाह है उसे उठाकर वांई हथेली पर औंधा रखिये उसके वाद हुकुमकी मेम वादसाहके नीचे रखो और फिर वादसाहको ऊपरसे नीचे करदो। वादमें हुकुम गुलाम उठाकर नीचे घुसेडिये और ऊपरसे लेकर मेमको नीचे करदो इसके वाद हुकुमका दहला नीचे घुसेड़ कर और ऊपर वाले वादसाहको लेकर नीचे कर दो।

इस प्रकार सीटमेंसे एक पत्ता उठाकर हथेलीकी तासोंमे नीचेकी तरफ रखो और जो हथेलीमें तास हैं उसमेसे ऊपर का पत्ता उठाकर सवसे नीचे रखते जावो याने वायें हाथमें तास औंधी रहै सीटमेंसे तास लेकर उनके नीचे रखो और उसमेंकी एक ऊपर वाली तास नीचे घुसेड़ दो।

इस प्रकार जव ५२ पत्ते जम जांयगे तव आपको सबके ऊपर हुकुमका सत्ता मिलेगा, थोड़ी समझमें गलती हो सकती है ठीकसे सोचकर क्रम लगाइये।

इस सीटको तुम दर्शकोंके सामने वांयें हाथमें लेकर औंधी रखिये एक पत्ता नीचेसे खीचकर सीटके ऊपर रखिये और दुसरा खीचकर जमीन पर डालिये सब पत्ते क्रमवार निकलते आवेंगे, बिना क्रिया जाने कोई १३ पत्ते भी नही जमा सकता ५२ की तो बातही और है।

यही खेल कई प्रकारसे होता है। दो पत्ता ऊपर रखकर और एक पृथ्वी पर धरकर तथा एक पत्ता ऊपर रख कर दो जमीन पर डालकर याने कुंजी समझादी गई है चाहे जैसे जमाकर दिखा सकते हैं।

एक रंगे पत्ते।

अक्सर कई कंपनियां ऐसे पत्ते बेंचती हैं जो केवल एकही जातके ५२ पत्ते होते हैं ये खेलके लिये अत्युत्तम होते हैं याने उनसे भी कई प्रकारकी चालाकियां की जाती हैं।

१) एक पत्ता खिंचाकर उसमें मिलवाले नबज देखकर बतादे अथवा अपनी आंखोंको बन्द कराकर एक पत्ता देदे और नाम बतादे।

(२) किसी आदमीको एक पत्ता खिंचा कर उसीमें मिलवा कर खूब फैंट डाले और छय छय पत्तीकी छै पंक्ति जमीन पर औंधी लगादे और उसके हाथसे ६ कौड़ी अथवा ६ दाने वाला पासा अथवा ६ नंबर तक वाली फिरकी फिरवा कर बोले कि तुम्हारा पत्ता तुम्हारा पासाही बता देगा अच्छा उसे बोलो कौड़ी (या पासा या फिरकी जो भी हो) फेंके पहिले मानो चार पड़े तो बोलो यह तो पंक्तिका नंबर हुआ याने तुम्हारा तास चौथी पंक्तिमें है फिर फेंकवाओ जो नंबर पड़े उसी पत्तीको अलग धरदो मानो दुबारा फेंकनेसे तीन पड़े तो तुम यूं कहो कि चौथी पंक्ति की तिसरी पत्ती है उसे अलग कर दो।

अब तुम उन तासोंको सफाईसे उठाकर उस सीटको गुमकर दो और उसी नमुनाकी दुसरी पूरी सीट हाथमें लेलो (लेकिन उसमें वह पत्ता पहिलेसे कम रहे जिस पत्ते वाली सीटद्वारा तुम खेल कर रहे हो) और बोलोकि देखो भला यही तुम्हारा पत्ता है या नहीं तुम्हारे ही पौबारह हैं।

लेकिन सावधान । ऐसे पत्ते तुम्हारे हाथ गिरकर हवासे उड़कर या किसी कारण उलट होकर किसी की नजर न पड़ जांय याने खेल दिखातेही इस सीटको फौरन छिपा दो।

तासोंके दाने गिनना ।

दर्शकके हाथमें तासकी गड्डी देदो (अगर तास कम ज्यादा भी हो तो भी हरज नहीं) चाहे जितने तास हो दर्शकसे बोलो कि जितनी उसकी इच्छा हो उतनी गड्डियां बनावे और चाहे जितने दानेकी मानलो दर्शकको ११ दानोंकी गड्डी बनाना है तो पहिले उनके सामने सत्ती आई तो उसे सात गिनकर जमीन पर औंधी रखदे और उसपर चार पत्ते दुसरे रखकर ग्यारह करदे फिर उनमें सामने तिक्की आई तो उसे जमीन पर औंधी रख उसपर ८ पत्ता दुसरे रखकर उसे ग्यारह करदे इस प्रकार जितनी उसकी इच्छा हो उतनी गड्डी बनाले और बचेहुये तास तुम मांगलो और उनसे पूछो कितने २ दानोंकी कितनी गड्डियां बनाई हैं वह तुमसे कहे कि ग्यारह २ दानोंकीदस गड्डी बनाई हैं तो तुम ग्यारहमें एक मिलाकर बारह करो और गड्डीयों की संख्या दससे गुना करो तो १२० हुवा और उसमे बची हुई तास जोड़कर ५२ घटावो और बता दो उसकी सब गड्डियोंके नीचे उतनेही दाने होंगे, यदि तुमने दर्शकको ५२ तास न देकर कुछ कम ज्यादा दी हैं तो उतनीही घटा कर बतावो।

पुनश्च-दर्शक जितने दानेकी गड्डी वनावे उसमें तुम १ मिलाकर उसने जितनी गड्डी वनाई हैं उससे गुना करो और वची हुई तास उसमें जोड़ो तथा तुमने जितने तास गड्डीयां वनानेको दिये थे उतने घटा कर वतादो विलकुल ठीक उत्तर आवेगा।

खेल पहिला।

योतो इन ५-६ क्रियाओं द्वारा ही वहुत ज्यादा खेल वन सक्ते हैं फिर भी हम यहांपर कुछ खेल ऐसे लिख देते हैं जो पाठकोंको ध्यानमें रखना जरूरी है।

यह खेल ९-१५-२१-२७-३३-३९-४५-५१ तासोमें होता है चाहे जितनेमें करें।

तुम तास अपने हाथमें लेकर जमीनपर डालना शुरू करो तीन गड्डी वनावो, तास सवचित्त हों, पहिली तास पहली गड्डीमें दुसरी तास दुसरीमें और तिसरी तास तिसरी गड्डीमें पडे इसी प्रकार सिलसिले वार डालते जावो, दर्शकसे पहिले ही कह दो कि हम जमीनपर पत्ते डालते है, तुम एक पत्ता अपने मनमें लेलेना- जव सव पत्ते डाल चुको उससे पूछो कि उसने कौनसी गड्डीमें तास सोचा है, जिस गड्डीमें वह वतावे उसे तुम वीचमें रखो और दोनो गड्डियोंको ऊपर नीचे रखकर फिर उसीप्रकार एक पत्ता तीनो जगह डालते हुये तीन गड्डियां वनावो और उससे पूछो कि तुम्हारा पत्ता कौनसी गड्डीमें है वह जिसमें वतावे उस गड्डीको वीचमें रख फिर एक वार उसी प्रकार विभक्त करो और उससे पूछो वह जिस गड्डीमें वतावे उसीके वीचवाला पत्ता उसका हैं मानो तुम २७ पत्ते पर खेल कररहे हो तो तिसरी वार जिस गड्डीमें दर्शक वतावे उस गड्डीमें ५ वां पत्ता उसका होगा चाहे तो योंही उठाकर दे दो, चाहे उस गड्डीको वीचमें रख कर, किसी दुसरी क्रियासे निकालदो।

खेल दुसरा।

यह खेल जमीनपर पत्ते फैलाकर ९—१६—२५—३६ और ४९ पत्तों द्वारा किया जाता है, मानो तुम यह खेल २५ पत्तोंसे दिखा रहे हो तो पत्तोंको नीचे मुताबिक फैलाकर दर्शकका एक पत्ता लेनेको कहो।

१	२	३	४	५
६	७	८	९	१०
११	१२	१३	१४	१५
१६	१७	१८	१९	२०
२१	२२	२३	२४	२५

अब तुम दर्शकसे कहो कि आड़ी लाईनमे बतावो कि तुम्हारा पत्ता कौन लाईनमें है दर्शकने मानो २४ वां पत्ता लिया है तो वह निसन्देह आडी तरफसे पांचवी लाईनमें बतावेगा अब तुम इसी पांचवी लाइनका सिरेवाला २१ वां पत्ता याद रखिये। अब तुम इन तासोंको एक एक उठाकर हथेलीपर सीधीही रखते जावो पहिले २५ से उठाते हुवे ५ तक पहुंचो फिर २४ से ४ तक फिर २३ से ३ तक इसी प्रकार पचीसों उठाकर आगेकी तरह फैलावो तो अब तास इसप्रकार होंगे—

१	६	११	१६	२१
२	७	१२	१७	२२
३	८	१३	१८	२३
४	९	१४	१९	२४
५	१०	१५	२०	२५

अब तुम दर्शकसे उसका तास पूछो तो वह आड़ी लाईनसे अपनी तास चौथी लाईनमें बतावेगा, तुम्हारा चीन्हा हुवा २१

नम्बरवाला तास पहिली लाईनमें है तो तुम उसीके मुताबिक उसी लाईनके नीचे चौथी पट्टीमें देखोगे तो उसीका २४ नंबर वाला तास है।

खेल तीसरा।

यह १२ ही तासका खेल है, १२ तास चाहे जो हो लेकर सीधे एक सीधी लाईन जमीनपर बिछादो और दर्शकसे कहो एक पत्ता लेले और शुरूके पत्तेसे उसकी गिनती याद रखे और तुम शुरूवाली तासको याद रखो यह तुम्हारा मंत्र तास है। अब शुरूकी तासमें एक एक तास उठाकर हथेलीमें उलटी रखते जावो जब सब तास उठजांय तब उनको खूब काट कर पहिलेके तरह ही बिछादो और दर्शकसे कहो कि तुम्हारी तास कौनसे नंबर पर थी वह जितने नंबर कहे अपनी मंत्रकी तासमे गिन-कर उठाकर देदो (लेकिन तुम्हारी गिनतीका पता न लगे) वही उसका तास है, यदि उसका नंबर पूरा होनेके पहिले ही लाईन खतम हो जाय तो बाकी नम्बर लाईनके शुरूसे गिन-कर दे दो।

यही खेल पहिली बार सीधे तास रखकर तास लेनेके लिये कहै और बतानेके समय उनको औंधे बिछाकर नंबर पूंछ उस-का तास देदें लेकिन इसमें एक चालाकी की जरूरत है कि पहिले दिखानेके समय जो तुम्हारा मंत्रका तास है वह उलटा रखनेके समय यह मालूम रहना आवश्यक है कि वह कहां पर है इसलिये उसकी पीठपर पहिलेसे कोई जरासा चिन्ह लगा रहै जिसे कोई न भांफ सके, बस फिर सब ठीक है जब उलटे तास बिछाये जायं तो १२ तासोको नीचे तरफसे ले लेकर बिछाना चाहिये। हरेक खेल पहिले सरल करलेना फिर दिखाने का साहस करना चाहिये।

खेल चौथा।
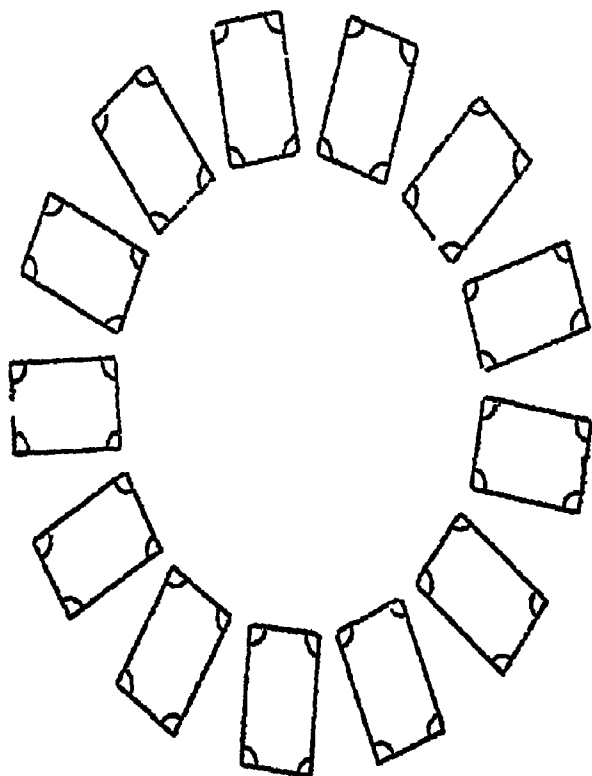
तरह तासोंको जो बादशाहसे एक्की तक क्रमवार हो ऊपर चक्रके मुताबिक भूमिपर औंधे रखदें (इन तासोंको क्रम वार ही रखना चाहिये ऐसा आवश्यक नहीं है क्योंकि ऐसा लोग भाफ जाते हैं परंतु दुसरी प्रकारसे रखने पर यह जाने रहना आवश्यक है कि कौन तास कहां पर है) अब तुम देखने-वालेसे कहो कि ये एक रंगके १३ पत्ते हैं इनमेंसे एक पत्ता अपने मनमें विचारलो और हम तासोपर चुटकी मारते हैं तुम अपनी तासके आगे नंबरसे गिनते चलो तो तुम्हारी इक्कीसवी गिनती-वाला ही पत्ता तुम्हारा हो जायगा।

अब चुटकी मारो, तुम सात चुटकी चाहे जहां मार दो लेकिन आठवीं चुटकी बादशाह पर नवमी मेमपर और दसमी गुलाम

पर इसी प्रकार क्रमवार चुटकी मारते चलो, जब उसका २१ नंबर पूरा हो वह बस कहदे वही उसका पत्ता होगा, जैसे किसीने सत्ता लिया तो वह ८ से गिनेगा तुमने ७ चुटकी मारी तो उसकी गिनतीमें चौदह होगये अब तुम अपनी आंठवी चुटकी वादशाह और नवमी मेमपर मारो तो उसका २१ नंबर सत्ती पर पहुंचनेमें क्या शक है, दर्शक को पहिले समझादो कि बादशाहका तेरह मेमका बारह और गुलामका ग्यारह नंबर होता है। इसमें कई मनुष्य एक साथ पत्ते ले सक्ते हैं और तुम्हारी चिटकियों की गिनती पर जहां जहां उनके २१ नंबर पूरे हों वहां वहां ही उनके पत्ते निकलेंगे। (खेल पांचवा)
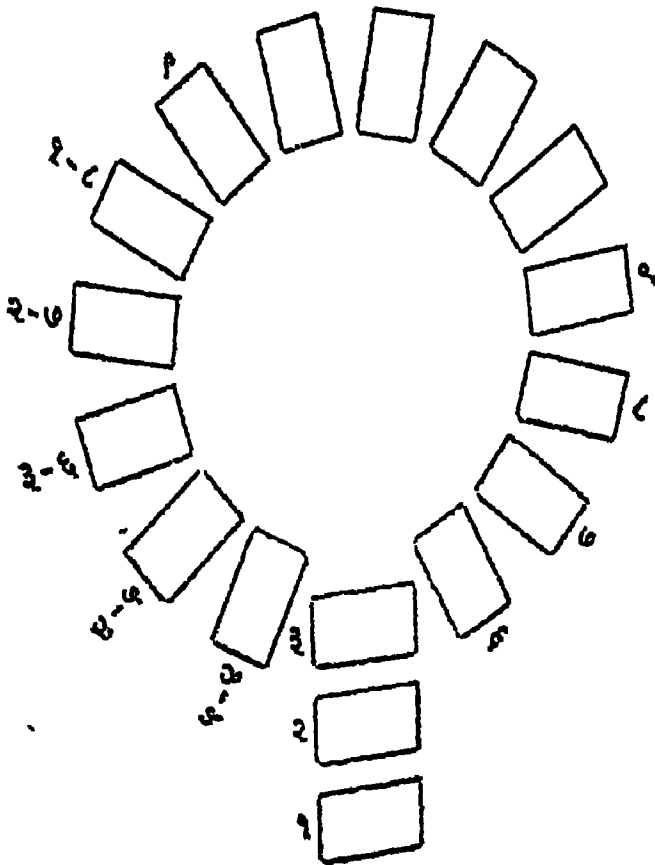
ऊपर चक्रके मुताबिक कुछ तास चक्रमे और कुछ नीचे रखे जावें इनकी कोई तादाद नही चाहे जितने हो लेकिन हों सब तास सीधे मुंह (चित्त)

अब तुम दर्शकसे कहो कि हम यहांसे हटजाते है तुम इस चक्रमे कोई भी नंबरका एक तास जिसप्रकार हम समझाते हैं गिनकर लेलो अब तुम नीचेकी पत्तियोसे गिनते हुवे चक्रके बाई साईडमे जो नंबर लेनाहो वहां तक गिनो, अब फिर वापिस गिनो जिस तासतक तुम पहुंचेहो उसे छोड़कर उसके नीचे वाली तासको एकसे गिनना आरंभ करो और लौटते वक्त जो चक्रके नीचे आड़ी तास है उनको मत गिनो (याने उनको छोड़कर) दाहिने साईडमें चले जावो जितने नंबर बांये साईडमें गिनेथे उतने ही नंबर पर आकर रुक जावो, यही तास तुम्हारा विचारा हुवा होगा हम वहांसे ही तुम्हारी तासका नाम बतादेंगे कह दो कि तुम्हारी मनकी इच्छा मुताबिक नंबर लेलो।

अब तुम दूर जाकर खड़े होवो दर्शक चाहे कितने ही नंबर लेवे तुमने जितनी पत्ती नीचे खड़ी पक्तिमें लगाई हैं उतनीही पत्ती सामने दाहिने साईडको छोड़ कर उसके ऊपरवाली पत्तीपर उसका नंबर आवेगा चाहे वह कितनाही नंबर क्यों न ले।

लेकिन इस खेलमें फुरतीकी जरूरत है वे लोग दुबारा न गिनने पावें, यदि पहिले ८ नंबर लिये और दुबारा दस लेकर गिने तब भी उसका नंबर उसी पत्तेपर जावेगा और खेलका महत्व जाता रहेगा याने उनके एक बारके पूरे गिनते गिनते तुम वहां पहुंच कर उनका पत्ता बतादो इतना अवकाश मतदो कि वे दुबारा गिन सकें पत्तोकी गिनतीका रास्ता ठीकसे तुम्हारे समझमें आ- जाय इसलिये हमने चक्रमें नम्बर भी दे दिये है इस चक्रमें नौ नम्बर विचारा गया है।

यह खेल दोबार मत बतावो यदि बताना ही पडे तो खड़ीपंक्ति या चक्रमेंसे १ या २ पत्ते घटादो अथवा बढ़ादो मैं समझता हूं कि ऐसा क्यो करना पडेगा इसके समझानेकी अब जरूरत नही है।

❋ ससुराल-रहस्य ❋

खेल छठवां।

यह खेल एक ऐसी जोड़ीसे किया जाता है जिसकी पीठपर दानादार ठप्पा हो और उनदानोंमें भी लाईनेसी समझमें आती हो किसी आदमीको उसमेंसे एकतास उसकी इच्छानुसार खींच लेने दो और जमीन पर उलटी धरा कर किसी भी तरकीबसे बतादो कि अमुक तास है तुमको अपनी गड्डीकी हरेक तासकी पीठ पर दानोंमें किसी एक दानेको इसप्रकार बदल देना होगा कि दुसरा न भांपसके (जहां तक हो उसी रंगकी स्याहीसे काम लेना चाहिये जिससे उसके पहिलेदाने छपे हो) हरेक तासका केवल एक दाना बदलना होगा जैसा कि आगे चित्रमें बताया गया है आडी लकीर वाला दाना तासका नाम और खड़ी लकीर तरफ से वही दाना तासका रंग बतावेगा जैसा कि इस चित्रमें।

एक्की
दुक्की
तिक्की
चौकी—
पंजी
छक्की
सत्ती
अट्ठी
नहला
दहला
गुलाम
मेम
बादशाह
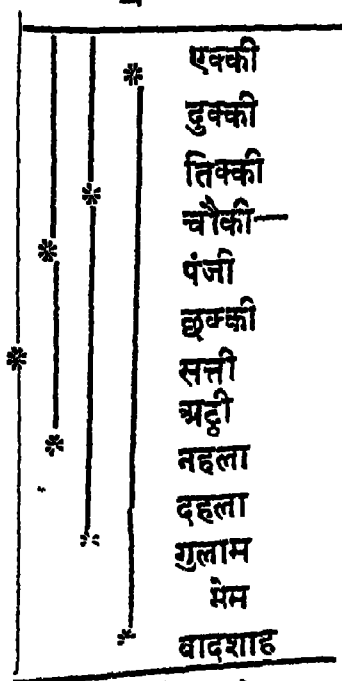
ऊपर चित्रके मुताबिक पहिली बिन्दी आड़ी तरफ एक्की और खड़ी तरफ हुकुमके सामने है तो वह हुकुमकी एक्की है दुसरी बिन्दी पानकी तिक्की तिसरी बिन्दी चिड़ीकी पंजी चौथी बिन्दी ईंट की सत्ती और पांचवी चिड़ीका नहला कहती है यदि तासके दुसरे कोनेकी भी एक बिन्दी बदल दी जाय तो तास जिस रुख रखोगे बताठी जाय बदलनी न पडे।

खेल सातवा.

किसी दर्शकके हाथमें तासकी गड्डी (जिसमें केवल ३२ तास कैसे भी हो) देदो और कहा इनमेंसे एक तास देख कर शुरूकी पत्तीसे उसकी गिनती याद रखो, जब वह देख चुके तास तुम मांगलो और कहो कि जिस नंबरपर तुमने तास लिया है उसके ऊपर कोई नंबरका नामलो (याने उसने ८ नंबर लिया है तो १२-१४ कुछ भी बोले) वह जब तुमको कुछ नंबर बतावे तुम फौरन टेबुल नीचे हाथ लेजाकर सामनेसे जितने नवर उसने बताया है उतने पत्ते गिनकर पीठपर धरो और गड्डी सामने लाकर कहो हम तुम्हारा पत्ता जान गये, अच्छा तुमने कौनसे नंबर पर पत्ता लियेथे वह बोले आठ नंबरपर तो तुम तासोंको उलटाही गिनना शुरू करो एक दम ऊपर वाली पत्तीको आठ दुसरी को नौ तिसरीको दस चौथीको ग्यारह और पांचवीको बारह नंबर उसको देदो यही उसका तास है पहिले लेखोंको ठीकसे समझ कर सरल करो फिर खेल दिखावो इन खेलोंमें थोड़ा सा समझ का फेर (तिलकी ओट पहाड़) है।

खेल आठवां.

यह खेल बिलकुल छोटी तो नहीं लेकिन कुछ छोटी तासोंमें

करना उत्तम है दर्शकके हाथमें सीट देकर कहो कि इस तासकी गड्डीको अच्छी तरह फेंटकर ऊपर वाली तास देखलो और दोनों हाथोंसे गड्डीको दवालो, जब वह दबाने लगे तब तुम यूं कह कर गड्डी लेलो, कि यूं नही जैसा हम कहते है वैसा दबावो, और तुम अपने बाये हाथकी हथेलीमे गड्डीको उलटी रखकर दाहिने हाथकी उलटी हथेलीसे दवाओ याने तुम्हारे दाहिने हाथकी हथेलीकी पीठ उसपर टिके लेकिन तुम्हारे दाहिनी हथेलीकी पीठपर पहिलेसे कुछ गोंदका पानी या दुसरी कोई लेसदार पदार्थ लगारहे जिससे तुमारी हथेलीकी पीठ तासकी गड्डी पर टिकतेही ऊपरमें जो दर्शकका देखा हुवा तास है चिपक कर आजाय, और उससे बोलो ऐसा दबावो कहकर सीट उसको देदो और उसका देखा पत्ता जो चिपक कर तुम्हारे पास आगया है उसे किसी अपने सधे हुवे साथीद्वारा किसीकी जेबमे धरादो यह भी याद रखो जब यह दबाने लगे तुम फुरतीसे तासों पर एक हाथरूमाल डालदो क्योंकि कभी कभी पसीनेसे भी पत्ता चिपक जाता है भेडा फूट जायेगा, मिनीट दो मिनीटमें उससे कहो सीटको निकाल कर फेट डाले और अपना पत्ता निकाले लेकिन पत्ता नही मिले तव तुम उसको पत्ता निकला कर दिलादो।

मदारी लोग अक्सर ऐसा करते है कि खेल करनेके पहिले एक पत्ता किसीकी जेब रखा देते है मानो उनने हुकुमका सत्ता रखाया तो उस सीटमेंसे "खास ट्रिक" द्वारा हुकुमका सत्ता ही खिचाकर इसी तरकीब द्वारा उड़ा लेते है और दुसरेकी जेव से निकाल देते हैं परंतु तास जेवमें रखने वाला भी उस तासके बारेमे अनजान सा बना रहे।

खेल नववां.

तासकी गड्डीको फेंट कर ३—४ या ५ गड्डी पृथ्वीपर बनादो लेकिन पहिली गड्डीके नीचे जौनसा पत्ता हो पहिलेसे तुम जाने रहो, पांच दर्शकोंको कहदो कि भाई मैं तुम लोगोंके लिये हरेक गड्डीमेंसे एक एक तास निकालता हूँ जो नाम मैं तुम लोगों को बोलूं ठीकसे स्मरण रखना।

मानो तुमने ५ गड्डी बनाई है और सबसे पहिले वाली गड्डीके नीचे ईंटका गुलाम है उसको तुम जान रहे हो अब तुम एक दर्शकसे बोलो हम तुम्हारे लिये ईंटका गुलाम निकालते हैं ऐसा कहकर पांचवी गड्डीके नीचेका पत्ता निकाल लो मानलो उसके नीचे पानका अट्ठा निकला तो तुम दुसरे दर्शकसे बोलो तुम्हारे लिये हम पान अट्ठा निकालते हैं ऐसा कहकर चौथी गड्डीके नीचे वाला पत्ता निकालो उसके नीचे मानो चिड़ीकी दुक्की निकली तो तुम तिसरे दर्शकसे कहो कि हम तुमारे लिये चिड़ी की दुक्की निकालते हैं ऐसा कहकर तिसरी गड्डीका नीचे वाला पत्ता निकालो उसमे निकला हुकुमका दहला तो तुम चौथे दर्शकसे कहो तुमको हम हुकुमका दहला देते हैं ऐसा कहकर दुसरी गड्डी के नीचे वाला पत्ता निकालो उसमें निकला ईंटका पंजा तो तुम पंचवेसे बोलो तुम्हारे लिये ईंटका पंजा निकालते है ऐसा कह जब तुम पहली गड्डीका पत्ता निकालोगे तो ईंटका गुलाम तुम्हारे पास आजायगा अब उन पांचो को पूछ पूछ कर एक-एक पत्ता देदो।

दसवाँ खेल.

तासोंकी गड्डी खूब फेंटकर नीचेका पत्ता देखलो और एक कोनेमें अलग खडे होकर सीटको बायें हाथमें लेलो और दोनों हाथ पीठ

—o—

अंबा पूजन चली जानकी, संग सहेली हम जोली।
सज सोलह शृंगार बतीसों, आभरण टोलीकी टोली॥ टेर॥

हिल मिल गावैं कोकिल बैनी, मधुरे स्वर मीठी बोली।
प्रेम मनोहर चंचल अचपल, मस्तकपर शोभित रोली॥
कर कंचनके सुघड़ थाल ले, ले अबला बाली भोली।
गंगा जमनी अमोल झारी, रत्नोंके तोलो तोली॥
मंगलमूल अनूपम उत्तम, सामग्री सब अनमोली॥सज सो०॥१॥

अष्टगंध फल फूल बतासे, अंगूरोंकी पिटयारी।
नरियल चन्दन कर्पुर केसर, कस्तूरी तिल सुपियारी॥
सूवा चोला नालके जोड़े, हरी दूब बंदन बारी।
कलश छत्र सिंघासन दीपक, लाल ध्वजा धोती सारी॥
गजरे दौनी गूगल मेंहदी, पीताम्बर चुनरी चोली॥ सज० ॥२॥

भवन पहुंच घर भेंट सामने, जनकसुता बोली बानी।
हे जगदम्बा हे जगजननी, आदिकला त्रिभुवन जानी॥
अचल निरंन्तर अखण्ड पूरन, परमानन्दी रुद्रानी।
अजर अमर चैतन्य ज्योति अज, अनन्त अविनाशी दानी॥
वेद भेद नहि पावै तेरो, सोचत विधिकी मति डोली॥सज०॥३॥

तेरे गुणकी अपार माया, मम जिह्वाकी गति थोरी।
बरैं राम दशरथ सुत मुझको, यही कामना है मोरी॥
बिनती सुन प्रत्यक्षरूप हो, कहा उमाने सुन भोरी।
मिलैं तोहि बर अवधविहारी, पुरहिं कामना सब तोरी॥
गावै "झूमरलाल" सुधासम, वाणी अमृत रस घोली।

अम्बापूजन चली जानकी, संग सहेली हम जोली ॥

झूमर०-ल्यो साव म्हाने आवेथा सो गाकर थारा गीतांको वदलो चुकादियो अब म्हानें इनाम मिलनी चाहिये।

लुगायां-वाह साव वाह फरमावो थारी के ईनाम दें?

झूमर०-इन गुलावी रसगुल्लोंका सिर्फ एक और वस फकही...

स्त्रियें लज्जित हो मुँहमें रूमाल दवाकर नीची गर्दन कर हँसने लगी।

अंक छठवां

लुगायां-(खड़ी होकर) कुंवर साव! आप उदास क्यूं हो गया? दादीको सोच लगगयोके? वीने बूढी खागड़ने कोई वी कोनी ले जावे आप क्यूं चिन्ता करो हो?

झूमर०-हां साव या वात तो थारी सोला आना है, कोई भँवर मन वी चलासी तो थां सरीखी गुलावका फूलकीसी कलियांपर ही चलासी।

लुगायां-(हँसती हुई) फेर थें उदास क्यूं हो गया?

झूमर०-मने फिकर यो लाग गयो अक भायो तो ईवार भाभी कने जाकर सो जासी पण म्हारो कठे ठिकाणो लागसी?

झूमरलालकी इस वातने स्त्रियोंको मात कर दिया। इतनेमें मदनलालकी सासू वहां आई जिसे देख झूमर बोला-

झूमर०-"जै गोपालजीकी" न्याराजी!

मदनलालकी सासू इसप्रकार झूमरलालकी मीठी मश्करी देख कुछ मुस्करा गई, और स्त्रियोसे बोली:-

ये अब तो ऊपरसूं आधी बीत गई, याने सोवा द्यो, फेरूं कालको दिन थारोही है खूब मसखरियां करलीजो। इतना कह वह तो चलीगई पश्चात् चम्पा और रानी स्त्रियोंको कल फिर आनेका निमन्त्रण देती हुई बादाम खारीक बांटकर सादर विदा करनेके पश्चात् मदनलालसे बोलीः—

चम्पा-कँवर साहब यां दोनूं कँवरांने तो डेरामें भेजद्यो और आप ऊपर चौबारामें पधारो, झूमर तथा चन्दर दोनूं जना नेवगी के साथ डेरामें भेज दिया गया और कँवर साब अपनी साली तथा सालाहेलीके साथ चौबारेमें पहुँचा। जब कमरेमें प्रवेश करने लगा तब सालाहेली बोली कँवर साब! ज्यादा खीचा-ताणी करवासूं काची कली बल खावाको डर है सो आसानीसूँ काम काढ़ ज्यो। यह सुनकर मदनलाल शरमाता हुवा भीतर घुसा। कमरेकी सजावट देखकर मदनलाल अत्यन्त मुग्ध हो गया, सजावट करनेवालेकी तारीफका बारबार बखान करने लगा, उसने देखा कि—

वह कमरा अठपहलू ढंगका बना हुआ चहुं ओर अनेक प्रकारके पुष्प बेलोंसे आच्छादित खिड़कियें और छज्जों द्वारा शोभायमान था, भीतरके भागमें एक बहुमूल्य गलीचा, जो कि खास इसी कमरेके लिये सेठने स्पेशल आर्डर देकर बनवाया था बिछा हुआ है। एक कोनेमें एक गोलकाटा तीन पायेका टेबल आनेवालोंका स्वागत सामान इत्रदान पानदान सिग्रेटदान इत्यादि लिये हुए खड़ा है। जिसके चहु ओर इसकी दासियां (कुर्शियां) अपने प्राणनाथको सहायता पहुँचानेके उद्देशसे खड़ी हैं। दूसरे कोनेमें एक चौकोन टेबल पर एक ग्रामोफोन और जलतरंग दो बाजे तथा उसके निचले

भागमें एक अनुपम चौकीपर चांदीके कटोरदानमें कुछ मिष्टान्न व जलके भरे हुए गिलास यथाक्रम रखे हुए हैं। तीसरे कोनेमें एक जालीदार मछेरीसे सजा हुआ फॅन्सी पलंग मखमली गद्दी व तकिया गलेफोंसे लगा हुआ कमरेकी शोभाको दूनी चौगुनी कर रहा है। जिसके ऊपरी भागमें बेटरीका पंखा सनसन चलता हुआ अपनी अलग ही छटा दिखला रहा है। चार कोनोंमें बेटरीके सहारेसे चांदीकी जञ्जीरोंमें अपने हाथोंमें मोमबत्तियां लिये हुए पुतलियां झूलती हुई सावनका स्मरण करा रही हैं, छत और दीवारोंमें झाड़ फाणूस गोला हंडियें और बिल्लोरी शीशोंकी जड़ावट इस प्रकार की गयी है कि कमरेमें एक भी वत्ती जलादी जाय तो दीपमालिकासा दृश्य दृष्टिगत होने लगता है फिर इस समय तो यहां ८-१० बत्तियां जल रहीं हैं इस छटाका कहना ही क्या? तात्पर्य यह कि यह कमरा ठीक ऐय्यास लोगोंकी उत्तेजना बडानेवाला व विलासप्रिय वस्तुओंके लिये किसी वातमें कम न था। मदनलालको कल दिन यह कमरा ठीकसे सजाहुवा न रहनेके कारण दूसरे कमरेमें सुलाया गया था। इसी कारण आज इस कमरेकी सजावट देखनेमें सहज ही १०-१५ मिनीट लग गये, देखते २ जब इसकी दृष्टि चौथे कोनेमें वैठी हुई चन्द्रको मात करनेवाली उस चन्द्रकिरणपर पड़ी,

जो—

रुचि राची अनंग तरंग पगी रति रंग रंगी यों तयारी करी।
मोतिन मांग सँवारी जरी औ जराऊ जरी नथ न्यारी धरी॥
कसि राखि उरोजनते अँगियां रंगियां रुचि सेज पियारी परी।
फिरी रूप रंगीले घरीये घरी मग प्यारेको द्वारैं निहारैं खरी॥

और वह ज्योंही कामातुर हो उसे प्यार करनेको दौड़ा त्योंही उसे ऐसी झनकार सुनाई पड़ी कि दर्वाजेके वाहर (छतपर)

कोई स्त्री अपने पैरके विछुवे बजा रही है। मदनलाल पहिले तो किञ्चित् लज्जितसा हुआ पश्चात् एक कपाटसे झांककर बाहरकी ओर देखा तो २-३ स्त्रियें छतपर खड़ी परस्पर कुछ फुसफुसा रहीं हैं उन्हें देख यह कहने लगा।

सखियो! अब आप लोग खड़ी २ क्यूं दुख पावो हो? कदास भूलसूं कोई नेग बाकी रह गयो होसी तो काल हो जासी और सभींके लायक ही हो तो अभी चालूं-दूसरां थे म्हारी बातां सुणवाने खड़ी होस्यो तो थाने म्हारी बात सुणी जावे नहीं कारण म्हाने तो अठेई रात वितानी है अब नही तो घंटाभर बाद् बातां करस्यां पण थाने तो आप आपके ठिकाणे ही जानो पडसी और मने यो दो चार बातां करबाको मौको भी थां लोगांकी ही म्हेरबानीसूं मिल्यो है, सो आप जाकर आराम करो अब नहीं तो घंटाभर पाछे जानो ही पड़सी, कदास थे लाडुवांकी भूखी ऊभी होस्यो तो आज १ सेर आया तो काल ४ सेर आजासी और बातसूं तो अठे जींका हककी है वींनेहीं मिलसी थाने मिले नहीं। इस प्रकार मदनलालका मुंहतोड उत्तर सुन स्त्रियें लज्जितसी हो अपने अपने शयनागारमें चली गईं। जब मदनलालने देखा कि सब स्त्रियें चली गईं, एक चद्दर कपाटोंकी आड़में लगा, चन्द्रकिरणकी ओर दृष्टि कर बोला-"मन भावै सिर हलावे" वाली बात तो म्हाने अच्छी लागे नहीं किसा मजाका तकिया गीडवा लाग रह्या है फिर भी धरतियां बैठवो अच्छो लाग्यो?

सुनते ही चन्द्रकिरण घूँघट खोल लपक कर अपने प्यारे चन्द्रसे किरणकी भांति लपट गई। दोनों प्रेमी पलंगपर जा बैठे प्रेमकी बातें होने लगीं पश्चात् चन्द्रकिरणने एक छोटीसी तश्तरीमें कुछ मिठाई और जलका गिलास लाकर सामने किया, मदनलालने मिठाई खा जल पिया।

प्रिय वाचकवृंद! यदि मैं यह लिखूं कि यह प्रेमका कलेवा था इसलिये मदनलालको खाना पड़ा तो मुझे आशा है कि आप मान जायँगे, क्योंकि लेखककी लेखनी समुद्रमें आग लग गई ऐसी बातको भी कुछ देरके लिये स्वीकार कर लेनेको पाठकोंको बाध्य कर देती है, परन्तु नहीं इसमें एक गुप्त रहस्य और भी है वह यह है कि "ससुरार सुखकी खानि" सुख और प्रेम दोनोंकी मित्रता है याने ससुरार प्रेमकी खानि है इसलिये कुँवर साहब (मदनलाल) रसोईगृहमें तो प्रेमके कटाक्षोंमें इतने घायल रहते थे कि इन्हें भोजनकी कुछ भी सुधि न रहती थी। याने १-२ ग्रास खाकर ही जल पी लेते थे, परन्तु जब इनके पेटमें बिल्लियां कूदतीं थीं भूँख सताती थी तो विवश होकर कलेवा करना ही पड़ता था। कलेवाके पश्चात् पान इलायची खाकर मदनलालने ग्रामोफोनपर एक रिकॉर्ड चढ़ाया।

नाम रहेगा उन्हींका जो नर धर्ममें धनको लगावेंगे।
धनवाले कंजूस जगतके जोड़ जोड़ मर जावेंगे॥ टेर॥
हाथसे अपने खाया न खरचा, अगर जमा ज़र किया तो क्या।
किया धर्म व्यापार नहीं कुछ, विषयोंमें जो दिया तो क्या॥
प्रेमका प्याला पिया नहीं, ह्विस्की और ब्रांडी पिया तो क्या।
ऐसा मक्खीचूस धनिक नर, अगर सौ बरस जिया तो क्या॥
जो धर्ममें धनको खरचेंगे वे, यहां वहां सुख पावेंगे॥ धन०॥१॥
जहां भजन हो ईश्वरके, बस वहां पै जाते शर्माते।
विषयवासनाके गानोंमें, सरे राह खुलकर जाते॥
ज्ञान ध्यानके पदोंसे, नफरत झूठे किस्से मन भाते।
वेद शास्त्रकी रही समझे, डींग शांका विव गाते॥
यहांपर अपयश लेकर वे नर, यमकी मार वहां खावेंगे॥ धन० २॥
न्हाय धोय शृङ्गार बनाया, हरिका सुमिरन कुछ न किया॥

नीचोंकी संगतिमें पड़कर, नाम बड़ोंका डुबो दिया ॥
फिजूलखर्चीमें धन लुटाते, फकीरको गाली लठिया।
घरवाली तो भूखी मरती, वेश्याको रबड़ी शुभियां ॥
बुरी लगे या अच्छी यारो, हमतो सही सुनावेंगे ॥ धन० ॥ ३ ॥
धन पानेका मजा यही है, उन्नति दो व्यापारोंको।
ना तो यारो अर्पण कर दो, युनिवर्सिटी वालोंको ॥
बाम तरक्कीपर कर दो तुम, ऋषिकुल गुरुकुलवालोंको।
देर लगाना नहीं चाहिये, धर्म और शुभ कामोंको।
कहते "राधेश्याम" विषैला, गाना हम नहीं गावेंगे ॥ धन०॥४॥

चन्द्रकिरन-भली चढ़ाई ! !
मदनलाल-आपके भाई साहबको बाजोई इसो है।

(दूसरी रिकार्ड)

* घनश्याम बुलाये झूलनने चालो राधे बागमें ॥ टेर ॥
झूलन चालो बागमें प्यारी सज सोला सिणगार।
बत्तीसों आभूषण पहिरो, गल मोत्यांको हारजी ॥ घनश्याम ॥१॥
छटा सजीली बागकी प्यारी, खिल रही केशर क्यार।
चम्प चमेली खिली केतकी, भँवर करें गुञ्जार जी ॥ घनश्याम ॥२॥
मलियागरको बन्यो हिंडोलो, तन रह्या रेशम तार।
झूलो आप झुलावें मोहन, गावां राग मलार जी ॥ घनश्याम ॥३॥
दादुर मोर पपीहा बोलें, पिव पिव करें पुकार।
घन गरजे बिजुली खिंवै, झीनी पडे फुहार जी ॥ घनश्याम ॥४॥
शिव सनकादिक मुनिजन गावें, कोई न पावे पार।
दास नारायण शरन आपकी, करियो बेड़ा पार जी ॥ घनश्याम॥५॥

* यदि ऐसे भजनोंका पूरा आनंद लेना चाहते हैं तो "प्राचीन भजनमाला।" पढ़े, मिलनेका पता-ए. एल. गुप्ता. नेवरा. सी. पी.

चन्द्रकिरण०-बाजाने तो रहणद्यो बोलो, भोलीभाली लुगायांकी सीधी साधी पहालियांको तो आप झट झट जुवाब दे दियो देखां अब दो चार म्हेंबी पूछां जुवाब देवो।

मदनलाल-दो चार क्यूं भलाई १००-५० पूछो पण ज्यादाई टेढी होय तो झूमरलालनै बुलाऊं।

चन्द्रकिरण-(हँसती हुई)मुकलावो थारो होसी के झूमरलालजीको?

मदनलाल-म्हारो।

चन्द्रकिरण-फेर पहालियांको अरथ भी आपही बताओ।

मदनलाल-(मुसुकाता हुआ) अच्छा पूछो।

चन्द्रकिरण-बिना पींजरे तोतो देख्यो, कोयल कूकै बाग बिना।
बिना घटाके बिजुली देखी, होलीकी झल फाग बिना॥
वन बिन मोर बम्बी बिन बासक, मृग और चीतो एक जगां
सोनो और सुहागो भी हैं, ये दश देख्यां एक जगां॥

मदनलाल-(चन्द्रकिरणके गालपर धीरेसे चपाती मारकर बोला) सोहागण लुगाई॥ १॥

चन्द्रकिरण-सोला सीस बत्तीस खुर, नौथन तेरा कान।
एकस देखी बाकरी, सिखर चरन्ती पान॥

मदनलाल-तेरह वर्षकी राजाकी लड़की सोलह शृङ्गार बत्तीस आभूषण सहित नौखण्डापर बैठी हुई पान खा रही थी॥२॥

चन्द्रकिरण-सारंग ले सारंग चल्यो, सारंग पूंज्यो आय।
जो सारंग मुखसे कहै, मुखको सारंग जाय॥

मदनलाल-सर्पको पकड़कर मोर चल्यो काली काली घटा चढ़ आई अगर घटाने देखकर मोर चिल्लावे तो मुहसूं सांप पड़ जावे॥ ३॥

चन्द्रकिरण-सारङ्ग ले सारङ्ग चली, सारङ्ग पूच्यो आय।
सारङ्गमें सारङ्ग दियो, वाभी सारंग मांय॥

दनलाल-स्त्री घड़ो लेकर पानीको चली पानी बरसने लगा जब अपना कपड़ा घडामें घालकर आप भी पानीमें बड़ गई ॥ ४ ॥

न्द्रकिरण-पूरा जुगमें सारंग देख्यो म्हलां चढ़तां सारंग टोक्यो। जावो सखी सारंग समझावो तीसां मांसूं तीन घटावो॥

दनलाल-बारा बरसमें पियजी आया म्हलां चढ़वा लागी जब सांप रस्तो काट्यो सखी पिवजीसे कहो कि रजस्वला हो गई ॥ ५ ॥

न्द्रकिरण-दधसुतनी दधसुत भख्यो, दध सुत बेग बुलाय।
जो दधसुत आवे नहीं, दधसुत रिपु उड़जाय॥

मदनलाल-लक्ष्मीजी जहर खा गई धन्वन्तरीजीको बुलावो अगर वो नहीं आवेगा तो उनका हंस उड़ जायगा अर्थात लक्ष्मीजी मृत कही जावेगी॥ ६ ॥

चन्द्रकिरण-घर घोड़ी पिय मालवे, जीण समन्दर पार।
चाबुक चन्द्रो ले रह्यो, करके लेवो विचार॥

मदनलाल-घोडी घरमें है पियजी खेतमें गया जीण परींडापर है चाबुक चांदामें टंगी है सो ले लेवो ॥ ७ ॥

चन्द्रकिरण-घण घवें बीजल खिवैं, जल्या फेर जलैं।
उन देसां दीन्हीं सखी, जठे मूवा सांस भरैं॥

मदनलाल-एक लुगाई पाड़ोसनके पास जाकर कैंची मांगी जब वा बोली सखी लुहारके धार करावा ताईं दी है ॥ ८ ॥

चन्द्रकिरण-तुलके तुल चोरी करी, लीन्ही कुंभ चुराय।
मिथुन रास ऐसी करी, दीन्हीं मेख जलाय॥

मदनलाल-रामके रावण चोरी करी कुंभ रास सीताजीने चुरा ली मिथुन राम हनुमानजीने मेखरास लंकामें आग लगा दी ९

चन्द्रकिरण-पहलो पैयां पड़ गयो, दूजो सो गयो संग।
तीजो चूमा ले गयो, चौथो लपट्यो अंग॥

मदनलाल-पोतो जो पैयां पड़े, बेटो सोवे साथ।
बाप होय चुम्बन करे, अङ्ग लपटावे भ्रात॥ १०॥

चन्द्रकिरण-पहलेने पुतली घड़ी, दूजे बसन सुअङ्ग॥
तीजेने भूषण दिये, चौथे जीव प्रसङ्ग॥

म०ला०-चार मित्र (खाती, दरजी, सुनार और ब्राह्मण) परदेस जाते थे रात्रिमें एक जङ्गलमें ठहरनेका अवसर पड़ा, जङ्गली जानवरोंके डरसे एक २ भाईने एक एक प्रहर, पहरा देनेका निश्चय किया, पहिली पारी खातीकी हुई एक लकड़ी ढूंढकर पुतली तैयार कर ली। पश्चात दरजी जगा उसने उस नग्न पुतलीको कुछ वस्त्र पहरा दिये तत्पश्चात् सुनार जागा उसने पाकिटमेंसे १-२ आभूषण नथ चूड़ी वगैरह उसे पहनाकर ब्राह्मणको जगा दिया और आप सो गया पश्चात् ब्राह्मणने मंत्रित कर उस पुतलीको सजीव किया, प्रातः चारो जगे और उसे अपनी २ स्त्री बनानेके लिये परस्पर झगड़ने लगे, झगड़ते २ राजाके पास गये तब राजाने इस मुताबिक न्याय किया कि-

पुतली घड़नेवाला ब्रह्मा, सजीव करनेवाला विष्णु, वस्त्र पहिरानेवाला माता पिता, आभूषण देनेवाला पति, अर्थात वह स्वर्णकार (सुनार) की स्त्री हुई॥ ११॥

इस प्रकार युगलमें परस्पर प्रश्नोत्तर हो रहे थे कि घड़ीने इन्हें टन टन करके दो बजनेकी सूचना दी, सुनते ही दोनों प्रेमी...

दम्पति ऐसी रची विपरीत सुप्रीतकी रीत न जाय कही,
ललना लखि लोचनसो हितके चित लालनको जु लुभाय रही।

लटकी लट एक तो आननपै छवि रूप रँगीली यों भाय रही।
मनु प्यासी पियूषके बिंदुनकी कोई नागिन इंदु खिलाय रही?

बिजुलीकी हवा गुलाब जलकी गमक और मदनकी थकावटमें सोसनी दुपट्टा तान निद्रादेवीकी गोदमें लेट गये।

अंक सातवां

प्रिय पाठक गण!

अब चित्त विनोदार्थ कुछ पहेली एवं समस्याएं आदिका संग्रह इस सातवें अंकमें दिया जाता है। कई मित्र केवल मारवाड़ी पढ़ते २ उकता गये होंगे।

संस्कृत दृष्टिकूट पहेलियां।

प्रश्न–विराजराजपुत्रारिस्तन्नाम चतुरक्षरम्।
पूर्वार्धं तव शत्रूणां, परार्धं तव वेश्मनि॥

उत्तर–वि–विहंग विराज=विहंगोंका राजा (गरुड़) विराजराज=विहंगोंके राजाका राजा (विष्णु=कृष्ण) विराजराजपुत्रारि विहंगोके राजाके राजाका पुत्र (प्रद्युम्न=कामदेव) तिसका वैरी-(महादेव)× तन्नाम चतुरक्षरम्=उसके नामके चार अक्षर (मृत्युंजय) में पूर्वार्धं तव शत्रूणां=पूर्वार्ध (मृत्यु) तेरे शत्रुको, परार्ध तव वेश्मनि=परार्ध (जय) तुझको मिले॥१॥

× महादेवजी कामदेवको भस्म करनेवाले हैं।

प्रश्न-केशवं पतितं दृष्ट्वा, द्रोणा हर्षमुपागताः ।
रुदन्ति कौरवाः सर्वे, हा हा केशव केशव ॥

उत्तर-के=जलमें, शव=मुर्दा केशवं=जलमें मुर्दा पतितं=बहता हुआ दृष्ट्वा=देखकर, द्रोण-कछुए आदिक, हर्षमुपागताः=खुश हुए रुदन्ति=रोने लगे कौरवाः कौवे 'हा हा केशव केशव' हाय हाय! के=जलमें शव=मुर्दा जा रहा है। (क्योंकि जलमें कौवोंका वश नही चलता) ॥ २ ॥

प्रश्न-युधिष्ठिरस्य या कन्या, नकुलेन विवाहिता ।
भीमसेनस्य या माता, सा माता वरदा भव ॥

उत्तर-युधिष्ठिरस्य या कन्या-युधिष्ठिर-अचल (हिमाचल) स्य या कन्या=तिसकी कन्या (पार्वती) नकुल=कुलरहित (महादेवजी) को विवाहिता=व्याही गयी, भीमसेन=युद्धमें कुशल भयकर (स्वामिकार्तिक) स्य माता-की माता-सा वरदा भव वो माता वरदायिनी हो ॥ ३ ॥

प्रश्न-हनूमता हतारामाः, सीता हर्षमुपागता ।
रुदंति राक्षसाः सर्वे, हा हारामा हता हता ॥

उत्तर-हनूमता=हनुमानने, हत=नाश किया, आरामा=बगीचा (अशोकवाटिका) सीता हर्षमुपागता-सीताजी हर्षित हुई । रुदंति रोने लगे, राक्षसाः सर्वे=सब राक्षस लोग-हा हा आरामा हता हता=बगीचा का-हता हता=नाश किया तोड़ डाला ॥ ४ ॥

प्रश्न-विहंगो वाहनं तस्य त्रि क चं यत्र भूषणम् ।
सा. ल. पा वामभागे च. ते देवा शरणं मम ॥

उत्तर-वि-पक्षी (गरुड़) हं-हंस-गो-गौ (नांदिया) वाहनं यस्य तिसके वाहन है-त्रि-त्रिशूल-क-कमण्डलु-च-चक्र यत्र भूषणं-

जिसके भूषण हैं-सा=सावित्री-ल=लक्ष्मी-पा=पार्वती-वामभागे च-तिसके वामभागमें हैं ते देवाः शरणं मम=मैं उनकी शरण हूं-अर्थात् ब्रह्मा विष्णु महादेव तीनोंका मैं सेवक हूं ॥ ५ ॥

अन्य संस्कृत पहेलियां ।

चक्री त्रिशूली न हरिर्न विष्णुर्महाबलिष्ठो न च भीमसेनः ।
इच्छानुरागी न यतिर्न योगी सीतावियोगी न च रामचन्द्रः॥सांड॥१॥
नारी च नाम्ना न च राजकन्या-वृक्षाग्रवासी न च राजहंसः ।
दुग्धं स्रवंती न च कामधेनुस्त्रिनेत्रधारी न च शूलपाणिः॥नारियल॥२॥
वृक्षाग्रवासी न च पक्षिराजस्तृणस्य शय्या न च राजयोगी ।
पीतांगधारी न च हेमधातुः पुमांश्च नाम्ना न च राजपुत्रः॥आम॥३॥
वृक्षाग्रे तु फलं दृष्टा-फलाग्रे वृक्ष एव च ।
अकारादि सकारान्तं-यो जानाति स पंडितः ॥ अननस ॥ ४ ॥
चतुर्मुखो न च ब्रह्मा-वृषारूढो न शंकरः ।
निर्जीवोऽपि जलाहरी-आश्रयो धान्यभक्षकः ॥ पखाल ॥ ५ ॥
पार्वताग्रे रथो याति-भूमौ तिष्ठति सारथिः ।
नित्यं चलति वेगेन-पादमेकं न गच्छति ॥ कुम्हारका चाक ॥ ६ ॥
पंचभर्ता न पंचाली-द्विजिह्वा नच सर्पिणी ।
कृष्णतुण्डा न मार्जारी-यो जानाति स पंडितः ॥ कलम ॥ ७ ॥
एकचक्षुर्न वै शुक्रः-जटाधारी न शंकरः ।
सृष्टिकर्त्ता न च ब्रह्मा-छिद्रकर्त्ता न तस्करः ॥ इंद्रिय ॥ ८ ॥
अर्धं वसति कैलासे-अर्धं गायकमन्दिरे ।
तत्सर्वं वणिगागारे-यो जानाति स पण्डितः ॥ हरताल ॥ ९ ॥
नित्यं जुहोति द्रव्याणि-चौर्यकारी दिने दिने ।
शत्रुं मित्रं न जानाति-यो जानाति स पण्डितः ॥ सुनार ॥ १० ॥

❋ मुकलावा-बहार ❋

संस्कृत प्रश्नोत्तर वाक्य।

(एकही वाक्यमें प्रश्न और उत्तर)

(१) काशीतलवाहिनी गंगा ॥
प्रश्न-का-शीतल-वाहिनी गंगा ?
शीतलवाहिनी गंगा कौनसी है।
उत्तर-काशी-तल-वाहिनी गंगा।
काशी के समीप बहनेवाली ॥ १ ॥

(२) कंबलवंतं न बाधते शीतम् ॥
प्रश्न-कं-बलवंतं न बाधते शीतम् ?
किस बलवान को शीत नहीं व्यापता।
उत्तर-कंबलवंतं न बाधते शीतम्।
कंबलवाले को शीत नही व्यापता ॥ २ ॥

(३) कंसंजघान कृष्णः ?
प्रश्न-कं-संजघान कृष्णः ?
कृष्णने किसका बध किया।
उत्तर-कंसंजघान कृष्णः।
कृष्ण ने कंस का बध किया ॥ ३ ॥

मुख-चपेटिका।

किं मां निरीक्षसि घटेन कटिस्थितेन।
वक्त्रेण चारु परिमीलितलोचनेन ॥
अन्यं निरीक्ष पुरुषं तव भाग्ययोग्यं।
नाहं त्वदर्पितदृशा परिचिन्तयामि ॥

❀ ससुराल-रहस्य ❀

अर्थ-एक स्त्री पानीका घड़ा बगलमें लिये हुये किसी पथिककी ओर मुख करके शंकित नेत्रोंसे देखने लगी तब उस पथिकने उसे लज्जित करने के अभिप्रायसे कहा हे बाले! तू मेरी ओर क्या देखती है मैं पनिहारियोंसे प्रेम नहीं करता, तब वह स्त्री बोली—

सत्यं ब्रवीमि मकरध्वजबाणपीड।
नाहं त्वदर्पितदृशा परिचिन्तयामि॥
दासोऽद्य मे विघटितस्तव तुल्यरूपः।
सोऽयं भवेन्नहि भवेदिति मे वितर्कः॥

तेरी ओर देखनेका मेरा यह अभिप्राय नहीं है कि मैं तुझसे प्रेम भिक्षा मांगती हूँ, किन्तु तेरी जैसी सूरत ऐसा मेरा एक दास है सो आज कहीं चला गया है, अतः तुझको देखकर विचार करती हूँ कि यह मेरा दासही है, या और कोई पुरुष, पथिक यह उत्तर सुनकर अत्यंत लज्जित हुवा और चला गया।

दृष्टिकूट प्रश्नोत्तरी।
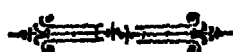
प्र०-इन्द्रको वाहन रविसुत, हनूमान भंढार।
ये तीनों एकत्र सखी, याको कौन विचार॥ तूं उदास क्यों?

उ०-रामहि रावण ना दई, ना भारत भगदन्त (भगदत्त)
त्रीपुर संकर ना दई, सो मोहि दीन्ही कन्त॥१॥ पतिन बोले—

प्र०-पतिव्रता निज पीव सँग, सूती उर लपटाय।
कुच अपनेसे दाबती, आन पुरुषके पांव॥

उ०-कृष्ण चन्द्रके हृदयमें, थी भृगुजीकी लात।
तेहि सँग राधे सी सती, अपने कुच लपटात॥२॥

❋ मुकलावा-बहार ❋

प्र०-खान पान सन्मानमें, सदा रहे अगवान।
अब कैसे पीछे भगे, राम चढावत वान ? ॥ वामहस्त दच्छिणसे कहा है ॥

उ०-कान लागि रघुनाथके, पूछत हौ अस यार।
दस काटौ एक वार या, एकेकहि एक वार ॥ ३ ॥

प्र०-केशन अहि उपमा दई, भूले कवी अचेत।
श्याम रहत तब ही डसत, स्वेत क्यों न डसिलेत ॥

उ०-तिरया तन मलयागिरि, अहि लपटे यहि हेत।
वे सूखी वे चल दिये, डार कंचुकी स्वेत ॥ ४ ॥

प्र०-याहीने सुरपति डस्यो, याहीने व्रजराज।
अव चाल्या पाताल कू, शेष डसनके काज ॥

उ०-उठते हो ऊंचे रहैं, भर ज्वानी सम होय।
क्षीण होत नीचे झुकें, कुच समझो सब कोय ॥ ५ ॥

प्र०-पनघट जाते पन घटै, पनघट वाको नाम।
कहिये पन कैसे रहै, पन-हारिनके धाम ॥

उ०-पनघट जाते पन घटै, यही कहैं सब कोय।
पनघट जा नहि पन घटै, जो घटमें पन होय ॥ ६ ॥

प्र०-दान देत चूकै नहीं, वोलत मीठे वैन।
ऊंचो कर कर देत है, फिर क्यों नीचे नैन ॥

उ०-देनेवाला और है, मैं काहूको दैन।
यह कलंक सिरपर चढ्यो, यातें नीचे नैन ॥ ७ ॥

प्र०-प्रीत प्रीत सब कोई कहै, कठिन तासुकी रीत।
आदि अन्त निवहै नही, वालूकासी भीत ॥

उ०-प्रीत जहां परदा नही, परदा जहाँ न प्रीति।
प्रीत करै परदा करै, प्रीत नहीं विपरीत ॥

शठ सनेह जीरण बसन, यतन करत फटिजाय।
स्वच्छ प्रीति रेशम लच्छा, उरझत सुरझत जाय॥ ८॥

प्र०-कोयल तुझमें बहुत गुण, बोलत मीठे बैन।
किस बिध तू कारी भई, किस बिध राते नैन॥
उ०-जब हरि मोंहि पैदा करी, तबके बिछुरे सैन।
कलपत ही कारी भई, रोवत राते नैन॥ ९॥
प्र०-चौपड़ खेलैं हे सखी, दस दस मोहर लगाय।
बाद न कीजै कामिनी, दे अक्षर मोहि चार॥
उ०-नाहरसे भी अधिक बल, साहिब चतुर सुजान।
हिय बिच नित प्रति बसत हौं, वर्ष बीसके ज्वान॥ १०॥

प्र०-चुन्दरि सिरपर सोहनी, बनी चटक रङ्गदार।
नथिके बाजू जो बसै, दे अक्षर मोहि चार॥
उ०-खुद मुँहसे जो मांगते, सीनेसे हुलिसाय।
सेवक हूँ मैं आपकी, लेवो हिय हरषाय॥ ११॥ खुशीसे लो.

प्र०-दुष्ट जननके संगते, सज्जन लहत कलेश॥
ज्यों दसमुख अपराधतें, बन्धन लह्यो जलेश॥
उ०-संग दोषते साधुजन, परत न दूषण मांहि।
विषधरही लपटे रहैं, चन्दनमें विष नाहिं॥ १२॥

प्र०-संगतसे गुण होत है, बुधजन कहत बखान।
गांधी और लुहारकी, देखो बैठ दुकान॥
उ०-निज पूरबले दत्त बिन, संगत ना गुण होय।
पारस संग सत वर्ष रह, काष्ठ स्वर्ण ना होय॥
जो अपनी उन्नति चहे, तजे न ऊँचो साथ।
ज्यौं पलाश संग पानके, पहुँचै राजा हाथ॥ १३॥

प्र०-नीकीहूं फीकी लगै, विन अवसरकी वात।
जैसे रणके वीचमें, रस शृंगार न सुहात॥

उ०-फीकीहूं नीकी लगै, कहिये समय विचार।
सबको मन हर्षित करै, ज्यों विवाहमें गार॥ १४॥

प्र०-एक चतुर दूजे निर्धनी, दोनो दुख क्यों दीन्ह।
या चतुराको धन देवो, या चतुराई लो छीन्ह॥ ईश्वरके प्रति.

उ०-जो चतुराको धन देऊं, विना पंख उड़िजाय।
जो चतुराई छीन लूं, तड़फ तड़फ मरिजाय॥ १५॥

प्र०-रे माटीके पोरवा, तोहि डारौं पटिकाय। कच्चा पोरवा.
ओठ रखे हैं पीवको, तूं क्यों चूसे जाय॥ ओंठमें चिपका.

उ०-लात सही घूंसा सहे, वहुतक सहे कुदार।
इन ओठनके कारने, सिरपर धरी अंगार॥ १६॥

पोरवाकी ओरसे सखी बोली-

प्र०-जिन दिन देखे वे कुसुम, गई सुबीत बहार।
अब आलि रही गुलावमें, निपट कटीली डार॥

उ०-इहि आसा अटक्यो रहै, आलि गुलावके मूल।
हुइ हैं वहुरि वसंत ऋतु, इस डारन वे फूल॥ १७॥

प्र०-बृंदावन वंशी बजी, मोहे तीनो लोक।
वे तीनों मोहे नही, रहे कौनसे लोक॥

उ०-कंस, कंसकी स्त्री, और कंसकी माय।
ये तीनो मोहे नहीं, रहे मदपुरी छाय॥
सती न मोही सत्यसे, शेष श्रवण बलहीन।
वेद न मोहे ज्ञानसे, यूं नहिं मोहे तीन॥ १८॥

प्र०-रहिमन मोंहि न सुहाय, अमी पियावत मान बिन।
जो बिष देहि बुलाय, प्रेम सहित मरबो भलो॥

उ०-मान सहित विष खायके, शंभु भये जगदीस।
बिना मान अमृत पियो, राहु कटायो शीस॥ १९॥

❋ ससुराल-रहस्य ❋

प्र०-बढ़े केश हों मैले कपडे, और कर्कशा नार।
सोनेको धरती मिले, नर्क निशानी चार॥

उ०-पान पुराना घी नया, और कुलवंती नार।
चौथी पीठि तुरंगकी, स्वर्ग निशानी चार॥ २०॥

प्र०-कबहुँ न सेज संवारिके, मेट्यो काम कलेश।
जैसे कंता घरभले, वैसे भले बिदेश॥

उ०-कबहुँ न हँसकर कुचगहे, कबहुँ न रिसकर केश॥
जैसे कंता घरभले, वैसे भले विदेश॥ २१॥

अन्तर्लापिका पहेलियां।

पातुर आई क्यों नहीं, अब लों बरी न आग।
कर्णबेध क्यो नहि भयो, क्यों नहिं लायो साग॥
क्यों नहिं लायो साग, बयस कतुक तुझ प्यारी।
क्यो नहि प्यारी दीख पड़े, इव सखी तुम्हारी॥
काहे भरे सुवेद भीजी, क्यों यह तन सारी।
क्यों नहि रोकत तृषा प्रिये! प्यारे "नहि बारी"॥ १॥

कल न परत दिन रैन सखि, कब ऐहैं पिय मोर।
करत काहि वन मोरगण, पाय घटा घन घोर॥
पाय घटा घन घोर, काहि बिरहिन नहिं पावत।
वायु बेग सम चले, काहि बल इञ्जिन यहरत॥
मृतकर काहि लखत, पावत नहि वर फल।
दीजो मोहिं बताय, सुनो धीरज धर यह "कल"॥ २॥

केहि बिन सुख कोउ ना लहैं, मलह करत हैं काहि।
केहि बिन फीको गान है, को तरु लरके माहि।

स्वच्छ होय केहि ढिग गये, जारे को दुख जाल ॥
अहै सखी यह दुष्ट कोऊ, नहीं सखी यह "ताल" ॥ ३ ॥

केहि तरु उपवन रोपि, मीत नर स्वर्ग पधारें।
चार दिवस तक कौन, राजपदवी को धारें॥
कीरति तरुणी तरैं, काहिकी नित जग सागर।
प्राणी पावत काहि, बहुत दिन तप करके? "वर" ॥ ४ ॥

दृष्टिकूट पहेलियां।

शिवसुत माता नामके—अक्षर चार सुवेस।
आदि अन्तको समझ तुम—भेजत रहो हमेस ॥ उ० पाती ॥ १ ॥
आदि मूग मध बाजरो—अन्त कसेरो जान।
हम लिक्खें आदर सहित—लीजो साजन मान ॥ उ० मुजरो ॥ २ ॥
लक्ष्मीपतिके कर बसै—पञ्चाक्षर परमान।
आदि अङ्क एक छोड़िकै—दीजो साजन आन ॥ दर्शन ॥ ३ ॥
अर्ध नाम दरबारको—कागज तात मिलाय।
सो तुम हमको दीजियो—जिया बहुत अकुलाय ॥ दर्शन ॥ ४ ॥
सत्तर तीस पचास दस—इन पावन जो होय।
ताहि बीच मोहि राखियो—सदा रावरे सोय ॥ मनबीच ॥ ५ ॥
अजापुत्रको शब्द ले—हाथीको ले अन्त।
वो तरकारी ल्योयियो—भोजन बनै अनन्त ॥ मेंथी ॥ ६ ॥
अर्धनाम उड़ता फिरै—अर्धा हो पछताय।
वो तरकारी ल्याइयो—राब रंग सब खाय ॥ सूवाचूका ॥ ७ ॥
एक सुहागिन कर बसै—दूजी सीस सुहाय।
रक्त करेली रंग दोउ—हमको देहु पठाय ॥ कूंकूं मेंहदी ॥ ८ ॥

अजासहेली तासु रिपु-ताजननी भरतार।
ताके सुतके मित्रकूं-भजिये बारंबार ॥ श्रीकृष्ण ॥ ९ ॥
शिवसुत बाहन तासु रिपु-तारिपु पालक मात।
ताको नित प्रति प्रेमसे-भजत रहो दिन रात ॥ भवानी ॥ १० ॥

हिन्दी पहेलियां।

तिमिर पुंज अद्भुत लख्यो-टरत न लखि शशि भान।
अपनी गति वह नित रहै-जानत सकल जहान ॥ हाथी ॥ १ ॥
छुटी न तनकी श्यामता-गहे रहत नित मौन।
तिमिर देख भागत फिरै-ऐसो कायर कौन ॥ परछांही ॥ २ ॥
एक नारी अजब कटीली-छबिली दुबली कमर लचीली।
जब वाकूं लागत है भूँख-खावै गीला सूखा रूंख ॥ आरी ॥ ३ ॥
सास कुंवारी वहू हमलमें-नणदसुठौरा खाय।
देखनवाली बेटा जणें-बांझड दूध पिलाय ॥ बन्दूक ॥ ४ ॥
एक नारी जलकी वासी-फिर भी नितही रहै पियासी।
पड़ै स्वातिकी मुँहमें बूंद, डूबै जलमें मुंह ले मूंद ॥ सीप ॥ ५ ॥
एक नार है पीकी प्यारी, उसमें यह अचरज अति भारी।
जो कोइ वाकूं हाथ लगावे, मरना जीना तुरत बतावे ॥ नाडी ॥ ६ ॥
मांस सीत रंग सांवरो, दोय सींग हैं माथ।
हारचो नाहर नाम है, उपजै पानी साथ ॥ सिंघाड़ा ॥ ७ ॥
एक नार है अजब रंगीली, मर्दोंसे वह अड़ती है।
एक मर्दको खाकरके वह, दो मर्दोंपर चढ़ती है ॥ पालकी ॥ ८ ॥
पानीमें निस दिन रहै, जाके हाड़ न मांस।
काम करै तलवारको, फिर पानीमें वास ॥ कुम्हारका डोरा ॥ ९ ॥
फट्यो पेट दारिद्री नाम, उत्तम घरमें वाको ठाम।
श्रीको अनुज विष्णुको सारो, पंडित हो सो अर्थ विचारो ॥ शंख ॥ १० ॥

कहो यार वह चीज कौनसी, जिसको मुर्दे खाते हैं।
मर जिन्दे उसको खावें तो, कुछ दिनमें मरजाते हैं ।।कुछ नही ११॥
बड़े जनोंके आदिमें, टाबरके अन्तमें रहता है।
बहुत दिनों तक तपकरके, मुशकिलसे नर पा सकता है॥ वर ॥१२॥
श्याम बरण पीतांबर कांधे, मुरलीधर नहि होय।
बिनु मुरली बहु नाद करै, बिरला बूझै कोय ॥ भौंरा ॥ १३ ॥

अर्ध पहेलियां।

लगलग कहूँ तो ना लगै, मत लग कहूँ लगिजाय ॥ ओठ ॥ १ ॥
चलै नित्य पर हटै न तिलभर ॥ घड़ी अथवा कुम्हारका चाक ॥२॥
एक वृक्षका आधा नाम, अर्थ करो या छोडो ग्राम ॥ नीम ॥ ३ ॥
जलमें रहै अगिनमें उपजै, आंखोंका शृंगार ॥ कज्जल ॥ ४ ॥
वनमें उपजे सब कोई खाय, गृहमें उपजे गृह बह जाय ॥ फूट ॥ ५ ॥
छोटीसी नारी चम चम करै, लाख टकाको बिणज करे ॥सूई॥ ६ ॥
पेटमें अंगुली सिरमें पत्थर, रहै भले जनोके कर ॥ अंगूठी ॥ ७ ॥
करै नाकसे अपना काम, बोलो यारो उसका नाम ॥ हाथी ॥ ८ ॥
छोटेसेका देख तमासा, बड़े २ रोवै भरि सांसा ॥ बिच्छू ॥ ९ ॥

टूटा हाथ देख घर आवे ॥ रेल ॥ १० ॥
पेटमें गुदड़ी तन है नंगा ॥ दवात ॥ ११ ॥
हाथ लिये निज दर्शन दे ॥ ऐना ॥ १२ ॥
एक ले दो कर फेंकी ॥ दातून ॥ १३ ॥

सवैया—आदिके अंक बिना जग जीवत, मध्य बिना जगदीन कहावै।
अन्त बिना सगरो जग है बस, जाहिर ज्योतिसो यों छबिछावै॥
अंक जितै जग लोक जलालदी, मो मनसा तियको अति भावै।
श्यामके अंगमें रंग प्रसिद्ध है, पंडित होय सो अर्थ बतावै ॥
काजल ॥ १ ॥

पहेली प्रश्न दो, उत्तर एक।

खाना क्यों न खाया, गवैया क्यों न गाया? गला न था ॥ १ ॥
पथिक क्यों न सोया, मेम क्यों न गई? साया न था ॥ २ ॥
ब्राह्मण क्यों न न्हाया, धोबन क्यों पिटी? धोती न थी ॥ ३ ॥
हार क्यों न ढूंढा, बर्फी क्यों न बनी? खोया न था ॥ ४ ॥
अनार क्यों न खाया, वजीर क्यों न रखा? दाना न था ॥ ५ ॥
बोरा क्यों न सीया, पट्टी क्यों न बंधी? सूजा न था? ॥ ६ ॥
आंखें लाल क्यों हैं, तरकारी क्यों न बनी? सोया * न था ॥ ७ ॥
खिचड़ी क्यों न पकाई, कबूतर क्यो न उड़ाया? छड़ी न थी ॥ ८ ॥
ब्राह्मण प्यासा क्यों, गधा उदासा क्यों? लोटा न था ॥ ९ ॥

चुनी हुई पहेलियां।

(फारसी) ए मुर्ग दीदम न पावो न पर।
न शकमें मदर न पुस्ते पदर॥
न बर आसमाने न जेरे जमीं।
वो हमेशः खुरद गोस्ते आदमी ॥ गुस्सा-क्रोध ॥ १ ॥

(उर्दू) नुक्तेके हेर फेरमें हमसे जुदा हुआ।
नुक्ता जो फेर रख दिया, खुद ही खुदा हुआ ॥
खुदा-जुदा ॥ २ ॥

(मराठी) चकमक चांदणी वाटोळें दार।
हळुच घाल बापा, दुखतें फार ॥ चूड़ी पहराना ॥ ३ ॥

(छत्तीसगढ़ी) पांच रुपैयाके घर जरि जाय,
दोस्ताना झनि छूटै बिहाता मरिजाय।
उत्तर-पांच तत्त्वका शरीर जल जाय, संसार सुख नष्ट होजाय परन्तु परमेश्वरका प्रेम न छूटे ॥ ४ ॥

---

* सोया एक तरकारीका भी नाम है।

संस्कृत समस्या ।

समस्या-ठठं ठठं ठं ठठठं ठठं ठः-

पूर्ति-भोजप्रियाया मदविह्वलाया कराच्च्युतं चन्दनहेमपात्रम् ।
सोपानमार्गे प्रकरोति शब्दं-ठठं ठठं ठं ठठठं ठठं ठः ॥ १ ॥

समस्या-हुताशनश्चन्दनपंकशीतलः-

पूर्ति-सुतं पतन्तं प्रसमीक्ष्य पावके, न बोधयामास पतिं पतिव्रता ।
तदाऽभवत्तत्पतिभक्तिगौरवात् हुताशनश्चन्दनपंकशीतलः ॥ २ ॥

समस्या-शतचन्द्रनभस्तलम्-

पूर्ति-मुरारिकरघातेन विह्वलीकृतचेतसा ।
दृष्टं चाणूरमल्लेन शतचन्द्रनभस्तलम् ॥ ३ ॥

समस्या-डुंडुंडुडूंडूं डुडुडूं करोति ।

पूर्ति-एकांतसङ्गे सुरतप्रसङ्गे यत पर्दितं मण्डनमिश्रपत्न्या ।
तद्गंधमाघ्राय न किंचिदूचे डुंडुंडुडूंडूं डुडुडूं करोति ॥ ४ ॥

समस्या-गुलु गुग्गुलु गुग्गुलु-

पूर्ति-जम्बूफलानि पक्वानि, पतन्ति विमले जले ।
कपिकम्पितशाखातो, गुलु गुग्गुलु गुग्गुलु ॥ ५ ॥

समस्या-चरमगिरिनितम्बे-चन्द्रविम्बावलम्बे-

पूर्ति-अरुणकिरणजालैरन्तरिक्षे गतर्क्षे ।
चलति शिशिरवाते मन्दमन्दं प्रभाते ॥
युवतिजनकदम्बे नाथमुक्तोष्ठविम्बे ।
चरमगिरिनितम्बे चन्द्रविम्बावलम्बे ॥ ६ ॥

विपरीतसमस्या-गौरी मुखं-चुम्बति-वासुदेवः ।

पूर्ति-का शम्भुकान्ता किमु नेत्ररम्यं शुकार्भकः किं-कुरुते-फलानि ।
को मुक्तिदाता विपरीतपृच्छा गौरी मुखं चुम्बति वासुदेवः ॥७॥

विपरीतसमस्या-कुन्ती सुतो रावण-कुम्भ-कर्णाः।

पूर्ति-का पांडुपत्नी गृहभूषणं किं, को रामशत्रुः क अगस्त्यजन्मा।
कः सूर्यपुत्रो विपरीतपृच्छा-कुन्ती सुतो रावण-कुंभ-कर्णः ॥८॥

हिन्दी समस्याएं।

समस्या-"मनु चन्द्रको चीर कुसुम चुवायो"
पूर्ति-एक समय प्रियने मुखसे, मुख खोलके आप तंबूल खवायो।
चन्द्रमुखी मुसुकायके आपन, ज्यों कर जोरिके शीस नवायो॥
लाल उरोज गहे करसे, उमगीं छतियां जियरा हुलसायो।
मुसक्यातहि पीक गिरयो मुखसे 'मनु चन्द्रको चीर कुसुम चुवायो'॥ १॥

समस्या-"केहि कारण हालत डोलको पानी-"
पूर्ति-एक समय जल लावनको, घरसे निकली अबला बृजरानी।
जातेहि कूपमें डोल दियो, जल खैंचतमें अँगियां मसकानी॥
देख सभा उघरी छतियां कवि, सत्य कहै मनसा ललचानी।
हाथ बिना पछितात रही, यहि कारण हालत डोलको पानी॥ २॥

समस्या-"निकस्यो रवि फोड़ पहाड़की नाईं।"
पूर्ति-रातिसमय रसकेलि कियो, अरु भोर भये उठ मज्जन धाईं।
क्षीरसे नीरमें दे डुबकी, जमुनाजलमें जस लालिमा छाई॥
ले डुबकी जलसे निकसी, उरझी अलकैं मुखपै छितराई।
दोउ कर केश सम्हारतही 'निकस्यो रवि फोड़ पहाड़की नाईं'॥ ३॥

समस्या-"केहि कारण भात बफात है पानी।"
पूर्ति-एक समय लंकापति रावण, आय हरी श्रीरामकी रानी।
कोप चढ़े दसरत्थके नंदन, अंजनिपूत भयो अगवानी॥

बांध लँगोट कंगूर चढ्यो कपि, लंकजरी धरती अकुलानी।
आय समुद्रमें पूंछ दई 'येहि कारण भात बफात है
पानी'॥ ४॥

समस्या-"केहि कारण सुन्दरि हाथ जरी"

पूर्ति-नई अबला रस भेद न जानत, सेज गई जियमांहि डरी।
रस बात कही तब चौंकचली, अरु धायके कंतने बांह गही॥
दोउनके झकझोरनमें अली, गांठ पितांबर छूट पड़ी।
कर दीपक कामिनी झांप लियो 'येहि कारण सुन्दरि हाथ
जरी'॥ ५॥

समस्या-"फूटी अनार बयारके मारे"

पूर्ती-भोरहि नींद उचाट भई तब, कामिनि आपुन भवन ओसारे।
औसर कंजन में कज-दौड़त, धीरज आंचर लागि सँवारे॥
औसर आन पर्यो अकबर दृग, जाय जुटे सो टरत न टारे।
कामिनी ज्यों मुंह फेर हँसी जस, 'फूटी अनार बयारके
मारे'॥ ६॥

समस्या-"दूधको दूध और पानीको पानी"

पूर्ती-नीर औ क्षीर मिलाय अहीरकी, बेचत ही मनमें हुलसानी।
हंसको रूप धर्यो बृजनन्दन, घर वाके कहागुजरी नहिं जानी॥
ले द्रव जाय बसे तरुमें हरि, राखत दूध बगावत पानी।
'कोई करो कोई करदेखो इमि, दूधको दूध औ पानीको
पानी'॥ ७॥

समस्या-"जौलौ हैं नये नहिं तौलौ नये हैं"

पूर्ती-हैं पिय प्यारीके गेंद खिलौंना, मनो चकवा तन मांहि भये हैं।
त्यों "कविचन्द्र" गुलाई लिये, तकि सौतनके उर साल दये हैं॥
कञ्चन बेल कि गोल किधौं फल, मोल अमोल अबोल छुये हैं।

प्यारी तिहारे दोऊ कुच देखिये, "जौलौं हैं नये नहिं तौलौं नये हैं" ॥ ८ ॥

समस्या-"केहि कारण हाथसे छूटिगो लोटा" ?

पूर्ती-ताल नहान चली एक कामिनी, लागि पिछौरामें सुन्दर गोटा।
केलिमें राति अघानि नही, वह तासुको कंथ रहै कछु छोटा॥
सो बलदेव उमङ्ग भरे, निज अङ्ग उघारि निहारत जोटा।
वाहि समय पिय दीख पड़्यो, सकुचायके 'हाथसे छूटिगो लोटा' ॥ ९ ॥

समस्या-"केहि कारण नारि हँसै औ फँसै ना ?"

पूर्ती-सुन्दर रूप रच्यो विधना, कबहूँ पियके हियसे निकसै ना।
तैसो स्वभाव बड़ो हँसनो, 'बलदेव' सनेह सुचित्त बसै ना॥
नैन मिले मनहूँ मिलगो, देहिया न मिलै कौऊ लोग हँसै ना।
चातुर नार चलाक बड़ी, 'यहि कारण नारि हँसै औ फँसै ना' ॥ १० ॥

समस्या-"सकुचावत गोद खिलावे पतीको।"

पूर्ती-श्री गिरिजेश नरेश दिनेश प्रलम्बके गेह भो जन्म रतीको
कामऽवतार प्रद्युम्न मिले शिशु रूपमें मीनके पेटसे तीको॥
पूरी भई मनकी सब साध मिले जग मध्यमें का न सतीको।
चन्द्रमुखी मुसुक्यावत औ 'सकुचावत गोद खिलाव पतीको' ११।

समस्या-"विधवाके ललाट सुहागको टीको !"

पूर्ती-(१) सुंदर पुष्प हैं गंधविना और कर्मविना जस स्वांग न नीको।
भक्ति बिना नर पुत्र बिना घर लौन बिना सब व्यञ्जन फीको॥
दान बिना धन ज्ञान बिना तन मेघ बिना झपका बिजुलीको।
त्यौंहि न सोहत सत्य सखे, 'विधवाके ललाट सुहागको टीको'॥

पूर्ती-(२) धनधाम को त्याग अकाज भई सुवो बाम जु पावत धामगतीको। को जान सके विधिकी गतिको कर्मनवश भाव

गयोजु पतीको ॥ पति प्राण तजे विधवा वो भई तब होन
चली सज साज सतीको। येहि कारण है "हरिराम" सुनो
'विधवाके ललाट सुहागको टीको' ॥ १२ ॥

समस्या-" झख मारत आसन जोग जेते "

पूर्ती-विधिकोमुख पंचम छीतभयो ऋषि नाचनज्यो कपिकोमुख लेते
भीलनिपे महादेवरमें सुरनाहकके चिह्न भये तन केते ॥
उद्धव रावले नेक सखा हम देखेहैं गोपिन धोखा देते ॥
एकही भोगके आसनपे 'झख मारत आसन जोगके जेते' ॥१३

समस्या-"कलंक लग्यो पर अंक न लागी "

पूर्ति,—औचक दीठि परे कहुं कान्हजू —
तामें कहै ननदी अनुरागी।
सा सुनि सास रही मुख फेरि —
जिठानी फिरै जियमें रिसपागी।
नीके निहारिकै देखे न आंखिन —
हौ कबहूं सँग रैन न लागी।
है पछितैबो यही सजनी कि —
"कलंक लग्यो पर अंक न लागी।" ॥ १४ ॥

समस्या—" हाथके छुयेसे कोऊ बेर हू न खायगो "

पूर्ती—मानुषको जन्म पायो, सुन्दर रूप रङ्ग पायो,
कर सतसङ्ग जासे जियरा हुलसायगो।
ज्वानीके तरंगको करै क्यों मिजाज आली,
दिन ढलजाय जैसे यह भी ढलजायगो ॥
करै क्यों गुमान ऐसी तेजी तरुणाई पाय,
फिर ललचाय चित्त पाछे पछितायगो।
ज्वानीके चार दिना बीत जांय पाछे सखी,
"हाथके छुयेसे कोऊ बेर हूं न खायगो" ॥ १५ ॥

ससुराल-रहस्य

समस्या—" टूटे फूटे सड़ेको कौन विध सराहिये "

पूर्ती—टूटे जब ईख जाके मिश्री गुड़ कन्द करि,
ताको ले प्रसाद देव देविन चढ़ाइये ।
फूटके कपास पत राखत है आलमकी,
जाके होत वस्त्र कहां, कहांलौ गिनाइये ॥
सडे जब सन जाके स्वेत वर्ण कागज करि,
जापर कुरान औ पुरानहूं लिखाइये ।
भाषत यूं ब्रह्म कवि, शहन्शाह अकबरसे,
"टूटे फूटे सड़ेको याही विध सराहिये" ॥१६॥

समस्या—"गुण ना हिरानो गुणग्राहक हिरानो है ।,,

पूर्ती—वेदके पढ़ैया कूं अढैया भर देत नांय,
आल्हाके गवैया कूं रूपैया रोज ठानो है ।
मदिरा औ माहुर निज ठौर धरे बिकै नित,
गोरस औ माखन गली गलियन विकानो है ॥
कहै कवि ठाकुर पतिव्रता को न वस्त्र मिलें,
वेश्या निज अंग सब भूषण सिरानो है ।
एरे गुनवान तोहि कौन देश दीजै दान ,
"गुण ना हिरानो गुणग्राहक हिरानो है" ॥१७॥

समस्या—" दिननके फेरसे सुमेर होत माटी को"

पूर्ती—भूपति मँगैया कामधेनु ठाठ गैया होत,
मदसे उन्मत्त गयन्द चेरो होत चांटी को।
कहै शिवलाल तब धर्म किये पाप होत,
वैरी सग बाप होत सांय-होत सांटीको ॥
स्यार बनराज बनराज नीच स्यार होत,
कल्पतरु होत देख्यो छोटो पेड़ जांटी को ।
निरधन कुबेर होत सूई शमसेर होत,
"दिननके फेरसे सुमेर होत माटीको" ॥१७॥

❋ मुकलावा-बहार ❋

प्रश्नोत्तर (कवित्त सवैया)

प्रश्न—चन्द्र छिपै अदरी बदरी नहीं, सूर्य छिपै नहीं बद्दल छावै।
जंग जुरैं रजपूत छिपै नहीं, दाता छिपै न भिखारीके आये॥
चञ्चल नारिके नैन छिपै नहि, नीच छिपै न बड़प्पन पाये।
जोग लिये और भभूत मलीपर, कर्मकी रेख छिपै न छिपाये॥

उत्तर—सूर्य छिपै नभ कारी घटा, औ चन्द छिपै निशि मावसआये।
भोर भयेपर चोर छिपै, अरु मोरछिपै रितु फागुन आये॥
पानीकी बूंद पतंग छिपै, औ मीन छिपै इच्छा जल पाये।
औट करो सत घूंघटकी, पर चञ्चल नैन छिपै न छिपावे॥१॥

प्रश्न—जात हौ परदेश पिया, भेजियो सन्देश मोय,
छोड़के भरोसे नैन, अंत ना लगाइयो ॥
चालियो ना कुरीत रीत चाकरीकी येहि पिया,
सूरन संग बैठकर, क्रूर न कहाइयो ॥
रहियो असोच ध्यान धरियो गोपालजीको,
करके सेवकाई नित साहेब रिझाइयो ॥
परधन परदारा परवार देख भूलियो ना,
करजा करार पिया वेगि घरे आइयो ॥

उ०—जात हौ सियानी सरमानी पतिव्रता नार,
अपने पतिव्रतमें कलंक ना लगाइयो।
घूंघट उघारि मुँह बोलियो न काहू संग,
जोबनके जोर नैन अंत ना लगाइयो ॥
बैठियो समाज पांव धरियो न धमक कभी,
कर कर मिजाज नैन बाण ना चलाइयो।
बार बार प्यारी समझाय कहूं तोसो मैं,
पौरिके कपाट दिन डूबेसे लगाइयो ॥ २ ॥

❋ ससुराल-रहस्य ❋

प्रश्न—नारि नवेली गई ससुरार, पिया संग पौढ़ि रही मिलके ।
रसकेलि समय त्रिय जीत गई, रंग दियो पतिकूं हिलके ॥
पियके मनमें अस भेद भयो, त्रिय भ्रष्ट भई परकूं छलिके ।
झट ठाढ़ भयो रिसमें भरके, कुलटा कहि आय गयो चलके ॥

उत्तर-पहिलेही समागम रूठ्यो पिया, त्रिय जानगई मनकी गतिसारी।
चातुरके भ्रमजो उपज्यो लखि, भीति पें प्यारी करी चित्रकारी॥
गर्भसे छूटत सिंहको बाल, गयंदके कुम्भमें हाथल मारी ।
हेत कहा कहे बुंद पिये, चित होय प्रसन्न रच्यो रस भारी॥२॥

प्रश्न-गौतम ऋषि आये सुरपतिके सहस्र भग,
चन्द्रके कलंक ताही दिनसे लगायो है ।
कपिल मुनि कोपे नृप सगरसुत भस्म भये,
अगस्तजी क्रोधे जल सिन्धुही सुखायो है ॥
दुर्बासाकी तीव्र दृष्टि यादव सब नष्ट भये,
नारदके चिढ़ाये राम बन बन फिरायो है ।
परसराम फरसासे छत्री सब नष्ट किये,
ब्राह्मणके सताये कहौ कौन सुक्ख पायो है ॥

उत्तर-कुंभमें कूप समात नहीं, सुत सिन्धु समस्त चलू भर हैं ॥
गणिका सुत तज रघुनाथ शुरू भिवरी सुत बेद हृदय धरिहैं॥
भृकुटि सुत चिरंजीव मारकंडेय दासीसुत बिदुर कृपाहर हैं ।
सुत होत बड़ो अपनी करनी पितुबंश बड़ोतो कहाकरिहैं॥४॥

प्रश्न-एक कोई पंडित हो ज्ञानी, गुण मंडित हो,
डस्यो काम काल गयो गणिकानिवासमें ।
उन कियो नरवस सरबस उतार लियो,
निसिया यों बीती सब प्रेमके हुलासमें ॥
भोर भये गणिकाहु मुखसे मुसकाय बोली,
कहौ प्यारे फेर मिलैं ? कौनसे सुपासमें ।

वेद औ पुरान सब सांचे होय प्राण प्रिय,
हम तुम फेर भेटें कुंभीपाक वासमें ॥

उ०—कृष्ण कीन्ही कुब्जासे, शिवजी भिलिनीसे कीन्हें
ब्रह्मा हू सुतासे सुनो रतिकी सुवासमें
इन्द्र ऋषि नारी सेती चन्द्रमा तारासे कीन्ही,
श्रृंगी ऋषि संताकी फँसे थे प्रेमपासमें
वृत्रासुर मिश्रासे, पराशरजू सत्याहू से,
विश्वामित्र मेनकाकी लगे रहे आसमें।
जेते सब देहधारी, रमे संग पर नारी,
एते आये कहो कौन, कुम्भीपाक वासमें ॥ ५ ॥

प्र०—आई हौ आज नई बृजमें कछु नैन दिखायके रारि मचै हो।
जावत हौ हमसे छलिके दधि बेचन आजसो जान न पैहो ॥
लैहों चुकाय सबै दिनको रसखान भरी मनमें पछितैहो।
होतबड़ी जो बड़े घरकी अंठिलात चली क्या जगात न दैहो। (कृष्ण)

उ०—बात करी तुम गोरसकी, हमसे जु कहौ कितनो तुम लैहो।
गोरसके मिस वो रस चाखत, सो रस भूलि कबौं नहि पैहो ॥
हाथ लगावत हौ छतियां, बतियां मुखतें विपरीत कहै हो।
काहूको जेवर जात रहै तब, मोल छलाके लला विक जैहो। (सखी)
चांदनी चांद छिटक्क रही, जहां दीपक ज्योति जुई न जुई।
जहँ कंचन मोतिन हार लसै, तहां कांचकी पोत पुई नपुई ॥
फुलवारी सु फूल रही जो अली, तो कलीकी सुगन्ध लई न लई।
बृजनायके साथ हजार सखी, एक तोसी गँवार भई नभई॥६॥मनखुस

प्रश्न—(१) कृपण कहै माया मैं तुमसे नेह लाया,
अब अन्त समय आया यमदूत आय घेरे।

पेटमें न खाई ना अङ्गमें लगाई,
बड़ी मुशकलसे कमाई सदा धूप दीन्ही तेरे ॥
पुन्य नहीं कीन्हीं किसी जाचकको न दीन्हीं,
मैं तो भेली कर लीन्ही भाग्यो चान्दने अन्धेरे ॥
अब अर्ज करूं तोसूं तू नेह पाल मोसूं,
तेरा पांव सदा धोस्यूं तूं सङ्ग चाल मेरे ॥

उ०—माया उठ बोली, कृपण करैं क्यूं ठठोली,
जातूं यमहूकी पोली भोदू देर क्यों लगावै है ।
मैं तीन देह धारूं कार्य जगतका सुधारूं,
बहिन बन पधारूं जो मुझमें कुछ मिलावै है ॥
माता बन जाऊं वाको गोदमें खिलाऊं,
नित्य कंठसे लगाऊं वो नर सदा चैन पावै है ।
पुन्य करै भारी वाकी बनी रहूं नारी,
वो रहै सदा सुखारी, वेद स्मृति यूं गावै है ॥ ७ ॥

प्र०—कृपण कहै माया तूं दगा किया मोय सेती,
पहिले जान जातो तो खरनकूं चराय देतो ।
चुंपके उठाय लीद धूपमें सुखाय तेरी,
बांधिके गठरिया जाय अग्निमें जलाय देतो ॥
बाकी कुछ रहती तो ढूंढ़ धर अपनेसे,
गङ्गाके तीर जाय धारमें बहाय देतो ।
अब कहन नहि पाऊं हाथ पांव सब सुस्त भये,
सारे कुटुम्बी टेर योंही समझाय देतो ॥

उ०—माया फिर बोली कृपण तेरी औकात क्या,
मोंहे मैं शंकर सिद्ध यती वेद बानी है ।
ब्रह्मा और वेद सब मेरी प्रतिपाल करैं,
गुनिजन मम महिमा ठौर ठौर पै बखानी है ॥

❁ मुकलावा-बहार ❁

सुन रे अज्ञान ! वात तृष्णा दिन वढै रात,
त्यागे मोहि विरला कोई सच्चा सुज्ञानी है।

तोसा नर होता खावे रुधिर मध्य गोता,
जावे सीधा नर्क रोता, वाध पक्षिशास्त्र ज्ञानी है॥

पैसे विन वाप कहै पूत कपूत मेरा,
पैसे विन भाई कहै मेरा दुखदाई है॥

पैसे विन काका कहै कौनका भतीजा तूँ,
पैसे विन सास कहै कौनका जंवाई है॥

पैसे विन घरकी त्रिया सीधी ना वात करै,
पैसे विन सदा लोग करते हसाई है॥

पैसे विन राज औ समाजमें कदर नाहि,
देखो कलियुगमें एक पैसेकी वड़ाई है॥

प्रश्न-समुद्र वड़ा न मुक्ता जिसमें, नीर अथाह भरा तो क्या।
ब्राह्मण होय ब्रह्म नहि चीन्हा, चारों वेद पढ़ा तो क्या॥
राजा हो रैयत नहि पाले, राज्यतिलक पाया तो क्या।
रैयत होय हुक्म नहि मानै, रैयत कहलाई तो क्या॥
पुत्र सरीखी चीज जगतमें और दूसरी प्यारी क्या।
निज पति त्याग अंत रति ठाने वो हत्यारी नारी क्या।
मित्र मित्रसे दगा कमावे उस भडुवेकी यारी क्या।
मन मुटाव सम चीज जगतमें और दूसरी खारी क्या॥

उत्तर-क्या करै तदवीर जहां तकदीर नही है।
क्या फूलैगा कमल जहां पर नीर नही है॥
क्या होवेगा विजय जहांपर वीर नहीं है।
क्या ठहरेगा प्रेम जहांपर पीर नहीं है॥ ९॥

प्रश्न-भारतकी सम्पति हो होनहार बन्धु फिर,
पश्चिमकी यावना दिलेरी बन सह्यो रह्यो।

❋ ससुराल-रहस्य ❋

तुममें ऋषि पूर्वजोंके खूनका संचार देख,
दिग्विजयि सिकन्दर निज देशकूं फिरयो रह्यो ॥
नेता ये द्वार तब जगाते अरु कहते हैं,
कबतक परतंत्रतामें जननी यो बन्ध्यो रह्यो ।
सिंहका सियार बन भूलि गयो पूर्व मंत्र,
लोहेके पींजरेमें पारस क्यों धरयो रह्यो ॥

उत्तर-निपट घनघोर घटा छाई गगनांगनमें,
चपलाकी चमक जग नश्वर है बता रह्यो ॥
ऐसी निशि भाद्रपद अष्टमी कट घेरमांहि,
देवकी-वसुदेव दोऊ कष्टसे कराह रह्यो ॥
गरजत धड़ाधड़ जल बूंदनकी वृष्टि कर,
मेघवा व्रजमेदिनीको दुख दै सता रह्यो ॥
रे रे निर्लज्ज कंस ! अवनि अवतंस हंस,
लोहेके पींजरेमें पास यूं धरयो रह्यो ॥ १० ॥

प्रश्न-तीरत द्रौपदीको चीर दुर्योधन सभाके मध्य,
नींचने नगन चित्त करबेको धारी है ।
जाहि वक्त दुशासन गयो वस्त्र ऐंचिबेको,
पंचपती आगे पति जाय ना पुकारी है ॥
एहो करुणानिधान दीनबन्धु दीनानाथ,
सुधिलेव, अम्बर बढायो गिरधारी हैं ।
सारीमध्य नारी है कि नारीमध्य सारी है,
कि सारी है कि नारी है कि नारी है कि सारी है ॥

उत्तर-कबहूँ न जायके बिसाये बजाजन घर,
जुलाहे बिठाय न बनाय दरपट ×सों ।

× करघा, कपडे बनानेका यन्त्र.

कारीसी कमरिया एक सोऊ ना वसुदेवजीकी,
तीन हाथ पटुका लपेटे कटसों ॥
सुनेना राज्यके रजैया कबहुं कृष्णचन्द्र,
लूटि २ खायो दधि गूजरिनके घटसों ।
तबै लीन्हैं गोपियनके सबै वस्त्र चोर चोर,
सोई देत जोर जोर द्रौपदीके पटसों ॥ ११ ॥

प्र०-नरसीके भातको भरायके बचाई लाज,
भिलनीके जूठें बेर लागे अति प्यारे हैं ।
द्रौपदीकी सुनी टेर देर ना लगाई नाथ,
घण्टाके तले अण्ड भिरहीके उबारे हैं ॥
गणका और गीधकी नावको पठाई पार,
गजकी पुकार देख गरुड़ तज सिधारे हैं ।
रंका औ बंका था जातका कसाई सजन,
एते प्रभु तारे जेते नभमें तारे हैं ॥

उ०-प्रहलादकू तारो ताके तातको तमासो देख्यो,
ध्रुवजीकूं तारो ताकूं बालापन टारो है ।
मोरध्वजकू तारो ताके पुत्रपै चलायो आरो,
हरिश्चन्द्रकूं तारो ताको कहा सत्य टारो है ॥
सुग्रीवकूं तारो ताके बन्धुको करायो नाश,
विभीषणकूं तारो ताके कुटुम्बही संघारो है । *
भक्त भक्त तारे यामें रावरे बड़ाई कहा, ?
विना भक्ति तारिये तो तारिवो तिहारो है ॥ १२ ॥

प्रश्न-कल्पलताके तारे नित्य क्यों उपास पड़्यो,
सुधाके सरोवरमें मृतकसो धर्यो ।

* एक लक्ष पूत सवालक्ष नाती, ता रावण घर दिया न बाती ।

ससुराल-रहस्य

कासीमें जन्म पाय मुक्ति से न पाई प्रभु,
राम गुण गाय गाय पापनमें भरचो रह्यो ॥
कहत कवि सुजान पावकमें नाहिं जरचो,
सिन्धु सुता पाय द्वार दारिद्र अरचो रह्यो।
एसी क्यों बीती मोपे करुणाके सागर प्रभो,
पारसको पाय कैसे लोहासो धरचो रह्यो ॥

उत्तर-पेट माहिं भक्ति कबूली तू मेरी सुन,
बाहर आय भवनिधिके भँवरमें परचो रह्यो ॥
बालापन खोयो लरिकाई की अग्निनमें,
युवा ज्योति युवतिनके रंगमें रंग्यो रह्यो ॥
वृद्धापन खोयो तैंने तृष्णाकी तरंगनमें,
हरिको न खोज्यो तोय सूझत हरि ही रह्यो।
कौलको तूं भूल्यो मृगतृष्णाकी अरंपटमें,
पारसको पाय लोहा ऐसे धरचो रह्यो ॥ १३ ॥

प्रश्न-इन भूत परेत पिशाचनके डरसे निशि वास रही डरती,
दधि दूधहूँ शन्न न ढूँढ़े मिलै नित भांग भकोसत ही मरती
अंग अंबर नाहि दिगम्बरके तन मांहि भभूत-मलो करती,
हँसि सैलसुता संकर सों कहै हम ना वरती तुम्हें को वरती ॥

उत्तर-तजि रम्य मनोरम दर्शनको,
इन आय पहारन में अरतो !
ससुरारि सबै जड़ योनि न एक-
वृथा अपमान में को परतो ॥
चढ़ि सिंह लिए दोऊ हाथमें आयुध
आचरती तव आचरतो।
हँसि शंकर शैलसुता सों कहै,
हम ना वरतो तुम्हें को वरतो ॥१४॥

❋ मुकलावा-बहार ❋

प्र०-(१) अनुराग कियो किन अंगनमें किन मोतिनसो सिरमांगभरी,
पग मांहि महावर सुन्दरसी मेंहदी करमें लगी ओप भरी।
किन गूंथी सुवेणी वतारी अली तोहि सौंह ववाकी दै पूछौ अरी,
व्रजराज सनेह दुरावति क्यों यह नाईन की नहि कारीगरी॥

उ०-(१) आईहौ पांव देवाय महावर कुंजनतें करके सुख श्रेणी,
सांवरो अंग संवारयो है आज सुनैननको लखि लाजत ऐनी।
बातके बूझत ही मतिराम कहा करिहै भद्रु भौंह तनेनी,
मूंदि न राखत प्रीति अली यह गूंथी गोपाल के हाथकी वेनी॥

प्र०-(२) तुम जानति हौ जु अजान भई-
कवि आगेसे उत्तर धावति हौ,
बतलाती कछू औ कछू करती
अनुरागकी आंखें झुरावति हौ।
हमें काह पड़ीहै मने करिहै
कवि "बोध" कहै दुख पावति हौ।
बदनामी की गैल बचाये चलो
बड़े बापकी बेटी कहावति हौ॥

उ०-(२) हम से मनमोहन से हित है
चुगली कर कोऊ कहा करि है,
अब तो बदनाम भई ब्रज में
गुरु लोगन जानि कहा डर है।
कहै "ठाकुर" लालके देखिबे को
ब्रज भूल्यो सबै बिसरो घर है।
तुम आपुन काम से काम करो-
कोऊ आपन जानि कुंवा गिरि है॥ १५॥
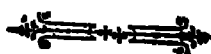
श्रीहरिः।

मुकलावा बहार।

अर्थात्

ससुराल-रहस्य

तीसरा भाग।

गणपति वन्दना।

श्रीमत्पंकजमोदकं करधरं चक्रं गदा सुन्दरम्,
भालेन्दूतिलकं ललाटमुकुटं कण्ठे च मालावरम्।
ऋद्धि-सिद्धि-प्रदायकं गजमुखं श्रीयुक्तलम्बोदरम्,
वक्रं तुण्डविनायकं शिवसुतं वन्दे गणाधीश्वरम्॥ १॥

प्रातः साढ़े आठ बजे बाबू मदनलाल स्नानादि नित्य क्रियाओंसे निवृत्त हो साथियों सहित बैठे हुए हैं पण्डित गणपतलाल, रामानन्दजी (चुरूनिवासी) भी बैठे हैं औरइधर उधरकी बाते कर रहे हैं; इसी अवसरमें वहां एक १२-१३ वर्षकी आयुका लड़का आया, जिसे देख रामानन्दजी मदनलालसे

बोले, बाबू साहब ! यह लड़का आज कल फारसी पढ रहा है इसे फारसीके बहुत शेर आते हैं, यदि आपकी सुननेकी इच्छा हो तो बाबू झूमरलालको इसके सामने खड़ा कर दो फिर देखो ये कैसे २ शेर सुनाता है ?

मदनलाल—पण्डितजी ! झूमर बाबू इनसे कम तो नहीं है, परन्तु बालकोंको इस तरह निर्लज्ज बनाना अच्छा नहीं, क्योंकि अभी तो बच्चे प्यारही समझते हैं, किन्तु पीछे वे सदाके लिये अभय और निर्लज्ज हो जाते हैं इस लिये आप बाबू गुलाबचन्दसे कहो कि यदि उनको प्रश्नोत्तरके सिवाय इकतरफा कुछ रसभरे शेर आते हो तो सुनावे।

रामानन्दजी—(गुलाबचन्दसे) हां देखें दो चार शेर टपकते टपकते सुनाओ।

गुलाबचन्द—दो चार क्यों चाहे दिन भर सुने जाओ।

शेर किस्म ।

एक बापके दो बेटे, किश्मत जुदा जुदा है।
एक सहन्साह जहांका, एक फिर रहा गदा है ॥ १ ॥
एकही सदफसे निकले, दो आवदार मोती।
एक पिस गया खरलमें, एक ताजमें टंका है ॥ २ ॥
दो फूल साथ फूले, मालीके बागमें थे।
नौसाने एक बांधा, एक कब्रपर चढ़ा है ॥ ३ ॥
एकही शजरसे निकली, दो शानदार शाखें।
एक जल गई चितामें, एकका बना असा है ॥ ४ ॥
कङ्कर खदानके जो, इनका भी भाग्य देखो।
हीरा कोई कहाया, कोई गारमें पड़ा है ॥ ५ ॥

पत्थर तो एक ही है, इन्सां जहानवालो।
एक पुज रहा शिवालय एक फर्शमें जड़ा है ॥ ६ ॥
सबकी दशा यही है, चांदीके थे दो टुकड़े।
एक ताज सीसका है, एक पैरका कड़ा है ॥ ७ ॥

(२)

तू शाहन्शाह मैं दर कागदा, है रूह एक तकदीरें दो।
तू तख्त नशीं मैं खाक नशीं, है वतन एक तामीरें दो।
तू ज़र नशी मैं जर्राये खाक, है असर एक तासीरें दो।
तू जाहिर है मैं बातिन हूँ, है ख्वाब एक ताबीरें दो।
तू बस्ती में मैं जंगल में, है मुल्क एक जागीरें दो।
तू फूले चमन मैं खारे दस्त, नक्कास एक तस्वीरें दो।
तू फिक्र मंद मैं दर्द मन्द दिल, ख्याल एक शमशीरें दो।
तू माल मस्त मैं ख्याल मस्त, है मर्ज एक तद्बीरें दो।
तू कलम बन्द मैं जुबां बन्द है, बंदिश एक जंजीरें दो।
तू लै में चूर मैं खुद में चूर, है चीर एक नख चीरें दो।

समयकी गर्दिश पर।

जिनके महलमें हजारहों रंगके फानूस थे।
आज उनके बैठनेको बोरियां तक भी नहीं ॥ १ ॥
जिनकी नौबतोंसे सदा यह गूँजता था आसमां।
घास उनकी कब्रपर है और निशां कुछ भी नहीं ॥ २ ॥
बिस्मिल अजीब शै है दोरंगीये ज़माना।
जो आज बादशाह है कलको वही गदा है ॥ ३ ॥

शेर दुमानी।

दुख्तरे दर्जीका सीनां देखकर
दिलमें आती है कि "मलमल (मल "मल") हूं ॥ १ ॥

उस परीके जख्मपर मरहम लगाने हम गये।
वो तो अच्छी होगई पर मुफ्तमें मरहम (मर हम) गये॥१॥
जरगर किजनसे पूछा काहेकी तेरी नथनियां।
झटपट पलंग बिछाकर कहने लगी है "सोना"॥२॥

नजाकतपर।

खुद गला काटूं मुझे खंजर इनायत कीजिये।
देखना दुख जायगी नाजुक कलाई आपकी॥२॥
बामपर हरगिज न जाना तुम सबे महताब में।
चांदनी लग जायगी मैला बदन होजायगा॥३॥
दांत यूं चमके हंसीमें रात उस महपाराके।
हमने जाना माहेपारा पारा पारा होगया॥४॥
मुहब्बतमें नही हैं फर्क जीने और मरनेका।
उसीको देखकर जीते हैं जिस काफरपे दम निकले॥५॥
क्या नजाकत नाजनीमें या खुदा तूने भरी।
दस्त ऊंचा ना उठा मेंहदी लगी थी वोझसे॥६॥
उठी जब नींदसे सोकर देखकर अपनी चोटीको।
पुकारी दौड़ियो लोगो सांप मेरे बिछौनेमें॥७

ईश्वर प्रेम

(१)

जिधर देखता हूँ उधर तूही तू है।
कि हर शै में जलवा तेरा हूबहू है॥१॥
मैं सुनता हूँ- हर वक्त तेरी कहानी।
कि तेरा जिकर होरहा कूबकू है॥२॥
बिना उसके माबूद औरों को वालो।
जबां को सम्हालो ये क्या गुफ्तगू है॥३॥

चमन में यूं कोयल शज़र पे पुकारें।
तुही तू तुही तू तुही एक तू है ॥ ४ ॥

(२)

कांटे से भी खराब है जिस गुलमें बू न हो
वीरान के मिसाल है जिस दिल तू न हो १
गूंजी ज़ुबां हो जिसपे तेरी गुफ्तगू न हो
जल जाय दिलवो जिसमें तेरी जुस्तजू न हो २
इन्सां है वह जो आपसा जाने जहान को
तफरीक जिसके दिलमें कभी मैं व तू न हो ३
कुछ करले काम नेक कि फुरसत का वक्त है
हासिलहै आज वक्त वह कल तक कभी न हो ४
खोले हुवे जो हांथ जहां से हमारा कूँच
लिपटी हुई कफनमें कोई रजू न हो ५

रामानन्द-बाबू गुलाब वाह ! अभीसे तुम इतने दिलचस्प शेर सीख चले, आगे क्या न करोगे ? अच्छा दो चार फड़कती सी गजलें और सुना दो तो यार मजा आ जाय

गुलाबचन्द-अच्छी बात है।

१

दिल ले गया हमारा, दिलदार हँसते २ ॥ टेर ॥
मैंने कहा था ऐ दिल, इस बेवफासे मत मिल।
बरबाद ये करेगा, बद्कार हँसते २ ॥ १ ॥
तेरे हुस्नका यह शीशा, संगेफरसपे छूटा।
बस हो चुकी तमामी; सरकार हँसते २ ॥ २ ॥
यारोंकी था वह महफिल, लाखों पड़े थे घायल।
आपुसमें चल पड़ी है, तलवार हँसते २ ॥ ३ ॥

ज्यादा न किये करतुं, वाजार इश्क ज़ालिम ।
"हीरा" ने थूं सुनाया हरवार हंसते २ ॥ ४ ॥ १ ॥

(२)

जानेहै क्या २ छुपाहुवा सरकार तुम्हारी आंखोंमें ।
दीनो दुनियां दोनों का है दीदार तुम्हारी आखोंमें ॥
तुम मारभी सकते हौ पलमें,
तुम तारभी सकते हौ छिनमें,
विष औ अमृतका रहता है,
भराडार तुम्हारी आंखो मे ॥ अपूर्ण ॥

रामानंदजी-(फतेपुरवाला जोसीसूं) जोसीजी ! दो चार पातल शाखोच्चार तो सुणावो लिखवाको विचार है ।

जोसीजी-हां साव, खूब ल्यो दो चार क्यूं दस वीस लिखो ।

शाखोच्चार गौरांशंकरके व्याहको ।

श्री आनंदी सुमरिकें, ध्याऊं देव गनेश ।
निशिदिन मन आनंदसे, करत वुद्धि परवेश ॥
कैलाशी शंकर प्रभु, सव देवनके देव ।
गौरांके वड़ भाग हैं, करी जिनोकी सेव ॥
नृप हेमाचल हर्ष युत, पंडित लिये वुलाय ।
देव उठनी एकादशी, सावो लियो कढ़ाय ॥
गौरां भेजी पत्रिका, सुनियो दीन दयाल ।
वर्ण फेर कर आइयो, मैं दासी जु तुम्हार ॥
शंभू चले कैलाससे, नृप हिमाचल द्वार ।
प्रगट भये जब नग्रमें, दीन्ही नांद बजाय ॥

ससुराल-रहस्य

नर नारी पूछन लगे, तुम्हही हौ महराज।
हँस २ सब कहने लगे, शोभा अधिक अपार॥
शंभू सिंहासन चढ़े, सकल नेक संभूप।
हस्ती घोड़ा पालखी, शोभा अधिक सरूप॥
ब्रह्मा आये महेश संग, धरे सीसपर मोड़।
परसुराम जमदग्नि अरु, सुर तेतीसों क्रोड़॥
इन्द्र अखाड़ा सब चढ़या बागे बने अमोल।
नारद मुनि हंसि नृत करैं, हेमांचलकी पोल॥
जरी निसान जु फरकते, हरखैं नगरी लोग।
शंभूका डमरू बजै, भागैं सब दुख सोग॥
रत्नजड़ित आसन सुभग, मोतिन चौक पुराय।
कियो आरतो उस घड़ी, तोरण सुघड़ छवाय
कंचनकें कलसे बने, भर जल अमृत पान।
कर जोड़े बिनती करैं, लीज्यो चतुर सुजान॥
मोतिनकी झालर लगी, मांढो बन्यो अमोल।
सुन्दरि गावैं रागिनी, हेमाचलकी पोल॥
बिप्र वेदकूं पढ़त हैं, पूजा करैं गनेश।
कन्यादान राजा दियो, लीन्हे आप महेश॥
दई दक्षिणा द्विजनको, सबके मन आनंद।
मनीराम उत्साहसो, साखा रची उमंग॥
जितीक मेरी बुद्धि थी, उत्तिक कही सुनाय।
गौरीशंकर ब्याहकी, साखी कही बनाय॥
उगनीसौ उनतीस है, सुश्चित सावन मास।
कृष्ण पक्षकी चतुर्थी, पूरी मो मन आस॥

चन्द्र-आठ प्रहर चौसठ घड़ी-ठाकुर पर ठकुरानी चढ़ी।

स्त्री०-सालगरामजीपर तुलसी ॥ १६ ॥

चन्द्र-चार आंगलकी लाकड़ी, दोन्यूँ मूंड़ां भरै।
मरद जब संगमें जुटै, न्यारा न्यारा करै ॥

स्त्री०-कंघी ॥ १७ ॥

चन्द्र-तले पेड़ आकाशघर, ज्यांको अंत न पार।
ई पहालीको अरथ बताकर, घरां पधारो नार ॥

स्त्री०-ल्यो (कटाक्ष करती हुई) बाबा ल्यो-टांटियां को छातो ॥१८॥

अंक पांचवाँ

झूमर इतनी देरतक चुपचाप लेटा हुआ था, चन्द्रके अंतिम पद (घरां पधारो नार) को सुनकर बैठ गया और बोला—

झूमर-पधारो साब घरां पधारो कँवर साब को हुकम हो गयो, अब थे क्यांका रुको हो, कँवर साब पूछ्यां सो आप बताया और आप पूछ्या सो कँवर साब (चन्दर) बताया और म्है इत्ती देरसुं आस करयां पड़्या था सो बट्टाखाते ई रह्या।

स्त्री०-(हँसती हुई) वाहजी! कंवरसाब वाह! थे क्युं काचो मन करो हो! म्हारे तो ल्योरे भाय, देखवा जोग थेई हो, थाने

चाये सो थे भी लेल्यो (एक बूढ़ी स्त्री) और वो वो चाये तो मैं प्यादूं ?

झूमर-(ऊर्ध्व स्वांस लेकर) म्हारा मनमें आयोड़ी चीज तो अठे सुपनामें भी मिलती दीखे नहीं (बूढ़ी कानी देखकर) और ये साब राजी भी हुया तो रावड़ी परके बिसमिल्ला करां ! हां, एक दो चोखा सा गीव सुणाद्यो तो म्हारो भी मन राजी हो जावे।

स्त्री०-एक दो क्यूं, थारो हुकम होय तो थाने रातभर गीत सुनावां खूब रिझावां, पण म्हाने यातो बतावो ईनाम के मिलसी ?

झूमर-ईनामके वदलेमें मनेई राख लीजो।

स्त्री०-(हँसती हुई) अच्छा फरमावो के सुणावा ?

झूमर-होवाद्यो कोई अच्छीसी जकडी उमराव, वारहखड़ी।

चन्दर-हां, थे सुणावो पीछे वाबू झूमरलाल थाने भी सुणासी।

स्त्री०-(झूमरसूं) वस, कँवरसाव, म्हाने तो याही इनाम दीज्यो।

झूमर-वस, थे इत्तापर ही राजी हो गया? मैं थारा गीतांपर राजी होतो तो केवेरो के दे देतो। अच्छा तो देखां दो चार टपकता टपकता होणाद्यो पीछे १-२ म्हे भी सुणा देस्यां।

स्त्रियें बाराखड़ी गाती हैं।

कक्का-काली हांडी जोजरी, जींमें भरी गुलाल।
मूरखके पाले पडी, कदे न पूछ्यो हाल ॥ १ ॥

खक्खा-खूंटी ऊपर जेवडी, टँगी टँगी वलखाय।
लानत ऐसे यार पर, जो आंगणसे फिर जाय ॥ २ ॥

गग्गा-गागर ऊपर गागरी, गागर ढुल ढुल जांय।
कहज्यो म्हारा पीवने, गौनौ कर ले जाय ॥ ३ ॥

झूमर-(बीचमें) बस साव माफ़ करो इसी बारहखडी तो मैंही सैकः जाणूं हूं, कोई चोखीसी बिरहणीकी याद हो तो सुणावो

स्त्री०-ल्यो साव ! बिरहणीकी सुणो !

घग्घा-घट घटमें पिवजी बसें, माला ले ली हाथ।
दिन तुणका चुग चुग कटै, तारा गिण गिण रात ॥ ४ ॥

चच्चा-चार प्रहर चौंसठ घडी, रहै तुम्हारो ध्यान।
इक बर दर्शन दीजियो, मान अमाने मान ॥ ५ ॥

छच्छा-छोटी थी जब बालमा, धोखो दीन्हो मोय।
परदेसांकी सैर की, अब तोय मालम होय ॥ ६ ॥

जज्जा-जा तोता सन्देश ले, पिय आवैं मम पास।
अब देरी हो तो तजैं, या जीवनकी आस ॥ ७ ॥

झझ्झा-झड़ी लागै आषाढकी, घटा श्याम घनघोर।
पीव पीव टेरत रहैं, पापी चातक मोर ॥ ८ ॥

टट्टा-टाल टाल दुख टाल पिय, मदन छक्यो भरपूर।
छात्यां फूटैं खोपरा, जोवन चकना चूर ॥ ९ ॥

ठठ्ठा-ठंड लगै बीजल खिवे, थर थरात सब देह।
बिजुली बैरण बाणसम, जहर बराबर मेह ॥ १० ॥

डड्डा-डरपूं म्हालां एकली, जोवननाला पूर।
कौन लंघावे पार मोहि, पिय खेवट है दूर ॥ ११ ॥

ढढ्ढा-ढाल रोपि दोउ जंघकी, मदन दुष्टके संग।
कौन बिरह मैदानमें, पिव बिन रोपे जंग ॥ १२ ॥

तत्ता-तुम साजन जनि जानियो, दूर देसको बास।
खोड़ हमारी यहां पड़ी, जीव तुम्हारे पास ॥ १३ ॥

❀ ससुराल-रहस्य ❀

थथ्था-थे प्रीतम मत समजज्यो, थां बिछड़्यां मोहि चैन।
जैसे वनकी लाकड़ी, सिलगत हूँ दिनरैन ॥ १४ ॥

दद्दा-दीपावली दसेहरा, ईत्या सब त्योहार।
पिव परदेसां छा रह्या, कहा रची करतार ॥ १५ ॥

धध्धा-धन घड़ी है आजकी, धन्य हमारो भाग।
पिवजी आ दर्शन दियो, सीस कसूमल पाग ॥ १६ ॥

नन्ना-नैन देख राजी हुया, अंग गया सब रीझ।
म्हारे भावे हे सखी! आज नौलखी तीज ॥ १७ ॥

पप्पा-पगांलागस्यां सासके, दे म्होरांकी भेंट।
तपन बुझावां हे सखी, पिय संग सेजां लेट ॥ १८ ॥

फफ्फा-फूल गुलाबी पोमचो, आंगी झबका दार।
छम छमात म्हलां चढी, कर सोला सिणगार ॥ १९ ॥

बब्बा-बालमजी महलां गया, हाजर ऊभी आय।
दोनूँ लेट्या सेजपर, लीना अंग लपटाय ॥ २० ॥

भभ्भा-भरी सिसकरी नारि जब, मदन उठ्यो भन्नाय।
बिरहअगनमें पीवने, दीन्हों जल बरसाय ॥ २१ ॥

मम्मा-मनमें दोउ राजी हुए, जैसे चन्द्र चकोर।
कृपादृष्टि प्रभुकी हुई, पिया विरहिनी ओर ॥ २२ ॥

यय्या-याही जगकी रीत है, नार पुरुष व्यवहार।
दोन्यूं जन राजी हुआ, कर कर रात्यूं प्यार ॥ २३ ॥

रर्रा-राम मिलाया दोउने, पूरी मनकी आस।
पिया विरहिणी मिलनको, पूर्ण भयो इतिहास ॥ २४ ॥

लल्ला-लगन लगावे पीवसूं, औरोसे क्या काम।
लोक और परलोकमें, उसी त्रियाको नाम ॥ २५ ॥

वव्वा-वाह वाह सब जगतमें, अन्त परम पद पाय।

एक नारी परतापसूं, सवी कुटम तर जाय ॥ २६ ॥

सस्सा-समझे नहि कुछ धर्मकूं, और न बेचे जाय।
दोन्यूं ओर कुटमने, बट्टो देय लगाय ॥ २७ ॥

हहूहा-हाय जरा सा सुखकूं, सारो सुख गमाय।
कुत्ताकी योनी मिले, अन्त वहुत दुख पाय ॥ २८ ॥

त्रत्रा-त्रीतिया माघ वदी शनी, उन्यासी शुभ साल।
ता दिन यह वारहखड़ी, लिखवी 'अर्जुनलाल' ॥ २९ ॥

स्त्री०-ल्यो साव बारहखड़ी तो पूरी हो गयी और फरमाओ।

भ्रमर-हालई कैंयां पूछण लाग गया, होवाद्यो कोई चीजां मुकळ्यां उमराव, टप्पा, जीजा, नणदोई अच्छा अच्छा।

स्त्री०-जो हुकुम साव (जीजा गाती हैं)

गीत जीजा।

प्यारा लागोजी जीजाजी म्हाने प्यारा लागोजी ओजी, बाई चन्द्रकिरनका श्याम जीजाजी म्हारे प्यारा लागोजी ॥ टेर ॥ वाग लगा देवांजी जीजाजी थाने वाग लगा देवांजी। ओजी म्हारे सैर करन मिस आव जीजाजी म्हाने प्यारा लागोजी ॥ १ ॥ किस विधि आवां ये छोटी साल्यो किस विध आवां ये। ओये म्हारा रस्तामें वस ये कलाली छोटी साल्यो, किस विध आवां ये। आवा दीज्यो ये कलाली वैरन आवा दीज्यो ये, ओये म्हारो मन छे जीजा जीरे मांय, कलाली वैरन आवा दीज्यो ये ॥ हौज खुदा देवांजी जीजाजी थाने हौज खुदा देवांजो, ओजी म्हारे न्हावनरे मिस आव, जीजाजी म्हाने प्यारा लागोजी० ॥ किस बिध आवां ये छोटी साल्यो किस विध आवां ये, ओये

म्हारा रस्तामें बसे ये कलाली छोटी साल्यो किस विध आवां ये०॥ आवादीज्यो ये कलाली बैरिन आवादीज्यो ये, ओये म्हारो मन छे जीजाजी रे मांय, कलाली बैरिन आवादीज्यो ये०॥ भात पसा देवांजी जीजाजी थानें भात पसा देवांजी, ओजी म्हारे जीमण रे मिस आव, जीजाजी म्हाने प्यारा लागोजी०। किस विध आवां ये छोटी साल्यो किस विध आवां ये, ओये म्हारा रस्तामें बसे ये कलाली छोटी साल्यो किस विध आवां ये०॥ आवा दीज्यो ये कलाली बैरन आवा दीज्यो ये, ओये म्हारो मनछे जीजाजी रे मांय, कलाली बैरन आवा दीज्यो ये०। सेज बिछा देवांजी जीजाजी थाने सेज बिछा देवांजी, ओजी म्हारे पौढण रे मिस आव जीजाजी म्हाने प्यारा लागोजी०॥ किस विध आवां ये छोटी साल्यो किस विध आवां ये, ओये म्हारा रस्तामें बसे ये कलाली छोटी साल्यो किस विध आवां ये०। आवा दीज्यो ये कलाली बैरन आवा दीज्यो ये, ओये म्हारो मनछे जीजाजी रे मांय, कलाली बैरन आवा दीज्यो०॥

"जानकीबाई"

गीत नणदोई।

महमन्द घड़ाद्यो ओजी नणदोई,
झूटणाकी साई बालमसूं लगाई॥

जाणोछो तो माणो ओजी नणदोई,
खूंटी क्याने ताणो प्यारा नणदोई॥

बाईजी सुणेलां देलां म्हाने गाली,
जाणोछो तो माणो प्यारा नणदोई।

❁ मुकलावा-बहार ❁

रात रातका वासी ओजी नणदोई,
परभात्यां उठजास्यों प्यारा नणदोई ॥
चौवारो तो छोटो ओजी नणदोई,
थारो लश्कर भारो प्यारा नणदोई ।
बाईजी सुणेगा राज करेगा,
आपां रंग माणां प्यारी सालाहेल्यो ॥
रात रात का वासी प्यारी सालाहेल्यो,
परभाते उठजास्यां प्यारी सालाहेल्यो ।
गलपटियो घड़ायो ओजी नणदोई,
कण्ठीरी साई बालमसूं लगाई ॥
बाजूबन्द घड़ायो ओजी नणदोई,
बंगड़ीकी साई बालमसूं लगाई ।
जाणोछो तो माणो ओजी नणदोई,
खूंटी क्याने ताणो प्यारा नणदोई ॥
पायल घड़ायो ओजी नणदोई,
बिछुड्यांरी लाई बालमसूं लगाई ।
जाणोछो तो माणो ओजी नणदोई,
खूंटी क्यांने ताणो प्यारा नणदोई ॥
बोलो सो घड़ायां प्यारी सालाहेल्यो ।
पण म्हालां रंग माणां म्हारी सालाहेल्यो ।
घूंघट खोलकर बोलो प्यारी सालाहेल्यो,
चाये सो थे लेल्यो प्यारी सालाहेल्यो ॥
रात रातका वासी प्यारी सालाहेल्यो,
परभाते उठ जास्यां म्हारी सालाहेल्यो ।

❀ ससुराल-रहस्य ❀

जाणो छो तो माणो ओजी नणदोई,
खूंटी क्याने ताणो प्यारा नणदोई,
"एक सालाहेली"

(गीत टप्पा)

सरसधणा ऊभी चौपड़में।

कंथ रह्यो परदेश लहर वीके उठरही जोबनमें ॥ टेर ॥
सरवर परकी ठीकरी (सरे) घिस घिस पतली होय।
परदेसीकी गोरड़ी (सरे) झुरझुर पिंजर होय ॥ १ ॥ स०
जो मैं ऐसी जानती (सरे) प्रीत कर्‌यां दुःख होय।
नगर ढिंढोरा फेरती (सरे) प्रीत करो मत कोय ॥ २ ॥ स०
कागा सब तन खाइयो (सरे) चुग चुग खइयो मांस।
दो नैना मत खाइयो (सरे) पिया मिलनकी आस ॥ ३ ॥ स०
कागा नैन निकाल दूं (सरे) पिया पास ले जाय।
पहले दर्श दिखाय के (सरे) पाछे लीजो खाय ॥ ४ ॥ स०

एकांग प्रश्नोत्तर पहेलियां।

जब मैं ऊपर बैठूं जाय, ढीली करे हलाय हलाय।
लगे मंचडका झूला झूला, क्यों सखि साजन?
ना सखि 'झूला' ॥ १

जबहिं पलंगपर सोऊं जाय, सारी रात बटाबट खाय।
चक्खे रस नहीं रखे कसर, क्यों सखि साजन?
ना सखि 'मच्छर' ॥ २

मैं सूती छत ऊपर आयो, आय दड़ादड़ खेल मचायो।

टपका गेरया भींजी देह, क्यों सखि साजन?

ना सखि 'मेह' ॥ ३ ॥

आय अचानक तनपर चढ़ले, ढूंढ कपोलन बटका भरले।
सोवे नहिं सोवन दे इक पल, क्यों सखि साजन?

ना सखि 'खटमल' ॥ ४ ॥

संग रहै हो शोभा मेरी, उन मेरे गलबांही गेरी।
छतियन लपट रह्यो कर प्यार, क्यों सखि साजन?

ना सखि 'हार' ॥ ५ ॥

बांदी भेज मैं वाहि बुलाऊँ, अंग २ सब खोल दिखाऊँ।
वासूं मेरो हो नित मेल, क्यों सखि साजन?

ना सखि 'तेल' ॥ ६ ॥

शोभा मेरी बढ़ावन हारो, अँखियनसे छिन करूँ न न्यारो।
अष्ट प्रहर मेरो मनरञ्जन, क्यों सखि साजन?

ना सखि 'अञ्जन' ॥ ७ ॥

देखनेमें वह गांठ गठीला, चाखनमें वह अधिक रसीला।
मुंह चूमूं तो रसका भांडा, क्यों सखि साजन?

ना सखि 'गांडा' ॥ ८ ॥

सारी रात मेरे संग जागा. भोर होत ही बिछुरन लागा।
वाके बिछुरत फाटत हीया, क्यों सखि साजन?

ना सखि 'दीया' ॥ ९ ॥

रात दिना छाती पर रहै, दोनों कुच गाढ़े कर गहै।
उतरत चढ़त करत झकझोरी, क्यों सखि साजन?

ना सखि 'चोली' ॥ १० ॥

पहिले तो मेरी नींद बिडारी. पाछे करी कुचोंकी ख्वारी।
सारी रात छतियनपर लेटा, क्यों सखि साजन?

ना सखि 'बेटा' ॥ ११ ॥

मैं छत ऊपर पलंग बिछायो, मैं सूती मेरे ऊपर आयो।
उसके आये हुयो आनंद, क्यों सखि साजन?

ना सखि 'चंद' ॥ १२ ॥

आप हलै और मोहि हलावै, वाको हलवो मोहिं सुहावै।
सीत पड़ै जब होय निसंखा, क्यों सखि साजन?

ना सखि 'पंखा' ॥ १३ ॥

शोभित रतन माल तन चूमे, आठ प्रहर मेरे संग घूमे।
वा बिनु सब शृङ्गार है फीका, क्यों सखि साजन?

ना सखि 'टीका' ॥ १४ ॥

श्याम वरण मेरे मन भावै, अधर चूमकर रंग जमावै।
दहै सौत लखि नित बत्तीसी, क्यो सखि साजन?

ना सखि 'मिस्सी' ॥ १५ ॥

धमकि चढ़ै सुध बुध बिसरावे, दाबत रान बहुत सुख पावे।
अति बलवंत उमरका थोडा, क्यों सखि साजन?

ना सखि 'घोड़ा' ॥ १६ ॥

मैं आपन मन वाकूं दीन्हों, अति गुनवन्त वाहि मैं चीन्हों।
दिलसे कभी न करि हौं जूवा, क्यों सखि साजन?

ना सखि 'सूवा' ॥ १७ ॥

मैं जब सखि! वाके ढिग जाऊँ, मीठी प्यारी बातें पाऊँ।
श्यामवरण मदमाते नैना, क्यो सखि साजन?

ना सखि 'मैना' ॥ १८ ॥

छोटा मोटा अधिक सुहाना, जो देखे सो होय दिवाना।
कबहूँ बाहर कबहूँ अन्दर, क्यों सखि साजन?

ना सखि 'बन्दर' ॥ १९ ॥

अति सुन्दर जग चाहत वाकूं, मैं भी मन दे दीन्हा ताकूं।

वाके देखत लागत टोना, क्यों सखि साजन ?
ना सखि 'सोना' ॥ २० ॥

राह चलत मोरा आंचर पकरे, मेरी सुने न अपनी बकरे।
ना कुछ उससे झगड़े झांटे, क्यों सखि साजन ?
ना सखि 'कांटे' ॥ २१ ॥

लुगायां–क्यों साहब अब तो खूब गीत टप्पा मुकड़ी होगया ना ?

भ्रमर—वाह साव वाह रातभर सुणावावाला इत्तामें ही धाप गया. इणतरां इनाम मिलती होसी ? इनाम लेणी होय तो १०-२० उमराव सुणावो।

लुगायां–क्यों साव उमराव सुणां।

आप झरोखा बैठता, लवलीया सरदार।
हाजर रहती गोरड़ी, सज सोलह शृंगार॥
उमराव थारी सूरत प्यारी लागे मोरी जान॥
उमरावजी ओ रसिया ॥ १ ॥

आबू चिमके बीजली, सीकर बरसे मेह।
छांटा लागे प्रेमका, भींजे सारी देह॥
उमराव थारो पचरङ्ग पेचो भींजे मोरी जान॥ उमरावजी० ॥ २ ॥

साजन चाल्या पगां पगां, लस्कर रह गयो दूर।
आवे थारी गोरड़ी, ऊभा रहो हजूर॥
उमराव थाने भर गोदी ले चालूं म्हारी जान॥ उमरावजी० ॥ ३ ॥

साजन चाल्या चाकरी, पगमें उलझी डोर।
पाछा फिरकर देखज्यो, धणलारां गणगोर॥
उमराव थारे लारे लागी, आऊं मोरी जान॥ उमरावजी० ॥ ४ ॥

फूल गुलाबी पोमचो, पड़ो बिरङ्गो होय।
मैं म्हारी मांके लाड़ली, कद मुकलावो होय॥

उमराव थे तो लेवा वेग पधारो मोरी जान ॥ उमरावजी० ॥ ५ ॥

मैं म्हारी मांके लाड़ली, मोत्यां विचली लाल ।
सासूके अनखावनी, परख्या आगे न्याव ॥
उमराव थे तो म्हैलां न्याव चुकाओ मोरी जान ॥ उमरावजी० ॥ ६ ॥

आटी डोरा कांगसी. सीस गुथावण जाय ।
सामो मिलगयो सायबो, छाती धड़का खाय ॥
उमराव थारी दहशत म्हाने आवे मोरी जान ॥ उमरावजी० ॥ ७ ॥

बैंगण तो काचा भला, पाकी भली अनार ।
साजन तो पतला भला, मोटा जाट गंवार ॥
उमराव थारी लचकत चाल पियारी मोरी जान ॥ उमरावजी० ॥ ८ ॥

झूमर०-हां ! ऐसे टपकते टपकते होने दो ।

लुगायां-एक तो सँकड़ी कोठड़ी दूजे मांजळ जात ।
तीजो छोटो ढोलियो, मतवालाको साथ ॥
उमराव थाने छातीसुं, लिपटालयुं मोरी जान ॥ उमरावजी० ॥ ९ ॥

डूंगर ऊपर डूंगरी, जींके ऊपर कैर ।
कर मुकलावो छोड़ गये, साधे कवको वैर ॥
उमराव थारी ओल्युं म्हाने आवे मोरी जान ॥ उमरावजी० ॥ १० ॥

जैपुरके बाजारमें पड्यो पेमली बोर ।
नीची होर उठावती, गयो कमरमें जोर ॥
उमराव म्हारे रात्युं चसका चाले मोरी जान ॥ उमरावजी० ॥ ११ ॥

पिय आया परदेससूं, जाजम दई बिछाय ।
हित चितकी फिर पूछस्यां, हिवडे ल्यो लिपटाय ॥
उमराव बिछुड़्या फिरसे राम मिलाया मोरी जान ॥ उमराव० १२ ॥

पिवजी परदेसां चला, नैना बरसे नीर ।
हाथ पांव ठण्डा हुआ, जियड़ो धरे न धीर ॥

उमराव थारे सागे लेकर चालो मेरी जान ॥ उमरावजी० ॥१३॥

चन्दा थारे चांदणे, सुती पिलङ्ग बिछाय ।
जब जागूं तब एकली, मरूं कटारी खाय ।
उमराव म्हारो जोबन ऐल्यो जावे मोरी जान ॥ उमरावजी० ॥१४॥

पिय परदेसां छागया, गया प्रेममें भूल ।
जोबनियो ढलजायगो, तो दौलतमें धूल ॥
उमराव धणने घर आ कण्ठ लगावो मोरी जान ॥उमरावजी०॥१५॥

पिव पिव करती मैं फिरूं, पिया नहीं मेरे पास ।
सुनी सेजोमें पड़ी, रात्यूं भरूं उसांस ॥
उमराव थे प्यारीकी पीर पिछाणो मोरी जान ॥ उमरावजी०॥१६॥

सेज रमाओ सायबा, मो सुगणीरा पीव ।
थां बिन प्यारा छैलजी, म्हारो नेक न लागै जीव ॥
उमराव थारी चन्दर बदनी हाजर मोरी जान ॥ उमरावजी०॥१७॥

घर थोड़ी पिय अचपला, वैरी वाड़े वास ।
नित उठ वाजैं ढालड़ी, ना चुडलेरी आस ॥
उमराव थाने नाजुकधण समजावे मोरी जान ॥ उमरा० ॥ १८॥

मैं थाने बरजूं सायबा, भगतणरे मत जाय ।
पीसा देसी रोकड़ी, आसी रोग लगाय ॥
उमराव थारे गरमी भी होजासी मोरी जान ॥ उमरावजी० ॥१९॥

साजन आया हैं सखी, किया सभी सिणगार ।
कुणसी चूक निहारके, ना बोले भरतार ॥
उमराव म्हारा तनकी तपन बुझावो मोरी जान॥ उमरावजी०॥२०॥

चन्द्रबदन मृगलोचनी, कली चमेली जान ।
भँवर काली काची पिया, धीरे धीरे माण ॥
उमराव थारी नाज़ुक धण दुख पावे मोरी जान॥ उमरावजी० ॥२१॥

पीव पधारया सेजपर, हरी मदनकी त्रास ।
ख्याल मचाकर कोकको, पूरी मनकी आस ॥
गोरीपर जुलुम गुजारयो जी रंगभरिया मोरी जान ॥ उमरा०॥२२॥

स्त्रियें-ल्यो साब! अब थारा हुकुम मुजब सब सुणाया। देखां अब दो चार थे भी सुणावो.

भ्रमर-हां साब खूब सुनो।

उमराव रंगतमें शिवप्रार्थना।

भोलानाथ थां पर वारूं तन मन धन और प्रान,
भोलानाथ जी हो विश्वनाथ ॥

अर्धांगी गोरां सजी, दूजी सिरपर गंग।
तीजी रानी भीलणी, चौथा भंग सुरंग ॥
महाराज थारे काला काला लपटे अंग भुजंग ॥ भोला० ॥१॥

रुंडमाल गल डालली, बाल चन्द्रमा भाल।
धग् धग् धग् धग् धग् धगैं, अग्नि नेत्र विशाल ॥
महाराज जिनसे शंकैं, किंकर सहित भयंकर काल ॥भोला०॥२॥

नृपति दक्षने यज्ञमें, दीन्हों भाग उठाय।
यज्ञ भंगकर तुरतही, दीन्हो नाश कराय ॥
महाराज थांसूं बैर करै सो भोगे दुख संताप ॥ भोला० ॥३॥

बाघंबर नागंबर, मृग चर्मांबर धार।
शम्भु दिगंबर धारके, मार दियो मदि डार ॥
महाराज थे तो फेर सजीवन कीन्हों दया विचार ॥ भोला०॥४॥

मारकण्ड ऋषि तारियो, मारयो काल कराल।
चिरञ्जीव मुनि बालकहिं, फेर जिवायो हाल ॥

महाराज थे तो भूमीभार उतारण करी कुसाल ॥ भोला० ॥५॥

पाप आप मन धारिकें, कियो असुर जप जाप ।
वाको कर सिरपर धरा, भस्म करादियो आप ॥
महाराज थांसूं वैर करे सो नष्ट भ्रष्ट हो जाय ॥ भोला० ॥६॥

ब्रह्मा नारद शारदा, शेष सुरेश दिनेश ।
सुर नर किन्नर सब कहैं, जै जै शंभु-महेश ॥
महाराज ध्यावे विद्याधर गण रंभा रमा महेश ॥ भोला० ॥७॥

गाल औ ताल बजावतां, न्याल करे तत्काल ।
भोला दे भण्डार भर, दुख संकट सब टाल ॥
भोलानाथ थारी झांकी, प्यारी लागे विश्वनाथ ॥ भोला० ॥८॥

इस प्रकार झूमर उमराव गा रहा था, कि अकस्मात् एक युवती अपने सुन्दर बच्चेको गोदमें लिये हुए आ खड़ी हुई, उसे देख झूमरलाल यह शैर कहने लगा—

कर जान चार नजरें-घूंघटको छिकटदे,
प्यारेको लगा सीने लौंडेको पटक दे ।
गालनपर नागिन लटक रही चश्मोंसे नूर बरसता है,
खाख पड़े मुहब्बतपर मेरा कमलसा जीव तड़फता है ॥
हाय ज़ालिम डर खुदासे मत किसीकी हाय ले,
मै तो तुझपर मर रहा मुझे तू निभाय ले ॥

इस प्रकार झूमरको शैर गाते देख मदनलालने उसकी ओर क्रोधपूर्ण संकेत किया जिससे वह शैर बन्द कर निम्न लावनी गाने लगा ॥